MARJ-01

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य

MARJ-01 ISBN - 13/978-81-8496-143-0

MARJ-01

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य

nmR>H$_ {Z_m©U g{_{V

A Ü j

àmo\$g a (S>m°) Zae XmYrM

H$b n{V

dY©mZ _hmdra I Vw m{d í d{dÚmb `, H$moQ>m

g§mO H$ g _ÝdI ` H$ Ed§g Xñ`

àmo H$ì` mbJ cg h e b m dV

nam_e Xm Ym, amO ñWmZ r H$m ì e\$_

dY©mZ _hmdra I Vw m{d í d{dÚmb `, H$moQ>m

g Xñ`

1. **S>m° hramb mb _mhóda r**
   ny d©A Ü j , {hÝXr {d^ mJ
   amO ñWmZ {d í d{dÚmb `, O` nwa
2. **S>m° aKwamO cg h hmS>m**
   ny d©a YmZmMm ì © CÀM _mÜ` {_H$ {dÚmb ` (amO ñWmZ g aH$ma)
   P mb mdmS>>(amO ñWmZ)
3. **S>m° JmaY Zcg h e b m dV**
   {ZXe H$ I r H$ U g Ëg § ~ nYb H$ m_hm{dÚmb `
   g rH$a (amO ñWmZ)
4. **S>m° A O dXd MmaU**
   A Ü j , amO ñWmZ r {d^ mJ
   O` Zmam` U ì` mg {d í d{dÚmb `, OmY nwa

gånmXZ Ed§nmR>H$_- b b Z

gånmXH$

àmo H$ì` mbJ cg h e b m dV

nam_e Xm Ym, amO ñWmZ r H$m ì e\$_

dY©mZ _hmdra I Vw m{d í d{dÚmb `, H$moQ>m

b b H$

1. **S>m° JmaY Zcg h e b m dV** — **BH$mB© 9, 12**
   ny d©I ` m> ` mYm({hÝXr)
   I r VmXr H$m O, b ú_UJT> g rH$a (amO ñWmZ)
2. **S>m° _§ V ~ mXb** — **BH$mB© 1,2,3,4,5 6,10,11**
   ny d©{d^ mJmÜ j {hÝXr {d^ mJ (g dm{Z.)
   e hrX ^ JVcg h ñZmVH$m Îma _hm{dÚmb `
   am cg h, I rJ§mZJa (amO.)
3. **S>m° Cf m {dÚa amR>m S>>** — **BH$mB© 7, 8, 14**
   amO ñWmZ r e mY g§WmZ
   Mm rg Zr, OmY nwa (amO)
4. **Owb n[ahma** — **BH$mB© 15**
   g hm H$ gånmXH$
   "_mbJH$ _m{g H$
   Ob mar JQ> OmY nwa (amO.)
5. **S>m° H$ì` mbJ cg h e b m dV** — **BH$mB© 13**
   ny d©A mYm ©Ed§A Ü j
   amO ñWmZ r {d^ mJ
   O` Zmam` U ì` mg {d í d{dÚmb `, OmY nwa (amO)

A H$mX{_H$ Ed§àe mg {ZH$ ì` dñWm

àmo (S>m°) Zae XmYrM	**àmo (S>m°) A Zm_ OQ>b r**	**` mo\$ Jmb**
H$b n{V	{ZXe H$	à^ mar A {YH$mar
dY©mZ _hmdra I Vw m{d í d{dÚmb `, H$moQ>m	**g§H$m {d^ mJ**	**nmR> g m_J r CËnmXZ Ed§{dVaU {d^ mJ**

nmR>H$_ CËnmXZ

` mo\$ Jmb

g hm H$ CËnmXZ A {YH$mar

dY©mZ _hmdra I Vw m{d í d{dÚmb `, H$moQ>m

CËnmXZ : Zdå~a 2009 **ISBN - 13/978-81-8496-143-0**

**g dm{YH$ma gw{j V :** Bg g m_J r H$ {H$gr ^ r A § H$ dY©mZ _hmdra I Vw m{d í d{dÚmb `, H$moQ>m H$ {b {I V A Zw{V H$ {~ Zm {H$gr ^ r ê$n _| "{_{_` mJm\$' (MH$_ mU) H$ Ûmam ` mA Ý Wmnw: àñVwV H$aZ H$ A Zw{V Zht h¡&

H$b g{Md, d._.I w{d í d{dÚmb `, H$moQ>m Ûmam dY©mZ _hmdra I Vw m{d í d{dÚmb `, H$moQ>m H$ {b ` o_w{ÐV Ed§àH$m{e V&

Xr S>m _ÊS>>{àpÝQ>J àg, O` nwa Ûmam 500 à{V` m§_w{ÐV&

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य

इकाई सं.	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
	खण्ड– I	
1.	राजस्थानी गद्य साहित्य– परम्परा अर विकास	1–9
2.	राजस्थानी भासा गद्य री पुराणी विधावां	10–26
3.	आधुनिक राजस्थानी भासा गद्य री – प्रमुख विधावां अर कथ्य	27–38
	खण्ड– II	
4.	राजस्थानी भासा रा उपन्यास – उदभव अर विकास	39–45
5.	प्रमुख उपन्यासकार – अन्नाराम सुदामा (प्रमुख उपन्यास– मेवै रा रूख)	46–66
6.	प्रमुख उपन्याकार – श्रीलाल नथमल जोशी (प्रमुख उपन्यास – धोरां रो धोरी)	67–83
	खण्ड– III	
7.	आधुनिक राजस्थानी कहाणी – उद्‌भव अर विकास	84–91
8.	आधुनिक राजस्थानी कहाणी – परिभासा, तत्व अर सिल्प	92–98
9.	प्रमुख कहाणीकार – मुरलीधर व्यास	99–114
10.	प्रमुख कहाणीकार – करणीदान बारहठ	115–133
11.	प्रमुख कहाणीकार – बैजनाथ पंवार	134–151
12.	प्रमुख कहाणीकार – नृसिंह राजपुरोहित	152–166
	खण्ड– IV	
13.	आधुनिक राजस्थानी निबन्ध साहित्य – प्रमुख निबंधकार – डॉ. मनोहर शर्मा	167–176
14.	प्रमुख निबंधकार – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत	177–189
	खण्ड– V	
15.	राजस्थानी भासा रा नाटक अर एकांकी – उद्‌भव अर विकास	190–202

आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य

खण्ड परिचय

खण्ड – I **इकाई 1**

इण इकाई में राजस्थानी भासा री गद्य परम्परा अर विकास री जाणकारी दी गई है। एम.ए. पूर्वाद्ध राजस्थानी साहित्य रा विद्यार्थियों नै जुगां जूनी राजस्थानी भासा री लेखन परम्परा सूं रूबरू करावण खातर इण इकाई में पूरी विगत मांडी गई है।

इकाई 2.

इण में राजस्थानी भासा गद्य री पुराणी विधावां री जाणकारी कराई गई है। राजस्थानी री जूनी गद्य विधावां में अपार साहित्य री सिरजणा हुई है। आं गद्य विधावां में अलग–अलग विसय अर सैलीगत दीठ सूं भी भांत–भांत रो साहित्य लिखीज्यौ है। ज्यूं वचनिका, दवावैत, टीका, टब्बा, बालावबोध, ख्यात, वात, विगत, गुरुरावली, पट्टावली, वंसावली, रुक्का, पट्टा, परवाना आद।

इकाई 3.

आ इकाई राजस्थानी भासा री आधुनिक गद्य री विधावां री जाणकारी करावण सारू लिखीजी है। आधुनिक गद्य री प्रमुख विधावां में उपन्यास, कहाणी, निबंध, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रिपोरताज, रेखाचित्र डायरी, रूपक आद रो परिचय इण इकाई में दिरीज्यौ है।

इकाई 4.

इकाई में राजस्थानी भासा री प्रमुख आधुनिक गद्य विधा, उपन्यास रै उद्भव अर विकास रो दरसाव है। उपन्यास लिखण री जूनी परम्परा राजस्थानी भासा में कोनी ही, आ नुंवी विधा है जकी आथूण जगत सूं आई है। उपन्यास री परिभासा अर तत्व कुणसा है? प्रमुख उपन्यासकार अर उणांरा लिखयौड़ा उपन्यासां री विगत इणमें मंडी है।

खण्ड – II **इकाई 5.**

आ इकाई राजस्थानी भासा रा प्रमुख उपन्यासकार अन्नाराम सुदामा री जीवनी अर लेखन पर आधारित है। अन्नाराम सुदामा नामी उपन्यासकार है अर उणांरो रचयौड़ो उपन्यास 'मेवै रा रूंख'– राजस्थानी भासा री प्रतिनिधि गद्य रचना है। अन्नाराम सुदामा रा इण उपन्यास रो आलोचनात्मक लेखन इण इकाई में हुयौ है। अन्नाराम सुदामा री लेखन सैली अर राजस्थानी भासा नै उणारी देन पर भी ठोस चरचा इण इकाई में हुई है।

इकाई 6.

इण इकाई में राजस्थानी भासा रा दूजा चावा उपन्यासकार श्रीलाल नथमल जोशी अर उणारै लेखन पर विवेचन हुयौ है। श्रीलाल नथमल जोशी रो उपन्यास– 'धोरां रो धोरी'– इटली देस रा उण साहित्य साधक री जीवनी पर है जको इटली सूं आय'र राजस्थानी भासा रा ग्रंथां पर सोध परक लेखन अर उणां रो सम्पादन करियौ। खुद री मायड़ भासा रै साथै पराई भासा राजस्थानी सीखणी अर उणमें पारंगत हूवणो–घणी महताऊ बात है। डॉ. एल.पी. तैस्सीतोरी ही बो इटेलियन साधक हो। ओ उपन्यास उण जिज्ञासु परदेसी विद्वान नै श्रद्धा री अंजळी रै रूप में आखरां ढळ्यौ है।

खण्ड – III इकाई 7.

इण इकाई में आधुनिक राजस्थानी भासा री खास गद्य विधा कहाणी रा उद्‌भव अर विकास री सांगोपांग जाणकारी कराई गई है। कहाणी आज रा गद्य री प्रमुख विधा है।

इकाई 8.

आ इकाई राजस्थानी भासा री कहाणी विधा री परिभासा, उणरा तत्वां अर सिल्प रै सम्बंध में विद्यार्थियों नै जाणकारी देवण सारू लिखीजी है। विदेसी अर भारतीय समालोचक कहाणी री अलग–अलग परिभासावां दी है पण उणरा तत्व तो एक समान है। इणी भांत आज रा कहाणी सिल्प पर चरचा भी इण इकाई में हुई है।

इकाई 9.

आ इकाई राजस्थानी भासा रा प्रमुख कहाणीकार **मुरलीधर व्यास री जीवनी** अर उणांरी कहाणी लेखन कला बाबत लिखीजी है। मुरलीधर जी व्यास आज री राजस्थानी कहाणी नै नुवों सोच, सिल्प, सैली अर भासा रा नुवा प्रयोग दिया है। उणां री इणी देन रो लेखो–जोखो इणमें हुयौ है।

इकाई 10.

ईं इकाई में आधुनिक राजस्थानी कहाणी रा सिरै लेखक **करणीदान बारहठ** रै जीवन अर सिरजण पर समीक्षात्मक ढंग सूं लेखन हुयौ है। उणांरी कहाणियां की कथावस्तु वातावरण, पात्र, भासा, सैली, संवाद, उद्देस्य जैड़ा तत्वां नै सामी राख निरख–परख करणो इकाई रो ध्येय रियौ है। गाँव री कथा, बठां रा पात्र, वातावरण, समस्यावां अर भासा करणीदान जी की कहाणियां री विसेसतावां है।

इकाई 11.

इण इकाई में **बैजनाथ पंवार** जैड़ा राजस्थानी रा नामी कहाणीकार री विगत मंडी है। बैजनाथ पंवार राजस्थानी भासा में मोकळी कहाणियां रची है। जिणां में राजस्थानी माटी री सौरभ अर संस्कृति रूपाळारूप में सबदां ढळी है। राजस्थानी भासा रा इण मोबी कहाणीकार री कहाणियां में मरूधरा रो मानखो अर उणरी अबखायां जथारथ रो रूप लियौ है।

इकाई 12.

आ इकाई राजस्थानी भासा रा प्रमुख कहाणीकार **नृसिंह राजपुरोहित** रा जीवन अर लेखन री जाणकारी करावण वाळी है। नृसिंह पुरोहित री प्रसिद्ध कहाणी 'विदाई' नै आधार बणा'र लेखक रा रचना कर्म री परख ईं इकाई में हुई है। राजस्थानी पात्र, अठां री कथा, इण धरती री रंगत अर घर–समाज की विगत नृसिंह रापुरोहित री मंजयौड़ी कलम रै पाण कहाणी विधा रो सिगगार रच्यौ है। लेखक समस्यावां पाठवां सामी राखी है अर उणां रा समाधान भी।

खण्ड – IV इकाई 13.

इण इकाई में आधुनिक राजस्थानी भासा री सबळी गद्य विधा निबंध साहित्य पर चरचा हुई है। निबंध किणनै कैवै उणरी, परिभासा अर तत्व कांई है? राजस्थानी रा गिणावणा जोग निबंधकार अर उणांरा खास निबंध किसा है– अे सगळी बातां इण इकाई में समायौडी है।

इणमें राजस्थानी भासा रा मान्यौडा निबंधकार **डॉ. मनोहर शर्मा** रा जीवनवृत अर सिरजण री जाणकारी दी गई है। साथ ही डॉ. मनोहर शर्मा री कांई देन है उण पर भी मंथन हुयौ है।

इकाई 14.

ईं इकाई में राजस्थानी भासा प्रमुख निबंधकार डॉ. कल्याणसिंह शेखावत री जीवनी अर लेखन पर विचार हुयौ है। डॉ. शेखावत रै निबंध लेखन सैली, उणां री भासा, निबंधां री सामग्री इण इकाई रो आधार है। डॉ. कल्याण सिंह शेखावत री अजेलग तीन निबंध पोथ्यां छपी है जिणां में विसयवस्तु रो विस्तार अर वैविध्य निरवाळो है।

खण्ड – V **इकाई 15.**

इण इकाई में आधुनिक राजस्थानी भासा री दो गद्य विधावां– एक नाटक अद दूजै एकांकी साहित्य रो सांतरो परिचय दियौड़ौ है। आज तक जका नाटक अर एकांकी राजस्थानी भासा में लिखीज्या है– उणां री सांगोपांग जाणकारी इणमें दी गई है। साथ ही खास–खास नाटककारां अर एकांकीकारा री विगत भी आखरां ढळी है।

इकाई 1

राजस्थानी गद्य साहित्य परम्परा अर विकास

इकाई री रूपरेखा (विगत)

1.0 उद्देस्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 राजस्थानी भासा अर गद्य रौ उदय

1.3 राजस्थानी रौ प्राचीन गद्य

1.3.1 धारमिक गद्य साहित्य (बालावबोध/टब्बा)

1.3.2 ऐतिहासिक गद्य साहित्य (पट्टावली/दफतरी बही/ पीढ़िया/ वंसावली/ हकीकत/ हाल/ याददास्त/ तहकीकात)

1.3.3 कलात्मक गद्य साहित्य (ख्यात, वचनिका, दवावैत, विगत, सिलोका, बात)

1.3.4 वैज्ञानिक गद्य साहित्य उदाहरण (टीका/अनुवाद)

1.3.5 प्रकीर्णक गद्य साहित्य (प्रसस्ति लेख/तांबा पतर/ सिलालेख)

1.4 इकाई रौ सार

1.5 अभ्यास रा सवाल

1.6 संदर्भ ग्रंथ

1.0 उद्देस्य –

एम.ए.पूर्वार्द्ध (राजस्थानी) रै पाठ्यक्रम प्राचीन अर मध्यकालीन गद्य री इण इकाई में राजस्थानी भासा रै प्राचीन साहित्य री परम्परा अर विकास री प्रस्ठभोम रौ अध्ययन कर्‌यो जावैला कै राजस्थानी भासा अर गद्य रो उदय किण भात हुयौ ? इण बाबत गहराई सूं विचार करणौ, इण इकाई लेखन रौ उद्देस्य है विचार रा बिन्दु है –

1. राजस्थान भासा री उतपत किण भांत हुई ?
2. राजस्थानी भासा रा गद्य रौ उदय किण भांत हुयौ ?
3. राजस्थानी भासा रा प्राचीन गद्य री विधावां अर विसय सामग्री री जाणकारी करावणी।
4. जूना राजस्थानी गद्य री ख्यात, वात, दवावैत, वंसावली, बालाबबोध, टब्बा, पीढिया, टीका, तांबा पतर, सिलालेख आदि री विगतवार जाणकारी पाठक नै करावणी।

1.1 प्रस्तावना

इण पाठ्यक्रम प्राचीन अर माध्यकालीन गद्य में भासा रा जूना गद्य साहित्य अर उणरी परम्परा अर विकास माथै विचार कर्‌यौ जावैला।

आधुनिक दौर रै राजस्थानी साहित्य नै समझण खातर प्राचीन गद्य साहित्य परम्परा नै समझणौ पड़ैला। आज री राजस्थानी भासा री किण तरै उतपत हुई अर उणरा गद्य रौ उद्‌भव किण भांत हुयौ? आ जाणकारी ईं इकाई में दी जावैला।

1.2 राजस्थानी भासा अर गद्य रौ उदय

राजस्थान भासा घणी ही समरद्ध अर रूपाळी है। इणमें मारवाड़ी, ढूढ़ाणी, हाड़ौती, मेवाड़ी, सेखावाटी, माळवी, बागड़ी आद खास बोलियां है। राजस्थानी भासा जुगा जूनी, सुतंत्र अर सम्पन्न भासा है। विक्रम री तेरहवीं सदी सूं राजस्थानी पद्य री मोकळी विधावां अर भासा सैलियां में अपार साहित्य रौ सिरजण हुयौ अर आज ई आ परम्परा सजीव है।

राजस्थानी भासा में जूनौ गद्य पन्द्रहवी सदी में ''परथ्वीचंद चरित'' या वाग्विलास'' नामक विसेस ग्रंथ मिळै है। जको राजस्थानी गद्य काव्य रौ चोखौ उदाहरण है। इण गद्य सूं वरणात्मक गद्य सैली री परिपक्वता रौ पतो लागै है। इणरै पछै तुकान्त गद्य वाळा अर वरणात्मक विसेस गद्य ग्रंथ राजस्थानी में लगातार बणता रैया है। जिणरी जाणकारी इण लेख रौ उदेस्य है।

राजस्थानी रा चावौ छंदसास्त्र रा ग्रंथ ''रघुनाथ रूपक'' में खास–खास राजस्थानी छंदां अर गीतां रा लक्षण अर उदाहरणां रै पछै गद्य साहित्य रा भेद दियौड़ा है – दवावैत अर वचनिका। आ दोनूं रा भी दो दो भेद कर्‌या गया है – दवावैत रा सुद्धबन्ध अर गद्यबन्धू अर वचनिका रा पदबन्ध अर गद्यबन्ध ।

''तवै मंछ कवि है, तिकै दवावैत विद्य दोय,
एक शुद्धबन्ध होत है, एक गद्धबन्ध होय।''

राजस्थानी गद्य काव्य में तुक मिलाण रौ विसेस ध्यान राख्यो जावतो हो, 'वचनिका' अर 'दवावैत' रचनावां तुकान्त प्रधान है।

दवावैत अर वचनिका रै अलावा राजस्थानी गद्य परम्परा में 'सिलोका' नाम री रचनावां भी मिळै।

16 वीं सदी में अेक खास बरणात्मक जैन ग्रंथ जैसलमेर रै जैन भण्डार सूं मिळ्‌यौ है जको अधूरो है। उणरौ नाम हाथ लिखी पोथी रै हासिये में 'मुत्कलानुप्रास' लिख्यौड़ो है। इण रौ अेक उदाहरण ऊनाळा रितु रौ बरणाव इण गत है :–

''महा पित्रुनउ आलउ, आव्यो उन्हालउ,
लूय वाजइ, कान पापड़ि दाझइ।
झाझूआ वलइं हेमाचलना शिखर गलइँ
निवांटे खुटइ नीर, पहिरड आछा चीर।''

औ ग्रंथ बरणात्मक ग़द्य रौ ओपतो ग्रंथ है। इण रौ रचनाकाल 15 वीं सदी रै अंत या 16 वीं सदी रै सुरू में मानीज्यौ है।

18 वीं सदी में ''सभा श्रृंगार'' 'कुतुहलम्' आद घणा ई बरणात्मक ग्रंथ मिळै है, इण सदी री दोय रचनावां चारण कवियां री मिळै, जिणमें ''खीचीं गंगेव नीबावतरो दो–पहरौ'' अर ''राजान राउत रो वात–वणाव'' अै दोनूं महताऊ ग्रंथ है। खींची गंगेव नीबावत रौ दौ–पहरौ'' में उत्तर मध्यकाल री भासा–सैली में लिखयौड़ा है। इणमें बरखा रूत रौ बरणाव घणौ सांतरो है। इणरौ अेक उदाहरण इण गत है –

''बरखा रितु लागी, विरहणी जागी,
आका झर हरै, वीजां आवास करै।
नदी ठेबा खावै, समुद्रे न समावै।
पाहाड़ा पाखर पड़ी, घटा ऊपड़ी।''

18 वीं सदी में दवावैत संज्ञक दोय रचनावां मिळै। जिणमें पैली ''नरसिंहदास गौड़ री दवावैत'' भाट मालीदास रचित है अर दूजी ''दवावैत जैनाचार्य जिनलाभ सूरि री रचयौड़ी मिळै। इणरी रचना याचक विनय भक्ति (वस्तुपाल) 19 वीं सदी रै सुरु में करी ही।

20 वीं सदी री रचनावां में ''षिखर वंषोत्पति'' नामक अेक ऐतिहासिक काव्य वि.सं. 1926 में कविया गोपाल बणायो, जिणरो पुरोहित हरिनारायण जी सम्पादन कर काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी सूं छपवायौ, इणरौ नांव ''पीढ़ी वार्तिक'' भी है।

16 वीं सदी रै पूर्वार्द्ध ताईं राजस्थान अर गुजरात री भासा अेक ही, इण खातर ''सभा श्रृंगार'' में गुजराती भासा रौ पुट देखण नै मिळै। इण तरै राजस्थानी रौ प्राचीन गद्य रौ उद्‌भव जुग रा दरसाव दरसावती भांत–भांत री विधावां रै रूप में सांमी आयौ है।

राजस्थानी भासा आपरै भौगोलिक खेतर, जनसंख्या अर विसाळ, विविध उच्च कोटि रा साहित्य रै कारण भारतीय भासावां में आपरौ सिरै स्थान राखै है।

डॉ. ग्रियर्सन राजस्थानी भासा री उतपत नागर आपभ्रंश सूं मानी है, रिचर्ड पिंशल अर एल.पी. टेस्सीटोरी सौरसैनी अपभ्रंश सूं मानी है। श्री मुनि जिनविजय गुर्जरी अपभ्रंश सूं राजस्थानी भासा री उतपत मानी है।

1.3 राजस्थानी रौ प्राचीन गद्य

मध्यकालीन राजस्थानी गद्य आपरी समकालीन गद्य सैली में लिख्यौ जावतों रैयौ है। मध्यकाल में ऐतिहासिक गद्य घणखरी विधावां में लिखीज्यो। 14 वीं सदीं सूं लैयर अजै तांई राजस्थानी भासा में गद्य रो लेखन घणो हुयो है। राजस्थानी रै गद्य साहित्य नै खास तौर सूं पांच भांगां में बाट्यों जा सकै है–

(क) धारमिक गद्य साहित्य

(ख) ऐतिहासिक गद्य साहित्य

(ग) कलात्मक गद्य साहित्य

(घ) वैज्ञानिक गद्य साहित्य

(ड़) प्रकीर्णक गद्य साहित्य

1.3.1 धारमिक गद्य साहित्य

जैन धारमिक गद्य टीकावां रै रूप में ई हिज मिळै अर सुतंत्र रूप में टीकावां दो रूपां में मिळै ''बालावबोध अर टब्बा''।

(1) **बालावबोध** – बालावबोध रौ मतलब सरल नै सुबोध टीकावां सूं है। जिणसूं बालक–बालिकावां नै ग्यान दियौ जावै। इणमें मूळ लेखन री व्याख्या रै सागै कैई बालाबबोध मिळै। जैनागम में सबसूं बिसाल या मोटो ग्रंथ भंगवततीर बालावबोध है। 1411 वि.सं. में रचयौड़ी आचार्य तरूणपत्र सूरि री ''सडावस्यक बालावबोध'' राजस्थानी गद्य री पैली रचना मानीजै।

(2) **टब्बा** – ''टब्बा'' सबद संस्कृत भासा रौ रूप स्तवक (संस्मरण) है। टब्बा रौ मतलब किणी लेखन रौ सार समझावणौ है। टब्बा री सैली न्यारी निरावळी व्है है। इणमें मूळ सबद रौ आखर उणरै ऊपर अर नीचै लिख्यो जावै है। छोटी टीकावां नै टब्बा कैवे।

1.3.2 ऐतिहासिक गद्य साहित्य

ऐतिहासिक गद्य साहित्य में दौ तरै री गद्य रचनावां लिखी जावती जिणमें जैन ऐतिहासिक गद्य अर जैनैतर ऐतिहासिक गद्य। औ गद्य ख्यात, वात, विगत, तवारीख, कुरसीनामा, वंसावळी, हाल, अहवाल, वारता, पट्‌टा, परवाना, आद, मोकली विधावां में आखरां ढळयौ है। गद्य री भांत पद्य रूप में भी ऐतिहासिक साहित्य राजस्थानी भासा में घणो लिखीज्यौ है ज्यूं वचनिका, दवावैत,

नीसाणी, छप्पय, कवित, रूपक, झमाल, झूलणा, मरसिया, गीत, दूहा, छंद आद।

(क) जैन ऐतिहासिक गद्य – जैन विद्वानां ऐतिहासिक गद्य भी घणी मात्रा में लिख्यो है, इणमें खासतौर सूं पट्टावली, दफतरी बही (डायरी) आद मिळै।

(i) पट्टावली – पट्टावली में जैन गच्छां रौ वरणात्मक और क्रमबद्ध बरणाव मिळै। इणनै लिखण री परम्परा घणी जूनी है। पट्टावली रा उदाहरण में 'कडुआ मत पट्टावली', 'नागौरी लुंकागच्छीय पट्टावली', 'बेगडगच्छ पट्टावली' आद खास है।

(ii) दफतरी बही (डायरी) – किणी बात नै याद राखण खातर संचय रै रूप में कुछ लिख्यौड़ी बहिया भी मिळै, जिणा में रोजाना री दिन री विगत रौ संग्रै रैवे है राजस्थान रै राजघराणा में राजस्थानी भासा नै लैयर दैनिक व्यवहार अर राजकाज खातर करयौड़ा काम काज रौ सम्मान मिळयां वांरौ बरणाव भी मिळै है।

(ख) जैनेतर ऐतिहासिक गद्य – इणमें जैनां रै अलावा दूजा लेखकां कानी सूं रचयौड़ो पीढ़ियां, वंसावळी, हाल, याददास्त, तहकीकांत रै रूप में गद्य साहित्य मिळै।

(i) पीढ़ियां – पीढ़ियां में ऐतिहासिक मानवियां री वंस परम्परा रौ वरतान्त मिळै। इणरां उदाहरणां में ईडर रा धणी राठौड़ा री पीढ़ियां, हम्मीरोत भाटियां री पीढ़ियां, भायला री पीढ़ियां, चन्द्रावतां री पीढ़ियां, जागीरदारा री पीढ़ियां आद रचनावा मिळै।

(ii) वंसावली – वंसावली में किणी ऐतिहासिक मानवी अर राजावां री वंसावली दियौड़ी मिळै। वंसावली लिखण रौ काम बही भाट्ट करतां हा। वंसावली रा उदाहरणां में राठौडां री वंसाावली, उदयपुर रा राजावा री वंसावली, सिसोदिया री वंसाावली, ओसवाळां री वंसाावली आद खास है।

(iii) हकीकत – हकीकत रौ मतलब जथारथ री घटना सूं है। इणां रौ उदेस्य किणी घटना, जागां विसेस अर राजवंस रै बारे मे सांची जांणकारी रौ बोध करांणौ है। इण रा उदाहरण में 'मनसब री हकीकत', 'हाडां री हकीकत' 'पातसाह औरंगजेब री हकीकत' आद गिणावण जोग हैं।

(iv) हाल – हकीकत अर हाल में किणी घटना या प्रसंग रौ बरणाव मिळै। आ परम्परा मुगलां रै प्रभाव सूं राजस्थानी गद्य में आई है। इणरा उदाहरणां में ''सांखला दहियां सूं जांगळू लियो तेरो हाल'' सिरै रचना है।

(v) याददास्त– याद राखण खातर फुटकर टिप्पण रै रूप में लिखी गयी बातां नै अर घटनावां नै याददास्त कैयौ गयो है। इणरा उदाहरणां में ''दिल्ली रा पातसाहां री याद'', ''राव जोधाजी बैड़ांकियां री याद'' आद भी मिळै।

(vi) तहकीकात – इणमें किणी मामला री जांच–पड़ताल रौ बरणाव मिळै। इणरौ उदाहरण 'जयपुर वारदात री तहकीकात है।

1.3.3 कलात्मक गद्य साहित्य

राजस्थानी रौ कलात्मक गद्य साहित्य भी घणौ लूंठो है इणमें ख्यात, बात, विगत, वचनिका, दवावैत, सिलोका अर वरणात्मक ग्रंथ मिळै। औ गद्य घणौ लूंठौ है।

(1) **ख्यात साहित्य** – ''ख्यात'' सबद संस्कृत भासा रै 'ख्याति' सबद रौ अपभ्रंस रूप सूं मानीजै इणमें किणी राजवंस, साम्राज्य अर व्यक्ति विसेस री जीवण घटनावां रौ बरणाव मिळै। 16 वीं सदी रै लगैटगै अकबर रै पछै ख्यात लेखन परम्परा सुरू हुई। डॉ. गौरी शंकर हीराचंद ओझा रै मुजब ख्यात ऐतिहासिक गद्य रचना नै कैयो जावै है, जिणमें राजपूत राजावांरै इतिहास री घटनावां रौ वंस बरणाव मिळै।

प्रो. राधेश्याम त्रिपाठी ख्यातां रा च्यार भाग कर्‌या है – ''इतिहास परक ख्यात, वारतां परक ख्यात, व्यक्ति–परक ख्यात, स्फुट–ख्यात''।

ख्यातां रा उदाहरणां में –

(i) **मुहता नैणसी री ख्यात** – मुहणोत नैणसी री वि.सं. 1709 में लिख्योड़ी ख्यात घणी महताऊ हैं। इण ख्यात में कैई राजघराणा री छोटी–मोटी बातां रौ लेखौ मिळै। नैणसी जोधपुर रा महाराजा जसवंत सिंह रौ दीवान हो। आ ख्यात राजस्थानी गद्य री घणी जूनी नै प्रौढ़ रचना कैयी जा सकै है।

(ii) **दयालदास री ख्यात**– राजस्थानी रै ख्यातकारां में दयालदास सिढ़ायच रौ नाम भी घणो महताऊ है। 19 वीं सदी रै लगैटगै री आ ख्यात बीकानेर रै राजा रतनसिंह रै आदेस मुजब दयालदास री लिखी थ्यौड़ी है जिणमें राव बीकां सूं लेयर महाराजा सरदारसिंह रै राज्यारोहण तांई रौ इतिहास रौ बरणाव सामी राखै। बीकानेर रै इतिहास री जाणकारी री खातर आ ख्यात घणी महताऊ है।

(iii) **बाँकीदास री ख्यात**– बांकीदास री ख्यात पं. नरोतमदास स्वामी रै सम्पादन में कैई ऐतिहासिक जाणकारियां नै क्रमबद्ध रूप में लिखी जी है। इणमें चौहान, हाडा, गहलोत, राठौड़ आद वंसा रै राजावां रौ इतिवरत दियौ गयौ है। इणमें 200 बातां रौ संग्रह करयो गयो है।

(iv) **जोधपुर रा राठौड़ा री ख्यात** – इणमें राव जोधाजी सूं लेयर महाराज मानसिंह रै जीवणवृत, सासन–व्यवस्था अर उणांरी राण्यां आद रौ बरणाव मिळै।

(v) **किशनगढ़ री ख्यात** – किशनगढ रै इतिहास नै जाणबा खातर आ घणी महताऊ रचना है। आ महाराजा मानसिंह जोधपुर रै समै में लिखी गई है। इणमें महाराजा किसनसिंह रै जीवण बाबत मोकळी जांणकारी मिळै।

(vi) **महाराजा मानसिंह री ख्यात** – इणमें जोधपुर री महाराजा मानसिंह रै जीवण सम्बन्धी जांणकारी दियोड़ी है। आ ख्यात खिड़िया आईदान री लिखयौड़ी है।

इणरै अलावा ख्यात साहित्य में महाराज अजीतसिंह री ख्यात, जैसलमेर री ख्यात, उदयपुर री ख्यात, मूंदीयाड़ री ख्यात, गौड़ां री ख्यात आद भी मिळै।

इण तरै राजस्थानी गद्य साहित्य में ख्यात साहित्य रौ घणी चावी ठावी ठौड़ रैयी है।

(2) **वचनिका साहित्य** – राजस्थानी रै कलात्मक गद्य में ''वचनिका'' रौ भी चांवौ ठांवौ नाम है। 'वचनिका' सबद संस्कृत भासा रै 'वचन' सबद सूं निपज्योड़ौ है। इणांरो लेखन 14 वीं सदी सूं सुरु हुयौ हैं। वचनिका चम्पू काव्य रूप री तुकान्त गद्य री रचना है। इणां रा दोय रूप 'गद्यबद्ध' रूप में मिळै। 'गद्यबद्ध वचनिका' में चारणी अर 'जैन सैली री वचनिका 'घणखरी मिळै।

(क) **चारणी सैली री वचनिका** – इणमें चारण कवियां री लिखी रचनावां घणी

मिळै। इणमें दो वचनिका घणी चावी रैयी है। एक 'अचळदास खींची री वचनिका' अर दूजी 'वचनिका राठौड़ रतन सिंह महेसदासोत री' है।

(i) **अचलदास खींची री वचनिका** – आ वचनिका सिवदास गाडण री रचयौड़ी है। सिवदास गागरूण रा धणी अचलदास खींची रौ राजकवि हो । जद हुसंगसाह गोरी गागरूण पर चढाई करै तद अचलदास खींची उण सूं जुद करै। इणरो आंख्या देख्यो हाल सिवदास लिख्यौ है। आ वचनिका डिंगळ री सिरै रचना मानीजै है। इणमें राजपूती सौर्य अर जौहर रा बरणाव घणा सांतरा है।

(ii) **वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री** – आ रचना जग्गा खिड़िया रचित है। इणमें रतलाम रा सासक रतनसिंह री 'धरमत जुद्ध' में वीरता अर बलिदान रौ वरतान्त मिळै।

(ख) **जैन सैली री वचनिका** – इणमें जैन, यति, मुनि रचित वचनिकावां मिळै। इणमें तुकान्त गद्य रौ प्रयोग घणौ निराळै ढग सूं कर्‌यौ गयौ है।

(i) **जिनसमुद्रसूरि री वचनिका** – इणमें जैसलमेर रै खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिन समुन्द्रसूरि नै मारवाड़ रा राजा राव सातल उणांरै जस अर कीरति रो मान करता थकां उणां नै सम्मान सारू बुलाया–उण विगत रौ सांतरो बरणाव इण पोथी में करयौड़ो है।

(ii) **शांतिसागर सूरि री वचनिका** – इणमें खरतगच्छ री साखा रै खास खरतरगच्छाचार्य श्री सांतिसागर सूरि री कीरती अर जीवणी सूं सम्बन्धं राखणवाळी घटनावां रौ वरतांत दियौड़ा है।

(iii) **माताजी री वचनिका** – आ रचना जैन यति जयचंद री मारवाड़ रा कुचेरा गांव में वि.सं. 1776 में लिख्यौड़ी है। इणमें सगती रै अवतार दुरगा मां रौ जसगान कर्‌यो गयो है।

(3) **दवावैत साहित्य** – राजस्थानी कलात्मक गद्य में 'दवावैत' री भी खास ठौड़ है। 'वैत' सबद अरबी भासा रौ है। दवावैत में उर्दू नै फारसी–सबदा री भरमार रैवे। 17 वीं सदी रै लगैटगै इण रौ विकसाव हुयौ। इणारा दोय भेद है एक पद्यबद्ध अर दूजो गद्यबद्ध दवावैत, इणमें भी चारणी सैली अर जैन सैली री दवावैत रा दो भेद मिळै।

राजस्थानी भासा री सैं सूं पुराणी दवावैत ''नरसिंहदास गौड़ री'' है जकी भाट्ट मालीदास गंगादास रै पोता नै कही है ओ वरणाव लिखयौड़ो है।

चारण सैली री दवावैत

(1) महाराजा अजीतसिंह री दवावैत

(2) बीकानेर महाराजा सरदारसिंह री दवावैत

(3) असमाल देवड़ा री दवावैत (बिहारीदास मेहडू)

(4) दवावैत उदयपुर का वर्णन (किसना आढ़ा)

(5) दवावैत चूंडावत देवीसिंह री (भादा किरपाराम)

(6) दवावैत महाराणा जवानसिंह री (तेजाराम आसिया)

(7) दवावैत छत्रसिंह रामसिंघोत री (कवि चैल री कही)

(8) राजा जयसिंह री दवावैत (डूंगरसी–बागड़ी)

जैन सैली री दवावैत – इण सैली री एक ही दवावैत अजै मिळी है जिणरौ नाम है महाराज लखपत री दवावैत (कुंवर कुसल) इणमें महाराज लखपत री कीरत रौ वरणाव मंड्यौ है । इण तरै दवावैतां में उण जुग रा चारण कवियां द्वारा राजा री वीरता रौ बरणाव करयो गयो है। इणामें राजस्थानी संस्कृति रो चित्रण भी मिळै।

(4) विगत साहित्य – राजस्थानी भासा में ख्यात री ज्यूं विगत रौ भी घणौ महत्व है। विगत में किसी वंस, गांव परगना, भाखर, कुआ, गढ आद रौ क्रमबद्ध बरणाव मिळै। औ अेक तरै सूं ऐतिहासिक टिप्पण हैं जिणमें बित्यौड़ी घटनावां रौ लेख मिळै। इण रा उदाहरणां में मेवाड़ रा भाखरां री विगत, कछवाह सेखावतां री विगत, सिसोदिया चूंडावत साख री विगत, गेहलोतां री चौबीस साखावां री विगत, गढ़–कोटां री विगत, मारवाड़ रा परगनां री विगत आद पोथ्यां मिळै।

(5) सिलोका साहित्य – इण विधा में देवी–देवतावां अर वीर सापुरसां री महिमा रौ गुणगान मिळै। औ बरतान्त जनसाधारण कानी सूं रचियो गयो हैं। इणनै बोळण री अेक विसेस लय सैली होवै है। । 'सलोका' सबद रौ मूळ सबद 'श्लोक' है। ''कुंवर विजय–हीर विजय सूरि सिलोको'' सैं सूं पुराणी रचना है।

सिलोका साहित्य नै पांच भागा में बांट्यौ जा सकै है –

(i) धारमिक सिलोका – सरसती रौ सिलोको, राम–लिछमण रौ सिलोको, सूरजजी रो सिलोको ।

(ii) जैन सिलोका – महावीर रौ सिलोको, रिखबदेव जी रो सिलोको, आबू तीरथ जी रौ सिलोको।

(iii) ऐतिहासिक सिलोका – इणमें इतिहास रा चावा वीरां सूं सम्बन्धित सिलोका मिळै।

(iv) उपदेसात्मक सिलोका – इणमें नीति अर व्यवहार री बातां रौ उपदेस परक बरणाव कर्यौड़ो है।

(अ) दूजा सिलोका – राव अमरसिंह रो सिलोको, अजमाल जी रौ सिलोको, भाटी केहरसिंह रौ सिलोको, महाराजा मानसिंह रौ सिलोको।

इण तरै जैन मुनि अर यतियां इण तरै री रचनावां रै निरमाण में घणौ सहयोग कर्यौ है।

(6) बात साहित्य – 'बात' सबद संस्कृत भासा रै 'वारता' सूं उपज्यौड़ै हैं राजस्थानी भासा री कहाणी रौ जूनो रूप ई बात हैं। बातां घणी ही सरस नै सरल हौवे हैं इणारै कैवण अर सुणण रो विसेस तरीको हौवे है। अै बातां लोक साहित्य रौ भण्डार है।

बात में नाटकीयता ल्यावण खातर कपोल कथनां रौ प्रयोग व्हीयो है। अै भांत–भांत रा विसयां सूं भरी पूरी है। राजस्थानी भासा रै निरमाण में राजस्थानी बातां रौ अर कथावां री महताऊ ठौड़ हैं।

राजस्थानी बातां रौ वरगीकरण

(i) पौराणिक बातां – पलक दरियाव री बात।

(**ii**) ऐतिहासिक बातां – मोहिलां री बात, राव जोधाजी रै बेटा री बात।

(**iii**) वीरता प्रधान बातां – पाबूजी री बात, खींवै–बीझै री बात, राव जगमाल री बात, गोगोदे जी री बात, राव कान्हड़े री बात, हम्मीर देव री बात।

(**iv**) प्रेम प्रधान बातां – ढोला मरवण री बात, ससी–पूनौ, नागजी–नागवंती, बीझौ–सोरठ, मूमळ महिन्दरा री बात।

(**v**) हास्य प्रधान बातां – खुदाय बावळी री बात, पोपाबाई री बात, फोफाणदे री बात, पंचमार री बात आद खास है।

(**vi**) नीति प्रधान बातां – गोदावरी तीर रे जोगी री बात, कांणा–रजपूत री बात, अकल री बात, साहूकार री बात।

(**vii**) धरम, व्रत अर देवी–देवतावां री बातां – आसमाता री बात, गणेस भगवान री बात, बात बरहस्पतिवार री, सरद पूनम री बात।

(**viii**) चरित्र प्रधान बातां – जगदेव पंवार री बात, वीरमदे सोनगरा री बात, कुंवरसी सांखला री बात।

(**ix**) कुतूहल प्रधान बातां – मानधाता री बात, पदमै चारण री बात।

(**x**) प्रतीकात्मक बातां – डाढ़लौ सूर, पलक में खलक ।

इण तरै बात साहित्य में राजस्थानी समाज अर संस्कृति रौ चित्रण देखण मिळै। सागे ई इणांरा वर्ण्य–विसय भी न्यारां–न्यारां होवै। बातां री भासा मुहावरेदार होवै, आ बातां में कथानक रूढ़ियां अर लोक विसवास रौ सागे संयोग तत्वां री प्रधानता रैवै है। आ लोक बातां री सैली अर सबदावली घणी सरस अर सरल होवै है।

1.3.4 वैज्ञानिक गद्य साहित्य –

राजस्थानी भासा में वैज्ञानिक गद्य साहित्य अनुवाद रै रूप में मिळै अर टीका रै रूप में आयुर्वेद, ज्योतिस, सगुनावली, सामुद्रिक सास्त्र, तंत्र–मंत्र आद कैई विसया नै संस्कृत ग्रन्थां रै राजस्थानी अनुवाद रै रूप में औ गद्य मिळै। वैज्ञानिक गद्य री दो रचनावां इणकाल में मिलै हैं इण दोनूं रा विसय गणित सूं सम्बन्धित है – ''गणितसार'' अर ''गणित पंचविंशतिका बालावबोध।''

1.3.5 प्रकीर्णक गद्य साहित्य –

इणरौ गद्य विधा में कागद अर अभिलेखां में लिख्यौड़ा गद्य नै लियौ जा सकै है। पत्रात्मक गद्य खासतौर सूं राजकीय पत्र व्यवहार में मिळै। इणमें प्रसस्ति लेख, सिलालेख, तांबर पतर आद में संस्कृत भासा रौ ई प्रयोग मिळै, पण इणमें राजस्थानी भासा पद्य रौ भी प्रयोग हुयौ है।

1.4 इकाई रौ सार –

राजस्थानी भासा रौ प्राचीन गद्य साहित्य पैला बरणात्मक गद्य रै रूप में सभा सिणगार, वाग्विलास, परथ्वीचंद चरित आद ग्रन्थां में मिळै।

राजस्थानी भासा रो प्राचीन गद्य धारमिक, ऐतिहासिक, कलात्मक, वैज्ञानिक अर प्रकीर्णक गद्य साहित्य रै रूप में सांमी आवै। इण में भी न्यारां–न्यारां भागां में दवावैत, वचनिका, ख्यात, बात, विगत, सिलोका, पटावली, दफ्तरी बही, वंसावली, बालावबोध, टब्बा, टीकावां, अनुवाद, सिलालेख, तांबर पतर आद रै रूप में राजस्थानी भासा रौ जूनो गद्य साहित्य रचयौड़ो है। इण इकाई में राजस्थानी भासा री प्राचीन गद्य साहित्य परम्परा अर विकास नै दरसायो गयो है।

विक्रम री नोवीं सदी रे लगैटगै राजस्थानी भासा रौ पैले ग्रंथ रौ उल्लेख मिळै, जाळोर रा भीनमाळ में ''कुंवळयमाळा'' नामक ग्रंथ लिखयौड़ौ मिळै। राजस्थानी भासा घणी समरद्ध नै रूपाळी है। इणरौ विसाळ सबदकोस है, न्यारी व्याकरण है अर लिपि मुड़िया है।

इण तरै राजस्थानी ग़द्य परम्परा रौ लेखौ जोखो मिळै। प्राचीन अर मध्यकालीन गद्य साहित्य री विधावा मिळै। इण भांत न्यारी–न्यारी विधावां में राजस्थान साहित्य सिरजण व्हैतो रैयौ है। चाहै वौ ऐतिहासिक, धारमिक, कलात्मक, वैज्ञानिक अर प्रकीर्ण गद्य साहित्य हौ।

1.5 अभ्यास रा सवाल

(1) ''राजस्थानी भासा रा प्राचीन गद्य साहित्य'' पर लेख लिखौ।

(2) 'वचनिका' अर 'दवावैत साहित्य' में कांई फरक है? इणरै साहित्य रा उदाहरण देयर उत्तर दैवौ।

(3) 'राजस्थानी बात साहित्य' पर टिप्पणी लिखो।

(4) 'बालावबोध' अर 'टब्बा' साहित्य में कांई फरक हैं? समझाओ।

(5) राजस्थानी भासा रा ख्यात साहित्य पर सार रूप में लेख लिखो।

(6) 'सिलोका' कांई है? सोदाहरण पडूतर देवो।

1.6 संदर्भ ग्रंथ

(1) राजस्थानी गद्य साहित्य का समीक्षात्मक एवं विकासात्मक इतिहास (डॉ. रामस्वरूप व्यास)

(2) राजस्थानी वचनिकाएं (डॉ. आलमशाह खान)

(3) राजस्थानी गद्य साहित्य उद्‌भव विकास (डॉ. शिवस्वरूप शर्मा अंचल)

(4) राजस्थानी गद्य सैली विकास (डॉ. रामकुमार गरवा)

(5) राजस्थानी बात साहित्य एक अध्ययन (डॉ. मनोहर शर्मा)

(6) प्राचीन काव्यों की रूप परम्परा (अगरचंद नाहटा)

(7) राजस्थानी बात संग्रह (परम्परा पत्रिका भाग 6–7)

(8) राजस्थानी भाषा एवं साहित्य (डॉ. कल्याणसिंह शेखावत)

इकाई–2

राजस्थानी भासा गद्य री पुराणी विधावां

इकाई रो मंडांण

2.0 उद्देस्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 जैन रचनावां

2.3 प्राचीन गद्य रा नमूना

2.3.1 तत्त्व विचार

2.4 राजस्थानी गद्य रो जूनो साहित्य

2.4.1 टीका अर अनुवाद

2.4.2 बालावबोध

2.4.3 टब्बा

2.5 चारण गद्य साहित्य

2.5.1 बात (वारता) साहित्य

2.5.2 ख्यात साहित्य

2.5.3 वचनिका साहित्य

2.6 गद्य विधावां रा छोटा मोटा रूप

2.6.1 पीढ़ियावळी अर वंसावळी

2.6.2 हाल–हगीगत, विगत अर याददास्त

2.6.3 पट्टा परवाना री गद्य विधा

2.6.4 गद्य विधा री छुटपुट पद्धतियां

2.6.5 पट्टावळी अर गुर्वावळी

2.6.6 दफ्तरी बहियां

2.6.7 कागद

2.6.8 दवावैत

2.6.8 सिलोका

2.7 इकाई सार

2.8 सबद

2.9 सवाल

2.10 उपयोगी पोथियां

2.0 उद्देस्य

इण इकाई रो मूळ उद्देस्य राजस्थानी गद्य री प्राचीन विधावां री सामान्य जानकारी करावणौ है। गद्य री

वे विधावां अपभ्रंस काल सूं इज आपरी रूप छबियां री झलिकियां दरसावण लागी, जिणारो विकास जैन साहित्य अर चारण साहित्य री भूमिका में हुयौ। 13वीं सदी रा पुराणां सिलालेखां अर तांबां रा पतरां में भी वांरा गिणिया चुणिया नमूना मिलै। इतिहास री दीट सूं वे मध्यकाल री रचनावां है पण राजस्थानी गद्य री सरूवात रै विचार सूं वानै प्राचीन विधावां मांनीजै। 14वीं सदी रै पैहला चरण मांय जैन मुनि आराधना (सं. 1330), बाल शिक्षा व्याकरण (1336), अतिचार (1340), नवकार व्याख्यान (1358) जैड़ा कैई ग्रन्थ लिखिया, ज्यांरी परम्परा रो विकास 'तत्त्व विचार प्रकरण', 'धनपाल कथा', 'षष्ठ व्रत कथा' जैड़ा ग्रंथां में हुयौ। इण परम्परा रै जोड़ै–जोड़ै चारण साहित्य आपरौ रूपगठन करण लाग्यौ जिणरी रचनावां 'वात', 'ख्यात' अर 'वचनिका' रै नांवां सूं ओळखीजै। आं विधावां रै लगोलग पीढ़्यावळी, वंसावळी, दवावैत अर पट्टा–परवांना जैड़ी छोटी मोटी विधावां विगसी ज्यारै कलेवर में राजस्थानी साहित्य रो प्राचीन गद्य भरियौ पड़ियो है। इण इकाई मांय वांरौ सारतत्तब निचोड़नै बां सगळी खास खास विधावां रो हवालो दिरीजियौ है जिणसूं पाठ्यक्रम रा विद्यार्थी लाभ उठाय सकै। विसय री प्रस्तावना रै साथै–साथै मुख्य बिंदुवां रो खुलासो करण सारू छोटा–मोटा नामा में भी वांनै बांट्या गया है जिणसूं विसयबोध में सहूलियत रैवै। आखिर में बोध सवाल राखीज्या है जिणा रा पड़ूत्तर देयनै पाठ्यक्रम रा विद्यार्थी आपरै ग्यांन री परख कर सकै। इण इकाई री भासा अर सैली सरल, सुबोध अर स्तरीय है। उपयोगी पुस्तकां री सूची विद्यार्थियां रै ग्यान बढ़ावण सारू दी गई है।

2.1 प्रस्तावना

राजस्थानी साहित्य रो पुरांणौ गद्य कैई रूपां में सामी आयौ है। उणरो जूनो रूप जैन रचनाकारां रै धारमिक ग्रंथां में मिलै। पुरांणग्रंथां रै अनुवादां मांय भी इण गद्य रा नमूना लाधै। जैन धरम रा मूळ ग्रंथ प्राकृत भासा में लिखीजिया हा, वारै विचारां नै जनसाधारण तांई पुगावण रै खातर जैन मुनि वांरी टीकावां करी। वे टीकावां 'बालावबोध' अर 'टब्बा' सूं जांणी जावै। बालाबबोधां में राजस्थानी गद्य री छोटी–मोटी घणी विसेसतावां रा दरसण हुवै। बारै मांयै जुड़ियौड़ी कथावां सूं लोगां रै मनोरंजन रै साथै–साथै वांनै जैन दरसण री जांणकारी अर उपदेस री बातां रो सारतत्तब भी मिलै। बालावबोधां में जैन धरम रै आगम ग्रंथां रा अंग, उपांग, मूळ सूत्र, स्तोत्र ग्रंथ, चरित्र ग्रंथ, दरसण ग्रंथ अर उपदेसां रो खुलासौ करीजियौ है। ऐड़ा बाळावबोध सईकड़ां री गिणती में उपलब्ध है। पार्श्वचंद्र, विवेकहंस उपाध्याय, मेघराज, सोम विमल सूरि, रामचंद्र, संवेगदेव गणि, मानविजय, कमललाभ, मेरुसुंदर, मुनिसुंदर, भाणविजय, कुंवर विजय, हेमविमल सूरि, शिवनिधान, माणिक्यसुंदर गणि, लक्ष्मीविजय, सुशील विजय जैड़ा बालावबोधकार जैन मुनि राजस्थानी गद्य री सरूवांत में आपरौ योगदांन दियौ। उणां जैन ग्रंथां रा राजस्थानी भासा में अनुवाद भी करिया। पुराणा पोथीखानां अर जैन उपासरां रै भण्डारां में ऐड़ा ग्रंथ भरिया पड़िया है। जैन मुनियां रै बखांणां, उपदेसां, विधिविधांना, धारमिक कथावां, सिद्धांत चरचावां अर आचार विचारां में भी राजस्थानी गद्य री पुरांणी विधावां री छुटपुट सामगरी मौजूद है।

2.2 जैन मुनियां री रचनावां

पदंरवीं सदी रै आखीर में तपागच्छ रा जैन आचार्य सोमसुंदर सूरिजी हुया। बे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस अर राजस्थानी भासा रा लूंठा विदवान हा। राजस्थानी गद्य में बे आठ 'बालावबोध' रचिया ज्यांरा नांव उपदेसमाळा, योगशास्त्र, षड़ाववेद, बोध, आराधना, पताका, नवतत्त्व अर भक्तिस्त्रोत है। बां बालावबोधां में कथावां रै जरियै कैई तरै रा उपदेस दिरीजिया है। राजा श्रेणिक अर चांडाळ री कथा रै बीचै–बीचै गुरु री मैहमा अर विद्या री विनयसीलता रा बखांण घणा रूपां में करीजिया है। बांरै गद्य रो एक नमूनो इण तरै है–

''अेक नापित विद्या–नइं बळि आपणउ छरपलु आकास मंडळि राखइ, ते कन्हइं अेकइं त्रिदं डिंहं ते विद्या लीथी, त्रिदंडिउ तीणि विद्याइं आपणा त्रिदंड आकसमंडळि राखइ। लोके पूछिउं–ते विद्यानउं तुम्हारइं गुरु

कुण? तीणई लाजतइं नापित न कहिउ। तीणइं गुरुनइं ओळविवइं करी त्रिदंड खड़खड़ात करतउं भुहं पडिउं, लोके सदुवे हसिउं... तेह भणी बीजेऊ गुरु नउ निहव न करिबु।''

आंचळगच्छ रा आचार्य माणिक्य सुंदर सूरि आचार्य मेरुतुंग सूरि रा चेला हा। बे राजस्थानी गद्य रा सिरमौड़ रचणियां मांनीजै। 'पृथ्वीचन्द्र चरित' रै अलावा बै कैई व्रतकथावां लिखी, ज्यांमै मलयसुंदर कथा, संविभाग व्रत कथा, सुकराज कथा, गुणवर्मा चरित्र अर सत्तर भेदी पूजा कथा घणी लोकप्रिय हुई। बांरौ राजस्थानी गद्य साहित्य अणूंतो इज कळापूरण अर सिरैकार गिणीजै। पनदरवीं सदी रै गद्य लेखकां में वे आपरी ठावी ठौड़ राखै। वांरै गद्य में बाग विलास री छटा रो अवतरण दरसावै–

''वन ते वर्णवीइ जे वृक्षव्रंत, नदी ते जे नीरव्रंत, कटक ने जे वीरव्रंत, सरौवर ते जे कमळवंत, मेघ ते जे समाव्रंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, हाट ते जे वस्तुवंत, मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंग ते जे तेजवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, राय ते जे न्यायवंत, धर्मी ते जे दयावंत।''

जैन आचार्य मेरुसुंदरजी रो रचनाकाल 16वीं सदी रो पैलो चरण थापीजियौ है। बे रत्नमूर्ति रा खास चेला गिणीजै। राजस्थानी भासा गद्य में वांरा 17 बालावबोध तथा अनेक टीका ग्रंथ मिल चुक्या है। इणां में शीलोपदेसमाळा (1525), पुष्पमाळा (1522), षडावश्यक (1525), योगशास्त्र, वृत्तरत्नाकर अर वागमटालंकार बालावबोध घणो नांव पायो। उणां रा 'अंजनासुंदरीकथा' अर 'प्रश्नोत्तर' नांव रा दोय ग्रंथ राजस्थानी गद्य रा नामी ग्रंथ मांनीजै। वांरी भासा सैली माथै गुजराती भासा रो मोकळो प्रभाव पड़ियौ जिणरी बानगी 'अमरसेन वयरसेन कथा' रै इण अवतरण सूं देखी जाय सकै–

''पछइ मातंग आदेस पामी जिहां अमरसेन छइ तिहां आवी राजानूं आदेस कहिउ जु मुझनइ राजाउ अेहवु आदेस दीधउ छइ पछेइ बेवर पुत्र कहिबा लागा– अम्हारा मस्तक लह, राजानु आदेस प्रमाण करि–पछइ मातंग चींतवई–राजनुं आदेस साचउ हुउ, किम करउं, अेतु महापुरुस, पछइ कुमार नई कहिबा लागउ–अेहवउ कर्म हूं किम करूं।''

जैन मुनियां री छोटी–मोटी गद्य रचनावां में धारमिक कथावां रै अलावा पुरांणा अर इतिहास री छुटपुट झांक्यां भी मिलै। वां रै कागद पतरां में उण बगत री मानसिकता रा रूपरंग भी आपरी खूबी दरसावै। राजस्थानी गद्य री विकास जातरा में उणांरी अणदेखी नीं करी जाय सकै। देसवरणन अर प्रकृति चितरण री अलंकारिक सैली में बे मौका मुजब पद्य री छटा भी दरसाई। संवादयोजना सूं भी वांरै गद्य में निखार आयौ। अपभ्रंश भासा रो बोलचाली रूप इण बात रो सबूत है। जैन आचार्य आपरी भासा सैली नै जन साधारण तांई पुगावण में भी घणी रुची राखी।

2.3 प्राचीन गद्य रा नमूना

2.3.1 तत्त्व विचार

जैन धरम री हस्तलिखित पौथियां अर गुटकां में 14वीं सदी रै राजस्थानी गद्य री पुरांणी छिब निगै आवै। नीचै लिखियौड़ौ गद्य इण संसार री नासवान गती अर मिनखादेह री मैहमा रै सागै–सागै धरम रो असली तत्त्व उजागर करै–

''अेउ संसारु असारु, खणभंगरु, अणाइ, चउगइउ। अणेग अणादि कर्म संयोगि सुभासुभ कर्म अवेष्टित परिवेणिढिया। पुणु नरक गति, पुणु तिर्यंच गत, पुणु मनुष्य गति, पुणु देवगति। इम परिभमता जीव जाति कुळादिगुण संपूर्ण दुर्लभु माणुखउ जनमु सर्व ही भवमद्धि महाप्रधानु। ततः अति दुर्लभु परमेश्वर संर्वज्ञोक्तु धर्मु।''

पनदरवीं सदी रो राजस्थानी गद्य अपभ्रंस अळगो होयनै आपरौ असली रूप दरसावतो निजरां आवै। उण सदी री सरुवात में खरतरगच्छ रा आचार्य जिनचंद्र सूरि रा चेला तरुण प्रभसूरि राजस्थानी भासा गद्य रा पुखता नमूना पेस करिया है। सं. 1411 में उणा 'षडावश्यक बालावबोध'

नांव री पोथी रची जिणसूं आगै चाल'र 'बालावबोध' री गद्य परम्परा विगसी। उण पोथी रै दूजै अवबोध में सत्य व्रत री कथा लिखीजी है जिणरी गद्य सैली रो एक नमूनो इण मुजब है–

''तउ राउ मनि चीतवई–जउ हउं मौनुं करि रहिसु अथवा व्याजवचन भणिसु तउ भील सरळइ मारगि जायता हुंता मुनि रहदूं विनासहेतु होइसिइं, तिणि कारणि सांप्रतु जइ कहियइ तउ सत्य कन्हा अधिक पुण्यकारकु हुयइ, इति शब्दन्टछलइ तउ सत्यु असत्यु राजा कहइ–जिणि मारगे तुम्हे जाउ छउ तेह मारग हूंतउ वामउ मारगु तिणि मारगि महातमा जाइ छइ।''

2.4 राजस्थानी गद्य री पुरांणी विधावां

2.4.1 टीका अर अनुवाद पद्धति

राजस्थानी गद्य री विकास परम्परा में इण पद्धति रो घणौ जोगदांन रैयौ। संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंश साहित्य रै मूळ ग्रंथां री धरम भावना अर उपदेसविरती नै जनसाधारण तांई पुगावण खातर आ पद्धति घणी कामयाब हुई। जैन मुनी अर् आचार्य आदू काल सूं राजस्थान प्रदेस सूं जुड़ियौड़ा हा। बे आपरी विचारधारा रै प्रचार खातर आ पद्धति अपणाई। मूळ ग्रंथां रै आधार माथै बे लोग पैली पोत राजस्थानी गद्य में मूळ भावां रो अनुवाद करनै वांरी व्याख्या करी जिणसूं इण पद्धति रो नांव 'टीका पद्धति' पड़ियौ। खास–खास प्रसंगां रै हिसाब सूं वे छोटी–मोटी कथावां जोड़नै आपरी टीकावां रो खुलासौ भी करता। इण वजैह सूं वांरी टीकावां अर वांरा अनुवाद घणा असरदार बण जावता। टीका पद्धति रो एक खास रूप जैन आचार्य अपणायो जिणनै 'बालावबोध', 'टब्बा' अर् 'वीरतिक' नांव सूं ओळखीजै।

2.4.2 बालावबोध पद्धति

'बालावबोध' रो सीधो सादो अरथ है 'बाळबुद्धी रै लोगां नै सरळ अर सुबोध भासा में मूल विसय रो बोध (ग्यान) करावणौ।' जैन मुनियां नै आ पद्धति घणी सुहावणी लागी। जैन धरम रै ग्रंथां री बाल बोधणी टीकावां रै सागै सागै गीता, भागवत, रामायण, भगतमाल अर 'वेळिक्रिसन रुकमणी री' जैड़ा अनेक ग्रंथां री टीकावां भी इण गद्यसैली में करीजी। इण गद्य रा रचणिया केई जैन आचार्य हुया। इण सैली रो रूप जतावण सारू एक उदाहरण देखीजै–

मूळ पाठ– श्री जिनाय नमः। गाथा। जीवाय नव दय आवा अवदसजंत जघ सम लावा। अवरौण वइणंत म्हं करता नव करें।

बालावबोधणी टीका– जीव आदि दइन इन वपदाधी कहा कहीदू। 1. जीव अजीव, 2. बंध, 3. पुण्य, 4. पाप, 5. आश्रव, 6. संवर, 7. निर्जरा, 8. मोक्ष एवं नव। इन्उ उपा दस जईन जीवनि काया छइ। आतमसमाना लखवी नइ। उपादश दी जइ काहि जीव उपरि। इतिह सिद्धांत कही इति सूत्र कहाइ। तेर समति कही। इतिह अरथ कहि। इतिह नवकार कही।

कैवण सारू तो ऊपरली टीका बालावबोधणी कैईजै पण इणरौ रूप राजस्थानी गद्य सूं नैड़ो नी लागै। हां, आ बात जरूर है कै आगै चालनै जद इणरौ रूप निखरियौ तो राजस्थानी गद्य रो विकसाव नीचे लिखियौड़ा रूप में हूयौ। 'शीघ्र बोध री टीका' रो एक उदाहरण–

''शीघ्र कहंतां वतावळी बोध कहंतां बुद्धिबोध कहंता ग्यांन संग्रहतां पाठिबो या पढ़वा सूं उतावळो ग्यांन होय ताते शीघ्र बोध कहई।''

2.4.3 टब्बा पद्धति

आ पद्धति बालावबोध पद्धति रो छोटो रूप कैयौ जाय सकै। 14वीं सदी रै लगोलग इण पद्धति रो प्रचार हुयौ। 'बालावबोध' मांय मूळ गाथा रो खुलासो वांरै सबदां रै साथै साथै करण रो नेम

हो पण टब्बा पद्धति में मूळ सबदां रा अरथ राजस्थानी गद्य में ऊपर, नीचै अर आगती–पागती लिखीजता। हस्तलिखित पुरांणी पोथियां री समझाइस सारू आ पद्धति अपणाईजी। गीता अर वेलि जैड़ा ग्रंथां री घणीज टीकावां करती वेळा वांरै हासिया में 'टब्बा' रो रूप निखारियौ। सरळता अर सुबोधता रो ध्यांन राखनै संक्षेप में सार तत्त्व जतावणो इण पद्धति रो मूळ ध्येय रैयौ। इण पद्धति रा एक दोय नमूना इण तरै है–

मूल पाठ 1. कीरी कठ चित्र पुतळी।

टब्बा टीका– दूहा दृष्टान्त कहइ चित्राम कीधी पूतळी। कीरी निश्चइ काठउ परित आपणइ करि हाथ करी।

मूल पाठ 2. आरममइ कीयउ जेणि उपायउ।

टब्बा टीका– अभिप्राय कहइ जिणि हूं उपाय उत्तम गाइ वामेय मोय सो रूप गुण कहिवा तणि मइ प्रारम्भ कीधउछइ।

जैन धरम रा 'नवाक्षर व्याख्यान' 'सर्वतीर्थ नमस्कार' अर 'अतिचार' रा भावानुवाद इण पद्धति में करीजिया है। इण पद्धति री भासा ऊपर गुजराती रो प्रभाव भी पड़ियौ जिण कारण सूं उणरौ राजस्थानी रूप खळबिक्खळ हूय गयौ। जैन आचार्य पार्श्वचंद्र सूरि री टब्बा टीकावां सगळां सूं सिरै गिणीजै। वांरौ दंडक टब्बा, क्षेत्रसमा टब्बा अर उपदेसमाळा टब्बा खास है। राजस्थानी भासा गद्य रो सरुवाती रूप टब्बा में दरसै। इण पद्धति रै सागै सागै जैन मुनि 'वारतीक' भी लिखिया।

2.5 चारण पद्धति रो गद्य साहित्य

राजस्थानी साहित्य री गद्यविधावां रै विकास मांय चारण साहित्य आपरी ठावी ठोड़ राखै। जैन साहित्य रै पछै चारण साहित्य रो विकास हुयौ। चारण गद्य रा रूप लौकिक साहित्य रै ढांचां में ढळिया ज्यांरी जांणकारी 'बात', 'ख्यात', 'वचनिका', 'विगत', 'हाल हगीगत', 'पीढ़ियावळी', 'वंशावळी', 'याददास्त', 'तहकीकात', 'दफ्तर बही', 'पत्रावली', 'पट्टा' अर 'परवाना, दवावैत' नांव री गद्य विधावां रै रूप में करी जाय सकै।

2.5.1 बात (वारता) साहित्य

ओ साहित्य राजस्थानी गद्य विधावां रो विचारजोग रूप मानीजियौ है जिणरा खास रचणिया चारण जात रा लेखकगण रैया। कैवण सारू इणनै कथा अथवा कहाणी साहित्य विधा रो राजस्थानी गद्य कैयौ जाय सकै पण बो कोरी 'कल्पना' नीं होयनै इतियास रै तत्त्वां सूं भी गूंथीजियौड़ौ है। कैई विद्वान इणनै उपन्यास रै ओळै–दोळै घूमतो फिरतौ दरसावै अर इणरौ सम्बन्ध श्रुति परम्परा (सुणी सुणाई बातां) सूं भी जोड़ै। मध्यकालीन लोक जीवण, आचार–विचार, रैण–सैण, रीती रिवाज, राजघराणा तथा रूढीरसमां रा कैई मुद्दा इण गद्य विद्या री बणावट रा साथी बणिया। संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंश साहित्य री लोकगाथावां अर कथावां री परम्परा सूं जथाजोग सामगरी भेळी करनै राजस्थानी रो 'बात' साहित्य आपरो रूप संवारियौ है। बो देसकाळ अर परिस्थितियां सूं भी प्रभावित हुयौ। सगळा वरगां रो मनोरंजन करणो अर राजदरबारी वातावरण रो खाको खींचणो इणरौ खास प्रयोजन लागै। मध्यकाल सूं लगा'र हालतांई आ परम्परा लोक जीवण में रमियौड़ी है। राजस्थान री कैई घुमक्कड़ जातियां रा लोग आपरै निजू साज बाजां रै साथै बातां री इण मौखिक परम्परा नै जीवती जागती राखता चाल रह्या है। आ विधा 'मुखजबानी' अर 'लिखत' जैड़ा दोन्यूं रूपां में मिलै। गद्य अर पद्य रा दोन्यूं रूप इण मांय देखीजै। जे इण विधा नै मध्यकालीन समाज रो 'दरपण' मान लियौ जावै तो कोई

अणूती बात नीं लागै। 'बात' रै सागै–सागै 'वारता' सबद रो प्रयोग भी इण खातर करीजै। 'रतना हमीर री वारता', 'पन्ना वीरमदे री वारता', 'जलाल बूबना री वारता', 'फूलजी फूलमती री वारता', 'कुतुबदीन साहजादा री वारता' अर 'रायव सायब री वारतां' इण विधा री खास–खास रचनावां है। एक तरै सूं ओ साहित्य गद्य–पद्य रो 'मीसण' है जिणनै 'चम्पू' काव्य कैय सकां।

'बात' साहित्य ख्यातां अर लोककथावां रै पेटै आगै बधतो गयौ। गांवां री चौपाळां माथै हाल तांई बूढा बडेरा बाळकां अर जवांना रै मन बैहलाव सारू वातां रा बंतगड़ बणावणा में नीं चूकै अर कैई तरै री अटकळबाजियां दरसावता निजर आवै। बे आपरी बातां नै ख्यातां अर लोककथाआं रै तारां सूं गूंथनै लोगां नै भावविभोर कर देवै। पुराणी ख्यांतां में भी कैई तरै री बातां री भेळप मिलै। अठारवीं सदी री सरुवात में 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' में 'हाडै सूरजमल री बात' सूं एक उदाहरण नीचे दिरीजियौ है जिण मांय बूंदी रै हाडा राजा सूरजमल अर चित्तौड़ रा महाराणा रतनसी रै बाबत जांणकारी मिलै–

'पछै सवारै राणो, सूरजमल नै ले'र सिकार गयो। मूळै बैठा, दूगो साथ आपरौ पारको दूरौ कियो। राणा रो एक खवास पूरणमल पूरबियो छै। राणै पूरणमल नूं कह्यौ–तूं सूरजमल नै लोह कर पण इणसूं लोह कियो नीं गियो। तरै राणा घोड़ै चढ सूरजमल नूं झटको वायो, सूं माथा री खोपड़ी लेय गयो। तितरै पूरणमल तीछेर वायो। राणो घोड़ा सूं हेठो पड़ियो। पड़तैईज पांणी मांगियो। तरै सूरजमल कह्यो–काळ रा खाधा हमैं पांणी पी सकै नहीं।''

बात साहित्य रो एक दूजो नमूनो 'तवारीख वारता जलाल बूबना री' नांव री पोथी में इण रूप में मिलै–

''इसी बात करी बूबना आपरै महल गई। सांवण रो मास आयो। तीज रो दिन। तद नेत्र बांदी नै कह्यो। आज जलाल साहिब नै कहवाई–आज बेगा पधारजो। मिलण नै आवूं छूं। महल कनै नेड़ा बाग छै। तठै विराजज्यो। इतरौ कहीया छी आई बूबना नै कह्यो। घणो राजी हुवो। सिणगार करणै मांडियो। अबै जलाल पोसाक बणाई। अमल पांणी करी। दोय तीन घड़ी दिन थकां एकलो हीज चालियो।''

राजस्थानी गद्य री बातां मांय 'सिंहासन बत्तीसी' अर 'बेताळ पचीसी' री कथावां सामल करीजी है। वांरै बीच बीच में पद्य विधा रो भी प्रयोग मिलै। 'हालां झालां री बात' सूं आ बात पिछाणीजै। 'सजना सुजांण री वारता' में कैई तरै रा रुपाळा बरणाव सहज, सुबोध अर सरल भासा में लाधै। वांरी सजीवता चितरामां दांई पळकै। प्रसंगां रै हिसाब सूं उणा में संवाद अर व्यंग रो पुट भी मिळै। आं बातां में 'ढोला मारू, जलाल बूबना, पलक दरियाव, डाढालो सूर, खींवै कांधलोत, अर वीरै देवड़ै री बातां' महताऊ गिणीजै। बात साहित्य में अलंकारां री छटा अर ओपमावां रो एक नमूनो मारवणी रै रूप बरणाव में देखीजै–

''मारवणी पदमणी चन्द्रमा सो वदन, म्रगलोचणी, हंस की सी गती, कटिसिंध सरीखी, काया सालमो सोनो, मुख री सौरभ किस्तुरी जिसी, पयोधर श्रीफल जिसा, वांणी कोयल जिसी, दांत जांणै दाड़म कुळी, वेणी जांणै नागणी, बांह जांणै चम्पा री कळा, एडी सुपारीसी नै पगतळी स्वांन री जीभ सरीखी।''

राजस्थानी भासा रो बात साहित्य गद्य गद्य विद्या रो सलूणो संवाद साहित्य प्रेमियां रो हीयो हुळसावै अर वे रसीली धार सूं आणंद लेवण लागै। आज जमानां री चाल भलांई बदळगी है पण राजस्थानी रो बात साहित्य हालतांई लोकमाणस री रग रग में रमियौड़ौ है जिणरी आतमा राजस्थानी संस्कृति री जीवणधारा री जड़ां में जमियोड़ी है।

2.5.2 ख्यात साहित्य

'बात' रै सागै 'ख्यात' सबद री तुकबंदी रो मेळजोळ घणो इज फाबीजै। इण सबद नै संस्कृत भासा रै 'ख्याति' सबद रो राजस्थानी रूप कयौ जाय सकै। मध्यकाळ रा राजा, महाराजा अर सामंत–सरदार आपरी गादी अर वंस परम्परा री कीरत बधावण सारू चारण, अर भरौसैमंद लोगां सूं कैई तरै री ख्यांतां लिखावता जिणामें इतिहास अर कल्पना री अतिस्योक्ति अर आपरै सरणदातावां रै निजू जीवण री घटनावां रै सागै बे लोग कैई बातां जोड़नै आपरी ख्यातां निखारता। राजस्थानी भासा में कैई तरै री ख्यातां लिखीजी ज्यां में 'मुंहता नैणसी री ख्यात', 'बांकीदास री ख्यात', 'दयालदास री ख्यात', 'बीकानेर रै राठौड़ां री ख्यात', 'जोधपुर रै राठौड़ां री ख्यात', 'उदैपुर री ख्यात' अर 'मेवाड़ रै परगनै री ख्यात' घणी लोकमनभावी हुई। अे सगळी ख्यातां पीढियां अर वंसावळियां सूं जुड़ियौड़ी है। वांमै राजवंसां रो इतिहास अर राजावां री कीरत रो बरणाव खास खास घटनावां रै साथै दिरीजियौ है। बातां री विगत री पूठ में ऐड़ा कई ओखांणा वांमै रिळिया मिळियां है ज्यांसूं मध्यकाळ री जीवण जोत जगमगावै । नगरां, गांवां, ढांणियां, मौसमी हलचल, कुदरती कळाबाजियां अर रैवासियां री मानसिकता रा चितरांम वांमै आखरां ढळ्या है। बांरौ भावपक्ष अर कळापक्ष सजीव हुयनै मूंडै बोलै। ओ राजस्थानी गद्य रो भव्य रूप कैयौ जाय सकै। कथात्मक सैली में लिखयौड़ी इण गद्य में भाव प्रवाह री खासियत लखावै। जथारथ अर भाव चितरण में गद्य री बराबरी दूजी विधावां नीं कर सकै। छोटी छोटी वाक्य रचनावां में पद्य री छटा छिटकै तो कठै कठै समास सैली री पदावळी में अलंकारां री आभा चमचमाट करै। ख्यात रचनावां रो ओ सिलसिलौ सैकड़ां वरसां तांई चालियौ। संवत तिथियां रै उल्लेख सूं वांरी कैई घटनावां इतिहास री प्रासंगिकता नै दरसावै। ख्यात साहित्य री भासा सैली री ओळख करावण सारू कीं उदाहरण देखीजै–

1. संवत 1539 रा वैशाख वद 9 सांगा रो जनम। संवत 1566 जेठ सुद 5 रांणो सांगो पाट बैठो। संवत 1594 रा काती सुद 5 सीकरी बाबर (हुमायूं) पातसाह बठै हार्‌यौ। रांणो सांगो बडो प्रतापबळ ठाकुर हुयो। घणी धरती खायी। घणी तपीयो। उडणो प्रथीराज मुंवां पछै मुदै हुयो। पैहली घणो बिखै फिरीयो। पछै बड़ो ठाकुर हुवो। इसड़ो चीतोड़ रांणो कोई नीं हुवो।

   (मुंहता नैणसी री ख्यात)

2. बीकानेर गढ कोट राजा रायसिंह करायो। अधकोस सहर छै जूनो बीकानेर सूरजपोळ बंधा उपरै हाथी वै है जैसळ पत्तो है। बड़ मोटो बारणो छै। बावन बुरज छै। उगवणनूं पोळ सूं पड़कोट सूं तीन पोळ है। ... कुवा तीन पुरस साठ। पांणी मीठो। गज नव कोट दोळी खाई ऊंडी। भींत आंगणो सगळा छवगज छै। तळाब घड़सीसर सहरथी कोस दोय पांणी सात मास रैवै। सूरसागर पांणी मास छव रैवै।

   (बांकीदास री ख्यात)

3. अेकद प्रस्ताव राव जोधोजी दरबार किया विराजै है नै सारा भाई वा उमराव वा कंवर हाजर है। कंवर श्री बीकोजी भीतर सूं आया अरु रावजी सूं मुजरौ कर काका कांधलजी रै आगै विराजिया। वे कंवरजी श्री बीकैजी कांधळजी सूं कान में बतलावण की। तद राव जोधोजी देखने कयौ– ''आज तो काकै भतीजै रै सला हुवै है सूं इसी दीसै काई नवी धरती खाटै।'' तद कोधळजी उठ मुजरौ कियो अरू कयो– ''महरबांन, कांधळ री सरम तो हमैं नवी धरती खाटियां सूं इज रैसी।''

   (दयालदास री ख्यात)

2.5.3 वचनिका साहित्य

'वचनिका' सबद संस्कृत भासा रै 'वचन' सबद सूं बणियौ है। राजस्थानी भासा में इण तरै री गद्य रचना री सरूवांत पनदरवीं सदी रै आगती–पागती हुई। इण विधा में गद्य अर पद्य रो मेळजोळ लखावै। राजस्थानी भासा, कळा अर संस्कृति री तिरवेणी रो भाव प्रवाह इण विधा री खास विसेसता गिणीजै। पद्यधारा सूं गद्यधारा कांनी आगै बधनै मोड़ लेवणो इणरी उत्तपत रो मूळ कारण है। सरुवात में आ विधा मौखिक साहित्य रै रूप में बिगसी पण आगै चालनै आ आपरी चाल ढाल बदळ दी जिणसूं लिखित साहित्य रो विसतार हुयौ। चारण साहित्य रा कवि अर रचनाकार इण परम्परा नै आगै बधावणा रो बीड़ौ उठायौ। बे आपरा आश्रयदातावां री वंसावळी रा कीरतीगांन करण खातर आ पद्धति अपणाई। हगीगती घटनावां रै साथै काल्पनिक घटनावां रो जोड़ जमायनै बे आपरै सरणदातावां री मैहमा बधावण सारू वचनिकावां रचता अर आपरी वरणनसैली सूं वांरा मनड़ा मोय लेता। ऐड़ी रचनावां में जद तुकांत गद्य री छटा छिटकती तो गद्य पद्य परम्परा रै पाळा में बा आपरी जीत जतावण लागती। गद्यबद्ध अर पद्यबद्ध रचनावां रो ओपतो मेळ 'वचनिका' साहित्य री खास पिछांण है। सरूपोत में जैन मुनि जिनसमुद्र सूरि, शांति सागर सूरि अर माणिक्यसुन्दर सूरि कैई वचनिकावां रची पण वांरौ रचनाबंध घणाकार अन्त्यानुप्रास गद्य सूं आगै नीं बधियौ। वांरी वचनिकावां नै परवरती रचनावां रो 'बाळरूप' ईज कैयो जाय सकै। इण विधा रै ग्रंथां में गाडण सिवदास रचित 'अचलदास खीची री वचनिका', खिड़िया जग्गा कृत 'राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री वचनिका', जती जयचंद रचित 'माताजी री वचनिका', हमीरदान रतनू रचित 'देसलजी री वचनिका' री गिणती करीजै। राजस्थानी गद्य रो पैठबंध रूप जतावण सारू आं ग्रंथां री भासा सैली अर लेखन पद्धति री सरावणा सगळा विदवान करता आया है।

वचनिका साहित्य री पंगत में गाडण सिवदास री वचनिका ऊँचा दरजा री गिणीजै। गाडणसिवदास गांगरोणगढ़ (कोटा जिला) रा राजा अचळदास खीची रा राजकवि हा। संवत् 1485 में माळवा (मांडू) रो सुळतान आलमसाह गोरी जद गांगरौणगढ़ माथै चढाई करी तो उण जुद्ध में राजा अचळदास वीरगती पाई। वांरी वीरता रो बखांण गाडण सिवदास रचित 'वचनिका खीची अचळदास री' पोथी में मिळै। कवि जुद्ध अर जौहर रो ताळमेल जमायनै वे आपरी कलम री करामात जताई। इतिहास री घटनावां नै चमतकारी ढंग सूं जमावण में वांनै पूरी कामयाबी हांसिल हुई। पद्य विधा री फुलवाड़ी में गद्य रा गुलदस्ता सजायनै वे तुकांत गद्य री नुंवी परम्परा थापी। कम सूं कम सबदां में घणी सूं घणी वस्तुवां अर भाव सवेदां रा विचित्तर चितराम वांरी वचनिका में आंकीजिया है जिणरी खूबियां तो उणरी भणाई–गुणाई सूं ईज परखीजै। अचळदास खींची अर सिवदास गाडण रो जोड़ पिरथीराज चौहान अर चंद बरदाई रै सागै ईज जुड़ सकै। वांरी वचनिका री देखादेखी कैई वचनिकावां रचीजी ज्यांरी राजस्थानी गद्य में जथाजोग जागां है। जुद्ध बरणाव रो प्रसंग–

उदाहरण 1– घायल घुळै घूमै लड़ै लड़थड़ै जाणक मतवाळौ मतवाळै सूं मिळै। जाणक वसंतरित केसू फूल्या। रातदिवस दीसै समान। तीन लाख भड़ आया। इसा, मीरी आंख, मुख माकड़ जिसा। करै घात बोलै पारसी, बगतर तथा झिखै जाणै आरसी। काळी निहाब, गोळा बुहाव। गढ सिखर उड़ी, कायरां रा जीव तुड़ी। सौह संग्राम रा समरा, अणी का भमरा। गाहडि का गाडा, फौजा का लाडा। चाचरली का वींद, नरां का नरींद। उबरै सो उबरौ, मरै सो मरौ। गढ़ खवै अधारौ, राव ताल्हण पधारौ।

उदाहरण 2– ''पगि पगि पउलि–पउलि की गजघटा। ताउपरि सात सात सइ घनकधर

सांवठा। सात सात ओलि पाइक की बइठी। खेड़ा उडण मुद फरफरी चुंई चकि ठांइ ठांइ ठठरी। इसी एकत्या पट उड़ि चत्र दिसि पड़ी। तिण वाजत कइ निनादि धर आकास चड़हड़ी।''

खिड़िया जग्गा री कही 'राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका' चारण गद्य विधा री महताऊ रचना है। इणनै 'रासो रतन' रै नांव सूं भी जांणीजै। बरणाव री दीठसूं आ रचना बेजोड़ है। रतनसिंह रै वंस वरणन रै सिवाय साही सेना अर जुद्ध दरसाव, रुतवरणन, राणियां रो नखसिख वरणन अणूंतो ईज ओपतो नै सुहावणै जचै। वीररस री बांनगी री एक झळकी रो नमूनो–

''तिणि वेला दातार झूंझार राजा रतन मूंछां करि घात बोले। तरू आर तोले। उजोणी खेत धारा तीरथ धणी रो काम खत्री रो धरम साधवीजै। लौहारा वांह सेला रा धमकालीजै। खांडा री खाट खड़ि झाट झड़ि डंडाहड़ि खैलिजै। पातिसाहां री गजघटा झंडा ओझड़ा मारि ठेलिजै। पातिसाहां रै छत्र घाड़ कीजै। पुरजा पुरजा हुइ पड़ीजै। वैकुण्ठ चढीजै। क्यूं बारहठ जसराज? हां महाराज। महाराज रा मनोरथ श्री महाराज पूरै। अखियात ऊबरै। महाराज रा मुंसड़ा आगे लड़ां। टूक टूक हुइ पड़ां।''

वीरगती पायां पछै वैकुण्ठवासी राजा रतनसिंघ रो आदर सनमांन किण रूप में हुयो, उणरी सोभा रो बखांण नीचे लिखियोड़ो अवतरण करै–

''चंद सूरज बेइ खवासी करै छै। चौसरा नम्बर ढुलै छै। नव लाख नाखित्रमाळ चिराग झालि खड़ा रहिया छै। बारह घण मुहड़ा आगे छिड़काव करै छै। तीन प्रकार रो पवन वाजै छै। मुंदा आगिली अखाड़ै रंभा पातर नट नाटक संगी तधुनि करि करि दिखावै छै। तेज री पुंज, रूप री गंज, काम री कळी, चख नख चीज, सुख री सिळाव, वीरह री बीज, सोळै सिंगार ऐड़ी उरवसी जैड़ी अपसरां मुंहडा आगलि हाव भाव कटाछ थेई थेई नतकार निरत करै छै। छह राग छत्तीस रागणी सपत सुर भांति भांतिकर दिखावै छै।''

मुहणोत नैणसी री 'ख्यात' अर 'बात वचनिका' राजस्थानी गद्य साहित्य रो उजळो पख है। नैणसी जोधपुर रा महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) रा दीवांन हा। इतिहास लिखण में वांरी घणी रूची ही। वे जोधपुर रै अलावा उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, जैसलमेर, बीकानेर अर किसनगढ़ रै राजवंसां री खांनदांनी तैहरीरां लिखी ज्यांमै वचनिका साहित्य री खूबियां दरसाईजी। वांरी भासा मूळ रूप सूं मारवाड़ी है जिण मांय मध्यकालीन राजस्थानी गद्य रो मांणक रूप उभरियौ है। वचनिका में ख्यातां अर बातां रो ताळमेळ जमायनै राजस्थानी गद्य री तिरवेणी री तरंगां रो समो बांधियौ गयौ है। जिणमांय हाल, हगीगत, विगत, विरतांत, याददास्त, मिसाल, साख, वंसावळी अर पीढ़ियावळी रा भांत भांत रा तार गूंथीजिया है। उणांरी भासा रो एक नमूनो इण तरै है, जिण मांय राजस्थानी गद्य रो टकसाळी रूप सामी आवै।

''नरवदजी सतावत मंडोवर रा राजा बरै। ताहरां सीहण सांखलो रूण रै धणी आपरी बेटी सुपियारदे रो नारेळ नरबदजी नूं मेल्हियो। ताहरां नरबद जी ऊपर राव रिणमलजी रांणो मोकळ आये। तद लड़ाई हुई। नरबद घावै पड़ियो। रिणमलजी मंडोर लियो। बे जाय गादी बैठा।''

'दयालदास सिंढायच री वचनिका' गद्य अर पद्य विधावां रो मेळ है। वे चारण जात री भादळिया साखा में जलमिया हा। 'राठौड़ां री ख्यात' नांव रा ग्रंथ मांय बे वचनिका साहित्य रा रूप संवारिया है। बे कैई ग्रंथ रचिया। वांरी भासा रो रूप आजकाल री मारवाड़ी बोली सूं अणूंतो ईज नैड़ो लखावै। इतिहास री साची घटनावां रो खरौ परवांनो वांरा वचनिका साहित्य में एक जागा भेळो मिलै। 'देसदरपण' 'आर्याख्यान कल्पद्रुम' जैड़ा ग्रंथ वांरी जांणकारी, सूझबूझ अर रचनाकोसल रा नमूना कया जा सकै।

'वचनिका' साहित्य रै ओळै–दोळै बांकीदासजी रो ग्रंथ 'बांकीदास ग्रंथावली' रै नांव सूं छप चुक्यो है। इण काल रा गद्य लेखकां में सूर्यमल मीसण अर संग्रामसिंघ रो नांव जोड़णौ जरूरी लागै। हालांकै वे वचनिका विधा री खासियत सूं आपरी पोथियां नीं लिखी पण वांरी रचनावां में वचनिका विधा री मौका मुजब झांकी जरूर मिळै। वचनिका साहित्य कम लिखीजै है। आजादी मिलियां पछै राजस्थानी गद्य री विधावां री विसयवस्तु अर रचना सैली में नुंवा नुंवा बदळाव आय रिया है पण पुरांणी गद्यसैली रै रचनाकारां रो सिरजण हालतांई जगचावो है। 'दयालदास री ख्यात' अर वचनिका रो एक उदाहरण इण री साख भरै–

''पीछै सूतै सुमाव चांपावत हाथीसिंघ गोपाळदासोत सासरै जावतां आदमियां दोय सौ सूं अजमेर आयो। महाराज कैद हुता। उठै डेरा हुवा। तद हाथीसिंघ पूछियो– ऐ डेरा किणरा है? तदै उठारा लोगां कैह्यो कै बीकानेर रा राजा दळपतसिंघजी कैद है। तद ठाकर चोबदार मेल मुजरौ मालम करायो। महाराज ठाकर कनै आपरा आदमी मेल कहायो कैजे एक बार ठाकर म्हांसूं मिल जावै तो ठीक रैवै।''

2.6 गद्य विधावां रा छोटा मोटा रूप

2.6.1 पीढ़ियावळी अर वंसावळी

राजस्थानी गद्य री अे दोन्यूं विधावां एकदूजा सूं रिळी–मिळी है। इणा में परिवार विसेस री पीढ़ियां अथवा राजवंस री नांवावळियां रो लगोलग विवरण दिरीजियौ है। जैन साहित्य सूं लगा'र चारण साहित्य री परम्परा तांई ऐड़ी घणीक रचनावां मिलै। जैनी लोग आपरै धरमाचारियां री पीढ़ियां वाचता अर वांरी वंसावळियां रा बखांण करता। राजस्थानी गद्य में सेठ साहुकारां, सामंत–सरदारां री पीढ़ियां रो हवालो दिरीजियौ है। राजवंसा री पीढ़ियां अर वंसावळियां वांरै अधीन गुजारौ करणिया चारण अर भाट लिखी ज्यांमै केई तरै री चमतकारी घटनावां रो जोड़–तोड़ भी करीजियौ। बां राजवंसां री उत्पत्ति चांद, सूरज, अगनी जैड़ी अलौकिक ताकतां सूं जोड़नै वांरौ वंस परिवार बखांणीजियौ। राजस्थान री पुरांणी रियासतां रै पोथीखानां अर जैन धरम रै उपासरां रै कोठां में इण गद्य विधा रा भण्डार भरिया पड़िया है। मध्यकालीन राजस्थानी गद्य री आ विधा आपरी खास पिछांण जतावैं। कथा, ख्यात, बात अर वचनिका रा कैई तत्त्व इण विधा में आपो आप सांवटीजगा है। वांरी भासा अर सैली में मारवाड़ी, ढूंढाड़ी अर हाड़ौती जैड़ी बोलियां रो असर निजरां आवै।

उदाहरण– ''एकलिंगजी कनै राठासण देवी है। तठै हारीत रिख बारै बरस बड़ी तपस्या करी। तठै बापो रावळ टोघड़ो चारतो, बांमण रो बेटो थको। सो इण हारीत रिख री बारै बरस घणी सेवा करी। पछै रिखीसर री तपस्या पूरी हुई। रिखीसर चालण रो विचार कियो। तरै बापा नै कीं देवणो चायो।..... वो राठासण देवी ऊपर कोप कियो तरै प्रतख हुय देवी कह्यौ ''मौनू कासां अग्या करौ छो।'' हारीत कह्यौ म्हारी इण डावड़ै बापै घणी सेवा करी। इणांनै अठांरौ राज दीयो चाहिजै। तरै देवी कह्यौ श्री महादेवजी नै प्रसन करौ।''

2.6.2 हाल अहवाल–हगीगत, विगत अर याददास्त

राजस्थानी गद्य री अे विधावां मुगल पतसाहां री सल्तनत री बगत सरू हुई। इणांमें इतियास री घटणावां रो विस्तार सूं विवरण मिलै। आंरौ सम्बन्ध ख्यात परम्परा सूं जोड़ियौ जाय सकै। मुगल दरबार री सींव सूं बारै निकळनै आ विधा देसी रियासतां रै राजदरबार तांई पूगी। जिण तरै बादसाह औरंगजेब री हगीगत अर दिल्ली रै बादसाहां री याददास्तां लिखीजी, उणी भांत बीकानेर री हगीगत, भाटियां री हगीगत, जैसळमेर देस री हगीगत अर रतलाम, सैलाणा,

सीतामऊ, झाबवा, आबझरौ, किसनगढ अर ईडर राज रा हालहवाल भी लिखीजिया। इण विधा सूं जुड़ियौड़ी तहकीकात अर विगत रा नमूना भी राजस्थानी गद्य विधा रा ईज छोटा मोटा टुकड़ा है। चारण, भाट अर रियासतां रा राजकवि राजा–महाराजा, सामंत सरदारां री वंसावळी री विगतां देयनै इण विधा रो फैलाव कियौ। वांमै राजावां रै नांवां रै सागै सागै जरूरी तिथियां, संवतां अर राजकाल रै वरसां री विगतां रा विवरण भी सामिल है। 'विगत' विधा नै बीतियौड़ी घटणावां री थोड़ा सबदां में करीयौड़ी 'टीप' भी कैय सकां। खास खास घटणावां नै याद राखण सारू 'याददास्तां' अथवा 'आदीदास्तां' भी लिखीजी। इण विधा री भासा रो एक नमूनो इण तरै है–

''खांन देस रो नांव आगे साबर हुतो। सु साहजहां पातसाह रै विखै मांहै नीसरियो हुतो। सु मालक मलकंवर रै तो इतरौ ठीक हुतो जु हिन्दुस्तानी कोई गढ में राखतो नहीं। ढूंढ काढतो सु पेराण नी पावै। ताहरां पछै खांनदोरा एको तुरकणी नै जाय मिलियो नै कह्यो–जु मोनूं मळकंवर मै जायनै बेच।''

2.6.3 पट्टा परवांना री गद्य विधा

पट्टा–परवांना रो गद्य मूळ रूप सूं राजकाज अर प्रसासन सूं जुड़ियौड़ौ रैयौ। वांनै एक तरै सूं 'कबजा दस्तावेज' अर 'अधिकार पत्तर' भी कयौ जाय सकै। रियासतां रा राजा–महाराजा जद जागीरदारां अर मुसाहिबां नै जमीन जायदादां रा अधिकार देवता तो वांरी लिखत रो विवरण 'पट्टो' कैवावतो। आजकाल री भासा में वांनै 'आज्ञापत्र' कैय सकां। 'पट्टा' अर 'परवांना' सबद आपस में घणो ताळमेळ राखै। वांरी बारीकियां रो भेद वांरी लिखत परवांणै जाणीजै। आपसी लैणदैण अर जमीन री खरीद फरौकत में भी पट्टा लिखण री पंजीकरण प्रणाली हालतांई चालै। वांरै खातर राज सरकार कांनी सूं एक न्यारो मैहकमो है। रजिस्टरी करावती बगत जरूरी टिगट अर दस्तावेज जोड़ना जरूरी गिणीजै। वांरी लिखत में खास खास हगीगत देवण खातर एक बंधियौड़ी पैठबंध सबदावळी रो प्रयोग करियौ जावै। मुसळमानां री सलतनत सूं लगा'र आज तांई पट्टा–परवांना री भासा में उरदू, फारसी रा सबद अर लिखत री खासियत कांम में लिरीजै। अबै वांरौ रूप जमाना री चालढाल रै मुजब बदळगो है। पुरांणा पट्टा परवांनां री नकल रा दोय नमूना नीचै लिखियौड़ा है, वांनै वाचनै राजस्थानी गद्य री इण विधा रो रूप परखियो जाय सकै।

पट्टा रो नमूनो

।।श्री रामजी।।

नकल पट्टा

श्री सीतारामजी सहाय महाराव राजाजी श्री सवाई सिवसिंह बहादुर सेवक राजा बहादुर मदनसिंह कलानोत

देह जागीर लिसाना। श्री दीवांण वंचनात ब इस्म बख्तावरसिंह हनुमतसिंह का नरूकावासी छिलौड़ी का दसे अत्र मौजा खेड़ा की एवज मौजा लिसाना परगना किशनगढ़ को तन 230 रास एक धरती बीघा 135।।3 बाकी 323। माफिक परवानगी राजा बहादुर पदमसिंहजी साख उन्हाळू संवत 1863 मुकाम अलवर थाने जागीर सीगे सरकार सूं दियो छै। गांव री आबादी कराय थोड़ा दिखाय हासिल खाय दरबार री चाकरी में हाजरी रैहबो करौला तब तक सीगा माफ। मिती आषाढ सुदी 12 संवत 1893.

''परवांणा रो नमूनो

।।श्री रामजी।।

नकल पर्वाना

मौजा बहरेर

लाला साहब मिहर्बान लाला गोविन्दप्रसाद तहसीलदार राजगढ सल्लामह अल्लाह ताला वर तबक मारूजा जबानी पदमसिंह व तखतसिंह व खुशालसिंह वगैरह हिस्सेदारान मौजा बहरेर हस्ब मुहकम वेदगान आली विदीगुंना इजे हस्बदार विजारफता हस्ब कि नाम बुर्दगान हकबर्या फूतगी हिस्से खुद हस्ब दस्तूर कदीम बमुजिब तफसील जैल हिस्सेदार रासान पदमसिंह नरूका।''

पट्टा–परवांना री आं नकलां सूं आ हगीगत सांमी आवै कै उण जमाना रै लेखन मांय उरदू–फारसी रै सबदां री भरमार ही। राजस्थानी गद्य रा अे नमूना मुसलमानी सासन री सबदावली रो जोरदार असर जतावै। इण तरै री परम्परा राजस्थानी गद्य में लिखियौड़ी सनदां, रुक्कां, चिट्ठा, ताम्बा पतरां अर बखसीसनामां माथै भी निजर आवै। 'महजर नामा', 'पंचाय नामा' अर 'मुचळका' लिखण री गद्य विद्या री खासियत परखने पुरांणी लिखत सैली रो अंदाजो लगायो जाय सकै।

ताम्बा–पतर रो नमूनो

ताम्रपत्र सं. 1447

श्रीरामजी

सही .....

सिद्ध श्री महाराजजी श्री रायमलजी को दत्त परदत्त बरामण नारायण राजघर जागीरीयो ग्राम नाडोल में एक धरती बीघा 125 मा बरसया तीम सुदी सुरज परबीम रा का तरपण कर दीधी जणां रो तांबा पतर कर दीदो। अणी री कोई दखल करसी वांनै श्री अकलिंग मात पूगसी। संवत 1447 रा मिती वैसाख वद। दसकत पंचोळी किसनलाल रा।

खास रुक्का रो नमूनो

श्री परमेश्वर जी सत्य हो

श्री कृष्ण चरण

शरण राजराजेश्वर

महाराजाधिराज महाराज

श्री विजयसिंहजी

कांस्य मुद्रिका (भाले की सही)

हुक्म छै

स्वरूप श्री राजराजेश्वर महाराजा श्री राज महाराजा श्री विजयसिंघजी महाराजा कंवर श्री फतेहसिंघजी वचनात–तथा मेड़ता रा व्यास लोकमंण जनारदन नै धरम खरै रुपीया 11/– खत रै आधो रुपीयो रौजी ने चलू मेड़ता री सायर सूं कर दीया छै सो चलू पाया जासी नै गीता पाठ कीयां जासी दरबार ने आसरी वाद देसी।

संवत 1810 री पोस सुदी 11 मुकाम मेड़ता

2.6.4 गद्य विधा री छुटपुट पद्धतियां

मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य मांय गद्य लेखन री छुटपुट विधावां अणगिणती मिलै। वांरै फुटकर विसयां रो मापो कोयनी। ज्योतिस, गणित, वैद्यक, जंतर–मंतर, तंत्रसाधना, योगशास्त्र, वेदांतदरसण, नाड़ी परीक्षा अर उपचार, दिनमांनगणक विधी, सुगन विचार, रुत चरचा, तीजतींवार, रस विग्यांन, नीती सारथ अर रौजमररा री जिनगांणी में काम आवणवाळी वस्तुवां सूं जुड़ियौड़ी बातां रो अखूट भण्डारौ राजस्थानी गद्य में भरियौड़ौ है। उदाहरण रै तौर पर वांरो एक नमूना पेस है–

''अथ कुंभराशी फळ लिख्यते ऊँ नमो भगवते श्री वासुदेवाय नमः। श्री महादेव भाखितं कुंभ राशि विचार। हरखे जलम री वारता अणैव सूं करम देवता पूछै।''

इण समै में कैई तरै रा 'नसीयतनामा' अर 'अरजदास्त' भी लिखीजिया। वांरी भासा सैली राजस्थानी गद्य री बेजोड़ थाती है। राजस्थानी साहित्य री अणूंती खूबियां री मिसालां उणरी गद्य विधावां में छिपियौड़ी है।

2.6.5 पट्टावली अर गुर्वावळी

राजस्थानी गद्य री आ विधा जैन गुरुआं री जीवणचरिया, चेलापरम्परा, धरमसाधना, समाजसेवा अर चमतकारी घटणावां रा व्यौरा देवै। अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर में इण विधा री हाथ लिखियौड़ी कैई पोथियां भेळी करियौड़ी पड़ी है। वां पोथियां री भासा अपभ्रंशमिश्रित राजस्थानी है ज्यांमै अलौकिक बातां रो भी लेख हुयौ। है। नागौरी लुंका गच्छीय पट्टावली, खरतरगच्छ पट्टावली, खरतरगच्छ गुर्वावली इण विधा री खास खास पोथियां गिणीजै। इणारै अलावा जैन उपासरां अर पुरांणा पोथीखांनां में पुराणी जनमपतरियां, प्रसस्तियां, तवारीखां तथा पट्टधर गुरुआं री जीवणियां रा गुटका भी भेळा करियौड़ा मिळै, जिणसूं जैन मुनियां रै जीवणकाळ रो पतो चालै। वांरौ एक उदाहरण–

''जिन हंस सूरितई वारइ सं. 1566 श्री शांतिसागराचार्य थकी आचार्य गच्छ जुअउ थयउ। तेइनइ पाठि श्री जिन माणिक्य सूरि संवत 1580 भाद्रवा सुदी 8 बळही देवराजकारित नंदी महोत्सवई। श्री जिनहंस सूरइ आपणइ हाथि आप्पा।''

2.6.6 दफ्तरी बहियां

मध्यकाल रा राजा महाराजा, सामंत, सरदार, अमीर, उमराव अर जागीरी जमीदार आपरै जीवण अर जायदाद री खास खास बातां जिण बही में लिखावता, वा बही 'दफ्तरी बही' बाजती। अेड़ी बहियां में रोजीना रा कांमकाज अर रौजनामचा दरज करिया जावता। जैन उपासरां, रियासती राजावां, मुगल बादसाहां तथा वणिज वैपारियां रै तैहखानां अर गोदामां में ऐड़ी बहियां रा भण्डारा भरिया पड़िया है। राजस्थान सरकार रो पुरातत्त्व विभाग आं बहियां रो पूरौ संग्रै करियौ है जिणमें राजघरांणां रो इतियास अर दिनचरिया रा कांमकाज लिखियौड़ा है। अे बहियां दफ्तरा में राखीजती इण कारण सूं वांनै दफ्तरी बही कैवता। ब्यावसादी, औसर–मौसर, तीजतींवार, जलममौत जैड़ा कामां रा ब्यौरा आं बहियां में लिखीजता। पुरांणी रियासतां रै संग्रालयां में ऐड़ी बहियां देखण में आवै। ब्याव री बही री भासा सैली रो एक नमूनो इण तरै है–

''महाराज श्री अजीतसिंघजी री रांणी व भटीयाणीजी जैसलमेर रा रावळ अमरसिंघजी री बेटी तिणारै बाई सूरजकंवर बाई तिणा नैंत्यां राजाजी श्री सवाईजैसिंघजी राजा विसनसिंघजी रा बेटा वकासिंघजी रा पोता तिणां नै परणाय जोधपुर सूरसागर विराजै तरै विहाव कीयो।''

राजघरांणां री दफ्तरी बहियां सूं राजपरिवार रै रीतिरिवाजां रै सागै सागै मध्यकाल री

सामाजिक, धारमिक अर राजनीतिक परिस्थितियां री भी पुख्ता जांणकारी मिळै। इणांरी भासा रो रूप सरूप साहित्य री गद्य विद्या रो टकसाळी रूप तो कोयनीं हो पण उणसूं आमजन री बोलचाल री भासा रो अंदाजो जरूर लगायौ जाय सकै।

2.6.7 कागद

कागद राजस्थानी गद्य रो छोटो रूप कहीजै। मध्यकाल में लोग–बाग आपरा सैंण सगां री कुसलखेम जांणण सारू निजू तौर सूं कागद पतर लिखता अर परिवारां रा हालचाल पूछता। खास मौकां माथै भी वांमै आपसी वैवार चालतो। इणरै अलावा सामाजिक कामकाजां अर आपसी लैणदैण में भी कागद पतर लिखीजता। सरकारी कामकाजां तथा रियासतां रै आपसी संबंधां रै खातर भी इण विधा रो उपयोग करियौ जावतौ। आ विधा आम जनता सूं लगा'र सगळा वरगां तांई पसरियौड़ी ही। आज रा मारवाड़ी विणज वौपारी भी आपसी लैण दैण में इण विधा नै कांम में लेवै। हुंडियां, पैठां अर परपैठां इण विधा रा ईज अंग गिणीजै। अे कागदपतर एक खास तरै री भासा में लिखीजता ज्यांरौ एक नमूनो इण तरै है–

''सिंध श्री गढ आंबेर महासुभ सुथानेर राजथानी विराजमांन, गंगाजळ निरमळ, सकळ सुखदायक महाराजा श्री बिसनसिंघजी लिखायत महाराज अनोपसिंघ रो मुजरौ अर खमाघणी। अठांरा समाचार भला छै। श्री राजरी घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन रा सदा आरौग्य चाहीजै। राज रो कागद आयो। हगीगत बांची। सुण्यां परम सुख हुवोजी।''

ब्याव रा नूता भेजण सारू कुंम कुंम पतरिकावां लिखीजती अर आज भी लिखीजै। साही फरमांना में उरदू फारसी रा सबद काम में लिया जावता पण देसी रियासतां रै निजू कागदां री भासा रो रूप न्यारो हो। आपसी मांन–सनमांन जतावण सारू भी कागद लिखणिया भांत–भांत री ओपमावां दैयर पुरांणा कांणकायदा निभावता। ब्यांव रै कागद रो एक नमूनो इण भांत है–

सिद्ध श्री साहपुरा सुभ सुथानेर सरब ओपमा लायक विराजमांन महाराजाधिराज नाहरसिंघजी सूं राजा विजैसिंघ रो जुहार वंचावसी। अठारा समाचार श्रीजी री किरपा सूं भला छै। राज रा सदा भला चाहीजै। अपरंच कंवर चंदरसेन रो ब्यांव मिगसर सुदी पांचम सोमवार रो छै। बरात ठिकांणा वसूलिया जासी सो राज च्यार दिन पैली पधारसी। राज पधारियां घणी सोभा होसी। मिति का बु. 5 संवत 1964 ता. 26.10.1807

2.6.8 दवावैत

दवावैत नै तुकांत गद्य रो गद्य–पद्य मिलियौड़ौ 'चम्पू' रूप कैय सकां। 17वीं सदी सूं आ रचना पद्धति विगसी। मुसळमानां री हकूमत में इणरौ घणो चलण हुयौ। उरदू फारसी सबदां री अधिकाई इण विधा में साफ निगै आवै। 'दवावैत' सबद री व्युत्पत्ति 'वैत' सबद सूं मानीजै। फारसी भासा में 'वैत' सबद रो अरथ एक 'सेर' तथा दोय मिसरा हुवै। उणरी देखादेखी राजस्थानी भासा गद्य में भी इणरो चलण हुयौ। जैन साहित्य रा रचणाकार जिनसुख सूरि, महारावल लखपत अर जिनलाभ सूरि दवावैत रचनावां रची। इणामें वचनिका साहित्य री भांत राजावां रै राज री मैहमा अर जुद्ध कोसळ रो वरणाव हुयौ। चारण कवेसर आ परम्परा आगै वधाई। गद्य पद्य री मिली जुली खूबियां सूं इण पद्धति रो रूप संवारीजियौ। डूंगरसी जैड़ा रचनाकार नामी दवावतां रची जिणामें जयपुर रा महाराजा जयसिंह कछवाहा (प्रथम) रो राजवैभव आखरां ढळ्यौ। 18वीं सदी में भाट माळीदास 'नरसिंघ दारू गौड़ री दवावैत' लिखी। उणीज सदी में जैन मुनियां रा जीवण चरित्तर दवावैत विधा में रचीजिया। छोटी छोटी वाक्य रचनावां में गद्य पद्य रो मेळ करनै इण विधा रो रूप संवारीजियौ जिण मांय खड़ी बोली रै सबदां

रो भी पुट दिरीजतो। डूंगरसी बागड़ी रचित 'राजा जयसिंह री दवावैत' सूं दोय उदाहरण देखीजै–

1. ''लखो लख पावते हैं। अगर के बगर कपूर के हिलूर' भ्रम पद के चोरे परमळ के पूर। रौजदी के छिड़काव संदळ सी रेल। कसमीरी की लपटें समीर की पैल। अंबर के डंबर उबै की धूप। अंतर की बूहै जवादी के रूप।''

2. ''आदमी की क्या चलै दलिद्दर सैवदी पड़ै। सपत दीप कब्ज कीनै, सपत दरियावां डंड दीनै। सूरवीरां के खेला, लागत है लेसै, जम सेती जंग करै जेसै पर जर कुलिंग तिली की साज, वापस के कदम खगराज। वाजा सूमां के ठौर कपड़े के नरम चसमां के सिरै।''

2.6.8 सिलोका

राजस्थानी भासा गद्य रो एक छोटो रूप 'सिलोका' गिणीजै। इण सबद री व्युत्पत्ति संस्कृत रै 'श्लोक' सबद सूं मांनीजै। इणमें गद्य अर पद्य रो मेळ मिलै। 'रघुनाथ रूपक' मांय इणनै गद्य विद्या रो ईज एक रूप बताईजियौ है। ब्याव रै मोकां माथै देवी देवतावां री स्तुतियां करण सारू घणा सिलोका लिखिजिया। बरात री अगवांणी, बंदोळां री वेळा, अर विदाई रै समै माथै चारण अर दूजा सैणसगा सिलोका जोर जोर सूं बोलता। जिणसूं जंवाइयां री अकल री परख भी करीजती। सवालां रो जबाब देवती बगत जंवाई लोग आपरै साळां नै सम्बोधित करनै आपरै खानदान रो हवालो देवता। साळा बैनोई रा सवाल जबाब संवाद प्रणाली में चालता। इणरो एक नमूनो इण तरै है–

''साळो पूछतो– आपरो गुरु कुण अर कैड़ो?

जबाब मिलतो– अम्हारा गुरु खरतरगच्छ नायक, आनंद दायक श्री शांतिसागर सूरि वणिता सांमळि।

सवाल– किसा अे ते गुरु?

जबाब– जोधपुर इसउ नामि करी महास्थान, अभिनव देव लोक समान। रिद्धि तणउ निधान, धनवंत लोके करी प्रधान।''

ऊपरला उदाहरण सूं सिलोकां री भासा सैली रो अंदाजो लगायो जाय सकै।

आ बात साफ साफ निजर आवै कै मध्यकाल री रचनावां में गद्य विद्या रा छोटा मोटा कैई रूप सामी आया। ख्यात, बात अर वचनिका साहित्य मांय वांरौ असली रूप–सरूप देखण नै मिळ्यौ। 13वीं सदी सूं लगा'र 18वीं सदी तांई आ परम्परा चालती रैई। नुंवा जमानां रै आयां पछै उणरी आभा घटण लागगी। आधुनिक राजस्थानी गद्य में नुंवी विधावां (एकांकी, नाटक, उपन्यास, निबंध, कहाणी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज अर जीवणियां) आयगी।

2.7 इकाई सार

राजस्थानी भासा गद्य री अे पुरांणी विधावां दूजी भासावां अर बोलियां में नीं मिलै। वांरी अेक अलग पिछांण अर खासियत है जिणसूं राजस्थान रो मध्यकालीन इतियास रूप संवारियौ है। आं विधावां रै कारण सूं ईज राजस्थान री भासा अर साहित्य आपरौ सुतंतर रूप थापियौ अर राजस्थानी संस्कृति री मरजाद कायम करी।

2.8 सबदावळी

राजस्थानी भासा री वरणमाळा अर ध्वनि प्रयोग न्यारा निरवाळा है। राजस्थानी गद्य री पुरांणी विधावां

री सबदावळी रो रूप घणखरी भासावां अर बोलियां रै सबदां सूं बणियौ है। राजस्थानी भासा री लिपि मुड़िया अर 'नागरी लिपियां रै संचां में ढळियौड़ी है उण माथै थोड़ो बोहत गुजराती रो ई असर पड़ियौ है। चूंकी उण गद्य री सरूवात जैन मुनियां अर आचारियां रै ग्रंथां सूं हुई, इण वास्तै उण पर प्राकृत अर अपभ्रंश री सबदावली रो असर भी मिलै। अपभ्रंश सूं ईज राजस्थानी भासा रा संस्कार ढळिया अर वे आगै चालनै चारण कवियां री रचनावां में उभरिया, जिणसूं राजस्थानी भासा रो सुतंतर रूप बणियौ।

मारवाड़ी बोली नै राजस्थानी भासा रो माणक रूप कैयो जाय सकै जिणरै लगोलग मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती अर दूजी बोलियां री सबदावळी भी उणरै विकास मांय सहयोगी बणी।

राजस्थानी भासा री सबदावळी में जकी भासावां अर बोलियां रो मेळ हुयौ, उणांरै सबदां रा उदाहरण देखीजै

अपभ्रंश भासा रा सबद– खणभंगरु, परिवेणिढिया, पुणु, माणुखउ, अवरौण, आरममइ, चितरार, णमोकार, उवज्झाय, पणासणो, पुणु, तिक्खुतो, तंबोळु, पोसवाउ, वळियइ, विफ्फुरइ, पडिसिया आदि।

संस्कृत रा सबद– संघरक्षा, महाद्रुम, दीपिका, विघात, पुनरपि प्रभात, जीवतव्य, भोगपरिभोग, चतुष्पद, चारित्र, चतुर्विध, वस्त्र आदि।

गुजराती भासा रा सबद– छइ, अेउ, अणि, एम, केम, थई, बीजउ, सूं थयो, एटळी, तिणि, तणउ, वळी, जाईस, खाईस आदि।

देसज सबद– कुबद, माथै, सरूपोत, छेलो, सींवाड़ो, कुचमाद, ऊमा, ठावी ठौड़, परगणो, सल्ला, पौळ, घणो, कनै, कोयनी, रैवास, बीजो, दूजो, एकट, एकलो, रौपियो, सारू, मुजब, सदावरत, पांणीवाड़ो, कांमकाज कांणकायदा आदि।

2.9 अभ्यास खातर सवाल

1. नीचे लिखियौड़ा सवालां रा उत्तर 500 सब्दां में दिरावौ–

1. राजस्थानी गद्य रो सरूवाती रूप कुणसा ग्रंथां में मिलै? वांरी सामान्य जांणकारी करावो।
2. राजस्थानी गद्य री पुरांणी विधावां रा नांव कांई है? वांरी खास खास खूबियां रो परिचय दिरावो।
3. चारण गद्य री परम्परा कद सूं चाली अर उणमें किण किण विसयां रो वरणन करीजियौ?
4. 'ख्यात' अर 'बात' नांवां री गद्य विधावां किसी बातां में समानता राखै अर वांरी तुलना 'वचनिका' साहित्य सूं किण भांत करी जाय सकै?
5. पीढ़ियावळी, वंसावळी अर गुर्वावळी नांव री विधावां रो आकार–परकार अर रचनापद्धति रो खुलासो करौ।
6. गद्य री पुराणी विधावां रै आधार माथै राजस्थानी भासा री विसेसतावां रो विवेचन उदाहरण देयनै करौ।

2. नीचै लिखियोड़ा सवालां रा उत्तर 150 सबदां में दिरावो–

1. बालावबोध, विधा, टब्बा साहित्य, पट्टा परवाना, रुक्का, बख्सीसनामा, दवावैत अर दफ्तरी बही।
2. राजस्थानी गद्य में कागद पत्तर लिखण री किसी किसी पद्धतियां अपणाईजी? एक दोय उदाहरण दैय'र वांरौ खुलासो करौ।
3. राजस्थानी गद्य री पुरांणी विधावां री जाणकारी करावो।
4. औ कैवणौ कठां तांई वाजबी लागै कै पुराणौ राजस्थानी गद्य आपरी विसयवस्तु अर भासा सैली रै कारण न्यारो निरवाळो है ?

5. राजस्थानी भासा रा गद्य रा उद्‌भव अर विकास नै समझावो।

2.10 उपयोगी पोथियां

पोथी	लेखक / सम्पा.
राजस्थानी भाषा और साहित्य	डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
राजस्थानी भाषा एवं साहित्य	प्रो. कल्याणसिंह शेखावत
राजस्थानी साहित्य–कुछ प्रवृत्तियाँ	नरेन्द्र भानावत
राजस्थानी वचनिकाएँ	आलमशाह खान
अचलदास खीची री वचनिका	सं. दीनानाथ खत्री
दयालदास री ख्यात	सं. डॉ. दशरथ शर्मा
बांकीदास री ख्यात	सं. नरोत्तमदास स्वामी
मुहणोत नैणसी री ख्यात	सं. बदरीप्रसाद साकरिया
रतनसिंघ महेसदासोत री वचनिका	सं. तैसीतोरी
वचनिका जग्गा खिड़िया री	सं. काशीराम शर्मा
राजस्थानी भाषा सर्वेक्षण	डा. ग्रियर्सन
राजस्थानी सबदकोस (भूमिका)	सीताराम लालस
राजस्थानी गद्य साहित्य : उद्‌भव और विकास	शिवस्वरूप शर्मा 'अचल'
हाड़ौती अंचल का राजस्थानी गद्य	सं. कन्हैयालाल शर्मा
राजस्थानी गद्य : विकास और प्रकाश	सं. नरेन्द्र भानावत
अपभ्रंश साहित्य	हरिवंश कोछड़

इकाई– 3

आधुनिक राजस्थानी गद्य री प्रमुख विधावां अर कथ्य

इकाई 1. कहाणी : परिभासा

तत्त्व– कथानक, चरित्र–चित्रण, संवाद, देसकाळ या वातावरण, भासा सैली, उद्देस्य

इकाई 2. नाटक : परिभासा

तत्त्व– कथा वस्तु, पात्र, संवाद, मंच–सज्जा, संकलण, त्रय, अभिनयसीलता, प्रभाव अेकठ, उद्देस्य

3. अेकांकी

4. लघुकथा

5. निबन्ध : परिभासा, महत्त्व

6. रेखाचित्र– पात्र या वस्तु, देस, जीवण–दरसण, सैली

7. संस्मरण–

तत्त्व : संवेदना अर सजगता, सच्चाई अर साफगोई, आतमदीठ, सरू अर अन्त में रोचकता।

8. डायरी :

तत्त्व– निजू अर गोपनीय दस्तावेज, रोजमररा री निजी घटनावां रो चित्रण, सच्चाई अर खरोपण, भासा सैली।

9. रिपोर्ताज–

तत्त्वः वस्तुगत तथ्य, इतिवृत्तात्मकता, पत्रकारिता अर साहित्यिक प्रतिभा रो मेळ, प्रभाव अेक्य।

10. यात्रा–वृत्तान्त : यात्रा रो महत्त्व अर योजना, भीतरी–बाहरी सौन्दर्य रो उद्‌घाटन, कौतूहल, वर्णन में सजीवता, उद्देस्य।

11. व्यंग्य : गैरी मानवीय संवदेना, सार्वदेसिकता अर सार्वकालिकता सैली, उद्देस्य, व्यंग्य विधा रा रूप

राजस्थानी गद्य रो विकास घणौ पैली हो चुक्यौ हो। ओ बिगसाव हिन्दी सूं तौ घणौ पैली हो चुक्यौ हो। बात, ख्यात, वार्ता, वचनिकावां रै अलावा रजवाड़ां रै आदेस–पत्रां, परवानां, बहियां आद में राजस्थानी गद्य रो रूप देख्यौ जा सकै। आधुनिक राजस्थानी में जिण विधावां पर रचनाकार आप री कलम चलावै, बै इण भांत है– उपन्यास, कहाणी, नाटक, अेकांकी, लघुकथा, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, रिपोर्ताज, जातरा वृत्तन्त, व्यंग्य।

1. कहाणी

राजस्थानी में बात रो प्रचलन आदिकाल सूं है। मनोरंजन अर सीख तांईं इण विधा री कोई बराबरी कोनी। कविता रै बाद कहाणी नै जितरी लोकप्रियता मिली है, बीजी किणी विधा नै कोनी मिली। आधुनिक कहाणी इण पुराणी विधा रो विकास कोनी अंग्रेजी में (Story) रै मुजब ई इण रै कथ्य अर सिल्प रो बिगसाव हुयौ है।

कहाणी रो सरूप अर परिभासा

कहाणी सबद रा कई पर्याय मिलै– लघुकथा, कथा, आख्यान, उपाख्यान, गद्य, गाथा, आख्यायिका आद। पस्चिम अर भारतीय विद्वानां कहाणी री परिभासावां दी है। कीं खास परिभासावां इण भांत है–

पच्छिम रै विचारकां मुजब कहाणी

एलरी– कहाणी घुड़दौड़ रीभांत हुवै। जिण भांत घुड़दौड़ री सरुआत अर अंत ई महताऊ हुवै उण ई

भांत कहाणी री सरुआत अर अंत ई खास महताऊ हुवै।

हडसन– लघुकथा में सिर्फ अेक ई मूळ भाव हुवै। बो विचार तर्क संगत अर भाव विचार साथै विगसाव लेवै। जिण री गति सुभाविक लेवै।

जॉन हैड फील्ड– कहाणी उण नै कैवै जिकी घणी कड़ी कोनी हुवै।

वेल्स– कहाणी तीस मिनट में पढ़ीजण वाळी कथा है।

भारतीय विचारक

प्रेमचन्द– ''कहाणी कोई अैड़ो बाग कोनी जिणमें भांत–भांत रा फूल अर बेलां सजेड़ी हुवै। बा तो अैड़ो बगीचो है जिणमें अेक ई गमलै री सौरम पूरी तरां बिखरै।'' अेक दूसरी जागां बै कैवै, ''अनुभूतियां रचनासील भावना सूं रंगीज'र कहाणी बण ज्यावै।''

जयशंकर प्रसाद– ''आख्यायिका में सौन्दर्य झळक रो रस है।''

इलाचन्द्र जोशी– जिनगाणी रो चक्कर घणी परिस्थितियां रै संघर्स सूं उल्टो–सीधो चालतो रैवै। इण बड़ै चक्कर री किणी खास परिस्थिति री सुभाविक गति नै दरसावण में ई कहाणी री विसेसता है।

डॉ. श्याम सुन्दर दास– आख्यायिका अेक खास लक्ष्य या प्रभाव नै लेय'र लिख्यो गयो नाटकीय आख्यान है।

पच्छिमी अर भारतीय विद्वानां री परिभासावां रै आधार पर कहाणी री नीचै लिखेड़ी विसेसतावां सामी आवै।

छोटो आकार– सगळा विद्वान इण बात सूं सहमत है कै कहाणी रो आकार छोटो होणो चायजै। उणमें सिर्फ किणी अेकाध घटना या छोटै सै काल–खण्ड रो चित्रण होणो चायजै। उणरी कथा वस्तु, सिल्प, रोचक अर कलापूर्ण होणा चायजै। उण नै पाठक घण्टै या आधै घण्टै में भण सकै इतो आकार काफी है।

गहरी संवेदना– कहाणी में संवेदना री गहराई जरूरी है। कहाणी में वर्ण्य विसय जिनगाणी, घटना, अनुभूति या भावना हुवैं इणरो निर्वाह करणै तांईं गहन संवेदना जरूरी है। कहाणी पाठक री संवेदना नै जितरीं उद्वेलित करैली बित्ती ई सफल मानी जावैली।

प्रभावान्विति– कहाणी रा पात्र, वातावरण, घटनावां अे सगळा मिल'र पाठक रै मन में अेड़ी संवेदना जगावै जिण सूं बो (पाठक) भौतिक जगत नै भूल'र कथा जगत में रस ज्यावै उण नै ई प्रभावान्विति कैवै।

वैधानिकता– कहाणी साहित्य री अेक विधा है– कला रूप है। इण री रचना रो अेक विधान है। इण कारण उण री रचना उण रै विधान रै मुजब होणी चायजै।

कहाणी रा तत्त्व– कहाणी रचना रा छः तत्त्व इण भांत है–

(1) **कथानक**– कथानक कहाणी रो प्राण तत्त्व हुवै। कथानक छोटो हुवणौ चायजै अर इण में जिकी घटनावां हुवै उणां में आपसी तालमेल इतरो जरूरी है कै पाठक रै मन में कौतूहल बण्यौ रैवै। कहाणी री सरुआत जोरदार हुवणी चायजै। आगै कांई हुयो? आ जिज्ञासा पाठक नै कहाणी पढ़ण तांईं प्रेरित करती रैवै।

(2) **चरित्र–चित्रण**– कहाणी में पात्र घणा नीं हुवणा चायजै। पात्रां री भीड़ सूं उणा रै चरित्र–चित्रण में अबखाई आवै। कहांणी में पात्रां रो चरित्र या तौ नाटकीय तरीकै सूं दिखावो जावै या विस्लेसणात्मक तरीकै सूं। ओ लेखक री चतराई अर कलात्मक रुचि (कथानक री मांग मुजब) पर आधारित हुवै कै बो कैड़ौ तरीको अपणावै।

(3) **संवाद**– जीवंत संवाद कहाणी नै रोचक अर पढ़णजोग बणावै। संवाद कथानक में आयोड़ै गतिरोध नै तोड़'र कथा नै आगै बधावै। चरित्र–चित्रण में संवाद घणा महताऊ हुवै। संवाद छोटा, सारगर्भित अर पात्रां रै अनुरूप हुवणा चायजै।

(4) **देसकाल या वातावरण**– कहाणी में देसकाल अर वातावरण रो चित्रण घणौ जरूरी है। कथानक री घटनावां में स्पष्टता, वास्तविकता, मार्मिकता ल्यावण तांईं देसकाल अर वातावरण घणो महताऊ हुवै। लेखक रै मन पर उण रै बखत अर समाज री जिकी छाप पड़ी हुवै बा छाप देसकाल या वातावरण में उभरै। देसकाल नै प्रस्ठभोम में राख'र ई सुभाविक चरित्र–चित्रण कर्‌यो जा सकै।

(5) **भासा सैली**– भासा सैली कहाणी रो जरूरी तत्त्व है। कहाणी री भासा जे आम बोल–चाल री हुवै तो घणी ठीक रैवै क्यूं इण सूं उण में सुभाविकता आवै अर जिनगाणी रै नेड़ै लखावै हुवै। सैली रो मतलब है कै लेखक कथ्य रो प्रस्तुतिकरण किण भांत करै? सैली लेखक री पिछांण हुवै अर हरेक लेखक री सैली अलग–अलग हुवै।

(6) **उद्देस्य**– कहाणी रो अेक उद्देस्य तौ मनोरंजन हुवै पण साथै ई उण में जिनगाणी रो कोई संदेसो भी हूवणौ चाइजै। बियां सीधो उपदेस कोई कोनी सुणणो चावै इण कारण कहाणी में 'कान्ता सम्मत उपदेस हुवै। सामाजिक विसंगतियां, विद्रूपतावां अर जथारथ रा चितरांम खींच'र लेखक पाठक री संवदेनावां जगावै। कहाणी रो उद्देस्य आदर्सवाद, आदर्सोन्मुखी जथारथवाद या जथारथवाद कोई भी हो सकै।

2. नाटक

राजस्थानी गद्य में नाटक भी लोकप्रिय विधा है। भरतमुनि नाट्यशास्त्र रा पैला आचार्य हा। उणां रो मानणो है, ''नाटक में सुभाविक रूप सूं लोक रो सुख–दुःख मिलेड़ो हुवै अर अंग आद रै माध्यम सूं अभिनय कर्‌यो जावै। उण नै ई नाटक कैवै।'' अभिनव गुप्त रो कैवणै मुजब, ''नाटक बो दरस काव्य है जिको प्रत्यक्ष, कल्पना अर लगोलग कोसीस रो विसय बण'र सांच अर झूठ सूं मिल्यो–जुल्यो विलक्षण रूप धारण कर आम मिनख नै आनन्द दिखावै।''

आचार्य विश्वनाथ नाटक रै भीतरी अर बाहरी सरूप री व्याख्या करता कैवै, ''नाटक रो कथानक मसहूर होणो चायजै। उण में वीर रस, सिणगार अंगिरस रै रूप में अर बाकी सहायक रसां रै रूप में प्रकट होणा चायजै। नाटक रो नायक मसहूर कुल में पैदा होयेड़ो, धीरोदात्त, प्रतापी, गुणगान दिव्य मिनख होणो चायजै। नाटक में पांच सूं लेय'र दस अंक तक हो सकै...।''

नाटका रा तत्त्व

नाटक रा तत्त्व इण भांत है–

1. कथा वस्तु
2. पात्र
3. संवाद
4. मंच सज्जा
5. संकलण त्रय
6. अभिनयसीलता
7. प्रभाव अेकठ
8. उद्देस्य

कथा वस्तु– नाटक री कथा वस्तु तीन भाँतरी हुवै।

1. **प्रख्यात**– इतिहास अर पुराण री मिली जुली कथा नै प्रख्यात कैयो जावै।
2. **उत्पाद्य**– सिर्फ कल्पना पर आधारित कथानक नै उत्पाद्य कैयो जावै।
3. **मिश्र**– इतिहास अर कल्पना सूं मिलेड़ी कथां नै मिश्र कथा कैयो जावै। मुख कथानक साथै बिचाळै –बिचाळै कई छोटी–छोटी प्रासंगिक कथावां भी चालै। नाटक सूं जुड़योड़ी कथा जिकी सुरू सूं अंत तक नाटक में चालै उणा में अधिकारक अर गौण पात्रां साथै जुड़ेड़ी कथावां चालै बानै प्रासंगिक कैवै। प्रासंगिक कथा रा भी पताका अर प्रकरी दो भेद हुवै। नाटक रै कथानक रै विकास री पाँच स्थितियाँ इण भांत मानी गई है– 1. सरुआत 2. जतन 3. प्राप्तयासा 4. नियताप्ति 5. फलागम।

पात्र– संस्कृत रै आचार्यां नाटक रै नायक अर बीजै पात्रां मुजब गैराई सूं विचार कर्‌यो है। उणां रो कैवणो है नाटक रो नायक गुणां रो भण्डार हुवणौ चायजै। बे नायक रा च्यार भेद मान्या है– धीरोदात्त, धीर ललित, धीर प्रसान्त अर धीरोद्धत। इणी भांत नाटक रै बीजै पात्रां मुजब भी चरचा करीजी है।

संवाद– नाटक रा संवाद दरसकां नै मंच अर नाटक रै कथानक सूं सीधा जोड़ै। नाटक में लेखक सारू कैवण नैं कीं कोनी हुवै। नाटककार जिकी बात कैवणी हुवै संवादां रै माध्यम सूं पात्रां रै मूंडै सूं कैवै। इण खातर अेक नाटक लेखक नै संवाद रचणा में बड़ी सावधानी बरतणी चायजै।

मंच–सज्जा– भारतीय विचारकां नाटक रै इण पहलू पर खूब गैराई सूं विचार कर्‌यो है। नाटक देखण रो काव्य है। उण रो असर दरसक पर सीधो पड़ै। इण कारण समाज में जिको कीं वरजत है या गोपनीय है उणनै मंच पर दिखाणो भी वरजत हुवै। मंच सज्जा रै माध्यम सूं नाटक रो निर्देसक प्रतीक रूप में घणकरी'क बातां बिना कैयां कै देवै। मंच सज्जा जितरी असरदार अर आकरसक हुवैली दरसक बितोही नाटक साथै जुड़ाव मैसूस करैलो। जटिल भांत री मंच सज्जा भी नीं हुवणी चायजै। जिण भांत हिन्दी में प्रसाद जी रा नाटक कथ री दीठ सूं सबळ होय'र मंचसज्जा री दीठ सूं कमजोर मान्या जावै।

संकलण त्रय– स्थान, काम अर बखत री अेकता नै संकलण त्रय कैयो जावै अर्थात् नाटक में घटित घटना री जागां, बखत अर काम आद में तालमेल अर कार्य कारण सम्बन्ध हुवणौ चायजै। इण रै अभाव में नाटक कमजोर साबित हुवै।

अभिनयसीलता– नाटक री सफलता जद ई मानी जावै जद उण नै मंच पर भली भांत दरसायो कर्‌यो जा सकै। कथ री दीठ सूं सबळ होय'र भी नाटक दूजै तत्त्वां रै कमजोर होणै सूं असफल हो सकै। मंच पर सफलता तांईं नाटक रा पात्र संवाद, मंच सज्जा आद कई तत्त्व है जिण री पूरी भूमिका हुवै। नाटक री सफलता मंच, अभिनेतागण अर दरसक तीनां रै त्रिकोण पर आश्रित हुवै। नाटक रै अलग अलग तत्त्वां रो सफलतापूर्वक संयोजन अर प्रस्तुतिकरण ई अभिनयसीलता है।

प्रभाव अेकठ– प्रभाव अेकठ रो मतलब है– कथावस्तु, संवाद, पात्र, मंच–सज्जा सगळा तत्त्व अेकै साथै मिल'र दर्सक रै मन नै प्रभावित करै। जद तक अै तत्त्व दरसक नै कथानक रै ध्येय सूं नीं जोड़ सकै नाटक री सफलता में सक हुवै।

उद्देस्य– नाटक मिनख री जिनगाणी रो चितराम है। इण कारण ई मानव–मन पर नाटक रो असर बीजी विधावां सूं ज्यादा गैरो अर स्थायी हुवै। पुराणा आचार्य धर्म, अरथ, काम अर मोक्ष मांय सूं किणी अेक नै नाटक रो उद्देस्य बणांवता। आधुनिक काल में नाटक रो उद्देस्य आदर्सवादी, आदर्सोन्मुखी जथारथवादी या जथारथवादी हुवै। भारतीय साहित्य में सुखांत नाटकां रो प्रचलण घणो हो पण पच्छिम में 'त्रासदी' ज्यादा लिखीजी।

3. अेकांकी

अेकांकी भी अेक नाट्य रूप है। अेकांकी नाम अंग्रेजी भासा रै "One Act Play" रो अनुवाद है। आ छोटै आकार री अेक अंक री नाट्य विधा है। इण रा बै ईज तत्त्व है जका नाटका रा हुवै। नाट्क आप रै कथानक में पूरी जिनगाणी नैं समेटणै री कोसीस करै पण अेकांकी में कोई अेक घटना या जिनगाणी रो कोई खास पल दिखाइजै। नाटक अर अेकांकी में बो ईज फर्क है जको महाकाव्य अर खण्ड काव्य में हुवै या उपन्यास अर कहाणी में हुवै। अेकांकी थोड़ै बखत में मिनख री जिनगाणी री कोई छोटी सी झलक दिखाणै री कोसीस करै। इण में सिर्फ अेक ई कथा या घटना हुवै। दरसाव अेक या अेक सूं ज्यादा, कथानक री मांग मुजब हो सकै। इण में कम सूं कम दो पात्रां सूं लेय'र घणै सूं घणा नौ पात्र हो सकै। इण सूं घणै पात्रां री भीड़ चरित्र–चित्रण में रुकावट पैदा करै। आदर्स पात्र संख्या तो पाँच या छः ई हुवै। कई अैड़ा अेकांकी भी देखण में आया है जिणा में पन्दरा या बीस पात्र तक भी है। अैड़ा अेकांकी चरित्र–चित्रण नीं कर कोई परिस्थिति विसेस नै उभारणै तांईं रच्या जावै।

आज भागम–भाग रै इण जुग में मिनख कनै जद बखत री कमी है तद अेकांकी खूब सफल हुयो है। अेकांकी रो भविस घणौ ऊजळौ लागै।

4. लघुकथा

लघुकथा आधुनिक काल री उपज है पण ऋग्वेद काल सूं लेय'र आज तक बरोबर लघुकथावां लिखीज री है। पुराणै जमानै में अे छोटी कथावां उपदेस या सीख रो माध्यम ही। आधुनिक लघुकथा पर अंग्रेजी री Short Story रो प्रभाव है। आप रै चुस्त कथ मार्मिक व्यंग्य अर संवेदना रै कारण हरैक भासा रै साहित्य में लघुकथावां री लोकप्रियता है। लघुकथा री विसेसतावां इण भांत है–

1. कलेवर में छोटी पण 'नाटक रै तीर' भांत 'गंभीर घाव' करणै में सक्षम हुवै।
2. कम सबदां रो प्रयोग। सबद अठै अमिधा सूं ज्यादा लाक्षणिक अर व्यंजनात्मक अरथ देवै।
3. व्यंग्य अर संवेदना लघुकथा रा प्राण हुवै।
4. लघु कथा में अेक तरैसूं अरथ रो विस्फोट हुवै। जिण भांत गूंज रै बाद अनुगूंज देर तक रैवै उणी ई भांत लघुकथा रो असर हुवै।
5. इण में कौतूहल तत्त्व सरु सूं अन्त तक रैवै। पाठक लघुकथा सरु कर्यां पछै पूरी भण'र ई छोड़ै।
6. कथानक, चरित्र–चित्रण या देसकाल रो बरणाव– चंद सबदां में पाठक री कल्पना सक्ति नै उड़ान भरणै रो पूरो मौको देवै।
7. पाँच–सात मिनट में पढ़ी जावण वाळी कथा।

राजस्थानी भासा में लघुकथावां रो भविस ऊजळौ है। इण री लोकप्रियता रो जाणकारी इण बात सूं मिळै कै राजस्थानी री हरैक पत्र–पत्रिका में लघुकथा नै बरौबर जागां मिळै।

5. निबन्ध

निबन्ध रो विवेचन करतां आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिख्यो कै, "अगर गद्य लेखकां अर कवियां री कसौटी है तो निबन्ध गद्य री कसौटी है। भासा री पूरी तागत रो बिगसाव निबन्धां में ई सब सूं घणो हुवै।" इण सूं औ प्रमाणित हुवै कै गद्य रो पूरो बिगसाव अर जबरो रूप निबन्ध में आय'र दीखै। बीजी विधावां में भासा साध्य बण ज्यावै पण निबन्ध में साधन ई बणी रैवै। साहित्य में निबन्ध बीजी विधावां सूं बिलकुल नुवीं विधा है। आधुनिक कहाणी या नाटक नै पुराणी कहाणी अर नाटक रो विकसित रूप कैयो जा सकै पण निबन्ध रो कोई रूप पुराणै साहित्य में कोनी मिलै।

निबन्ध संस्कृत भासा रो बहुअर्थी सबद है जिण में 'नि' रो मतळब है विसेस रूप सूं अर 'बन्ध' रो अर्थ हुवै 'बंधण'। 'बंध' रो मतळब बांध या गांठ भी हुवै। इण कारण कई आलोचक निबन्ध सबद री व्याख्या करता कैवै– जिण रचना रो हर अेक 'बंध' खास हुवै बो 'निबन्ध' हुवै। निबन्ध रै पर्याय रै रूप में लेख, रचना अर प्रस्ताव सबदां रो प्रयोग भी हुवै पण असल में कोई भी सबद निबंध सबद रो पूरो अरथाव कोनी करै। निबन्ध सबद आप रै मूळ अरथ सूं हट'र अेक नुवैं अर निरवाळै अर्थ में प्रयोग कर्‌यो जावै ओ सबद अंग्रेजी रै ESSAY सबद रो समानार्थी सबद है। पच्छिम अर भारतीय विद्वानां मुजब निबन्ध री परिभासा इण भांत है–

'ऑक्सफोर्ड' सबदकोस मुजब, ''निबन्ध किणी खास विसय, या विसय री साखा विसेस माथै साधारण बलेवर री रचना है, जिण में सरु सूं अपरिपूर्णता रैवती अर जिकी अव्यवस्थित अर अपरिपक्व होंवती।'' पच्छिम रा प्रसिद्ध निबन्धकार सैमुअल जॉनसन कैवै, ''निबन्ध मुगत मन री मौज है। वा व्यवस्थित अर संगठित नीं होय'र अव्यवस्थित अर अपरिपक्व रचना है।''

मानतेन रै मुजब, ''म्हांरी इण भांत री रचना साहित्य री अेक विसिस्ट नुवीं पद्धति रै मुजब कोसीस मात्र है।''

हिन्दी सबदसागर, निबन्ध बा व्याख्या है जिणमें अनेक मतां रो संग्रै हुवै।

बाबू गुलाब राय– निबन्ध उण गद्य रचना नै कैवै जिकी में अेक सीमित आकार रै मांय किणी विसय रो वर्णन या प्रतिपादन अेक खास निजूपण, सौस्ठव, स्वच्छन्दता, सजीवता आवसयक संगत अर सम्बद्धता रै साथै करियोड़ो व्है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी– भावां अर विचारां री प्रधानता अर सैली री रमणीयता रै जोड़ सूं जिका नवीन साहित्य रो प्रचलण हुयो है बो ई निबन्ध साहित्य है।

डॉ. श्री कृष्ण लाल– निबन्ध बो साहित्य रूप है जिण में लेखक प्रतिपाद्य विसय रै भीतर ई आपरी रुचि, भावना अर विचारां री स्वच्छन्द भाव सूं अभिव्यक्ति करी है।

निबन्ध री अलग–अलग परिभासावां भणतां थकां कैयो जा सकै कै निबन्ध रो क्षेत्र घणो विसाळ है। निबन्ध किणी भी विसय पर लिख्यो जा सकै। विसय नीं हुवै तौ भी लिख्यो जा सकै। इण में लेखक रा विचार सुतंतर हुवै। इण कारण निबन्ध में लेखक रै व्यक्तित्व री झलक देखी जा सकै। इण में सब सूं महताऊ बात आ है कै निबन्ध में सैली री प्रधानता रैवै। खास तौर सूं निबंध दो भांत रा हुवै– 1. व्यक्ति निस्ठ 2. वस्तु निस्ठ। इणा दो भांत रा निबन्धां रै फैर– वर्णनात्मक कथात्मक, विचारात्मक, आलोचनात्मक, भावात्मक आद कई भेद हुवै। हरैक निबन्ध रा तीन भाग हुवै– 1. भूमिका 2. वर्ण्य वस्तु 3. उपसंहार

भूमिका में लेखक आप रै विसय रो प्रस्तुतीकरण करतो उण री विसेसता बतावै अर पछै बिन्दुवार विसय वस्तु रो वर्णन करतो जावै। आखिर में विसय री बात नै समेट'र खुद री बात पाठक सामी राखै।

6. रेखाचित्र

रेखाचित्र आधुनिक गद्य री नुंई विधा है। औ मूळ रूप सूं चितरकला रो सबद है जिण भांत चित्रकार रंग अर कूंची नीं लेय'र पैंसिल री मदद सूं कीं लकीरां खींच'र कोई चितरांम कोर देवै उणी ई भांत जद लेखक कीं सबदां रै माध्यम सूं किणी मिनख, वस्तु, जागां, घटना या भाव आद रो अैड़ो चित्र पाठक सामी प्रस्तुत करै कै उण नै भणतां ई लेखक रो उद्देस्य समझ में आ ज्यावै। वास्तव में औ सबद अंग्रेजी रै Sketch रो पर्याय है। जिण भांत रेखाचित्र में चित्रकार ना तो घणा रंग अर ना रेखावां रो प्रयोग करै, बस हळकै साथ सूं कीं लकीरां खींच देवै। इण कारण इण नै कई आलोचक 'सबद चित्र' भी कैवै। हिन्दी साहित कोस में रेखाचित्र री परिभासा आं सबदां में दी है, ''रेखाचित्र किणी मिनख, वस्तु, घटना रो कम सूं कम सबदां में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण अर सजीव अंकन है।''

डॉ. नगेन्द्र मुजब, ''रेखाचित्र अेक अैड़ी रचना दांई प्रयोग हुवै जिण में लकीरां हुवै पण मूरत रूप अर उतार–चढ़ाव रै साथै।''

रेखाचित्र कीं, कहाणी रै नेड़ै तौ हुवै पण बो कहाणी कोनी हुवै। निबन्ध भी कोनी हुवै। कम सबदां में रचेड़ो सबद चित्र हुवै जिण नै रेखाचित्र कैवै। इण में विस्तार री जागां गैरी संवेदना हुवै। रेखा चित्र रचण वाळै रो खुद रो द्रिस्टिकोण हुवै। इण कारण अेक ई मिनख, जागां या घटना रा न्यारा–न्यारा रेखाचित्र हो सकै। रेखाचित्र में वस्तु वर्णन, सबदां रै माध्यम सूं तो होवै ई है पण घणकरो'क सबदातीत भी हुवै। रेखा चित्र रा मुख रूप सूं चार तत्त्व हुवै–

1. पात्र या वस्तु 2. देस 3. जीवण–दर्सन 4. सैली

पात्र या वस्तु– रेखाचित्र में वर्ण्य विसय रै रूप में मिनख या मिनख सूं इतर कोई भी प्राणी, वस्तु, जागां या घटना हो सकै। लेखक सबदां रै माध्यम सूं उण रो हळको–हळको सो भावपूर्ण चित्र रचै साथै ई उण री पृष्ठ भूमि भी रचै। जिण भांत चित्रकार आप चित्र लारै पृस्ठभूमि बणा'र चित्र नै उभारै उण ई ज भांत सबद चित्रकार भी वातावरण, घटनावां आद रो चितराम खींच'र रेखाचित्र नै भावपूर्ण बणावै जिण सूं उण री पिछाण बिलकुल स्पस्ट हो ज्यावै।

देस– जिण भांत चित्रकार जद चित्र बणावै तौ चित्र री पृष्ठभूमि में रंगां रै संयोजन रो पूरो ध्यान राखै उण ई ज भांत आप रै सबद चित्र साथै जिकी घटनावां, परिस्थितियां आद रो चित्रण करै उण नै ई देस कैवै।

जीवण–दरसण– रेखा चित्र में चाये कम सूं कम सबदां रो प्रयोग हुवै पण मिनख रा सम्बन्ध जिण वस्तु प्राणी या मिनख साथै है उणां नै भी व्याख्यायित कर्‌यां जावै।

अै सम्बन्ध रागात्मक, साहित्यिक, दार्सनिक किणी भांत रा हुय सकै। जद लेखक इण सम्बन्धां री व्याख्या करैला उण रो जीवण दरसण भी साथै–साथै अभिव्यक्त हुवता जावैला।

सैली– रेखा चित्र रै लेखक रो भासा पर पूरो अधिकार हुवणौ चायजै। उण नै गागर में सागर भरणै री कला आणी चायजै। जिण भांत अेक फोटोग्राफर फोटू–खींचती बगत कोई खास कोण खोजै उण ई भांत रेखा चित्र लिखण वाळो लेखक आप रै द्रिस्टि कोण सूं ई वर्ण्य विसय रो कोण खोज'र लिखै।

7. संस्मरण

राजस्थानी साहित्य में संस्मरण सैं सूं नुंवी विधा है। इण रो लेखण पच्छिमी साहित्य में खूब हुयौ है। बठै सूं हिन्दी अर बीजी भारतीय भासावां में भी आ विधा आई। इण में कल्पना कम पण संवेदणसीलता अर जथारथ रो पुट घणो हुवै। हालांकि आ विधा आत्मकथा रै घणी नेड़ी दीखै पण आत्मकथा कोनी हुवै क्यूं कै आत्मकथा रै लेखक रो उद्देस्य खुद री जिनगाणी री कथा कैवणो हुवै। बो आपरी आत्मकथा में बाहरी इतिहास या समाज नै उतरों ई ग्रहण करै जितरो खुद सूं जुड़ेड़ो हुवै बाकी सूं उण नै कोई मतलब कोनी हुवै पण संस्मरण रो लेखक अेक दरसक हुवै। संस्मरण लेखक किणी प्रसंग या घटना नै जिकी दूसरां सूं जुड़ेड़ी हुवै, रो प्रत्यक्षदरसी बण'र बड़ी आत्मीयता अर संवेदना साथै अभिव्यक्त करै।

संस्मरण रो रचनाकार बड़ो भावुक हुवै। बो आप री यादां रै सहारै अतीत नै सहेजै। संस्मरण लेखक आमतौर पर प्रसिद्ध मिनख हुवै। उणां री जिनगाणी में जिका महताऊ मिनख आवै या उणां नै किणी रूप सूं प्रभावित करै बै उण नै संस्मरण में संजो लेवै। संस्मरण री परिभासा देता डॉ. सत्येन्द्र कैवै, ''संस्मरण में मात्र कीं चुणेड़ै लोगां री जिनगाणी री कीं घटनावां रो वर्णन हुवै। अै घटनावां बै हुवै जिण सूं लेखक प्रभावित हुवै।'' संस्मरण मुजब डॉ. कृष्णदेव शर्मा रो कैवणो है, ''संस्मरण लेखक सबदां सूं जिनगाणी री विविध घटनावां मिनखां अर दरसावां रो अैड़ो सजीव चित्रण उपस्थित करै कै पाठक रै सामी बो मिनख, वातावरण या प्रसंग सजीव हो ज्यावै। गद्य में लिखेड़ै इणी चित्र नै संस्मरण कैयो जावै।''

संस्मरण रा तत्त्व

संवेदना अर सजगता– बियां तौ कहाणी हुवै या कविता, उण में संवेदना जरूरी हुवै पण संस्मरण लेखक सहृदयता साथै उण घटनावां या सम्बन्धां रो वर्णन करै जिकी पाठक रै मन में संवेदना भी जाग्रत करै। इण साथै–साथै उण नै सजग रैवणो जरूरी है कै संस्मरण कठै ई आत्म प्रसंसा बण'र नीं रै ज्यावै।

सच्चाई अर साफगोई– संस्मरण लेखक नै घटनावां या सम्बन्धां में सच्चाई अर साफगोई सूं काम लेणो चायजै। उण नै तटस्थ भाव सूं वरणाव करणो चायजै। काल्पनिक या बढ़ा–चढ़ा'र वरणाव करणै सूं संस्मरण अविस्वसनीय अर कमजोर हो ज्यावै। संस्मरण लेखक नै जठै भी खुद री कमजोरी नजर आवै बा भी बताणी चायजै इण सूं पाठक रो लेखक रै प्रति विस्वास गै'रो हुवै।

आतमदीठ– संस्मरण लेखक में आतमदीठ री खिमता होणी चायजै जिण सूं खुद रै सुभाव अर प्रवृत्तियां रो सूक्षम निरीक्षण कर तटस्थ भाव सूं अभिव्यक्त कर सकै। संस्मरण लेखक में खुद रै बारे में लिखती बेळा द्रस्टा रो भाव होणो चायजै आत्म सम्मोहन रो नीं।

सुरु अर अन्त में रोचकता– संस्मरण री सरुआत जोरदार ढंग सूं करणी चायजै। पाठक अेकर संस्मरण पढ़णो सरु कर देवै तो बिचाळै नीं छोड़ सकै इण भांत सूं वरणाव करणो जरूरी हुवै। इणी भांत अंत भी रोचक अर प्रेरणास्पद होवैला तौ पाठक उण नै सदां–सदां खातर याद राखैला।

8. डायरी

डायरी अेक बिलकुल निजू दस्तावेज है जिण में लेखक आप रै अेकान्त अर गोपनीय क्षणां रो हाल लिखै। डायरी अैड़ो दस्तावेज है जिण नै लेखक दूसरां नै दिखाणै सारु घटित मिनख अेकान्त पलां में डायरी रै पानां पर लिख'र बांण नै लुको'र धर देवै। बो किण सूं प्रेम करै अर किण सूं नफरत, किण सूं मन ई मन बैर पाळै, इण सब नै बड़ी साफगोई सूं डायरी रै पानां पर उतार देवै। कैवण रो मतलब औ हुयो कै भीतरलै मन री बै बातां जैड़ी लोगां सूं लुकाणी हुवै, (क्यूं कै दूजां नै बेरो लाग्यां उण री इज्जत जाणै रो डर रैवै।) डायरी रै हवालै कर खुद रो जी हळको कर लेवै। आ भी अेक भांत सूं 'रेचन प्रक्रिया' (Catharsis) है। कैवणै सूं दुःख हळको हो ज्यावै या मन नै जिकी बातां सतावै बै डायरी में लिखणै सूं मिनख नै सुख मिलै। इण रै बावजूद डायरी अेक लोकप्रिय अर रोचक विधा है। मिनख रै मन में दूसरां नै जाणणै री जिज्ञासा बरौबर रैवै इण कारण महान लोगों री 'डायरी' भी लोगां नै साहित्य जैड़ो आणंद देवै। हरेक मिनख में कमजोरी है पण दूसरा किण भांत जाणै? अेक महान हस्ती जद आप री कमजोरियां डायरी रै माध्यम सूं लोगां सामी अभिव्यक्त करै तौ भणणियां औ सोच'र खुद नै आस्वस्त कर लेवै कै वां में जिकी कमजोरियां है बै तौ इतरैं बड़ै–बड़ै मिनखां में भी है पण बै इतरां बड़ा मिनख इण कारण ही बण सक्या कै बां कमजोरियां पर जीत हासिल करी। कमजोरियां नै खुद पर हावी कोनी होण दी। इण भांत डायरी आप रै पाठक नै प्रेरणा देय'र सोद्देस्य लेखन बण ज्यावै। 'डायरी' विधा रा तत्त्व इण भांत हैं–

निजी अर गोपनीय दस्तावेज– 'डायरी' लेखक रो नितान्त निजू दस्तावेज हुवै जिण में बो आपरी जिनगाणी री बै गोपनीय घटनावां दरज करै जिण रो प्रचार उण रै सामाजिक सम्बन्धां या प्रतिष्ठा नै भी धक्को पुगा सकै। डायरी में लेखक बड़ै निरमम भाव सूं आपरी कमजोरियां अर दूसरै लोगां रै प्रति आप री दीठ रो वर्णन करै। डायरी लेखक डायरी लेखन में बां बातां रो ध्यान राखै जिण सूं डायरी आत्मकथा नीं बण जावै क्यूं कै कई बड़ा लेखक आगै चाल'र आत्मकथा लिखणै तांईं भी डायरी रो उपयोग करै।

रोजमररा री निजू घटनावां रो दरसाव– डायरी लेखक आम तौर पर रोज री घटनावां जिकी उण नै प्रभावित करै या जिण नै बो याद राखणै लायक समझै डायरी में लिख लेवै, साथै ही खुद री प्रतिक्रिया

भी दरज कर देवै। कदै आगै चाल'र उण री बे प्रतिक्रियावां सिर्फ भावुकता लागै अर कदै दूरदरसिता भी। इण सूं लेखक रै बिगसाव रो भी पतौ लागै।

सच्चाई अर खरोपण– डायरी में खरी अर मिर्च री भांत चिरमिराट लगावण वाळी सच्चाई रो चित्रण हुवै। गुड़–लपेटी सच्चाई अठै कोनी चाल सकै क्यूं कै अठै मिनख खुद रै दरपण में खुद नै देखै। डायरी लेखन में भी अगर लेखक आत्म सम्मोहन रो सिकार हो ज्यावैलो तौ उण री डायरी रो कोई विस्वास कोनी करैला। बो फगत लेखक रै खुद रै भणण जोग रह जावैला। डायरी लेखक में इतरी हिम्मत अर बेबाकपणो होणो चायजै कै बो सांच स्वीकारणै सूं नीं डरै चायै बदळै में कितरो ई मोल चुकाणो पड़ै।

भासा–सैली– कई लोग अैड़ै तरीकै सूं डायरी लिखै जिणनै बै खुद तौ समझ सकै दूसरा नीं। अैड़ी डायरी रो साहित्यिक महत्त्व कीं कोनी हुवै। डायरी लेखक अैड़ी भासा रो प्रयोग करै जैड़ी सगळां री समझ में आ ज्यावै। उण री सैली हालांकि 'उत्तम पुरुस' या आत्मकथात्मक हुवै। लेखक नै प्रतीकात्मक सैली सूं बचणो चायजै।

डायरी विधा री अै विसेसतावां है–

1. डायरी किणी बड़ै राजनीतिज्ञ, समाज सेवक, लेखक या बड़ी हस्ती री हुवै जिण रै व्यक्तित्व अर कृतित्व में लोग रुचि राखै अर उण रै बारै में जाणणै री कोसीस करै।
2. डायरी में डायरी लेखक री अन्तरंग जिनगाणी रो चितरांम हुवै।
3. डायरी लेखक जिण बखत बुरै–भलै, निंदा–प्रसंसा आद विरोधी भावनावां सूं ऊपर उठ ज्यावै जद ई उण रो डायरी लेखन सार्थक हुय सकै नींतर विवाद ग्रसित होय'र रै ज्यावैलो।
4. आत्मलोचन साथै–साथै किणी महान् हस्ती री डायरी पाठकां रो मार्ग दरसण करणै में भी सक्षम हुवै।

9. रिपोर्ताज

रिपोर्ताज फ्रांसीसी भासा रो सबद है जिकै रो मतलब है 'रोचक अर भावात्मक विवरण' पण साथै ई अंग्रेजी रै 'रिपोर्ट' सबद सूं भी इण रो गै'रो जुड़ाव है। रिपोर्ट रो अर्थ हुवै किणी विसय रो तथ्य साथै वरणाव। आमतौर पर अखबारां में रिपोर्ट लिखी जावै जिण में छानबीन रै पीछै सूक्षम विवरण अर तथ्य दिया जावै। अैड़ी रिपोर्ट में कीं संवेदणसीलता, कीं भासायी कलात्मकता अर आकर्सक प्रस्तुतीकरण कर दियो जावै तो बा रचना 'रिपोर्ताज' बण ज्यावै। रिपोर्ताज में तथ्य साथै–साथै लेखक री रुचि, प्रकृति अर भावना रो मेळ भी हुवै। पाठक री संवेदणा सूं जुड़णो 'रिपोर्ताज' री पैली साहित्यिक रचना जैड़ौ आणंद देवै। कई विद्वानां री रिपोर्ताज मुजब दियेड़ी परिभासावां इण भांत है–

डॉ. रामविलास शर्मा– ''किणी घटना या घटनावां रो ''अैड़ो वरणाव कै वस्तुगत सांच पाठक रै मन नै प्रभावित कर सकै, रिपोर्ताज कहावै।''

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर– ''रिपोर्ताज घटना रो हुवै या दरसाव रो या मेळै उच्छव रो हुवै, उण में ज्ञान अर आनन्द रो संगम होणो चायजै।''

डॉ. ओम प्रकाश सिंहल, ''जिण रचना में वर्ण्य विसय रो आँख्यां सूं देखेड़ो, कानां सूं सुणेड़ो, अैड़ो विवरण पेस कर्‌यो जावै कै पाठक रै हियै रा तार झंक्रत हो ज्यावै। उण नै बो भूल नीं सकै, रिपोर्ताज कैवै।''

रिपोर्ताज रा तत्त्व

वस्तुगत तथ्य– रिपोर्ताज में वस्तुगत तथ्य हुवै। अठै कल्पना रै आभै में उडणै री छूट, लेखक नै कोनी हुवै। आँख्यां देखी कोई घटना, दरसाव आद रो तथ्यपरक चित्रण हुवै अर्थात् जैड़ो देख्यो है, बो ई ज वरणाव करणौ है।

इतिव्रत्तात्मकता– रिपोर्ताज लेखक सारा तथ्य जुटाय'र उणां सूं अेक कथा रो निर्माण करै अर भावपूर्ण भासा में उण रो प्रस्तुतीकरण करै। इतिव्रत्तात्मकता रै कारण ई तथ्य रिपोर्ट नीं रैय'र रिपोर्ताज बण ज्यावै।

पत्रकारिता अर साहित्यिक प्रतिभा रो मेळ– रिपोर्ताज लेखक रै व्यक्तित्व में दोनूवां रो मेळ हुवै। जद ई अेक रिपोर्ट साहित्यिक रचना बण सकै। लेखक में पत्रकार जैड़ी निस्पक्षता, पैनी नज़र अर रचनाकार जैड़ी भावुकता अर कथा कौसल हुवै तद ई रिपोर्ताज री रचना हो सकै।

प्रभाव अेकठ– इण सब तत्त्वां रै प्रभाव में अेकठ पणो जरूरी है। जद ई पाठक नै सफल रिपोर्ताज रा आणंद मिल सकै। वस्तुगत तथ्य री उपेक्षा सूं जठै रचना सिर्फ भावचित्र बण'र रै ज्यावैली बठै ई जन जीवन री संवेदना सूं विहीन रचना होणै सूं बा मात्र रपट रै ज्यावैली।

10. यात्रा–वृत्तान्त

हर अेक देस अर काल में जातरावां होवती रयी है अर होवती रैवैली। पुराणै जमानै में लोग ज्यादातर जातरावां व्यापार करणै तांईं या तीर्थ जावणै तांईं करता। बदरीनाथ, अमरनाथ, मान सरोवर जैड़ी तीर्थ जातरावां में आज भी कम जोखिम कोनी पण पुराणै जमानै में तौ लोग आं जातरावां तांईं घर, परिवार रो मोह तज'र बा'रै निकळता। अै जातरावां उणां री जिनगाणी रो परम लक्ष्य होवती। जातरा सूं अगर बै पाछा आ ज्यांवता तौ लोग उणां रा दरसण कर खुद नै धन्न मानता। मईनां, बरसां तक जातरा सूं पाछा आयोड़ा लोग जातरा में आई अबखायां, प्राकृतिक सौन्दर्य, नूवैं प्रदेसां रा नूंवा रिवाज, भूख, सरदी, गरमी, मेह, बीमारी सूं जातरा में रुकावट पैदा हो वण री बातां लोगां नै सुणांवता। लोग हैरान होय'र मूं'डो बायां बां री जातरावां री कथावां सुणता रैंवता।

इण जातरा री कथावां सुण'र हिम्मत वाळा लोग जातरा करणै तांईं उत्सुक हो जावता। पास्चात्य साहित्य में जातरा–वृत्तान्त लिखणै रो रिवाज घणो पुराणो है पण भारतीय भासावां में इण रो प्रचलन आधुनिक काल में ई हुयो है। 'यात्रा–वृत्तान्त' रा तत्त्व इण भांत है–

जातरा रो महत्त्व अर योजना– यात्रा वृत्त रो औ घणो महताऊ तत्त्व होवै। इण रै अन्तर्गत यात्रावृत्त लेखक आप री जातरा रो उद्देस्य बतावै, उण रो जातरा करण रो कांई कारण हो। जिण जागां बो जातरा करणै तांईं गयो बाई क्यूं चुणी? ओ बताय'र जातरा री योजना रो वर्णन करणो भी जरूरी है कै इण जातरा तांईं उण नैं कांईं त्यारियां करणी पड़ी। जातरा सुरू करणै सूं पैली री मनःस्थिति रो वर्णन करणो भी जरूरी है। इण सूं पाठक रै मन में जातरा बाबत जिज्ञासा पैदा हुवैली अर बो यात्रा–वृत्तान्त भणणै तांईं प्रवृत्त हुवैलो। इण रो वर्णन जितरी रोचक सैली में लेखक करैला, उतरो ई पाठक भणणै तांईं उत्सुक हुवैला।

भीतरी बाहरी सौन्दर्य रो उद्घाटण– जातरा वृत्त लेखक नै चायजै कै बो जिण रो भी वर्णन करै चाये स्थान विसेस रा मिनख हुवै या प्रकृति, अेतिहासिक स्थान आद कीं हुवै, बां रै भीतरी अर बाहरी सौन्दर्य रो उद्घाटन जरूरी है। उण सूं जुड़ेड़ै इतिहास, किंवदंती आद कोई हुवै तौ, बै भी बतावणा चायजै पण साथै ई अनावस्यक विस्तार सूं भी बचणो चायजै। यात्रा वृत्त लेखक रो उद्देस्य स्थान, मिनख या अेतियासिक स्थल रो इतिहास बताणो कोनी, बो सिर्फ इण कानी इसारो भर करै क्यूंकै यात्रा वृत्त अेक साहित्यिक रचना है उण रो मूल उद्देस्य बो ई है जिको साहित्य रो हुवै। हाँ! इण में लेखक री दीठ भी सामिल हुवैलो। इणी कारण अेक ई जागां रा दो यात्रा वृत्तान्त अलग–अलग हो सकै।

कौतूहल– यात्रा वृत्तान्त में कौतूहल तत्त्व रो होणो जरूरी है। नूंवै भौगोलिक परिवेस में जाय'र कांईं अबखाई हुवै? जातरा में इण सूं कांईं अबखाई पैदा हो ज्यावै? इण सूं भी पाठक रै मन में कौतूहल जागै कै अैड़ी परिस्थितियाँ में लेखक आपरी जातरा किण भांत पूरी करी। विदेस जातरावां में तौ नूंवी धरती,

नूंवा लोगां नै जाणणै री ललक हरेक मिनख रै मन में रैवै ई है। लेखक रो वरणाव कौसल इण भांत रो हुवै कै पाठक में जातरा वरणाव भणणै री ललक तौ होवै ई साथै ई अगर उण नै भी अवसर मिळै तौ बो भी अैड़ी जातरावां करणै सूं नीं चूकै। आ ललक अगर जातरा बरणाव भणणै सूं जाग सकै तौ बो बरणाव सफल है।

वरणाव में सजीवता– जातरा बरणाव री भासा में चित्रात्मकता होणी चायजै अर्थात लेखक जैड़ो वरणाव करै उण सूं पाठक री कल्पना में अेक चित्र बण ज्यावै। जातरा बरणाव भणयां पछै पाठक नै औ लागणो चायजै कै उण भी इण जागां री जातरा कर ली है। वर्णन री सजीवता रै अभाव में अेक सफल जातरा री रचणा असंभव है।

उद्देस्य– जातरा बरणाव कठैई निबन्ध सिरखो लागै तौ कठैई कहाणी सिरखो। उण में संस्मरण या रिपोर्ताज रा गुण भी मिल सकै। इण सब रै बावजूद जातरा बरणाव अेक सुतंतर अर अलग विधा है। जिण रो मूळ उद्देस्य है देस–विदेस री जाणकारी, बठै रै लोगां, रीति–रिवाजां, प्रकृति आद रै बारै में दूजां नै परिचित करवाणो अर बतावणो कै परमात्मा री रचेड़ी इण सिस्टी में सब जागां अेक सो दिल धड़कै। इण रो सौन्दर्य अनुपम है, बस देखण वाळै री नजरां चायजै।

11. व्यंग्य

व्यंग्य सबद अंग्रेजी रै सैटायर (Satire) रो अनुवाद है। हालांकि कविता में तौ व्यंग्य री परम्परा जूनी है पण गद्य में इण रो बिगसाव आधुनिक काल में हुयो है। इण सूं पैली व्यंग्य सैली रै रूप में हरेक विधा में विद्यमान हो तौ पण विधा रै रूप में इण री सरुआत आधुनिक काल में हुई है। ओ लेखक रो अैड़ौ गुड़ लपेटेड़ो हथियार है कै जिण रै माथे में लागै बो पंपोळतौ भी जावै अर चाटतो भी जावै। भारतीय साहित्य में व्यंग्य सैली मानी गई है। नाटक, कहाणी, उपन्यास हरेक विधा में इण रो प्रयोग हुयो है। इण कारण ई इण नै विधा कोनी मान्यो गयो। आज हरेक भासा रै साहित्य में व्यंग्य रो पूरो दबदबो है। डॉ. राधेश्याम शर्मा व्यंग्य री व्याख्या करतां थकां कैवै, ''लेखक री प्रखर सामाजिक चेतना जद व्यक्ति या समाज री विक्रतियाँ, असंगतियाँ अर अन्तरविरोध पर सीधी चोट करणै में प्रवृत्त हुवै जद व्यंग्य री सृस्टि हुवै... सास्त्रीय दीठ सूं व्यंग्य (सेटायर) रो बीज भाव करुणा या मानव प्रेम है जिण री प्रेरणा सूं व्यंग्यकार रै मन में समाज री विक्रतियां मुजब आक्रोस (सात्विक क्रोध) पैदा हुवै।'' अेक समर्थ व्यंग्य रचना में नीचे लिखी विसेसतावां जरूरी है–

गै'री मानवीय संवेदना– लेखक जद गै'री मानवीय संवेदना सूं प्रेरित होय'र समाज में पळती विसंगतियां, विद्रपतावां, छळ–छद्म पर चोट कर बां नै बेनकाब करै तौ अेक समरथ व्यंग्य रचणा रो जनम हुवै। दरअसल व्यंग्यकार सांच रो खोजी हुवै। उण नै जद समाज में दोगलोपण नजर आवै तौ बो चोट करणै सूं कोनी चूकै। जिकै व्यंग्यकार में मिनख अर समाज रै आपसी संबंधा नै समझणै री जितरीं गै'री सूझ हुवैली उण रो व्यंग्य उतरौ ई धारदार अर असरकारी हुवैला। व्यंग्य लेखक किणी रो व्यक्तिगत रूप सूं पड़दा फास कोनी करणो चावै पण सांच नै उघाड़णै तांईं बो ओ करम करै। व्यंग्य में मिनख री करुणा अर सात्विक आक्रोस रो संतुलन ई उण रा प्राण हुवै।

सार्वदेसिकता अर सार्वकालिकता– व्यंग्य बो ई ज सफल मान्यो जावै जिको सार्वदेसिक अर सार्वकालिक हुवै। व्यक्ति विसेस उण रो निसाणौ नीं होय'र बा व्यवस्था निसाणौ बणै जिकी मिनख नै अैड़ो बणा देवै। अेक व्यंग्य दीर्घ जीवी जद ई हो सकै जद बिण में अै दोन्यूं गुण हुवै ताजा घटनावां या प्रसगां पर लिखेड़ा व्यंग्य उण बखत तौ आप री प्रखरता सूं उद्वेलित करै पण पछै पुराणा पड़ ज्यावै। अैड़ै व्यंग्य री आ सबसूं बड़ी कमजोरी हुवै। मिनख री कुंठावां अर भावनावां पर आधारित जिका व्यंग्य हुवै बां रो प्रभाव क्षेत्र ई घणो व्यापक अर स्थायी हुवै।

सैली– व्यंग्य में कथ्य री जागां प्रस्तुतीकरण घणो महताऊ हुवै। व्यंग्य में जिको कीं खास हुवै बो कैवण रो ढंग या सैली हुवै। व्यंग्य में जितरीं प्रतीकात्मकता अर प्रतीयमान अरथ री प्रधानता हुवै बो व्यंग्य उतरौ ई धारदार अर चुभण पैदा करण वाळो हुवै। व्यंग्यकार रो सबसूं प्रिय अलंकार व्याज स्तुति हुवै। बो स्तुति रै बहानै निंदा अर निंदा रै बहानै स्तुति करै। व्यंग्य कार कदे भी सीधो वार कोनी करै। इण सूं व्यंग्य री धार कमजोर हुवै।

उद्देस्य– व्यंग्य रचना सोद्देस्य हुवै। व्यंग्यकार री भूमिका अेक सरजन डाकटर जैड़ी हुवै। जिण भांत अेक सरजन डाक्टर सरीर रा बीमार–गळेड़ा हिस्सा काट'र बां रो मवाद साफ कर सरीर नै स्वस्थ बणावै। उणी भांत व्यंग्यकार री चोट भी समाज अर मिनख रै दोगलैपण यानी बीमार हिस्सै पर हुवै। व्यंग्यगार सपनद्रस्टा हुवै बो गळी–सड़ी सामाजिक रूढ़ियां नै खतम कर नुंवै समाज रो सपनो देखै। इण भांत आदर्सवादी समाज री रचना ई व्यंग्य रो उद्देस्य हुवै।

व्यंग्य विधा रा रूप– विसय वस्तु मुजब व्यंग्य विधा रा अलग–अलग रूप इण भांत हुवै–

1. राजनीतिक व्यंग्य
2. नौकरसाही पर व्यंग्य
3. पारिवारिक व्यंग्य
4. आर्थिक विसमता पर व्यंग्य
5. सिक्षा पद्धति पर व्यंग्य
6. व्यक्तिपरक व्यंग्य
7. बुद्धिजीवी वर्ग पर व्यंग्य आद।

अभ्यास रा सवाल–

1. राजस्थानी भासा री आधुनिक गद्य विधावां री जाणकारी करावो।
2. कहाणी विधा रा तत्वां री जाणकारी देवो।
3. निंबध री परिभासा लिखो।
4. अेकांका अर नाटक रा भेद नै समझावो।
5. रेखाचित्र किण नै कैवै?
6. संस्मरण अर डायरी लेखन में कांई भेद है?

उपयोगी पोथ्यां–1

इकाई–4

राजस्थानी भासा रा उपन्यास– उद्‌भव अर विकास

इकाई रो मंडांण

4.0 उद्देस्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 राजस्थानी उपन्यास उद्‌भव अर विकास

4.2.1 आभै पटकी

4.2.3 मैकती काया : मुळकती धरती

4.2.4 धोरां रो धोरी

4.2.5 आभळदे

4.2.6 हूं गोरी किण पीव री

4.2.7 आंधी अर आस्था

4.3 इकाई रो सार

4.4 अभ्यास सारू सवाल

4.5 पढ़णजोग महताऊ पोथियां

4.0 उद्देस्य

इण इकाई रो उद्देस्य राजस्थानी भासा मं पढ़णियां नै उपन्यास अर इणरै उद्‌भव अर विकास बाबत सांतरी जांणकारी देवण रो है। इण इकाई नै पढियां पछै आ ठा पड़ैला कै–

1. राजस्थानी री उपन्यास विधा किती जूंनी है?
2. उपन्यासां रो मंडांण किण भांत हुयौ है?
3. उपन्यासां रा सामाजिक सरोकार किण भांत रैया है?
4. उपन्यासां रो विगसाव कैड़ौ रैयौ है अर पढणियां नै कीकर जिग्यासा बधावै?

4.1 प्रस्तावना

राजस्थानी भासा में उपन्यास लिखण री सरुआत भारत री दूजी भासावां री भांत पिछमी–साहित्य रै मेळ सूं हुई। बियां राजस्थानी भासा रो पुराणो कथा साहित्य घणौ ई समृद्ध रह्यौ है। ओ कथा साहित्य लिखियोड़ौ अर मौखिक दोनूं ई रूपां में आपरी भव्यता रै सागै प्रगट व्हियौ है। जठै अेक कांनी राजस्थानी री बातां (कथावां) सैंकड़ां पांनां में मिळै वठै ई दूजी कांनी कीं पांनां में ई उणांरौ अंत व्है। इणीं बातां री मोटाई नै देखता थकां डॉ. मनोहर शर्मा ''कुंवरसी सांखलौ'' अर ''राहिब साहिब'' इणा दोनां नै उपन्यास री संग्या दी है। पण उपन्यास रा आधुनिक अर पुराणां मान्योड़ा अरथां में किणी दीठ सूं अै दोनूं ग्रंथ उपन्यास रै कौसल नै पूग नीं सकै। इणां दोनूं ग्रंथां रै विसै में डॉ. मनोहर शर्मा रा विचार समीचीन नीं कह्या जा सकै।

4.2 राजस्थानी उपन्यास उद्‌भव अर विकास

राजस्थानी में उपन्यास रो उद्‌भव श्री नरोतमदास स्वामी, शिवचन्द्र भरतिया रै वि.सं. 1960 (ई. 1903)

में प्रकासित ''कनक सुन्दर'' सूं मान्यौ है। भरतियाजी ''कनक सुन्दर'' नै ''नवल कथा'' कयौ है। गुजराती अर तेलुगु भासा में ''नवल'' रो अरथ उपन्यास है। सायद भरतियाजी आं भासावां सूं प्रभावित व्हैय'र उपन्यास री ठौड़ ''नवल कथा'' सबद रो इस्तेमल करियौ पण भरतिया जी रो औ सबद और आगै नीं चाल सक्यौ। फळसरूप उणारै पछै उपन्यासकार उपन्यास सबद नै ई अंगीकार करियौ।

''कनक सुन्दर'' रै पछै कालक्रम री दीठ सूं नारायण अग्रवाल रो वि.सं. 1982 में प्रकासित ''चम्पा'' उपन्यास रो स्थान आवै। इणरै प्रकासण रै पछै लगैटगै 30 वरसं तांई राजस्थानी उपन्यास लेखन रो काम अवरूद्ध रैयौ। उपन्यास प्रगति–पथ में आयौड़ै इण व्यवधांन नै दूर कर'र फेरू नवै जुग रो सुत्रपात करण रो जस श्रीलाल नथमल जोशी नै है। 1956 ई. छप्यौ इणांरौ ''आभै पटकी'' उपन्यास राजस्थानी भासा रै सुसुप्त उपन्यासकारां में जागृति रो मंत्र फूंक दियौ। इणरै पछै 1966 ई. में प्रकासित अन्नाराम 'सुदामा' रो ''मैकती काया मुळकती धरती'', 1968 ई. में प्रकासित श्रीलाल नथमल जोशी रो ''धोरां रो धोरी'' अर 1970 ई. में प्रकासित यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' रो ''हूं गोरी किण पीव री'' जेड़ा सामाजिक जीवण माथै आधारित उपन्यास प्रकास में आया। दूजी कांनी लोकवार्तावां माथै आधारित विजयदान देथा रो ''तीडौराव'' ''मां रो बदळौ'' अर ''आठ राजकुंवर'' जेड़ा लोक–उपन्यास ई उभर पड़्या। स्वातंत्र्योत्तर काल में ई यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' रो जोग–संजोग, ''श्रीलाल नथमल जोशी रौ'' अेक बीनणी दोय बीन'', सत्येन जोशी रो अैतिहासिक उपन्यास ''कंवल–पूजा'', छत्रपति सिंह रो ''तिरसंकू'' रामनिवास शर्मा रो ''काल भैरवी'', अन्नाराम 'सुदामा' रो ''आंधी अर आस्था'', नृसिंह राजपुरोहित रो ''भगवान महावीर'', सीताराम महर्षि रो ''लालड़ी एक फेरूं गमगी'' अर विजयदान देथा रो ''सांच रो भरम'' उपन्यास विकास रै खेतर में अेक क्रांति उत्पन्न कर दीवी। दीनदयाल कुन्दन रो ''गुंवार पाठौ'' रामदत्त सांकृत्य रो ''आभळदै'', पारस अरोड़ा रो ''पदमणी रो सराप'' अर किशोर कल्पनाकांत रो ''धाड़वी'' उपन्यास औळमौ, हेलौ, लाडेसर, हरावळ इत्याद पाक्षिक–मासिक पत्र–पत्रिकावां में आधा अर पूरा रूपां में प्रकासित व्है चुक्या है। कीं और ई उपन्यास प्रकास में आया जिणां री विगत इण भांत है–

1. कुण समझै चंवरी रा कौल (1975 ई.) सीताराम महर्षि
2. सेळी छांव खज्यूर की (1975 ई.) प्रेमजी प्रेम
3. ऊजळौ दाग (1976 ई.) माधव शर्मा
4. खुलती कांठां (1977 ई.) पारस अरोड़ा
5. मेवै रा रूंख (1977 ई.) अन्नाराम 'सुदामा'
6. राती घाटी (1981 ई.) भूरसिंह फैंफाणा
7. डंकीजता मानवी (1981 ई.) अन्नाराम 'सुदामा'
8. भोळावण (1982 ई.) मालचंद तिवाड़ी
9. घर–संसार (1983–84 ई.) अन्नाराम 'सुदामा'
10. सड़कां (1985 ई.) जुगल परिहार
11. मंत्री री बेटी (1985 ई.) करणीदान बारहठ
12. मांझल (1987 ई.) रामनिवास शर्मा
13. अबोली (1988 ई.) बी.एल. माली 'अशान्त'
14. बड़ी बहनजी (1988 ई.) करणीदान बारहठ
15. चांदा सेठांणी (1988 ई.) यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

16. अचूक इलाज (1990 ई.) अन्नाराम 'सुदामा'

17. सूरज (1994 ई.) देवकिशन राजपुरोहित

18. कपूत (1995 ई.) देवकिशन राजपुरोहित

इणां उपन्यासां में ई समाज री केई ज्वळंत समस्यावां सामी आयी है। आज ई उपन्यास लिखण रो काम लगोलग चाल रह्यौ है।

उपन्यास री विसय– वस्तु रै आधार माथै करीज्या घणकरा भेदां में राजस्थानी उपन्यासां खासकर सामाजिक उपन्यासां तांई सीमित रह्यौ है। अैतिहासिक, मनोवैग्यानिक, आंचळिक (भासा सैली अर विसय–वस्तु दोनूं ई आधार माथै) अर रोमांटिक तत्वां वाळा उपन्यास राजस्थानी भासा में लिख्या ई नीं गया, अेड़ी बात नीं। हां, अेड़ा उपन्यासां री संख्या बौत कम रैयी है। राजस्थानी उपन्यासकारां री प्रमुख खासियत तौ आदर्सवाद री थापना ई है पण सागै ई उणमें आजरै जीवण रो यथोचित अंकण हुवण रै कारण उभरियोड़ा जथार्थवादी तत्त्व री उपेक्षा ई नीं की जा सकै। स्वतंत्र रूप सूं ई कीं अेक उपन्यासां में आदर्स री अपेक्षा जथार्थ रै महत्त्व माथै घणौ बळ दियौगयौ है। इण वास्तै उणांरी प्रमुख खासियत जथार्थवाद अर गौण प्रवृत्ति, मुंशी प्रेमचन्द रै हिन्दी उपन्यासा री भांत आदर्सोन्मुखी जथार्थवाद री तरफ रैयी है।

राजस्थानी रो पैलौ उपन्यास ''कनक सुन्दर'' पूरी तरह सूं अेक आदर्सवादी उपन्यास है। इण उपन्यास में उपन्यासकार जठै अेक कांनी तात्कालिक समाज री घणकरी समस्यावां अर बुराईयां माथै ठौड़–ठौड़ स्वतंत्र रूप सूं प्रकास न्हाकियौ है वठै ई दूजी कांनी उणनै दो न्यारा आचार–विचार वाळा परिवारां री कहाणी रै मारफत आपरै आदर्सवादी दीठ में प्रस्तुत करियौ है। इणरै पछै नारायण अग्रवाल नै आपरै उपन्यास ''चम्पा'' में घणकरी सामाजिक समस्यावां नै नीं उठाय'र 'वृद्ध–विवाह' री समस्या उठाई है जदकै उण रो मूळ ध्येय ई समाज सुधार ई है।

राजस्थानी उपन्यासां में जठै लगौलग आदर्सवादी, आदर्सोन्मुखी, जथारथवादी अर यथारथवादी द्रस्टिकोणां रो प्राधान्य रैयौ है, वठै राजस्थानी रा लोक–उपन्यासां में अेक न्यारी ई प्रवृत्ति प्रस्फुट व्ही है– अर वा है– व्यंग्य री। ''तीडौ राव'' अर ''मां रो बदळौ'' इण दीठ सूं विसेस उल्लेख जोग है। औपन्यासिक तत्त्वां री दीठ सूं राजस्थानी में चरित्र–प्रधांन उपन्यासां री ई प्राधानता है। कठैई–कठैई तौ औ तत्त्व इतरौ घणौ उभर आयौ है कै घटना अर उणरै बीच सन्तुलन ई बिगड़ग्यौ है अर केई घटनावां अस्वाभाविक अर अतिरंजनापूरण लागण लागै। ''धोरां रो धोरी'' में टैस्सीटोरी री अध्ययन प्रियता अर कुसाग्र बुद्धि री तरफ इंगित करण वास्तै लेखक समुद्री तूफान री जिण घटना रो संयोजन करियौ है– वौ आपरी अस्वाभाविकता रै कारण पूरै उपन्यास रो मजौ किरकिरौ कर देवै। अैड़ा भयंकर तूफान में–जदकै जहाज रै डूबण री स्थिति आ जावै–टैस्सीटोरी रो स्थित होय'र अध्ययन में लाग्यौ रैवणौ, यात्रियां रो जहाज नै छोड'र डागियां रै सहारै उण तूफांन सूं बचण रो प्रयास करण वास्तै तैयार होवणै अर पछै टैस्सीटोरी रै समझायां पछै आपरै इण प्रयास री व्यर्थता रो भाव होवणौ बिल्कुल अस्वाभाविक है। अैड़ा तत्त्व राजस्थानी रा घणकरा उपन्यासां ''आभै पटकी'' ''मां रो बदळौ'' ''कंवळ पूजा'', ''काळ भैरवी'' इत्याद में उभर पड़्या है।

पात्रां रै चरित्रांकन में खासतौर सूं दो सक्तियां रो उपयोग राजस्थानी रा उपन्यासां में मिळै। अेक कांनी लेखक खुद आपरी तरफ सूं पात्र रै चरित्र माथै प्रकास न्हाकै तौ दूजी कांनी घटनावां खुद उपन्यासां रै पात्रां रै चरित्र रो निरमाण करै। सैली री दीठ सूं घणकरा उपन्यासां में वर्णनात्मक सैली रो ई सहारो लियौ गयौ है। ''मेकती काया : मुळकती धरती'' उपन्यास आत्मकथात्मक सैली रो ज्वळंत प्रमाण है। ''तीडौ राव'' जेड़ै लोक उपन्यास री प्रतीक सैली तारीफ जोग है। अबै अठै स्वातंत्र्योत्तर समै रा कीं खास–खास राजस्थानी उपन्यासां रो सार में समीक्षात्मक विवरण देवणौ वाजिब लखावै।

4.2.1 आभै पटकी (श्रीलाल नथमल जोशी)

किसना ''आभै पटकी'' है जिणरी विधवा हुवण सूं अेड़ी हालत व्है जावै पण इणी किसना नै धरती झेलै यानी मोहन जैड़ा कुसळ डाक्टर उणनै सहारौ देवै। उपन्यास रो नाम घणौ मनोरम अर सारथक बण पड़्यौ है। विधवा विवाह रै मारफत विधवा रै जीवण नै सुखी बणावणौ, नारी सिक्षा, जाति–पांति सूं बहिस्कार री कुरीति नै मिटावणी, समाज सेवा, कर्त्तव्य–परायणता, अनमेळ विवाह इत्याद स्वरूपां रो अंकन हुयौ है। इणमें पात्रां रो 'सत' अर 'असत्' रूप में ई चित्रण हुयौ है। अेक कांनी मोहन अर किसना रो ई चित्रण हुयौ है। अर मोहन अर किसना जे'ड़ा पात्र है जिणां रै चरित्र में लेखक हर अच्छाई नै भरण री कोसिस करी है तौ दूजी कांनी फूलां अर तीजां जे'ड़ा पात्र है जिणां रै चरित्र में अच्छाई रो अेकांतिक अभाव है। इणां रै अलावा आपरी सहज मानवीय कमजोरियां रै सागै प्रकट होवण वाळा पात्रां नै 'हृदय परिवर्तन' वाळी नीति रो सम्बल ग्रहण करावता थकां उणांनै आदर्स पात्रां री श्रेणी में खड़ा करिया है। अेड़ा पात्रां में पंचायत रो प्रधांन रामनाथ अर किसना रो भाई श्रीवल्लभ आवै।

पूरै उपन्यास में राजस्थानी भासा रो सरळ अर स्वाभाविक प्रयोग हुयौ है।

4.2.2 मैकती काया : मुळकती धरती (अन्नाराम 'सुदामा')

इण उपन्यास में लेखक रो धरती रै प्रति प्रेम अर जातीय अेकता रो अमिट संदेस प्रकट हुयौ है। 'रोही रा भोमिया' री दांई रात–दिन जंगळां में घूमता बापू रै जीवण पृष्ठां नै अंकित करण में खुदोखुद ई मरु–प्रकृति रो सुंदर अर विसद चित्रण लोक–मान्यतावां अर लोक विस्वासां रो अंकन लेखक री आंचळिक–प्रवृत्ति नै ई प्रकट कर देवै जिणरौ राजस्थानी उपन्यास साहित्य में अभाव–सो ई है। इणमें कथा रो विकास ई इण ढंग सूं हुयौ है कै कीमा बाबा रै प्रसंग सूं पैला तौ पाठक कहाणी में ई इण तरै खोयोड़ौ रैवै जिणसूं उणनै कठै ई औ लागै नीं व्है कै कोई कल्पित कहाणी उणनै कह्यी जा रह्यी है। घटनावां स्वाभाविक रूप सूं अेक रै बाद अेक घटित व्हैती रहवै।

कहावतां, मुहावरां अर उपमावां री अधिकता सूं उपन्यास री भासा सरल अर सुंदर बण पड़ी है।

4.2.3 धोरां रो धोरी (श्रीलाल नथमल जोशी)

इटली जावण सूं इटली अर भारत आवण सूं भारत री माटी नै सिर माथै लगावण सूं टैसीटोरी री मातृ भौम रै प्रति अगाध आस्था अर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' री भावना प्रकट व्है। आपरी मां रै प्रति आदर रो भाव तौ उपन्यास री सुरुआत री ओळियां में ई प्रकट व्है जावै– ''मां म्हनै आसीस दै, तूं मुळक, अर म्हनै थारी छाती सूं लगा। काल हूं नेपल्स जासू अर भारत खातर बईर हुसूं।''

उपन्यास रै सीरसक नै सार्थकता सिद्ध करण वाळौ सबसूं घणौ महताऊ अध्याय 13वौं है जिणमें टैसीटोरी आपरी विसै सामग्री वास्तै धोरां–धोरां विचरण करतौ रह्यौ है। मां सरस्वती रो साचौ पुजारी ऊंट माथै सवार–व्हैय'र टीबां माथै राजस्थानियां री दांई फुरती अर कुसळता सूं घूम सक्यौ हौ। अेड़ै सूखै प्रदेस में बिना घबरावण अर हिम्मत साथै जुट्यौ रह्यौ, तल्लीन रह्यौ तद कियां आपां उण टैसीटोरी नै ''धोरां रो धोरी'' नीं कहवां। टैसीटोरी री आत्मा में समै–समै माथै लेखक अे विचार प्रकट करिया है।

''राजस्थान रै धोरां री धरती में बूस्योड़ै अमोलक रतनां नै बारै काढ'र परकास में लावणियौ तूं है, तूं है, तूं है, तूं दिन रात काम कर। जे तैं ओ काम अधूरौ छोड़ दियौ तो फेर पाछै कद सरू कस्यौ जासी, अनिस्चित है। तूं राजस्थान रै धोरां रो धोरी है, तूं धोरां रो धोरी है।''

भासा विग्यांन रो अनूठौ विद्वांन, आपरी जलम–भौम इटली रै अेक पुस्तकालय में बिना गुरु री

मदद लियां फगत पुस्तकां अर आपरी विलक्षण प्रतिभा रै पांण दुनियां री अनेकूं भासावां रो छोटी अवस्था में ई आछौ ग्यांन प्राप्त करण वाळौ, राजस्थानी भासा नै सबसूं घणौ प्रेम करण वाळौ राजस्थान–भारती अर वांगमय नै सांगोपांग जाणण समझण री भंयकर भूख लियां, भारत री धोरां धरती राजस्थान रै खासकर बीकानेर नै आपरौ कर्मक्षेत्र बणावण वाळौ, विरल विद्याभ्यासी अर राजस्थानी रै दुलारै कर्मयोगी री जीवण गाथा नै विस्तृत रूप देय'र उपन्यासकार धिनवाद रो पात्र बणग्या है। जोशी जी रै लेखण में गंभीरता, सरसता अर स्पस्टता री त्रिवेणी है। उपन्यास री भासा सुरंगी है राजस्थानी जिणरौ प्रधांन गुण है सरलता।

4.2.5 आभलदै (रामदास सांकृत्य)

औ दसवीं सताब्दी में राजस्थान रै सांस्कृतिक जीवण रै परिप्रेक्ष्य में लिख्यौ ग्यौ अेक अैतिहासिक उपन्यास है पण इणमें लेखक अेक अंचळ विसेस री प्राकृतिक स्थिति अर वठां रै लोक–जीवण रै अंकण में जिकी विसेस रूचि ली है इणसूं औ उपन्यास अेक आंचळिक उपन्यास रै धरातल माथै खरौ उतरै। उपन्यास री मूल कथा सूं पैलां जठै उपन्यासकार ''आंचळिकता एवं ऐतिह्यय'' सीरसक रै अन्तर्गत वठां री भौगोलिक स्थिति रो विस्तार सूं परिचय दियौ है, वठै ई उपन्यास में होळी जे'ड़ा उत्सव नै ई आंचलिक रंग में रंग'र पेस करियौ है। औ उपन्यास राजस्थानी भासा में आंचळिक उपन्यासां री पूर्ति में सहायक है। आभळदै रो अचांणचक अपहरण, 'वीरमदे' सीरसक अध्याय में आयोड़ी घटनावां घणी ई मारमिक बण पड़ी है। केई ठौड़ां रै प्राचीन नामां रो विवरण ई इण उपन्यास में मिळै–

धांधू (चूरू तहसील), फोगां (सरदार शहर तहसील), द्रोणपुरी (गोपालपुरा–सुजानगढ़ तहसील), मालासी (सुजानगढ़ तहसील), रणधीसर (रतनगढ़ तहसील), लाखाऊ (चूरू तहसील), ब्रह्मसर (बिरमसर), स्यानण (सुजानगढ़ तहसील), चंदेरी (लाडनूं), भृतसेर (हनुमानगढ़) रणपल्ली (राणोली) इत्याद।

4.2.6 हूं गोरी किण पीव री (यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र')

'हूं गोरी किण पीव री' सीरसक उपयुक्त है। सूरजड़ी री ई आ हालत व्है जद आपरै पति भानै रै बौत समै पछै ई नीं आवण सूं देवर माधै सूं नातो (पुनर्विवाह) कर लेवै। मौत रो तार भिजवावण वाळौ भानौ अेक दिन कलकत्ता सूं आ जावै तद सूरजड़ी पसोपेस में पड़ जावै कै वा किण पति री गोरी है? ''लूणा घाटी'' खेल री झलक दिखावता थकां लेखक राजस्थानी संस्कृति रो ग्यांन दरसावै। सूरजड़ी कांनी सूं बाळ विवाह रो विरोध करणौ अेक सामाजिक समस्या रो निराकरण करणौ ई है जिकी उपन्यास री अेक विसेसता है। स्वामी ज्ञानाचंद कांनी सूं कुदरत अर आत्म सक्ति, पइसां रो महत्त्व अर जीवण नै अेक नाटक बतावणौ–इत्याद तथ्यां रो विस्लेसण उपन्यास रो खास गुण है।

4.2.7 आंधी अर आस्था (अन्नाराम 'सुदामा')

जगन्नाथ री मां, माणकसरवासी उणरी धरम सी मौसी अर मीरां दादी रै मुखां सूं ठौड़–ठौड़ भजन बुलवाया गया है जिकी लेखक री अेक मौलिक सूझ है। उपन्यास रा मुख्य पात्र नायक जगन्नाथ रै जीवण में दुखां री अेक भयंकर आंधी आयी जिकी उणनै जेळ लेयगी। पण उणरी सच्चाई अर भलाई में आस्था उणनै सुखी जीवण बितावण नै फैरूं त्यार कर दियौ। खेतां में हजारां मण अनाज ने आंधी सूं उजड़ै जीवण में सुखां री आस्था अर बहार ला दी। उपन्यास में गांवां री गरीबी, वठां रो तंग अर जटिल जीवण, वठां री कम सूं कम अभिलासावां, वठां रो भोळापण, इत्याद रो सांगोपांग वरणाव है। ग्रामीण जीवण री साची झांकी रा दरसण इण

उपन्यास में व्है। केई पात्रां रो रूप वरणाव ई बडौ मनोरम बण पड़्यौ है। उपन्यासकार उपन्यास रा घणकरा स्थान आपरै आसपास रा ई चुण्या है जिणांसूं वौ भली–भांति परिचित ई है। उपन्यास यथारथ रै घणौ नेड़ो है।

राजस्थानी भासा रै स्वाभाविक सबदां सागै ई संस्कृत, हिन्दी, उर्दू अर पंजाबी भासावां रै सबदां रो ई यथोचित मात्रा में प्रयोग कर'र दूजी भासावां रै प्रति उदारता रो भाव ई लेखक प्रकट करियौ है। लेखक रो मुहावरां अर कहावतां रो ग्यांन सरावण जोग है।

4.2.8 लालड़ी अेकर फेरूं गमगी (सीताराम महर्षि)

उपन्यास रै इण उद्देस्य नै बड़ै सुंदर ढंग सूं अभिव्यक्त करियौ गयौ है कै किणी ई स्त्री या पुरुस नै औ धीजौ राखणौ चाहिजै जो अेक दूजा रै अंतस या हृदय रै भावां नै समझै अर उणी रै अनुरूप आपरौ जीवण ढाळै। यूं करण सूं ई दोनां रो जीवण सुखमय व्है सकै। उपन्यास रो नायक सूरज री पत्नी गोमती उणरै अंतस रै भावां नै समझण वाळी नीं हुवण रै कारण ई सूरज पैली रेणु रै लारै फिरतौ रह्यौ अर पछै उण नन्दा री ओट ली। रेणु री दूजै सूं सादी हुवण सूं सूरज आपरी प्रीत री अेक लालड़ी (लाल) गुम हुवण री बात कैई। बाद में नन्दा री मौत सूं प्रीत री अेक लालड़ी और गम गयी। उपन्यास रो सीरसक इण दीठ सूं बड़ौ सारथक है। नन्दा री मौत सूं सूरज प्रीत री अेक और लालड़ी (लाल) गमा चूकै है, पैली लालड़ी रेणु के रूप में पाय गमा चूकियौ है। धैर्य, पुनर्जन्म, विवाह, दुःख–सुख, पुरुसां री निर्दयता, स्त्रियां रै हृदय री कोमलता, मानव रै चरित्र, प्रेम, स्वार्थ, धन–लोलुपता इत्याद माथै उपन्यास रा पात्रां सूरज, नन्दा, रेणु आद सूं विचार व्यक्त करवाया है जिका उत्तम है। अलंकारां, मुहावरां अर कहावतां री छटा ई सरावण जोग है।

4.3 इकाई रो सार

सार रूप में कह्यौ जा सकै है कै अेक कांनी 'आभै पटकी' 'मैकती कायाः मुळकती धरती', 'धोरां रो धौरी', 'गुंवार पाठो', 'हूं गोरी किव पीव री, 'जोग–संजोग', 'एक बीनणी दो बीन', 'आंधी अर आस्था' 'लालड़ी एक फेरूं गमगी', अर 'तिरसंकू' उपन्यास सामाजिक जीवण रै धरातल नै पुस्ट करण वाळा है तौ दूजी कांनी 'आठ राजकुंवर', 'तीडौ राव', 'सांच रो भरम' अर 'मां रो बदळो' लोक जीवण री नींव नै। अैतिहासिक तत्त्व नै रग–रग में समेटण वाळा 'आभळदे' अर 'कंवल पूजा' ई राजस्थानी भासा री सोभा में चार चांद लगावण वाळा सिद्ध हुया है। मनो–वैज्ञानिकता रा फव्वारा छोडण वाळौ 'काळ भैरवी' उपन्यास ई कोई कम महताऊ नीं है। अठीनै नृसिंह राजपुरोहित ''भगवान महावीर'' उपन्यास रै मारफत आपसी पौराणिक भावना नै प्रकट करण में कोई कसर नीं छोडी है। राजस्थानी भासा में विसयवस्तु री दीठ सूं सामाजिक, अेतिहासिक, मनोवैज्ञानिक अर राजनीतिक उपन्यासां मांय सूं सामाजिक उपन्यासां रो प्राधान्य अर बाकी में न्यूनता देखण नै मिळै। इणां उपन्यासां में लोक जीवण री विसेसतावां, व्यंग्य, प्रतीकात्मकता, आदर्स, जथार्थ, आदर्सोन्मुख जथार्थ, आंचळिकता, सामाजिक समस्यावां अर अतिमानवीय तत्त्व इत्याद विसेसतावां रा दरसण सहज रूप सूं ई व्है जावै।

आज राजस्थानी उपन्यासकार जीवण री युगानुकूल व्याख्या करण अर उणरा बदळता मापदण्डां नै व्यापक धरातल माथै पेस करण में सक्षम है। इण दीठ सूं राजस्थानी उपन्यासां रो भविस उजळौ है। उम्मीद है कै उणांमें समाज अर देस री ज्वळंत समस्यावां रो चित्रण व्हैला अर राजस्थान री संस्कृति नै व्यापक ढंग सूं उजागर कियौ जा सकैला।

4.4 अभ्यास सारू सवाल

(अ) नीचे लिखिया सवालां रा पड़ूतर 150 सबदां रै लगैटगै देवौ–

1. राजस्थानी उपन्यासां रो उद्‌भव कद हुयौ?
2. राजस्थानी उपन्यासां री सरूआत कुण करी अर पैलड़ै उपन्यास रो नांव लिखौ।
3. 'आभै पटकी' उपन्यास री मूळ समस्या कांई है?
4. 'धोरां रो धोरी' उपन्यास री कथा वस्तु री ओळखांण करावौ।

(आ) नीचे लिखिया सवालां रा पड़ूतर 500 सबदां रै लगैटगै देवौ–

1. राजस्थानी उपन्यास रै उद्‌भव अर विकास री जाणकारी करावो।
2. 'हूं गोरी किण पीव री' उपन्यास अर 'आभळदै' री कथा वस्तु मांडौ।
3. राजस्थानी उपन्यासां री बांनगी आपरा सबदां में देवौ।

4.5 पढणजोग महताऊ पोथियां

1. आधुनिक राजस्थानी री प्रमुख प्रवृत्तियां – डॉ. किरण नाहटा
2. आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य (परंपरा) – डॉ. नारायणसिंह भाटी
3. राजस्थानी गद्य साहित्य : उद्‌भव अर विकास – शिवस्वरूप शर्मा 'अचल'
4. राजस्थानी सबद कोस (भूमिका) – सीताराम लाळस
5. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याण सिंह शेखावत
6. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया

इकाई–5

राजस्थानी भासा के प्रमुख उपन्यासकार अन्नाराम सुदामा – मेवै रा रूंख (प्रमुख उपन्यास)

इकाई री रूपरेखा

5.0 उद्देस्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 उपयोगिता

5.3 जरुरत

5.4 दूजा विसयां सूं सम्बन्ध

5.5 मेवै रा रूंख? री समीक्षा (तत्त्वां रै आधार पर)

- 5.5.1 कथानक
- 5.5.2 पात्र अ'र चरित्र–चित्रण
- 5.5.3 देसकाळ अ'र वातावरण
- 5.5.4 संवाद या कथोपकथन
- 5.5.5 भासा–सैली
- 5.5.6 उद्देस्य
- 5.5.7 सिरै नांव

5.6 सार

5.7 अभ्यास रा सवाल

5.8 उपयोगी पोथियां

5.0 उद्देस्य

अेम.अे. पूर्वार्द्ध राजस्थानी रा पैलै प्रस्न–पत्र री पाँचवी इकाई में आप अन्नाराम सुदामा रै 'मेवै रा रूंख?' उपन्यास रो अध्ययन करौला। राजस्थानी उपन्यासां में मेवै रा रूंख?' अेक प्रौढ़ रचणा है, जिकी आजादी पछै गाँवां रो किण भांत विकास हुयो है? बठै री राजनीति अर आर्थिक संघर्स रा जथारथ परक चितरांम पाठकां सामी राखै। ठेठ गांवांई वातावरण में रच्योड़ै इण उपन्यास री भासा बड़ी असरदार है। आजादी पछै देस रै जनतन्त्र माथै खतरै रा बादळ मंडराया। 'आपात काळ' में अनुसासन रै नांव पर आम आदमी कितरो सतायो गयो उण री झळक आप नै इण में मिळैली। राजनीति में स्वाथपरता, भाई–भतीजावाद, प्रसासन में भ्रिष्टाचार नै आपां घणी ई गाळ काढ़ां पण इण सूं आज आपां रा गाँव भी अछूता कोनी रैया। इण इकाई रै अध्ययन कर्यां पछै आप–

- गाँवां री राजनीतिक, आर्थिक अर सामाजिक हालातां बाबत जाण सकौला।
- गांवांई जीवण रै संग्राम सूं परिचित हो सकौला।
- अणपढ़ता अर अंध–बिस्वास प्रगति में किण भांत बाधक हुवै? जाण सकौला।
- 'आपात काळ' में अनुसासन रै नांव पर आम आदमी पर कितरों जुलम हुयो? आप नै अेक झलक मिळसी।

- जनता पैलां सूं कीं जागरूक हुई है।

5.1 प्रस्तावना

राजस्थानी उपन्यासां री कड़ी में 'मेवै रा रूंख?' घणौ महताऊ उपन्यास है। आप रै कथ्य, देसकाळ अर सामाजिक जतारथ री दीठ सूं ओ अनूठो उपन्यास है। किणी पोथी रै मर्म तक पूगणै तांई उण रो तात्विक विवेचण बड़ी मदद करै। औपन्यासिक कला री दीठ सूं 'मेवै रा रूंख?' कितरौ सफल उपन्यास है? ओ जाण लेणो आपणो मंतव्य है।

5.2 उपयोगिता

राजस्थानी उपन्यास री जातरा 'कनक सुंदर' (जिणनै घणकरा'क आलोचक लाम्बी बात मानै) सूं सुरु होय'र 'मेवै रा रूंख?' तक कैड़ा पड़ाव पार कर अठै तक पूगी है। 'मेवै रा रूंख' नै भणियां पछै पतो चालसी कै राजस्थानी में उपन्यास साहित्य मात्रा (Quality) में चाये कम है पण गुणवत्ता (Quality) में किणी भासा रै उपन्यास सूं लारै कोनी। इण रो ठेठ गांवांई अन्दाज जठै भासा री लिहाज सूं अनूठो है बठै ई इण रो कथ्य तथाकथित प्रगति री पोल खोलै अर बतावै कै भारतीय परजातंत्र नै आज कठै सूं खतरो है।

5.3 जरुरत

उच्चकोटि रै साहित्य री हर अेक जुग में जरूरत हुवै। किणी समाज री प्रकृति, रहन–सहन अर सांच नै जाणणो हुवै तो बठै रै साहित्य नै भणणै री जरूरत है। कैयो भी है कै इतिहास में नांव अर तिथियांई सांची हुवै बाकी झूठ रो पुलिंदो हुवै पण साहित्य में नांव अर तिथियां झूठीं हुवै अर बाकी सगळो कीं सांच हुवै। आजादी पछै भारतीय गांवांई समाज किण दिस कानी जावै इण रो सांचौ ज्ञान इतिहास या 'समाजशास्त्र' री पोथियाां में कोनी मिले। अठै रै साहित्य में मिळसी। आजादी पछै गाँवां में कांई विकृतियाँ पैदा हुयगी अर पिछड़ोपण आग्यो, जाणणै री दरकार हुवै तो साहित्य गै'री जाणकारी देवै। अमीर गरीब री खाई किण भांत गाँवां में लगोलग चौड़ी होंती जावै इणरो, 'मेवै रा रूंख?' अेक सांचो दस्तावेज प्रस्तुत करै।

5.4 दूजा विसयां सूं सम्बन्ध

साहित्य रो सीधो सम्बन्ध चाये किणी सासतर (शास्त्र) सूं कोनी हुवै पण मिनख जिको कीं करै बो किणी नै किणी रूप सूं साहित्य में भी प्रकट हुवै। 'साहित्य समाज रो दरपण हुवै अर्थात् जिण भांत दरपण जथारथ परगट करै, साहित्य भी करै। समाज में धरम रै नांव पर जिका ढोंग हुवै, राजनीति में जनता रै भलै रो कैय'र सुवारथ पूरो करणो, आम जन रो सोसण आद बातां जिकी समाज में हुवै वां रो साहित्य सूं सीधो सम्बन्ध नीं होय'र भी अेक–दूजै नै प्रभावित करै। समय रै सांच रा दरसण अगर करणा हुवै तो उण जुग री साहित्य रचणा में ई हुवैला। प्रस्तुत उपन्यास 'मेवै रा रूंख?' में भी समकालीन राजनीति, धार्मिक पाखण्ड, नौकरसाही में भ्रस्टाचार आद रो सांगोपांग वरणाव हुयौ है।

5.5 मेवै रा रूंख? री समीक्षा (तत्त्वां रै आधार पर)

5.5.1 कथानक

'मेवै रा रूंख?' अन्ना राम सुदामा रो बीसवीं सदी रै आठवै दसक में लिख्योड़ौ अेक जथार्थवादी उपन्यास है। सन् उगणी सौ पिचहतर में जद देस री प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ही उणां रै खिलाफ इलाहाबाद उच्च न्यायालय अेक अेतिहासिक फैसलो कर्यो। इण कारण सूं श्रीमती गाँधी देस में 'आपात काळ' घोसित कर दियो। अवसरवादी लोगां इण समै रै दौरान अनुसासन

रै नांव पर लोगां नै घणा ई सताया। बां दिनां गाँवां में फैलेड़ी राजनीति, भ्रस्टाचार अर सोसण रो ओ उपन्यास जथारथ चित्रण प्रस्तुत करै। इण रो कथानक इण भांत है–

सिनाथ (सिवनाथ) अर सुगनो काका–बबां रा भाई है। दोन्यूं साथै ई खेती करै। सिनाथ मैट्रिक पास है उण री उमर पैंतीसेक बरसां री है। बड़ो ई समझदार है। आजकाल सिनाथ अर सुगनो दोन्यूं ई खेत में रैवै, कारण– नसबंदी रो डर। गाँवाळै लोगां नै सरकारी कर्मचारी जबरदस्ती पकड़'र सहर रै अस्पताल में ले ज्यावै अर वां री नसबंदी करवाद्यै। बै ओ भी कोनी देखै कै सामलो बच्चो है या बूढ़ो। बानै तो बस 'टारगेट' पूरो करणो है। सिनाथ अर सुगनो खेत में बैठ्या रोटी खावै हा। चाणचक्क वां नै अेक जीप रो घरराट सुण्यो। दोन्यूं भाज'र अेक जागां लुकग्या। जीप रै गयां पछै उण रै बाप हेलो मार्यो जद बै पाछा आया। सिनाथ रै बाप बतायो कै प्रभु आळै पोतै री थोड़ै दिनां पैली सगाई हुई, उण री भी नसबंदी करदी। सिनाथ रो बाप चिड़ियाँ नै रेत में न्हांवती देख'र बिरखा रा सगुन बतावै। बठै खेत में ई गाँव रो कोटवाळ आयो उण आपरी दुःख–सुख री बात करी अर फेर गयौ परौ।

सिनाथ नै कोटवाळ री बातां सूं बेरो लाग्यो कै गाँव रा महंत जी बीमार है। सिनाथ आप रै सुरगवासी बाळगोठियै री बेटी नै परणावणै तांई महंत सूं दो सौ रिपिया ब्याज पर लेय'र उण री घरवाळी नै दिया। महंत री उमर घणी ही अर कई दिनां सूं बीमार चालै हो। इण खातर सिनाथ अंधेरो हुयां खेत सूं घरां आयो अर महंत रै राम दुआरै कानी चाल पड़्यो। उण रो गाँव जीवणसर साढ़े तीन सौ घरां री बस्ती है। अठै न्यारी–न्यारी जातां रा लोग रैवै। रास्तै में उण नै गंगा कुमार मिळयौ जिको आपरी घरवाळी री टूम धनजी कनै अडाणै धर पईसा ल्यायो है जिणसूं बो सैतान सिंघ नै गिरफ्तार करवा सकै। सैतानसिंह उण नै बिना कसूर मार्यो हो। सिनाथ महंत सूं उधार लियोड़ै दो सौ रिपियां बदळै जिको रुक्को लिख'र दियो हो उण बाबत बात करणो चावै हो पण भेंट महंत जी सूं कोनी होवण दी। बीं रात ई महंत जी सुरग सिधारग्या। गाँव में वां री बैकुंठी काढ़ी गई। महंत जींवतै जी पइसै रो पूत हो। लोगां सूं पईसा करड़ौ ब्याज लेय'र उधार दिया करतो। अेकर उणकनै अगरू बाणियै 'रोल्ड–गोल्ड' अडाणै धर पाँच हजार रिपिया उधार लिया। पछै नकली सोनो बताय'र पईसा देणै सूं नटग्यो। महंत जी ठग्या गया पण मर्यां पछै आज सगळा लोग वां री बैकुंठी सामी सरधा सूं निंवै हा, चढ़ावौ चढ़ावै हा। दरअसल धन जी सेठ अर दो च्यार अवसरवादी अैड़ै मौकै रो फायदो उठा'र लोगां सूं पईसा भेळा करै हा। महंत जी रै मर्यां पछै वां री गद्दी रा केई दावेदार पैदा होग्या। अेक नायणी आपरै टाबर नै उणां रो ई बताय'र गद्दी पर दावो करै ही तो अेक दो साधु भी अैड़ा हा। दरअसल मुफ्त रै माल पर सगळां री लाळ पड़ै ही।

सेठ हजारीमल जी जीवणसर में रैवै। वां रै पड़चून री दुकान अर अनाज पिसाई री चाकी है। गाँव री लुगायां अर गरीब लोग लकड़ी अर ठूंठिया खोद'र ल्यावै जिकां नै सेठ 'औणै–पौणै' दामां में खरीद लेवै। तोलती बारी भी कम तोलै अर हिसाब में भी बेईमानी करै। किणी सूं बेगार लेवणै तांईं उण नै थोड़ी–भोत चाय–पत्ती या गुड़ री डळी दे देवै। ज्यादातर लुगायां जिकी अठै लकड़ी बेचण नै आवै बै आटो भी अठै सूं खरीद'र ले ज्यावै। सेठ पड़चून रै सामान में भी मिलावट करणै सूं कोनी चूकै। पटवारी, ग्राम सेवक, सेकेट्री, सरपंच सगळा ई अठै ढूकै। सेठ इणां सूं मिलीभगत राखै। इणी गाँव में धनजी री बड़ी दुकान है। दुकान पर हरेक भांत री चीज मिलै। बो लोगां सूं अनाज अर दूसरी जिंसां भी खरीदै। नगर सूं कम भाव देवै, कम तोलै पण बातां घणी मीठी करै। पक्को बेईमान। उण री विधवा बै'ण चांदा बाई उण कनै ई रैवैं। गई रात जद महंत जी पूरा हुया बा बठै सूं गै'णो, चांदी अर रिपिया रात नै उठा ल्याई। सेठ धन जी

सिनाथ रो रुक्को देख'र उण नै बुलावै अर रिपियां रो तगादो करै। सिनाथ जद बां नै खरी–खरी सुणावै तो बो सिनाथ सूं बदळो लेणै री योजना बणावै। सेठ हजारी मल, धनजी, सरपंच, सेकेट्री, पटवारी अै सगळा अेक ई थाळी रा चट्टा–बट्टा है। सगळा आप–आप रै सुवारथ कारण अेक–दूजै सूं जुड़ेड़ा है। गाँव रै लोगां रो सोसण करै। सेठ हजारीमल अर धन जी सोसण रो कोई मौको कोनी छोडै। और तो और बे लोगां नै छाछ सिरखी चीज भी मुफ्त कोनी घालै। छाछ रै बदळै में बां नै कोई हर्यो घास, बेरिया, सांगरी, केरिया आद कीं न की ल्या'र देवै जद ई घालै नीं तो कोनी घालै। इण रै साथै–साथै बे लुगायां, टाबरां जरूरतमंद सूं बेगार लेणै सूं भी कोनी चूकै। धनजी नै बुलावो आयो कै गाँव में थाणेदार आयो है। बो हजारी मल रै घरां बुलावै। हजारीमल रै घरां गाँव सेवक, सरपंच, पटवारी, थाणेदार अर गाँव रा दो–चार चलतापुर्जा बैठ्या हा। थाणेदार सगळां नै नसबंदी रा केस ल्यावण तांईं करड़ी हिदायत देवै। बो ओ भी कैयो कै बां नै इण खातर पइसो खरच करणो पड़ै तो बो भी करै। जबरन नसबन्दी सूं दुःखी जीवणसर रा लोग आपस में बतळावै हा बठै पदमा जाटणी आगी। पदमा जाटणी लारलै चुणाव में क्षेत्र री अेम. अेल. अे. कुसुमा कटारिया री घणी मदद करी जिण कारण सूं बा चुणाव जीतगी। सिनाथ अर पदमा जाटणी लोगां री बिथा सुणावणै तांईं कुसुमा कटारिया कनै नगर में मिलण तांईं जावै। बां रै लारै–लारै जसनाथ री मढ़ी पर रैवणियों सूरदास भी पूग जावै। कुसुमा बां नै घणी ई'देर बिठायां राखै फेर जद मिलण आवै तो कोरो जवाब दे देवै कै बा नसबंदी मुजब किणीं नै कीं कोनी कैय सकै। सिनाथ नै देख'र कुसुमा कटारिया भड़क जावै। बा सगळांनै बठै सूं जावणै रो कै देवै। बै निरास होय'र पाछा बस अड्डै कानी आ जावै। 'अनुशासन देश को महान बनाता है' 'मेरा भारत महान' रा नारा भींतां पर लिखेड़ा देख–देख सिनाथ नै हांसी आवै।

अब काळै बिरखा चोखी हुई इण कारण खेती घणी आछी है पण घणै मेह सूं लोगां रा कच्चा घर पडग्या। घणकरै लोगां कनै गुंजायस नीं होणै रै कारण बै दुबारा घर नीं बणा सक्या अर खुलै में बैठ्या है। खाणै–पीणै रो अर दूजा सामान भी माटी तळै दबग्यो। आज सिनाथ धीरजी साथै गाँव कानी आवै हो तो मार्ग में सुरतै नायक री मां रोंवती मिली। उण बतायो कै बेटै री बहू उण रै दे काढ़ी। धीरजी नै दया आगी। उण बीनणी नै समझाई अर खाणै तांई दाणा आप रै घरां सूं ल्यावणो रो कैयो। धीरजी अेकर सिनाथ रै बाप नै दरोगां सूं बचायो हो। दरोगा बांनै नै मारै हा। इण कारण सिनाथ धीरजी री घणी इज्जत करतो। थोड़ी दूर आगै कान्हो कोटवाळ मिळग्यो उण भी घर में राड़ अर भूख रो रोणो रोयो। सिनाथ नै दया आगी। बो उण नै कीं देणै तांईं साथै घरां लेय'र आयो तो मां लड़णै लागी कै अै लोग काम कर'र खाणो चावै तो क्यां री भूख है। इण ई गाँव में आँधै सूरदास सरिखा लोग भी आप री रोटी कमा'र खावै। इण लोगां रो दळिदर तो कुबेर ई कोनी धो सकै क्यूं कै इणां नै काम री आदत ई कोनी। सिनाथ जद खेत कानी चाल्यो तो अक्खै नाई उण नै घरां बुला'र कीं हिसाब–किताब करवायो। उण गाँव री बाळ विधवा मक्खू कनै छोरी रा 'आंवळा' अडाणै धर पच्चीस रिपिया लिया। बा तीन मईनां में पचास कींकर बणा दिया? तो सिनाथ हिसाब कर'र बतायो कै थारै सूं ब्याज पर ब्याज लियो है।

आजादी पछै सरकार गाँवां अर गरीबां री तरक्की तांईं जिका भी जतन कर्या बां नै कीं चंद लोगां पूरा कोनी होण दिया। सरकार वां नै 'करज' दिया तो कदे पाछा कोनी चुकाया। घर बणाणै खातर पइसा दिया तो दारू में उडा दिया। सूद खोर बाणियां, सरपंच, पटवारी, गाँव–सेवक अर दो–चार चालाक अर पिछलग्गू लोग योजनावां रो फायदो उठावंता रैवै। गाँव में कीं अैड़ा लोग हुवै जिका कीं कामधाम तो करै कोनी पण 'दंद–फंद' लगाय'र पीसा कमा लेवै। आज रामदुआरै में प्रसाद हो। इण में भी गरीब–अमीर री लकीर खिंचेड़ी रैवै। धनजी,

सिनाथ नै सबक सिखाणै तांईं पटवारी सूं मिल'र सड़यंत्र रचै। रात नै बैठ'र पटवारी, सरपंच, गाँव सेवक दारू पीणै रो कार्यक्रम बणावै। सेठ धन जी केसरै कोटवाळ नै आपरै बाड़ै में अेक कमरो रैवण तांईं दे देवै अर आप रै भतीजै कनियैं नै उण रै खोळै देणै री कैवै। केसरो कोटवाळ आप रो टूटेड़ै घर छोड धनजी रै बाड़ै में रैवण तांईं आ ज्यावै। रात नै दारू पियां पछै पटवारी, अेक दरोगां रो छोरो अर ईसर सिंह लोगां रै घरां में बड़ग्या। पकड़ो! पकड़ो! रो रोळो सुण लोग जागग्या। साल में अेक दो बारी अैड़ी घटनावां होंवती ई रैवै।

सोसण करणै में धनजी ई नीं उणां रै घर सूं भी कम कोनी हा। गाँव री लुगायां सूं रोटियाँ बदळै या छोटो–मोटो कपड़ो देय'र काम, बै करवांती रैंवती। सेठ लोगां सूं घास खरीदतो तो दाम भी कम देंतो अर तोल में ज्यादा लेंतो। मोठ, बाजरी लैंती बरियां भी इयां ई करतौ। ऊपर सूं कैंवतो आ हिसाब री बात है पण कीं दो–चार किलो मोठड़ा तो दे दे म्हे भी खाल्यां। उण सामी जिको कीं बोलणै री कोसीस करतो सेठ उण नै सबक सिखावणै री कोसीस करतो। बो आप रै भाई लालचन्द नै बतायो कै उण रै बेटै नै अब बो केसरै कोटवाळ नै खोळै देय'र 'गोदनामो' लिखवा लेसी। अेक हरिजन रै गोद जायां कनियैं नैं 'मजिस्ट्रेट' री नौकरी मिल ज्यावैगी। आ सोच'र दोन्यूं भाई घणां ई राजी हुया।

अेक दिन रूपलो मेघवाल, ईसर सिंह अर पटवारी दारू पी'र खेत में गया। ईसर सिंह अर सिनाथ रो खेत सींवजोड़ हो। सिनाथ सीवण काटै हो। ईसर सिंह उण नै गाळ काढ़ी अर ललकार्‌यो। बो कीं संभळतो इतरैं में उण रै दे मारी। बो पड़ग्यो तो उण रै सिर में रूपलै लकड़ी री मारी। इतरैं में रोळो सुण नैं सुगनो जेई लेय'र भाजतो आयो। उण दोनुवां नै कूट्‌या पण 'घणी ना मारी' कैय'र सिनाथ बीं नै बरज दियो। धीरजी दोनुआं नै लेय'र अस्पताळ गया। कोई थाणा–कचेड़ी कोनी करण दिया। दुस्मणां री मन री मन में रैगी। लारै सूं अेक दिन धन जी सिनाथ रै बाप नै रिपियां रै तगादै तांईं घरां बुलायो। सूरदास सगळी बातां सुणै हो उण आप रै कनै सूं ब्याज समेत रकम चुकाय'र रुक्को पाछो ले लियो। सेठ हाथ मसळ'र रैग्यो। गाँव में अेक मिन्दर है छोटो सो रामदेवजी रो! सूरदास बठै भी बैठ्‌यो रै वै। मेघवाळां रा टाबर भणणा चावे तो बो वां नै भी कीं बतावै। अेक दिन सूदास गाँव री लुगायां अर मिनखां नै जिका मिन्दर में आया न्यारा–न्यारा समझाया कै वां री गरीबी रो कांई कारण है? सेठ हजारी मल अर धन जी वां रो सोसण करै। बे अगर थोड़ी सी समझ सूं काम करै तो इण गरीबी अर तंगदस्ती सूं उबर सकै। सगळां रै बात जच जावै। सगळा अेकमतो करणै री सोचै। सिनाथ अर ईसर सिंह दोन्यूं अस्पताळ में भर्ती है, इलाज चालै। सिनाथ अर ईसर रा बिस्तर कनै–कनै है। सिनाथ अेक दिन रात री डेढ–दो बज्या ईसर सूं बंतळ करण लाग्यो अर दोनुवां रै मन रो मैल धुपग्यो। 'बिघ्न संतोखी' लोग वां नै हवा देणै तांईं अस्पताळ आवण लाग्या। बै सगळा लोग किणी न किणी भांत सूं धन जी सेठ सूं जुड़ेड़ा हा। 'जाट, राजपूत रो बैर तो सनातन है' कैय'र जद दोनुवां नै आंगळयां चढ़ावण लाग्या तो बां, उणां नै झिड़क'र भजा दिया। दाळ गळती नीं देख'र लोग टिक'र बैठग्या।

सिनाथ अर ईसर नै अस्पताल सूं छुट्‌टी मिलणै सूं दो दिन पैली पदमा चौधरण वां सूं मिलण तांईं आई। उण पैली तो दोनुवां री निंदया करी फेर बतायो कै पटवारी काल कान्है कोटवाळ रै घरां चोखो कुटीजग्यो। अब केई दिन हाडका दुखैला। फेर उण बतायो कै कुसुमा कटारिया उण सूं माफी मांगण घरां भी आई पण उण री दाळ म्हां रै अठै कोनी गळी तो बा धन जी कानी गई परी। डागदर सूं छुट्‌टी मिलगी तो वां नै लेवण तांईं बठै सिनाथ रो भाई सुगनो ऊँट गाड़ी लेय'र आग्यो। वां नै कलकत्ता सूं आयोड़ी सुगनी बामणी मिळी जिकी बठै धनजी रै सग्गे कनै

रसोई रो काम करती। सुगनी आप पर हुयेड़ै जुलमां री कथा सुणाई अर बतायो कै धन जी रो सग्गो सोसण करणै में धनजी सूं सवायो है। दिन छिपतै साथै ई ऊँट गाडी में बैठ'र च्यारुं गाँव कानी बहीर होग्या।

पूरी रात बे चालता रैया। झांझरकैसी'क आप रै खेत नेड़ै आया तो बठै सिनाथ रुकणै रो कैयो अर ईसर नै कबड्डी खेलणै तांईं बुलायो। ईसर पैली तो मन ई मन डरग्यौ पण फैर हिम्मत कर गाडी सूं हेठो उतरियौ। दोन्यूं कबड्डी खेल्या। ईसर रै मन में कोई रैई–सैई काळस ही बा भी दूर कर दी। दिन उगाळी बे सीधा सूरदास कनै पूग्या उण रो धनबाद कर असीरवाद लैय–र घरां कानी चालण लाग्या तो धन जी देख लिया। धन जी वांनै नै बतळावणै री कोसीस करी तो दोनुवां सूं खरो जवाब सुण'र चुप होग्यो। बै दुफारां सूरदास कनै आया तो बेरो लाग्यो बो गाँव छोड गयो परो। बिनै धनजी री दुकान पर अेक दो ग्राहक बैठ्या हा अर बठै ई रामधन, नत्थू गोदारो आद लोग भी आग्या। सुरतै नायक री माँ मरगी बो गै'णा अडाणै धर'र माँ रै खरच (मृत्युभोज) तांईं पईसा उधार लेण आयो हो। सेठ उण सूं दो बोरी मोठ अर पाँच सात गाडी घास री और मांग ली। फसेड़ै सुरतै 'हाँ' कर दी। इतरी देर में दोय ट्रक आग्या सहर सूं चारो लेण नै। धनजी, सुरतै नै बेगार में ट्रक भरवाणै तांई लगा दियो।

इण भाँत 'मेवै रा रूंख' अैड़ो कथानक है जिको कदे भी पूरो कोनी हुवै। राजस्थानी भासा में ओ अैड़ो उपन्यास है जिको गाँव रै लोगां रै सोसण, आपसी राजनीति, चालाक लोगां सूं लुटीजता–पिटीजता लोगां री जथारथ कथा कैवै। आ नीं खतम होवण वाळी कथा बेरो नीं कद सूं चाल री है। गरीब, मजबूर, भोळा अर सीधा सादा लोग इण तथाकथित सोसकां नै बड़ा लोग समझ'र मेवै रा रूंख मानै। उणां रो मानणो है कै अे लोग वां रै सुख–दुःख में काम आवैगा, पण अै लोग सहानुभूति रो सांग रचा'र सदियां सूं इणां लोगां नै ठगता रैया है अर आज भी ठग्यां जावै। 'मेवै रा रूंख?' में किणी व्यक्ति री कथा कोनी अेक वैवस्था री कथा है जिणरो बखत आठवों दसक है जिण में बो 'काळखण्ड' भी आवै जद देस में आपातकाल (इमरजैंसी) लागू हुई। अनुसासण रै नांव माथै लोगां साथै ज्यादतियाँ हुई जिण री अेक झलक लेखक अठै 'नसबन्दी' रै रूप में दिखाई है। जीवणसर गाँव में केई जातां रा लोग रैवै पण खास तौर सूं मिनख री दो ई जात है। अेक अमीर अर दूजी मेहनतकस गरीब। अमीर गरीब रो हरेक भांत सूं सोसण करै। बो धरम रो, परोपकार रो दिखावो करै पण इण रै लारै उणां रो स्वार्थ ई हुवै। जुगां–जुगां सूं आंधै बिसासां, रूढ़ियां, धरमांधता, अणपढ़ता अर गरीबी सूं जूझतै मिनखां रै भोळैपण अर मजबूरी रो अै लोग फायदो उठावै। जिका लोग इणां रै जाळ में नीं फसै बे इणां नै कांटां सिरखा लागै। अै तीसरी भांत रा लोग जिका जागरूक है अर भोळै लोगां नै इणां रै चंगुल सूं छुडावणा चावै उणा नै अै मार्ग सूं हटाणै री कोसीस भी करै। आ लड़ाई आज सूं नीं जुगां सूं जारी है। ओ जीवणसर गाँव जठै भी गरीबी अर भूखमरी है, सोसण अर जबरदस्ती है, मौजूद है। इण उपन्यास री कथा वस्तु, भासा अर सिल्प नै लेय'र डॉ. कुन्दन माली रो कैवणो है, ''सुदामा जी अणूंती तटस्थता, पारदरसिता, रचनादीठ अर सामाजिक सरोकार रै पाण अेक ठेठ आधुनिक औपन्यासिक सिल्प घड़ण में, उपन्यास री पारम्परिक चाल ढाळ बदळण नै, कथा वस्तु रै हिसाब सूं जीवंत भासा प्रयोग करण में सफल रचनाकार रै रूप में सामी आवै।''

5.5.2 पात्र अ'र चरित्र–चित्रण

'मेवै रा रूंख?' में लेखक रो उद्देस्य किणी 'चरित्र–विसेस' री रचना करणो कोनी। इण उपन्यास रा चरित्र वर्गगत है। अेक तो बे लोग है इण में, जिका सदियां सूं सोसित है। धरम रै नांव माथै, जात रै नांव माथै, सम्प्रदाय रै नांव माथै, किस्मत री दुहाई देय'र करमां रो फळ बताय'र चालाक

लोग उणां नै आज तक ठगता रैया है। इण री धरम भीरुता रो फायदो उठाय'र, सुरग–नरक रो डर दिखा'र इणां नै चालाक लोग आज भी लूटै। 'मेवै रा रूंख?' में घणकरा'क चरित्र इण भांत रा है।

दूजी भांत रा पात्र सोसक है। बे गरीब अर भोळै लोगां नै नित भरमायां राखणै में ई आप रो फायदो देखै। अै लोग जद आप रै हितां माथै आंच देखै तो छोटै लोगां नै लाळच देय'र आप रा हथियार बणा लेवै। अै लोग सदीव सत्ता साथै रैवै। सत्ता सूं अै लोग फायदो भी उठावै अर खुद नै मौको मिळै तौ इण रा भागीदार बण ज्यावै।

तीजी तरां रा पात्र चाटुकार है। बे आप रै थौड़ै सै फायदै या खाणै–पीणै में ई आप रो ईमान बेच देवै। चाटुकारिता कर–कर अै सोसक किस्म रै पात्रां नै नैतिक संबळ देवै। अै आप रै वरग सूं भी बेईमानी करता कोनी चूकै बस स्वार्थ पूरो होणो चायजै। अै चाटुकारा लोग इण सोसक लोगां री ढाल भी है अर हथियार भी। अै विवेकभ्रस्ट लोग है।

चौथी भांत रा पात्र समाज सेवी, परोपकारी, विवेकसील अर जागरूक लोग है। सत्ता चाये किणी री हुवै उण री कमियां रो विरोध करणो इणा रो फरज है। अै चालाक लोगां री रग–रग जाणै है। अै लोग घणै अंधारै में दीयै भांत टिमटिमावै। अन्याव अर सोसण रै विरोध में अै लोग सगळां सूं आगै ऊभा मिलै। अैड़ा लोग परम संतोखी हुवै। समाज में जागरूकता ल्या'र सोसण खतम करणो इणा रो उद्देस्य हुवै। अै मिनख रा नीं हुय'र उण वैवस्था रा विरोधी है जिकी सोसक उपजावै।

इण उपन्यास रो नायक कुण है? इण बात पर भी विचार करणो जरूरी है। पैली नजर में तो इण रो नायक सिनाथ (सिवनाथ) ई लागै क्यूं कै सुरु सूं लेय'र अन्त तक बो संघरससील रैय'र आप री हाजरी दरज करवावै पण सूरदास रो चरित्र भी कम प्रेरणादायी कोनी। आप रै संघरससील सुभाव रै कारण ई बो आप री आँख्यां फुड़वा बैठ्यो। इण रै बावजूद उण हार कोनी मानी। जागरण री मसाल जगांवतो, 'नेकी कर दरिया में डाल' रै मारग चालतो, बो अेक गाँव सूं दूजै गाँव फिरतो फिरै। धीरजी रो चरित्र भी प्रेरणादायी है। इण सगळी बातां नै निगै करतां थका आपां कै सकां कै इण रो नायक बे सामाजिक, आरथिक, धारमिक अर राजनीतिक हालात है जिण में आज रो मिनख जीवै। इण वैवस्था में अमीर घणो अमीर अर गरीब घणो गरीब होंतो जावै। सरकार गरीबां, हरिजनां या छोटै तबकै रै लोगां तांईं जिकी मदद या सुविधावां देवै उणां रो फायदो भी अमीर लोग उठावै। धनबळ सूं बे इण वैवस्था में भी मौज करणै में सकसम हुवै। हरिजनां रो नौकरी में कोटो है। इण बात नै धनजी जाणै। इण कारण सूं बो केसरै कोटवाळ साथै दया रो नाटक करै अर आप रै भतीजै (लालचन्द रै बेटै) नै वां रै खोळै घालद्वै। अब 'रिजर्वेशन' रै माध्यम सूं 'मजिस्ट्रेट' री नौकरी पक्की। धनजी धड़ल्लै सूं कैवै– रूपली पल्लै तो रोही में ही चलै। इण भांत इण उपन्यास में जिका भी चरित्र उभर्‌या है बै वरग गत है। बियां तो इण उपन्यास में चरित्रां री भरमार है पण कीं खास चरित्रां रो चित्रण इण भांत है–

सिनाथ– सिनाथ उर्फ सिवनाथ 'मेवा रै रूंख?' रो प्रमुख पात्र है। इण उपन्यास में लेखक दिखायो है कै आजादी पछै भारत रा गाँव पैली जिस्या कोनी रैया। हालांकि सोसण अर पिछड़ैपण री दीठ सूं कोई खास बदळाव कोनी आयो पण राजनीतिक चेतना आई है। अैड़ी हालात में सिनाथ रै चरित्र री हेठे लिखी बातां पर विचार इण भांत है–

भणयो–लिख्यो अर मेहनती करसो :– सिनाळा दसवीं पास है पण माँ रो कैवणो मान नौकरी कोनी करी अर खेती में लागग्यो। बो आप रै खेत में पूरी मेहनत करै। उण नै आप री मेहनत पर भी पूरो भरोसौ है। खेत रै कामां में भी पूरो हुस्यार है। खेत में आप रो पसीनो बहावणै सूं

कदै ई गुरेज कोनी करै। उण रो विचार है करसै रो जितरौ पसीनो खेत में पड़ैलो धरती माता उतरीं ई राजी हुवैली अर खूब अन्न–धन्न दैवैंली।

दयावान :– सिनाथ घणो दयावान मिनख है। भण्यो–लिख्यो होणै रै कारण बो जाणै कै आज गरीब, गरीब क्यूं है? गरीबां तांईं उण रै दिल में घणो दरद है। बो कान्है कोटवाळ नै आप रै घर सूं दाणा देवै। आप रै सुरगवासी बाळगोठियै री कन्या रै ब्याव खातर धनजी सूं दो सौ रिपिया ब्याज पर उधार लेय'र देवै। गरीब अर जरूरत मंदां री बो बखतसर मदद करै।

निडर अर स्पस्टवादी :– सिनाथ निडर भी है अर स्पस्टवादी भी। बो इण बात नै भली–भांत जाणै के धनजी अर हजारीमल सिरखै लोगां रो विरोध करणो उण नै मूंगो पड़ सकै पण बो किणी सूं डरै कोनी। अेम.अेल.अे. कुसुमा कटारिया रो चुणाव में विरोध बो इणी'ज कारण करै कै बा गांधीजी रै नांव सूं वोट मांगै पण गरीब लोगां में दारु बंटवावै। सिनाथ री निडरता अर स्पस्टवादिता रो बेरो जद असली लागै जद बो कुसुमा कटारिया रै बंगलै पर ई उण नै खरा–खरा जवाब दे देवै तिळमिळा'र कुसुमा कटारिया उण नै घर सूं बारै निकळणै रो हुकम देवै।

विवेकसील अर समझदार :– संकट री बेळा में जद मिनख आप रो धीरज नीं खोवै अर बुद्धि सूं काम लेवै उण नै ई विवेकसील कै सकां। सिनाथ जद खेत में सीवण काटै हो तो उण माथै ईसरसिंह अर रूपलै मेघवाल हमलो कर दियो। सिर सूं खून री ततूरी चालै ही पण जद उण रो भाई सुगनो जेई सूं मारण चाल्यो तो बो पड्यै–पड्यै ई कैयो– ''सुगना दे मत लिये ना, आवै नी कुठोड़ लाग ज्यावै अर पछै सोनै सूं घड़ावणी मूंघी पड़ै, ईसर में अबार कोई दूजो ही है.. ..'' सिनाथ जाणै कै ईसर उण रो बाळगोठियो है बो इण बखत किणी री आंगळियां चढ़ेड़ो हो नींतर बो उण साथै अैड़ी हरकत कोनी कर सकै।

भावुक अर दूरदरसी :– सिनाथ भावुक अर दूरदरसी है। बो इण बात नै भली भांत जाणै कै ईसर सिंह तो उण रो सहपाठी अर बाळगोठियो है बो उण पर चोट कोनी कर सकै। बो सुगनै नै भावुकतावस कैवै इण नै मार ना देई। इणी भांत अस्पताळ में बो आपरै प्रेम अर भावुकता सूं ईसरसिंह नै आपरो बणा लेवै। भावुकता रै कारण ई बो कान्है कोटवाळ नै आपरै घर सूं अनाज देवै। धीरजी अेक बर उण रै बाप री रच्छया करी। इण कारण बो धीरजी नै घणो मान–सन्मान देवै। बो इण बात सूं भी भली भांत परिचित है कै उण री अर ईसर सिंह री लड़ाई नै लोग 'जाट–राजपूतां' रो झगड़ो कैय'र हवा दे सकै। इण कारण उण कनै जिका लोग भी उणां री लड़ाई नै हवा देवण आवै, दो टूक जवाब दे देवै।

इण भांत सिनाथ अेक आदरस चरित्र है जिको मानवी गुणां सूं भरपूर, समाज अर मिनख री तरक्की चावणियो भलो आदमी है।

सूरदास :– सूरदास भी 'मेवै रा रूंख?' में अेक महताऊ पात्र है। बो कपड़ा चायै भगवां पैरै पण साधुआं री तरां मांग'र कोनी खावै। लोगां रा मांचा, अर कुर्सिया बण'र बो आप री जीविका कमावै। परम संतोखी अर खरी कैवणियो मिनख है सूरदास। बो जिका पईसा कमावै जरूरतमंद नै दे देवै। लोगां रो भलो चावणियो अर परोपकारी मिनख है। उण रो आगमन उपन्यास रै उत्तरार्द्ध में हुवै पण फेर भी बो छा ज्यावै। लोगां रेा भलो करतां–करतां कठैई लूंठै लोगां सूं आँख्यां फुड़वा बैठ्यो। इण रै बावजूद बो जागरण रो संख बजावतौ जावै। गाँवाळालोगां नै गाँव री सैली में जद आपरी बात समझावै तो लोगां रै दिल में बैठ ज्यावै। बो जथारथवादी मिनख है। रामदेजी री मूरत सामी माथो झुका'र दुःख दूर करण री अरदास करणियां नै खरी–खारी सुणा'र उणां री चेतना जगावै। सूरदास कैवणै में नीं, कीं करणै में बिसास राखै। सिनाथ अर

पदमा चौधरण जद कुसुमा कटारिया सामी फरियाद करणै जावै तो उण नै बेरो लागतां ईं बे भी पूग जावै। निःस्वार्थ भाव सूं बो जण–जण री सेवा करणो चावै। उण री इच्छा ही के लोग सोसण, गरीबी अर आंधै बिसासां रै फंदै सूं मुगत हुवै। रमता जोगी बहता पाणी' री भांत बो अेक जागां टिक'र नीं रैवै। बो जागरण करतो आगे बधतो जावै अर सगळै देस नै नींद सूं जगाणो चावै। सूरदास 'मेवै रा रूंख?'' में अेक आदर्स चरित्र रै रूप में प्रस्तुत हुयो है।

धीरजी :– धीरजी जात रा राजपूत है, जात–पात सूं ऊपर उठेड़ा, बात रा धणी, निडर अर परोपकारी मिनख है। सिनाथ रै बाप नै अेक बार दो दरोगा कूट'र ऊँट खोसै हा। धीरजी पूग'र उणा नै ललकार्‌या अर डांग खींची ते दरोगा डर'र भाजग्या। बे जिकी बात कैदेवै उण नै पूरी भी करै। सुरतै रा टाबर भूखा मरै हा जद बे आप रै घरां सूं दाणा दिया। आप रो भतीजो ईसरसिंह जद धनजी रै सिखायां सिनाथ रै दे काढ़ी तो बे दोनुआं नै साथै लेय'र अस्पताळ गया अर दोनुवां नै थाणा–कचेड़ी कोनी करण दिया। बे आप रो नांव 'धीरजी' उजाळै अर्थात् धीरज आळा मिनख है। बे आदरस मिनख है।

पदमा चौधरण :– पिचहत्तर बरसां री बूढ़ी पण कड़क अर दबंग लुगाई है पदमा चौधरण। इलाकै रै लोगां में उण रो मान–सन्मान है। इणीज कारण कुसुमा कटारिया अेम.अेल.अे. रै चुणाव में उण नै आप रै साथै राखै। बा साची अर खरी लुगाई है इण कारण लोग भी उण पर भरोसौ करै। वा दूजां रै दुःखां सूं दुःखी होय'र सिनाथ नै साथै लेय'र जद कुसुमा कटारिया सूं मिलणै जावै तो सोचै ही के लोगां नै कीं छूट मिलसी पण कुसुमा कटारिया रो रिवैयो देख उण नै घणो दुःख हुयो। दूजी बार चुणाव रै बखत जद कुसुमा कटारिया उण रै घरां आवै तो बा खरी खरी सुणावै।

इण भांत 'मेवै रा रूंख?' में सिनाथ, सूरदास, धीरजी, पदमा चौधरण आद अैड़ा पात्र है जिका सोसण अर सोसक री खिलाफत करै। लोगां नै सोसण रै खिलाफ अेकजुट कर, जगावणै री कोसीस करै। सोसक वर्ग में सेठ धनजी, हजारीमल, महंत जी, चांदा बाई, मक्खू, कुसुमा कटारिया आद पात्र है। इण रै अलावा धनजी री घरवाळी भी सोसण करणै में हुस्यार है। आं पात्रां में पूरो चरित्र धनजी रो उकेरीज्यो है। बियां तो वरगगत पात्रां री विसेसतावां अेक सिरखी सी हुवै। हाँ, जागां, बगत अर देस मुजब उण रा तरीका जरूर बदळ सकै। उपन्यास मुजब धनजी रो चरित्र इण भांत है–

धनजी– धनजी व्यवहार कुसळ बाणियो है। पईसो किण भांत कमायो जावै उणरा सगळा गुर बिण नै आवै। उण रै चरित्र री विसेसतावां–

वैवार कुसळ :– धनजी बड़ो व्यवहार कुसळ मिनख है। बखत रै मुजब सामी वाळै सूं बात करै। आप री असामी नै बो पैली तोल लेवै कै ओ कितरों जरूरतमंद है, उण हिसाब सूं बात करे। करसां सूं जद घास खरीदै तौ घास ढोवणाळा गाड़ी वाळां नै अेक दो रिपिया बेसी देय'र घणो घास लदणै री गुपचुप हिदायत दे देवै। मालक अगर कीं चीं–चपड़ करै तो केदेवै, भाई! आप नै अगर कीं सक है तो बो पड़्यो 'तोल' अर तोलल्यो। म्हूँ तो खेत में खड़्यै होय'र गाडी भरवाई कोनी। आप जाणो। इतरै में भोळो करसो राजी। इण बखत बो दो–चार किलो मूँग, मोठ, बाजरी या कोई और चीज मुफ्त री मांगल्यै। ब्याज करड़ो लगावै पण बातां मीठी करै। धनजी इण बात नै भली भांत जाणै कै उण कनै कोई गळै में फस्यां ई आवै। पछै बो किणी नै क्यूं बगसै। बो पईसा देय'र सिनाथ रो तो सिर फुड़वादै अर उण रै बाप नै थाणा–कचेड़ी तांईं त्यार करणै री कोसीस करै। गाँव रा चालू लोगां, सरपंच, पटवारी, सेकेटरी, गाँव सेवक सगळां नै राजी राखै। गाँव में कोई अफसर आवै तो उण री सेवा करै। इण भांत धनजी बड़ो वैवार कुसल मिनख है।

सोसक पण म्रदुभासी :– धनजी आ बात जाणै कै बाणियै नै अगर सफल होणो है तो सै सूं पैली मीठो बोलणो चायजै। इण कारण बो कदे ई किणी सूं गाळी–गळौच कोनी करै। बो किणीरौ भी सोसण करणै में परहेज कोनी करै। आप रै फायदै में आगलै रो कितरों ई नुकसान हुवै उण नै कोई मतलब कोनी। बीं री सगळी सम्पत्ति दूजां रो सोसण कर'र भेळी करेड़ी है। केसरै कोटवाळ नै आप रै बाड़ै में बणेड़ै कमरियै में राख'र उण नै आप रै भतीजै नै खोळै देय'र उण रो भावनात्मक सोसण करै। बिचारै केसरै कोटवाळ नै तो इतरो ई बेरो कोनी कै उण साथै कांई खेल खेल्यो जा चुक्यो है। बो तो अखीर तांईं इण नै धनजी री महानता ई समझतो रैवै।

चालाक अर बेईमान :– धनजी घणो चालाक अर बेईमान मिनख है बो आप री चालाकी सूं राम दुआरै रा पईसा खा ज्यावै। इणीज कारण बो आप री विधवा बै'ण चांदा बाई नै रामदुआरै रै महंत कनै मेलै। पूजा–पाठ रै नांव पर चांदा बाई राम दुआरै जावै अर महंत जी नै राजी भी राखै। जिकी रात महंत जी री मौत हुवै चांदा बाई महंत जी री नकदी, सोनै–चाँदी रा जेवर, कागद आद सगळां पर हाथ साफ कर सेठ नै ल्या'र सूंपदैवै। नाप–तौल में, ब्याज फळावणै में, लेण–देण में जठै भी बस चालै बो बेईमानी करणै सूं कोनी चूकै। सिनाथ नै बो सबक सिखावणौ चावै पण भड़कावै और लोगां नै अर पइसा लगाय'र उण नै कुटवा देवै। साथै ई सांत्वना देणै तांई बो उण रै घरां भी जावै।

घाघ अर संवेदणहीण :– बेहद घाघ किस्म रो मिनख धनजी संवेदनहीण मिनख है। उण कनै मन सूं हारेड़ा–थकेड़ा लोग आवै। किणी री मां या बाप मरेड़ो हुवै, किणी री बेटी बेटो बीमार हुवै, किणी नै अस्पताळ जावणो हुवै जद ई बीं कनै कोई आवै। बो कोई चीज या गैणो आप कनै अडाणै धर'र मूं'गै ब्याज पर पईसा देवै। उण नै आवणाळै दुःखी मिनख पर जाबक ई दया नीं आवैं ना कदे बो आ बात सोचै कै बिण साथै भी कदे अैड़ी बात बीत सकै। बो सामलै रै दुःख सूं जाबक ई निरपेख रैवै। किणी रै प्रति उण री संवेदणा कोनी जागै।

लालची मिनख :– धनजी लालची मिनख है। उण कनै धन आणो चायजै बो चाये किणी भांत आवै। बो जिकै लोगां सूं मुलाहिजो राखै बां सूं इण कारण कै बे उण नै कोई फायदो पुगावैला। बेईमानी सूं बो कठैई कोनी चूकै बस दो पईसा फायदो होणो चायजै। इण मामलै में बो इतरों दूरदरसी है कै आप रो फायदो देख'र केसरै कोटवाळ नै ई आप रो भतीजो खोळै दे देवै।

इण भांत सेठ धनजी रो चरित्र समाज विरोधी चरित्र है।

सेठ हजारीमल :– वरगगत चरित्र री विसेसता हुवै कै बो आप रै वरग रो नुमांइदगी करै इण कारण उण में आप रै वरग री सगळी कमजोरियां अर खूबियां हुवै। सेठ हजारीमल भी सोसक वरग रो है। हजारीमल मिलावट खोर, सूदखोर, चापलूस, सोसणकरण वाळो, संवेदनहीण जैड़ी जिकी विसेसतावां धनजी में है बै उण में भी है।

महंतजी :– उपन्यास में महंतजी रो सिर्फ जिक्र है। बे जनता रै सामी अेक ल्हास रै रूप में ई ल्याया जावै, जद उण री बैकुंठी निकळै। महंतजी ढोंगी मिनख हा बै लोगां रा गहणा आद अडाणै धर'र या रुक्को लिखवा'र करड़ै ब्याज पर रिपिया उधार देंवता। कई औरतां सूं उणां रा नाजायज सम्बन्ध हा। पेमा नायण तो आप रै छोरै नै उणां री ओलाद अर खुद नै बां री घरवाळी बतावै। इणी'ज भांत चांदा बाई भी बठै आंवती रैवै। राम नाम अर धरम री ओट में महंतजी जिनगाणी में सगळा खोटा काम कर्या। चालाक लोगां उणां री ल्हास री बैकुंठी काढ़'र भी पईसा कमाया।

अेम.अेल.अे. कुसुमा कटारिया :– अेक महत्त्वाकांक्षी राजनेता है। वायदा कर'र भूल जाणो,

जनता रै दुःख–सुख सूं कीं नी लेणो, घणी घमंडण अर गैर जिम्मेदार रै रूप में कुसुमा कटारिया रो चरित्र–चित्रण हुयो है। आज रै राजनेतावां भांत मौकै पर गधै नै बाप बणा लेणो अर पछै आँख्यां बदळ लेणी उण री चरित्रगत विसेसतावां हैं। बा पळटती भी देर कोनी लगावै। उण जद देख्यो के पदमा चौधरण अबकाळै उण री बातां में कोनी आवै तो बा आप रो पालो बदळ'र धनजी री चौकड़ी कानी जा बैठै। बा पूरी अवसरवादी है।

इण सोसक पात्रां रै अलावा मक्खू रो भी जिक्र आवै जिकी बाळ विधवा है उण जीभ रो स्वाद अर दूजी प्रवृत्तियाँ तो त्याग दी पण ब्याज रो लाळच कोनी छूट्यो। बीं रो चरित्र ज्यादा कोनी चित्रित हुयो पण बा बाळ विधवा होण रै कारण खुद नै आर्थिक रूप सूं सुरक्षित करी चावै। चाँदा बाई सेठ धनजी री बै'ण बाळ विधवा है। बा आप रै भाई रै हाथां री कठपुतळी लागै।

बे पात्र जिका चाटुकार है अर छोटै–छोटै सुवारथां जियां दारू पीणी, मांस खाणो आद पूरा करणै तांई धनजी रै साथै रैवै अर उण रा हथियार बण'र आप रै वरग नै ई घाटौ पुगावै। आं पात्रां में ईसरसिंह, पटवारी, गाँव सेवक, सेकेटरी, सरपंच आद है। इणां नै भी जे मौको मिळै तो सोसकां री जमात में सामळ हो ज्यावै इणा सब में खास चरित्र ईसर सिंह रो है।

ईसर सिंह :– ईसर सिंह सिनाथ रो बाळ गोठियो अर सहपाठी है। पैली सरकारी नौकरी में हो। दारू री लत पड़गी। नौकरी छूटगी पण दारू कोनी छूटी। बो धनजी री चंडाळ चौकड़ी में सामल होग्यो। दारू री लत रै कारण उण रो विवेक सगती नष्ट होगी पण सिनाथ री संगत जद मिळी अर खुद रै प्रति सिनाथ रो व्यौहार देख्यो तो उण रो हिड़दै परिवर्तन हुयग्यो। बो सिनाथ साथै कांधो जोड़'र सोसण रै खिलाफ मोर्चो लेणै तांई त्यार होग्यो।

सोसित पात्रां रो अठै इतरो ई वजूद है कै बे बड़ै लोगां रै काम आवै। बे आपरी परंपरावां, रीति–रिवाजां सूं बंधेड़ा सोसित अर भूख सूं लड़तां बस जूण पूरी करै। उणां री जिनगाणी पसुवां सूं भी खराब है। राजनेता बोट मांगणै आवै जद उणां नै दारू पाय'र आप रो मकसद पूरो कर लेवै। खुद री हीणता रै बोझ तळै दबेड़ा बे कदै ऊपर उठणै री कोसीस भी करै तो दबा दिया जावै। इण नै बे आप री किस्मत समझै। जाहिल, नादान अर सीधा सादा अे आप रै धार्मिक अंध विस्वासां सूं बंधेड़ा आखी उमर खटता रैवै। इण री मेहनत री कमाई बड़ै बड़ै सेठां रै गोदामां अर तिजोरियां में बन्द है। जीवणसर गाँव रा घणकरा लोग इणी तबकै रा है।

5.5.3 देसकाळ अ'र वातावरण

'मेवै रा रूंख?' में आठवैं दसक रो वातावरण चित्रित हुयो है। सन् उगणीसौ बोहतर में देस आजादी री रजत जयन्ती मना चुक्यो हो। दुनियां री नजर में भारत सब सूं बड़ो लोकतंतर है। इण बात नै कैंवता भारतीय नेतावां री छाती भी गरबीजै अर बांछां खिल ज्यावै पण आजादी सूं पैली लोगां जिकै सुराज रा सपना देख्या हा बै अबै तांईं सपना ई है। बे कद पूरण हुवैला या नीं हुवैला इण बाबत कोई कीं कोनी कै सकै। राजनीतिक अर प्रसासनिक भ्रष्टाचार आप री चरम सीमा पर है। देस में 'आपातकाळ' री घोसणा हुई। प्रजातंतर पर सवालिया निसाण लागग्यो। न्यायिक–वैवस्था रो गळो घुटग्यो अर जनता री आवाज नक्कार खानै री तूती बणगी। 'प्रजा तंतर' रो चौथो खंभो (अखबार–मीडिया) सरकारी भोंपू बणग्यौ। अैड़ै काळ खण्ड में लिखिजेड़ो है उपन्यास– 'मेवै रा रूंख?'

'मेवै रा रूंख?' में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक अर आर्थिक वातावरण रा जथारथ चितराम है। लेखक इण सगळां रो वरणाव इण भांत करै जियां घटनावां उण री आँख्यां सामी घटित होवण लाग री है।

राजनैतिक वातावरण :– उगणीस मईनां रै आपातकाळ में जिण भांत तानासाही हुई अर अनुसासण रै नांव पर जिण भांत आम आदमी पिसिज्यो बै आज इतिहास री घटनावां हैं। राजनैतिक जथारथ रो चित्रण करणो लेखक रो उद्देस्य कोनी हुवै पण उण रै माध्यम सूं बे आम मिनख री पीड़, दु:ख नै पळूसै अर संवेदणा नै जगावै। आपातकाळ रै दौरान नसबन्दी रै नांव पर आम मिनख किण भांत दु:खी हो? अेक नमूनो– डोकरो बोल्यो, ''कांई टैम आई है, अर कांई तोफो चाल्यो है, कीं नै ई जीवण देसी का नीं? साळा इसा गूंगा हुयोड़ा है कै कोई आठ रो ठा न कोई साठ रो। रावतियै मेघवाळ नै बाढ़'र बेकार कर दियो, म्हांरै सूं पन्दरै दिन मोटो है। प्रभुआळै पोतै ने, बापड़ौ कुतर री लाद ले'र गयो हो सहर, अेक सिपाईड़ै पोटा'र बढ़ा दिया।''

''बींरी तो सगाई हुई ही लारै सी?'' सुगनै कैयो।

''बेईमानां ब्याव रो फोड़ो ही मेट दियो, डेण हरख कोड सूं ब्याव करतो, कूक'र रैयग्या बापड़ा– हाथी नै हेरावड़ो कुण बतावै रै भाई?''

नसबंदी मुजब ओ आतंक फगत आम मिनख में ई नीं राजनेता भी इण रै खिलाफ बोलणै सूं डरै हा। पदमा चौधरण, सिनाथ अर सूरदास जद जण–जण रो दुखड़ो सुणावण तांई कुसुमा कटारिया कनै गया तो उणां री बात सुण'र बा बोली–

''हाँ हूँ समझगी थारी बात, पण नसबंदी रै ई सवाल नै ले'र तो कठै ई मूंढ़ै री बाफ ई मत काढया। अफसरां नै ही नहीं, अेम.अेल.अे. अर अेम.पी. सगळां नै ही हिदायत है कै जादा सूं जादा ईं अभियान नै चलावो, सूकां सागै बळन नै कोई आलो ही बळ सकै पण बीं रो तो रोळो रप्यो हुणो ही नीं चाइजै, बीं सूं आदमी मरै थोड़ो ही है। इमरजेंसी है अबार, पोलिसी ही इसी है, थोड़ो ही बैम हुग्यो तो तुरता फुरत मांय, जमानत ही नीं हुवै, च्यारूं मेर सी.आई.डी. फिरै, कुरसी सूं ई कंवर सा'ब रो काम करड़ो है। और कोई काम है तो बोलो।''

इण भांत राजनीति में उण बखत जितरो डर अर आतंक हो उण री अेक झळक अठै दीसै। हालांके इण दौरान राजनेतावां में जिकी दरबार लगाणै री प्रवृत्ति, जी हुजूरी री प्रवृत्ति, जनता रा प्रतिनिधि नीं रैय'र हाई कमान री प्रतिनिधि बणणै री होड़ कीं और भी बातां ही बां नै भी अठै चित्रित कर सकै हो पण आप भोजन रै अेक गासियै सूं ई उण रो सुवाद समझ सको।

सामाजिक वातावरण :– आजादी पछै सेहरां रो तो चोखो विकास हुयो पण गाँव अबै ई पिछड़ेड़ा है। आजादी सूं पैली लोगां री सोच ही कै जाति अर वरग बिनां समाज हुवैला। सगळा बरोबर हुवैला पण इण उपन्यास में देख्यां बेरो चालै कै जात–पांत री दूरियां घटणै रै बजाय बढ़ी है। जाट अर राजपूतां नै लोग आपस में लड़वा'र आज भी फायदो करणो चावै। इण उपन्यास में छूआ–छूत तो कोनी दीसै पण पढाई री कमी रै कारण पिछड़ोपण घणौ है। हालांकै गाँव में इस्कूल है पण गरीब मिनख पैली टाबरां रै पेट रो जुगाड़ करै या सिक्षा रो। समाज में अठै अेक–दूजी जात रै प्रति आज भी सद्भावना दीसै पण चालाक लोग रैवण नीं देणी चावै। इण उपन्यास में लेखक काळ पड़तो नीं दिखायो जद कै राजस्थान में काळ पड़णो आम बात है। इण रै पीछै भी कारण है। लेखक ओ बतावणो चावै के सुकाळ रै बावजूद भी लोग क्यूं नीं पनप सकै। उणां रै जिकी भी फसल हुवै उण नै दलाल बिचाळै ई हड़प ज्यावै। रही–सही बां री गळत परिपाटियां। बे अेकर साहूकार रै चंगुल में फस'र फैर उमर भर नीं निकळ सकै। इण उपन्यास में सामाजिक जीवण रा भांत–भांत रा चितराम उभर्‌या है। कठै ई देवी–देवतावां रै प्रति आस्था है तो कठै ई अंध–विस्वासां में कळीजेड़ा दीसै। आजादी पछै सरकार नीचलै वरग नै राहत पुगावणै तांई करज, तकाबी, अनुदान दे–दे इणा लोगां नै पनपाणै री कोसीस करी पण अै बठै रा बठै ई पड्‌या है। क्यूं? इण मनोव्रत्ति रो अर इण रो कितरो सटीक कारण इण संवाद

में है– ''अेक दिन आगै ही मैं ईं नै घाल्यो सेर सवा सेर धान; अेकर–दो दफै जिमायो हो ईं नै, हूँ तनै पूछू हूँ कै बाड़ी आळो सूरदास तो कीं रो ई मांचो– मंचली बण'र रोटी खावै, अर रिपियो–दो रिपिया ओड़ी बेळा खातर बचावै ई है, कीं री मदत ई करै, अर अै हालता–चालता सेर–सेर धान बिगाड़ता, जाग्यां–जाग्यां हीणी भाखता फिरै। नाता करण नै आं नै पईसा जुड़ै, नातै लायोड़ी नै सुणा हां तेल–साबणा चाईजै, बेटो दारू पी'र नाचै। रिपियै–डेढ रिपियै रो लीलो ला'र ई बेचै तो ही दो रोटी आप री खा सकै, रोही बरसै है अबार तो रोटी, माखी ई नीं डडै बीं रो बेलीपो तो भाई माता जी ई नीं करै।'' कितरों जथारथ परक वरणाव है। आगे कै वै, ''कीं पड़तल तो है, अर कीं तैं जिसां कर दियां आंनै। 'हैं सा,' कैयां ही, अगले आप री रोटी रेा जुगाड़ कर लै तो मजूरी करण रो फोड़ो क्यूं देखै– पसीनो आवै नी मेनत में तो। न आं नै उधार रो डर, अर ना मांगता लाज–फीटापण री धरती बतावण नै तमास्त त्यार, फेर आं नै चाइजै ई कांई? गयै दळदर नै घेर'र पाछा लावणियां हैं अै.... ।''

धार्मिक वातावरण :– गाँव में रामदुआरो है। रामदुआरै में महंतजी है। बे साधु रै चोळै में आप रो धंधो चलावै। लोगां नै जिंस अडाणै राख'र ब्याज पर पईसा उधार देवै। 'काम अर दाम रै डोकां सूं कुटीज'र लुटीजेड़ो' है महंत। फैर भी लोग उण पर सरधा राखै। भोला–भाळा लोग उण री बैकुंठी पर चढ़ावो चढ़ावै। धनजी, चाँदा बाई, हजारीमल सिरखा लोग उण रा संरक्षक है फेर भी लोग कोनी समझै, इतरा धर्म भीरू हैं। सिनाथ कैवै, ''भंडारो हुसी भेंटां चढ़सी आयोड़ै मैंतां रै, चादर ओढसी कोई, अण ही ओढ़ी हुसी कदेई, किसी'क फूठरी सांभ'र राखी है? ईं री ही गिद्दी पर बैठ्योड़ो, ईं रो बाप ही नीसरसी कोई– ठाकुर जी ओढ़ा'र भेजी बीं चादर नै धूड़धाणी रख छाणी कर'र छोड़सी। काम अर दाम री मैलवाई सूं सूगली कियोड़ी चादर ले'र बाप कनै जावण जोग ई नीं हुवै, ल्हास पर लट्टू हुयोड़ी दुनियां नै कुण समझावै, लास ढोवण सूं ही राजी है बा।''

गाँव में मेघवाळां में रामदेजी रो मंदिर भी है। बठै भी लोग आवै। धरम रै नांव पर लोगां में धार्मिक अंधविस्वास घणो है। चालाक लोग धरम री ओट में इण लोगां–रो सोसण करै।

5.5.4 संवाद या कथोपकथन

संवाद या कथोपथन उपन्यास रो घणो महताऊ तत्त्व हुवै। लेखक कथानक नै आगै बधावणै तांईं संवादां रो प्रयोग करै। संवादां रै माध्यम सूं लेखक पात्रा रो चरित्र–चित्रण करै आप रै उद्देस्य तक पूगै। मेवै रा रूंख में संवादां रो सफल प्रयोग हुयो है। इण रा संवाद भाव पूर्ण, पात्रां रै मुजब चुस्त अर गठित है। इण री संवाद कला पर नीचै लिखेड़ै बिन्दुआं मुजब विचार कर्‌यो गयो है।

कथानक नै आगै बधावण वाळा संवाद– कथावस्तु में आयेड़ै गतिरोध नै दूर करणै तांईं अर पैली–पछै आळी घटनावां नैं जोड़णे तांईं लेखक संवाद कला रो आयोजन करै। ''मेवै रो रूंख?'' में भी लेखक अैड़ै संवादां रो प्रयोग कर कथानक नै पूर्णता दी है। नमूने रै तौर पर कीं संवाद– कान्है कोटवाळ आप रै छोरै रो नातो कर्‌यो पण बहू खराब आगी। काफी पईसा ई लागग्या अर सुख भी कोनी हुयो। इण री सूचना हेठ लिखेड़ै संवादां सूं मिळै–

''छोरै रै आ रांडड़ती माड़ी आगी, नातो कर'र खराब हुग्यो, पईसै सूं ही खळेट हुग्यो अर मानखै सूं और गयो, म्हारो थाकेलो ओ ही है।''

''थांरी पार नहीं पड़ै तो, दो रोटड़ी आपणै अठै सूं ले जाया कर।''

'' बात रोटी री नीं है जजमान, बात है, लुगावड़ी है परलै पार। बीं नै साबण अंतर फुलेल चाईजै। आतो कोई सेठाणी है, सेठ कीं नै ही हाथ रो मैल ही नीं दै, इनै तो घणो ई टूठै। कान

पापी है जजमान, सुणूं जद घणी ही सीजै, पण जगतरी जीभ थोड़ी ही पकड़ीजै। छोरो पांच–पांच, सात–सात दिन रुळन नै जावै परो। छोरो अर छोरी अगली रा, बे मनै सेकै, टुकड़ो तो मांगै का नहीं, हूँ तो लाठी भींत बिचाळै आयोड़ो हूँ– कीनै जाऊँ बतावो?

'लुगावड़ी हाथ तो हिलावंती है ली कीं?''

''सेठां रै पोठा थाप दै, बाखल बार दै, अर बठै ई पेट भराई कर लै, मोड़ी–बैगी मन में आवै जद आवै। गोलां रा टींगर केई, ईंनै–बींनै धर कानी झाका घालै, लोह ही खोटो हुवै तो कैवूं ही कींनै, आप री साथळ उघाड्या आप ही लाज मरूं, घणी ही अेक चढ़ै अर अेक उतरै, पण, बळ बिना बुद्धि बापड़ी है।''

कितरां रोचक है अै संवाद। कान्है कोटवाल रै बेटै री गिरस्ती रो भूत अर भविस अेकै साथै सामी उतरियावै। आम बोल चाल री भासा में अै संवाद कितरा महताऊ है। आम बोल चाल री भासा साथै मुहावरां रो प्रयोग मणि–कांचन संजोग है। मुहावरा तो इण भांत जड्या है जियां नगीना जड़ दिया हुवै। इणी भांत और भी संवाद है जैड़ां रै माध्यम सूं आगै पीछै री घटनावां रो बेरो चालै अर कथानक आगै बधै।

भावपूरण संवाद :– उपन्यास गद्यात्मक महाकाव्य हुवै। उण में लेखक भावपूरण संवादां री रचना कर पाठकां नै भावुक बणावै। इण उपन्यास में भी जग्यां–जग्यां अैड़ा संवाद है– ईसर ईं नै भांपग्यो तो ही बो बोल्यो, ''गुरुजी, बर्गा–बैर में सिंघ अर हिरण, कुत्तो अर बिल्ली जिस्या जिनावर तो थे गिणा सको हो पण आदम्यां पर ओ नैम लागू नीं हुवै। ईसर अर सिनाथ रै, ई अर स में मनै न तो कोई विरोध लाग्यो अर न बां में कोई जाडो–पतळो ई। अेक स्वर है अर दूसरो व्यंजन, सबद अर अरथ–सा अेक जीव है दोनूं ही, बीं रै मेळ बिना तो बोल ई नहीं फूटै आदमी रो। गुरुजी, न नांवां में विरोध है अर ना जातां में।''

''पण मनै लागै, थारी चेतना में रामधन अबार मरग्यो। डील रामधन रो जरूर है, पण बोलै बीं में सेठ धनजी है। हूँ बामण रै हाड–मांस रो पुजारी नीं, बीं री ऊंची अर ऊजळी चेतना रो हूँ, बा थां में कठै? थे तो म्हां काकै भतीजै में राड़ घलवाण आया हो....''

''कुठाकरी ठीक ही है, इसा कांई ये सींव माथै लड़ाई फतै कर'र घायल हुआ हो का गाँव री रिछपाल करतां चोट–फेट खाई है, डफोळपण में अेक–दूजै रै टांचा दे नाख्याा, बीं खातर पग रख्यां फाड़नी, मनै नीं पोसावै। इयां तो घणां ही ढांढ़ा लड़ै गाँव में रोज, हूं कीं–कीं कनै फिरती फिरस्यूं।''

इण भांत ''मेवै रा रूंख?'' में अनेक अैड़ा संवाद है जिका मिनख नै भावुक कर उण री चेतना नै झिंझोड़ै।

चरित्र–चित्रण में सहायक संवाद :– उपन्यास में बै संवाद घणा महताऊ हुवै जिणां रै माध्यम सूं चरित्र–चित्रण हुवै। नीचै लिखेड़ा संवाद इण बात री साखी भरै–

बोल्यो, ''भगतां चादर रा असली अधिकारी मांय बैठा बे संत है। हूँ तो साथै आयो हूँ, आ रांड है ठगौरी, पैलां ई अठै सूं कदेई दो–चार हजार रो डेरो ले'र लम्बी हुई, जिकै री आज पाछी पधारी है, इयां कर–करा'र आ भळै कीं झाड़ों देउ है। आज तांई घणखरी धार अण रामदासजी जिस्यै काछ रै रोग्यां नै ही दी है।''

इण संवाद सूं महंतजी, पेमा नायण अर कैवण वाळै, तीनूंवां रै ही चरित्र रो पतो चाल ज्यावै।

अेक उदाहरण और–

अबै सिनाथ सूं नीं रहीज्यो, निकळगी बीं रै मूढ़ै सूं, ''हूं तो च्यार महीनां पछै हाथ जोड़'र सैं ब्याज देवण री कैऊं, अगलां रा दिया मैं लिया, चोरी नीं करी कीं री ही, जिकै में ही इन्याव है म्हारो, निंदा न्यारी ही हुसी म्हारी, अर थे बाप बेटी सारी रात ढोवै हा पेटी अर गांठड्यां, बांरी बड़ी सोभा हुसी– देख्या थां नै धरम रै पूंछड़ा नै।'' इण अेक संवाद मात्र सूं धनजी अर सिनाथ दोनुवां रै चरित्र री कई बातां समझ में आ ज्यावै। इणीज भांत और भी संवाद है जद पात्र आपस में अेक दूजै सूं बात करै तो दूजै पात्रां रै चरित्र री लकीरां आपै–आप उकेरी ज्यावै।

उद्देस्य परक संवाद– लेखक आप री रचना रो जिको उद्देस्य राखै उण रो वरणाव भी कठी नै कठी संवादां में भी करै। इण उपन्यास में भी लेखक पात्रां रै मूंढ़ै सूं आप री बात कैयी है। अैड़ा संवाद उद्देस्य परक संवाद कैया जा सकै।

नेतावां पर कटाक्ष :– आम लोग जिण नेतावां नै मेवै रा रूंख मानै बिणां री असलियत उजागर कर पोल खोलणो भी रचना रो उद्देस्य है ताकि बै अैड़ै नेतावां सूं सावचेत रैवै–

''अरे बेटा, चोर–चोर मौसियाई भाई, राज है कठै, सगळा मळीदां माथै उतर्योड़ा है, बोट द्यो थारी' सेवा करस्यां, अरे सेवा थे थारी अर थारै लुगाई टाबरां री करता म्हारी कियां करस्यो, सेवा करण आळी रात ही थारी मावां थां नै जणती तो घाटो ही क्यां रो, आज तांई अकास रै पागोथिया नीं लगाय देंवता थे? जामसी कोई भागण बापड़ी ईं धरती रो उदो आसी बीं दिन। सेवा नै जावण दो, मिणियों मोस'र मारो नीं तो ही चोखो, थारा गुण मानां, टुकड़ो कमा'र तो खावण दो।''

आपातकाल री ज्यादतियां रो वरणाव :– इण उपन्यास रै माध्यम सूं लेखक आपातकाल में हुयोड़ी ज्यादतियां नै भी जनता रै सामी लाणो चावै। अैड़ा संवाद भी है, ''मनै कह राख्यो है अफसरां, म्हानै ठा नीं किया करो, थारै हलकै सूं डोढ़ सै केस तो हर हालत में हुणा ही चाईजै, नीं हुया तो ना–काबिलियत तो है ही, नौकरी पर ई रो कांई असर पड़ै कोई कीं नी कह सकै..... ''

वैवस्था रै विरोध में संवाद :– वैवस्था जद कीं गळत काम करै तो लेखक उण रै खिलाफ खड़ौ होय'र आप रो विरोध दरज करवावै। मिनख नै जीभ सिर्फ खाणै–पीणै खातर कोनी मिळी। मिनख रो फरज है के बो कीं गळत देखै तो उण रो विरोध करै। पदमा चौधरण जवानां नै ललकार'र कैवै, ''जीभ तो थारै सही बळै है का नी, बा तनै कांई कींरा ही तळवा चाटण नै मिल्योड़ी है, डेडरियो सो टर–टर करतो ही रैवै आखो दिन।'' अेक भांत सूं पदमा चौधरण रै रूप में अठै लेखक री चेतणा सगळै बुद्धिजीवियां नै ललकारै जिका आपातकाळ में मूढो सीम'र बैठ्या हा।

छोटा, सारगर्भित अर जिज्ञासा परक संवाद :– संवाद रचना करती बगत लेखक रो ध्यान बराबर रैयो है कै संवाद भासण नीं बण ज्यावै। ''मेवै रा रूंख?'' संवाद छोटा अर सार गर्भित है। लेखक छोटै–छोटे संवादां री रचणा करी है, उणां में अरथ गांभीर है। भासा री लक्षणा अर व्यंजना सगती अठै काम करै। मुहावरा, लोक कहावतां अर व्यंग्य रै माध्यम सूं संवाद बड़ा सांवठा बण पड्या है। अेक छोटो सो संवाद कितरो व्यंजनात्मक है, पेस है–

गरीब उरणियै नै च्यारां कानी मार ही है रे, उडीक लगाए ही राखै छुरी कतरणीआळा।''

5.5.5 भासा सैली

भासा अर सैली री दीठ सूं 'मेवै रा रूंख?' अनूठो उपन्यास है। इण री भासा सैली इण रै कथ्य रै अनुरूप है। इण रो विवेचन इण भांत है–

भासा :– ''मेवै रा रूंख?'' री भासा आम बोलचाल री भासा है। आम आदमी जिण भांत बोलतां थकां आप री भासा में कैवत, मुहावरा, बोल'र उण नै असरदार बणावै बियां ई इण उपन्यास री भासा भी है। भासा अठै भावां रै साथै चालै। इण भासा में अेक रवानगी अर लय है। लेखक आम बोल चाल रै अरबी फारसी अर अंग्रेजी रै सबदां रा भरपूर प्रयोग कर्‌या है। अै सबद आज राजस्थानी भासा में अर जन–जीवन में दीखै।

अरबी फारसी सबद :– तोफो, फायदो, दरद, मुलायजो, हर्ज, तरकीब, जिंस , मालक, बगसीस, नाजम, फैसलो, पेसकार, कचेड़ी, जबरदस्ती, हवालात, मदत, कोसीस, आसामी, हिदायत, दफा, अरज, फरज, मेहर, साहूकार, जिंदाबाद, फतह, बरखास्त, दसखत अैड़ा अनेक सबद जिक आज राजस्थानी भासा में रळमिलग्या, लेखक उणां रो सारथक प्रयोग कर्‌यो है।

अंग्रेजी सबद :– आज अंग्रेजी भासा रा अनेक सबद लोग राजस्थानी भासा में प्रयोग करै। अै सबद राजस्थानी में ढळ'र भासा रा अंग बणेड़ा सा लागै। इण में घणकरा'क सबद तत्सम नीं होय'र राजस्थानी में तद्‌भव रूप में प्रयोग हुवै। 'मेवै रा रूंख?' में कीं अंग्रेजी सबद इण भांत आया है– फीस, पेटेंट, किलेंडर, साईड बिजनेस, रोल्ड गोल्ड, मिंट मजिस्ट्रेट, पोस्ट, चांस, हैडमास्टर, रिटायर, टेम, कंपलसरी, सस्पेंड, कैंप, लाइसेंस, केस कोटो, गोरमिंट, मास्टर, टैक्स, ब्लड प्रैसर, एमरजैंसी, चिक, स्टूल, पालिसी, सीआईडी, मिनिस्टर, फ्री, होर्न, लोरी, टेलीफोन, पाउडर, पालस, लिपस्टिक, लोन, सेर (शेयर), डेरी फार्म, डायरेक्टर, स्टॉक, इण्टरव्यू, प्लान, फार्म, बैड, कम्पोडर, सरजन, लैट्रीन, स्टांप, ग्रुप, रपोट, क्वाटर, चीफ मिनिस्टर, पारटी, आप्रेसन, फस्ट क्लास, थर्ड क्लास आद अैड़ा सबद है जिका कठैई तत्सम अर कठैई तद्‌भव रूप में प्रयोग हुया है। सबद चाये किणी भासा रो हुवै पण अगर बो संप्रेसण में सक्षम है तो बिण रै प्रयोग में कोई गुरेज नहीं करणो चायजै। अंग्रेजी रै आं सबदां रै प्रयोग सूं भासा री अभिव्यक्ति खिमता बधी है।

मुहावरा अर कहावतां :– ''मेवै रा रूंख?'' रै लेखक लोक कहावतां अर मुहावरां रो खुल'र प्रयोग कर्‌यो। कठै–कठै तो अेक अेक वाक्य में दो–दो तीन–तीन कहावतां अर मुहावरां रो अैड़ो सटीक प्रयोग कर्‌यो है कै भणण वाळो उणं रै भासा ज्ञान पर दंग रैय जावै। इण उपन्यास में जैड़ा मुहावरा अर कहावतां प्रयोग हुई है बे इण भांत है–

चिलम अर चुगली सूं लागी माड़ी, चोर–चोर मौसियाया भाई, हाथी नै हिरावड़ो कुण बतावै, लाठी–भींत बिचाळै आणौ, कीं लौह खोटो कीं लुहार, आप री जांघ उघाड्यां आप नै लाज आवै, बळ बिना बुद्धि बापड़ी, सूई रो मूसळ करणो, सागै बैठ'र कोवा गिणणा, काळी भली न कोडाळी, कोढियैरो दाणो ठाकुर दुआरै कोनी चढ़ै, पगां लागेड़ी कोनी देखै डूंगर बळती देखै, अेक चढ़णो अर अेक उतरणो, कादै रा कीड़ा, कान खुस'र हाथां में आणा, नास्यां सूं कढ़वाणो, कीं री मां सूंठ खाई है?, खाटो रेत में रळणो, आंधै रो तंदूरो रामदेजी बजावै, दाळ में काळो, भावोभाव बेचणो, पाणी में पग (खोज) परखणा, मजूरी अर मुलायजो, अकल बिना ऊँट उबाणा फिरै, तुरकणी रै कात्योड़ै में फिदड़को कोनी निकळै, घोड़ो चायजै बनोरैनै, घिरतो ले जाए, आंधो अर अणजाण बरोबर हुवै, रूपली पल्लै तो रोही में ही चल्लै, सागर में रैय'र मगर सूं बैर, मरणो कीं रो ही अर लेखो कीं नै ही, सरायोड़ी खीचड़ी दांता चढ़ै, अणहूंत भाटे सूं काठी, होम करतां हाथ बळणां, तातै घाव, मुरदै सागै कांधिया कोनी बळै, मूततै नै माधोसाई, लोंकी रा लख मारग, रड़क काढणी, मेह अर मौत रो कांई भरोसो, सोळवों सोनो, भाखर सूं भागीरथी उतारणी, केस खोस्यां मुरदा हळका नीं हुवै, घी अंधेरै में ई छानो नीं रैवै, कितीक रात कितोक झांझरको, हाड सूं मांस न्यारो कोनी हुवै, चोरां में करै बा करणी, पाणी पी'र जात पूछणो, छठ नै चवदस करणो, लातां

री लापसी अर घुतां रो घी, रांड सूं बेसी गाळ कोनी हुवै, माता जी मंड में बैठी मटका करै, मिनकी रै गळे में घंटी, टकै री हांडी फूटी, कुत्तै री जात पिछाणी, बातां रा बघार लगाणा, मौत रै मगरां में आंगळी करणो, हींग लागै नीं फिटकड़ी रंग ओपै, बाणियो खावै सैंधै नै अर कुत्तो खावै अण सैंधै नै, आदमी सूं आदमी मिलज्यै, कूवै सूं कूवो कोनी मिळै, डाकणां रै ब्याव में न्यौंतारा रा काळजा, पूंछ हलाणो, न गुरु रो ना पीर रो, डरतो डूम करै सुभराज, गोगो बड़ौ'क गुसांई?, परड़ां सूं बैर कुण बांधै, गांठड़ी तो पाड़सी कुत्ता नहीं तो कुमाण सही, मोरियो नाचै पण पग देख'र रोवै, कीड़ी में मूत रो रेळो ई भारी, पेट री उधार कर लेणी हाट री नहीं, मूंछ आळो चावळ, सोवड़ सारु पग पसारणा, कीं री घोड़ी कुण घास नीरै, माल–मलीदा खाण नै माधिया कूटीजण नै गोपालो, बैठी सूती डूमणी घर में घालै घोड़ो, भैंस भैंस री सग्गी, ठावा–ठावा टोपला बाकी रा लंगोट, खायो सो ही उबर्‌यो दियो सो ही साथ, मन में मोरचो मांड्यां लड़ाई फतै कोनी हुवै, देख बन्दै री फेरी, अम्मा तेरी'क मेरी, औसर चूकी डूमणी गावै ताळ बेताळ, केस खांडो होणो, बांड़ै कुत्तै रो लाय में कांई बळै?, घर में घाणी अर तेली लुखो, कूकड़ो बोलै जद ई झांझर को, कित्ती'क रात कित्तोक झांझरको, गाजर री पूंगी बाजै इत्तै बजाओ, गुड़ बिना चौथ कोनी पूजी जावै, रोटी अर दांतां रो बैर, पराई थाळी पुरस्यो ज्यादा दीसै, डोकरी रै कैयां कुण खीर रांधै?, रातो ओढ़्यो न तातो खायो, बटाऊ रो माल, राज बीं रो आज, घर हाण लोक हांसी, जूत पड़ै अर पूछै कोतवाळी कठै?, राबड़ी कैवै मनै दांतां सूं खावो, गिंडक नारेळ रो कांई करै?, हाडो ले बैठ्यो गणगौर नै।

लेखक नै लोक रो गैरो ज्ञान अर मिनख रै सुभाव री गैरी जाणकारी है। बो पात्रां रो चित्रण मनोवैज्ञानिक तरीकै सूं करै इण कारण उण रा पात्र सहज अर सुभाविक लागै। इणां ई सुभाविक लागणै में इणां री भासा रो घणो जोगदान है जिकी बणावटी कोनी। लेखक री मुहावरेदार भासा बड़ी रोचक है जिणमें कठै ई ठहराव, दुहराव री दुरुहता कोनी।

सैली :– सैली लेखक री पिछाण हुवै। लेखक कथानक रै मुजब आप री सैली रो प्रयोग करै। 'मेवै रा रूंख?' अेक जथारथवादी उपन्यास है इण में स्वातंत्र्योत्तर भारत रै ग्रामीण अंचळ रो कच्चो चिट्ठो है। लेखक इण उपन्यास में दो तरां री सैली रो प्रयोग कर्‌यो है– 1. संवाद सैली 2. वरणाव सैली।

संवाद सैली :– कथानक नै आगै बधावणै अर रोचकता ल्यावण तांई लेखक संवाद सैली रो प्रयोग करै। इण उपन्यास रा संवाद छोटा, सारगर्भित अर पात्रां रै अनुरूप है। मुहावरेदार भासा में जद कोई पात्र आपस में बात करै तो बानगी देखतां ई बणै–

'तो टीकू इं रो मुतलब है, ओ खाटो रेत में रळसी दीखै।''

'सगळो नहीं तो, लक्खण देखतां, नारळी, दो नारळी तो जरूर ही।''

'इयां कांई बात करो सिनाथराम, सरायोड़ी खीचड़ी दांतां चढ़ै, रुळावो होनी, हूँ तो बोवणी ई थां सूं करी चाऊं। आ तो नई हूणी चाइजै, समझो, स्यामी, मोडां रा पइसा है, आस–औलाद आळा हां आपां, आपणै कांई काम रा, टैम पर लागग्या, अर थे निरवाळा, कर्जो अर रस्तो तो काट्या ही आछा, क्यों कमजोर करो मन नै?''

''हुंतां थकां देवण नै कुण नारज, पण अणहूंत थे समझो हो भाठै सूं काठी हुवै, थे थां रै कनै सूं भेळदो अेकर, आपनै हूँ च्यारा महीनां छेड़ै ढूकता कर देस्यूं।''

वरणाव–सैली :– वरणाव सैली में लेखक माहिर है। बो जद भी कोई वरणाव करै इतरो सूक्ष्म करै कैं कीं कोनी छोडै। सामणै चितराम सो उतारदैवै। बानगी पेस है। गाँव री सांझ रो अेक

चितराम–

''दिन भर रो थक्योड़ो अर गूंगी दुनियां रै दादखै सूं नाराज हुयोड़ो सूरज, होळै–होळै बादळां रै बिछावण में बड़'र दीखणो बन्द होग्यो, जांवतो जांवतो आपरी नाराजगी जाणूं आथूणै आभै पर छोडग्यो हुवै, ईं खातर ई बो (आभो) अबार अेक लाल झील में डुब्योड़ो सो लागै हो। हवा बन्द ही अर उमस जादा। गाँव री रोही में दूर–दूर तांईं उमा राखेत बिरखा री उडीक में मौन अर उदास हा। आखी रोही पर उतर तो अंधेरी फुरती पर हो। आपरै आळां कोनी उडती चिड़कल्यां री उतावळ भारी चींचाट अर कागलां री कांव–कांव सागै रळ'र ही, गुण–धरम सूं न्यारा–न्यारा ही हा।''

लेखक वरणात्मक सैली में जैड़ी चित्रात्मक भासा रो प्रयोग करै बा कविता सिरखी लागै। तोळू री मां तोळू री सगाई कर दी। अब ब्याव करणो हो पण उण री जबरन नसबंदी कर दी। तोळूरी मां री अेक दुनिया उजड़गी लेखक लिखै, ''देखतां ही डोकरी उठ'र चाली पण तिरवाळो आ'र पड़गी। बीं री पायल रो संसार आभै रो फूल बण'र सपनलोक में रमग्यो।''

दिनूगै गाँव री हलचल रो ओ चितराम भी सरावण जोग है–

''दिनूगै आठ, पूणी आठ हुई हुसी। पून धीमी अर बेळा सुवावणी। लुगायां भाता ले ले नै, खेतां कानी जावै ही। कैयां कैयां रै खारियां में भातां सागै नान्हा टाबर और हा, पण पगां में खथावळ अर मनां उतावळ सगळां रै अेक सी ही। धन नै छींकी घाल्या छोरा.....

जाणै लेखक अेक ऊँचे मंच पर बैठ्यो सगळो हाल देखै अर 'रनिंग कमैंट्री' दियां जावै। इण भांत भासा सैली री दीठ सूं 'मेवै रा रूंख' अेक सफल उपन्यास है।

3.5.6 उद्देस्य

'मेवै रा रूंख' मोकळा उद्देस्यां वाळी रचणा है। इण रो रचना काळ आठवों दसक है जद देस में उगणीस मईनं रो 'आपात काळ' घोसित हुयो। देस री आजादी रै तीस बरसां पछै देस री आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक हालतां अबै भी चिन्ताजनक है। सुराज रो सपनो भंग हो चुक्यो हो। कठै तो लोग सोचै हा देस में समाजवाद आवैगो अर कठै तर–तर पूंजीवाद आप री जड़ां और गैरी जमा ली है। देस री जथारथ परक हालत पर इण उपन्यास नै सटीक टिप्पणी कै सकां। उपन्यासकार रा अळगा–अळगा उद्देस्य नीचै लिखैड़ै बिन्दुआं सूं प्रकट हुवै–

देस री चिन्ताजनक आर्थिक हालातः– भारत में चार बीसी लोग गाँवां में रैवै। वां रो काम खेतीबाड़ी हैं। इण देस रो करसो आज खुसहाल कोनी। बो दाणै–दाणै नै तरसै। करज सूं दबेड़ो है। बिचौळियां उण नै ऊपर उठण ई कोनी देवै। गाँवां में रैवणियां जादातर लोग भूखमरी अर तंगदस्ती रा सिकार है। बे महाजनां रै चंगुल में अैड़ा फसेड़ा है कै छूट कोनी सकै। खेती प्रधान देस रै करसै री जद आ हालात है तो खेती रै करम सूं जुड़ेड़ा बाकी लोगां री कैड़ी हुवैली, सोचणै री बात है।

उद्देस्यहीण राजनीति :– आज राजनीतिक रो उद्देस्य 'येन केन प्रकारेण' खुद तांईं अेक कुर्सी रो जुगाड़ करणो रैग्यो है। राजनीति रो मतळब जन सेवा कोनी रैयो। उपन्यास रै माध्यम सूं लेखक बताणो चावै कै आज चोर, उचक्का, तिकड़मबाज लोग देस सेवा रो ढोंग करै। बे देस सेवा री ओट में आप–आप रा स्वार्थ पूरा करै। 'जथा राजा तथा प्रजा', अैड़ै लोगां नै देख–देख आम मिनख रो चरित्र भी पतन कानी लुळतो जावैं देस री आजरी हालात नै देखतां धीरजी कैवै, ''आछा संस्कार तो आछी सरकार ई दे सकै अर बा आप ही नागी हुई बैठी है। चोटी री ऊँचाई सूं निकळी गंगा ही धरती री तिस्सी चेतना नै धपा सकै, रोळ–खोळ, चोर अर गुंडा जद कुरसी

पर कबजो करलै तो नीचलो वरग आप री निजर गमा'र तिस्सा अर लाचार हुयोड़ा, चोरां कानी ही देखै–मतलब, बांरी दया पर जिवै, अर ठोस ईमानदार वरग उदास हुयोड़ो अमूजै, जे बो साच री सड़क सूं आंगळ ही आंघो–खांघो नीं हुवै तो ईमानदारी रो इनाम जेळ जावतो भोगै।''

आपातकाळ री ज्यादतियां री अभिव्यक्ति :– विदेसियां सूं अेक लम्बी लड़ाई लड़'र देस आजाद हुयो। दुनियां रो सबसूं बड़ो जनतंत्र 'आपात काळ' रै कारण गूंगो होय'र रैग्यो। कोई बुद्धि जीवी कोनी बोल्यो। दो–च्यार बोल्या बां नै भीतर कर दिया। लेखक सोचै इण भांत तो जनतंत्र कदै भी लुटीज सकै। साहित्य समाज रो दर्पण हुवै। उण रो असर भी जनमानस पर देर तक रैवै इणीज कारण उण 'मेवै रा रूंख' री रचणा करी। पदमा चौधरण रै मूंडै सूं बोलतो लेखक बुद्धिजीवियां नै ललकारै, ''अर हूँ पूछूं कै थे सगळा कांई करो, मींगण? पागड़ बांध राख्या है, अर मूंछां रै बट दे दिया, लारै कीं रैयोनी, गाघरिया पै'र–पै'र घरां में टुकड़ा सेकता तो ही जाणां कीं स्सारो तो है।''

नाजोगै पण पर चोट :– आजादी पछै जात विसेस रै लोगां नै अनुदान, तकाबी अर करजो दे दे'र सरकार उणां नै निकम्मा कर दिया। इण सूं तो वां नै काम देणो ठीक हो। बे कमा'र तो खांवता। परजीवी नीं बणता। सिनाथ अेक जग्यां आप रा विच्चार प्रकट करै, ''आपां इसां में पड़तळ सभाव री सिस्टी करण में मदत करां, अे फेर आप री बीं आदत नै जींवती राखण खेत, खळा, घर अर टूम–छल्ला अडाणै राख दै, कमती–बेसी फेर चूसीजतां ही लेखो, आं नै तो काम मिलणो चाइजै, पांगळा थोड़ा ही है अै।'' देस में अैड़े पड़तळ लोगां री लाम्बी–चवड़ी जमात है बै सरकार रो मूंडो जोवंता रैवै कै कद मदद मिलै। कमा'र बै कोनी खाणो चावैं अैड़ी मनोव्रत्ति पर चोट करणो भी लेखक रो उद्देस्य है।

धार्मिक पाखंड पर चोट :– आजादी पछै देस में धार्मिक पाखण्ड री जड़ां गैरी हुई है। धरम रै नांव पर चालाक लोग भोळैभाळै लोगां नै लूटै। महंत सिरखै चाम अर दाम रा पुजारी धरम रा ठेकेदार बणया बैठ्या है। धनजी, सेठ हजारीमल, चांद बाई, पेमा नायण सिरखा उणां रा 'एजेंट' है। लोगां नै मूंगै ब्याज पर रिपियो देणो अर गरीबां रो सोसण करणो जिकै रो धंधो हो उण रै मर्यां पछै बां री बैकुंठी काढणै में अै ही लोग आगै हा। इण लोगां री आ कोसीस बराबर रैवै कै अै गरीब लोग धरम रो पल्लो नीं छोड़द्यै। बै इणां नै धरम भीरू बणयां राखै। इणी में आं लोगां रो फायदो है। लेखक अैड़ै धार्मिक पाखण्डवाद पर चोट करै। साधु महंत जी सिरखा होणा चायजै या सूरदास सिरखा– लोग खुद सोचै।

जन जागरण करणो :– रचणा रै माध्यम सूं जन जागरण करणो भी लेखक रो उद्देस्य है। बो कैवणो चावै कै अगर लोग इण जलालत भरेड़ी जिनगाणी सूं उबरणा चावै तो उणां नै खुद जतन करणा पड़सी। कोई दूजो बां खातर कोनी आवै। सूरदास रै मिस बो जणै–जणै नै समझावै– ''तो था रो हक राखण, धन्नै अर हजारीमल नै मना करण, रामदेजी बां सागै कुस्ती मांडै? भोळी बैनां! रामदेजी कीं–कीं रा तो हाथ पकड़सी, अर कीं–कीं सागै थारै बदळै मुकदमा लड़सी, था री माख्यां था नै ही उडाणी पड़सी, जीमो थे अर कोवा रामदेजी दे सी, थे तो इसा सीधा अर बै इसा भोळा, आ ही कदेई हुवै?''

इण भांत 'मेवै रा रूंख' उपन्यास आप रै उद्देस्य में सफल है।

5.5.7 सिरै नांव

किणी भी रचना रो सिरै नांव उण रो प्रवेसद्वार हुवै। सिरै नांव रै माध्यम सूं भी रचना रै तेवर रो बेरो चाल जावै। रचना रै सिरै नांव री समीक्षा नीचै लिखेड़ै बिन्दुआं रै आधार पर करी जा सकै–

छोटी अर सारगर्भित :– सिरै नांव री आ पैली सरत हुवै कै बो छोटो हुवणौ चायजै। छोटो सिरै नांव याद राखणै में आसान हुवै। 'मेवै रा रूंख?' सिरै नांव में दो सबद है जिका सम्बन्ध कारक री विभक्ति 'रा' सूं जुड़ेड़ा है अर सिरै नांव रै आगै है प्रस्न वाचक निसाण। ''मेवै रा रूंख'' सबद भण'र पाठक सवालिया निसाण नै देखै तो बो सोचणै पर मजबूर हुवै कै लेखक अठै ओ निसाण क्यूं लगायो है? जिण नै लेखक मेवै रा रूंख कैवै बठै सवालिया निसाण एक व्यंग्य री सिस्टी करै। कैड़ा मेवै रा रूंख? है या कोनी? है तो किण भांत? कोनी तो किण भांत? आद अलेखूं सवाल मन में उठै। इतरां सवाल जद अेकलो सिरै नांव ही मन में उठा देवै तो उण नै सफल सिरै नांव कैयो जा सकै।

कथानक रो केन्द्र बिन्दु :– 'मेवै का रूंख?'' सिरै नांव कथानक रो केन्द्र बिन्दु है। सारी कथा इण सिरै नांव रै च्यारूं मेर चक्कर काटै। सेठ हजारी मल, धनजी, महंतजी, कुसुमा कटारिया अेम.अेल.अे. वास्तव में तो अै सोसक है पण भोळा मिनख सोचै आं लोगां उणां री जरूरतां पूरी करी है अर आगै भी करैगा। जिण भांत जिण रूंखां रै मेवा लागै उणां नै काट्या कोनी जावै, बां री सार–संभाल चोखी करीजै। इणीज भांत अे तथाकथित 'मेवै रा रूंख' इण गरीब लोगां री आस रा केन्द्र है। सगळो क्रिया–कलाप इणां रै च्यारूं मेर चक्कर काटै। अै लोग धुरी में है तो बाकी पात्र इण री क्रिया पछै ही कोई सहक्रिया या प्रतिक्रिया करै। जे अठै सिनाथ, सूरदाास, धीरजी या पदमा चौधरण नै ''मेवै रा रूंख'' मानां तो अै भी कथानक रा केन्द्र बिन्दु है क्यूं कै इणां रै बतायेड़ै मार्ग पर चाल्यां वास्तव में समाज नै अेक दीठ मिळ सकै।

प्रतीकात्मक अर आकर्षक :– 'मेवै रा रूंख?' प्रतीकात्मक अर आकर्षक सिरै नांव है। लेखक इण रै आगै सवालिया निसाण लगाय'र ओ इसारौ देणो चावै कै अठै मेवै रा रूंख कुण है? ओ पाठकां रै विवेक पर निर्भर है। जिणां नै तथाकथित निम्न समाज रा लोग मेवै रा रूंख बतावै, कांई बे जथारथ में है? सवालिया निसांण व्यंग्य पैदा करै। रूंख सदीव फळ देवै। पाथर खाय–र भी देवै। फळ लाग्यां बे और जमीन कानी झुक ज्यावै, पण अै? आ सोचणै री बात है। लोग आप री परंपरावां, कुरीतियां, अंधविस्वासां अर अकर्मण्यता सूं बंधेड़ा इणा लोगां सूं अेक झूठी आस मन में संजोयां राखै। सोचै–औड़ी बेळा में अे उणां रै काम आवैगा पण....? इण भांत 'मेवै रा रूंख?' प्रतीकात्मक अर आकर्षक सिरै नांव है।

जिज्ञासा पूरण :– सिरै नांव जद जिज्ञासा पूरण हुवैलो तो बो पाठक नै आकर्षित करैलो। 'मेवै रा रूंख?' भणतां ई पाठक सोचै– कठै? कुण? सोचणै री प्रक्रिया जद सिरै नांव भणतां साथै सरू हुज्यावै तो उण सिरै नांव नै सफळ कैयो जा सकै। 'मेवै रा रूंख?' सबद में व्यंजन है जिकी पाठक नै न्यारी–न्यारी दिसां में सोचणै तांईं मजबूर करै। आई'ज सिरै नांव री खासियत हुवै।

उद्देस्य परक सिरै नांव :– सिरै नांव रचना रै उद्देस्य तक पुगावण वाळो हुवै जद ई सफळ कैयो जा सकै। 'मेवै रा रूंख?' में आजादी पछै पनपी भाई–भतीजा वाद री राजनीति, अगोलग बधतो भ्रस्टाचार, अमीर रो अमीर अर गरीब रो और गरीब होंवतो जाणो आद बाातां है जिणां रो जथारथ चित्रण हुयो है। सोसण करण तांईं तो इण देस में अंग्रेज ई घणा ई हा। आजादी पछै पणपेड़ा अै मेवै रा रूंख लोगां नै कांई देवै। खुद रा मेवा खुद ई जीमै कै किणी रो भलो ई करै। अै अैड़ा रूंख है जिण रै हेठां कोई दूजो रूंख या बूंटो पनपई कोनी सकै। जिण भांत मिरग तिसनां में तिस्यो मिरगलो भाजतो–भाजतो मर ज्यावै पण पाणी कोनी मिळै। इणी ई भांत अै मेवै रा रूंख है। ओ सिरै नांव रचणा रै उद्देस्य तक पूगणै में पढ़णवाळा री मदद करै।

5.6 सार

मेवै रा रूंख? अन्नाराम सुदामा रो जथारथ परक उपन्यास है जिणमें आठवैं दसक रो काळखण्ड चित्रित

हुयो है। इण काळखण्ड में देस में 'आपात काळ' री घोसणा भी हुई जिण रै कारण सगळा नागरिक अधिकार खतम हुयग्या अर हरेक मिनख खुद नै गुलाम मैसूस करण लागग्यो। बोलणै रो इधकार विचार अर प्रकट करणै रो इधकार कोनी रैयो। अखबारां पर 'सैंसरशिप' लागू होगी जिण सूं सत्ता मनमानी करण लागगी। चापलूस अर पूंजीपति लोग सत्ता साथै मिळग्या। अफसरां मन मान्यो कानून लागू कर लोगां नै सताया जिणसूं आम जनता पिसती रयी। जन–प्रतिनिधि इण बखत हाई कमान री हाँ में हाँ मिला'र उणां री गळत नीतियां नै हवा देंवता रैया। नसबन्दी कानून करड़ाई सूं लागू करणै रै कारण घणकरा'क मासूम लोगां साथै अन्याव भी हुयो। गाँवा में रैवण वाळा सेठ–साहूकार, धरम रा ठेकेदार सत्ता साथै मिळ'र इण अन्याव री आग में घी होमता रैया। इण उपन्यास रो कथानक रो तत्त्वां रै आधार पर विवेचन कर्‌या ओ आप रै समय रो अेक सांचौ दस्तावेज बण'र उभरै। इण उपन्यास रो उद्देस्य जनतंत्र में मानव मूल्यां री रुखाळी करणो तो है ई साथै ई जन तंत्र पर किण भांत खतरो आ सकै ओ दिखावणै री कोसीस भी है। अठै रा लोग चाये अणपढ़ अर गरीब है पण उणां रै हाथ में 'वोट' री भोत बड़ी तागत है। इण तागत रो प्रयोग करती बारी सावचेत रैवणो चायजै ताकि कोई गळत मिनख जनतंत्र में आगै नीं आ सकै।

5.7 अभ्यास / सवाल

1. औपन्यासिक तत्त्वां रै आधार पर 'मेवै रा रूंख?' उपन्यास री समीक्षा करौ।
2. 'मेवै रा रूंख?' रो नायक कुण है? तरक साथै सिद्ध करौ।
3. नीचै लिख्यै पात्रां रो चरित्र–चित्रण करौ–

   1. सिनाथ 2. पदमा चौधरण 3. धनजी
4. 'मेवै रा रूंख?' रै माध्यम सूं लेखक समाज नै कांई सन्देसो देणो चावै?
5. 'मेवै रा रूंख?' में चित्रित, राजनीतिक, धार्मिक अर सामाजिक परिस्थितियां रो वरणाव करो।
6. 'मेवै रा रूंख?' कांई अेक सफल सिरै नांव है? समीक्षा करो।
7. 'मेवै रा रूंख?' आप रै समय रो सांचो दस्तावेज है। किण भांत? तर्क सम्मत उत्तर प्रस्तुत करो।

5.8 उपयोगी पोथियां

1. बगत री बारह खड़ी – डॉ. अर्जुन देव चारण
2. आलोचन री आँख सूं– डॉ. कुन्दन माली
3. रचना अेक संवाद है– डॉ. राधेश्याम शर्मा
5. उपन्यास शिल्प– डॉ. प्रेम शंकर
5. साहित्यिक निबंध– राजनाथ शर्मा
6. मेवै रा रूंख? – अन्नाराम सुदामा
7. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत
8. जागती जोत– मासिक–पत्रिका

इकाई–6

राजस्थानी भासा रा प्रमुख उपन्यासकार
श्री लाल नथमल जोसी– धोरां रो धोरी (प्रमुख उपन्यास)

इकाई री रूप रेखा

6.0 उद्देस्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 उपयोगिता

6.3 जरूरत अर महत्त्व

6.4 धोरां रो धोरी री समीक्षा

- 6.4.1 कथानक
- 6.4.2 पात्र अ'र चरित्र–चित्रण
- 6.4.3 देसकाल अ'र वातावरण
- 6.4.4 संवाद या कथोपकथन
- 6.4.5 भासा सैली
- 6.4.6 उद्देस्य
- 6.4.7 सिरै नांव

6.5 सार

6.6 अभ्यास रा सवाल

6.7 उपयोगी पोथियाँ

6.0 उद्देस्य

अेम.अे. राजस्थानी पूर्वार्द्ध रै पाठ्यक्रम रै पैलै प्रश्न–पत्र री छठी इकाई में आप श्रीलाल नथमल जोसी रै उपन्यास 'धोरां रो धोरी' री समीक्षा भणोला। इण उपन्यास रो रचना काळ 1968 है। राजस्थानी रै सुरुआती उपन्यासां में ओ घणो महताऊ उपन्यास है। इण रै माध्यम सूं राजस्थानी साहित्य रै पुराणै अर नुवैं कथा साहित्य में अन्तर रो पतौ चालैलो। राजस्थानी में बातां रो खूब प्रचलन हो। अै बातां भी घणी लम्बी अर छोटी भी होंवती। आप इण रै भणियां पछै ओ भी जाण सकोला कै राजस्थानी भासा रो कितरो जूनो इतिहास है अर इण में कितरो साहित्य पुराणै जमानै में लिख्यो जांवतो। राजस्थानी भासा रै प्रति समर्पित अेक विदेसी विद्वान बारै सूं आय'र कितरो महताऊ काम कर्‌यो, इण सूं भी आप परिचित हुवोला। इण इकाई नै भणयां पछै आप– राजस्थानी रै विदेसी विद्वान री जिनगाणी बाबत जाण सकोला।

- राजस्थानी भासा री प्राचीनता, महत्त्व अर राजस्थानी संस्कृति बाबत जाण सकोगा।
- बीसवीं सदी रै सुरुआती दौर में इटली अर राजस्थान रै सामाजिक वातावरण रै बारै में जाण सकोला।

- राजस्थानी भासा प्रति अेक विदेसी रै त्याग, लगन, अर मेहनत रै बारै में जाण सकोला।
- उपन्यास भणयां पाछै आप रै मन में भी आप री संस्कृति अर भासा सारू प्रेम पैदा हुवैला।
- इण नै भण्यां पछै आप उपन्यास अर जीवणी में फरक करणो सीख सकोला।
- राजस्थानी उपन्यास आप री सरुआती दसा में कला रूप में कितरो सबळ हो, जाण सकोला।

6.1 प्रस्तावना

इण सूं पैली आप 'आधुनिक राजस्थानी गद्य री खास विधावां अर कथ्य' मुजब भण चुक्या हो। आधुनिक राजस्थानी री उपन्यास विधा री सरूआत अर उण रै बिगसाव बाबत भणतां थकां आप 'धोरां रो धोरी' उपन्यास बाबत भी भण चुक्या हो। इण उपन्यास में अेल.पी. टेसीटोरी, जिको इटली रो निवासी हो, री जीवण गाथा है। जीवण गाथा होंवतां थकां भी 'धोरां रो धोरी' उपन्यास है। इण में 'जीवणी' रा तत्त्व कम अर उपन्यास रा ज्यादा है। इण नै भणणै सूं आप अेक महान् भासाविद् मेहनती अर करमठ महामानव रै बारे में जाणोला। इण उपन्यास रो तात्विक विवेचन कर आपां उण महामानव री जिनगाणी रै बारै में जाणांला।

6.2 उपयोगिता

राजस्थानी भासा रै बिगसाव अर उण रो इतिहास जाणणै तांईं 'धोरां रो धोरी' उपन्यास री घणी उपयोगिता है। राजस्थानी भासा में कितरो विपुल साहित्य पुराणै जमानै में लिख्यो जा चुक्यो है, इण उपन्यास नै भणयां सूं बेरो चालै। राजस्थानी भासा अर संस्कृति सूं विदेसी लोगां नै भी कितरो प्रेम हो ओ जाणयां पछै इण उपन्यास रै भणण वाळै रै मन में भी प्रेम जागै। आ इण उपन्यास री सबसूं बड़ी उपयोगिता है।

6.3 जरूरत अर महतब

राजस्थानी भासा में उपन्यास कला रै बिगसाव में 'धोरां रो धोरी' अेक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इण नै भणणै सूं तत्कालीन समाज रै रीति रिवाजां, रहन–सहन, संस्कृति अर दूजै पहलुआं पर प्रकास पड़ै। राजस्थानी भासा रो पुराणो साहित्य कितरो उच्चकोटि रो हो, उण रै मुकाबलै आज रो साहित्य कठै है। ओ जाणणै तांई 'धोरां रो धोरी' रो अध्ययन जरूरी है।

6.4 धोरां रो धोरी री समीक्षा

'धोरा री धोरी' श्रीलाला नथमल जोसी रो चावो–ठावो उपन्यास है। राजस्थानी में जीवणी परक उपन्यासां री श्रेणी रो पैलो नांव है। ओ उपन्यास सन् 1968 में पैल पोत छपियौ हुयो। इण में इटली निवासी अेल. पी. टेसीटोरी री जीवण गाथा है। जिको आप री ज्ञान री तास बुझावणै तांईं हजारू कोसां दूर सूं चाल'र राजस्थान री धरती पर आयो अर अठै ई आ'र रमग्यो। अैड़ो रम्यो के घर, परिवार, देस अर प्रेमिका री सुध–बुध तक भूलग्यो। इण सूकै धोरां में आप रो सुख चैन, जवानी री उमंग सगळो कीं अठै री कला अर साहित्य री खोज में लगा दिया। अैड़ै करमठ जोगी, ज्ञान नै समर्पित, सरीर सूं इटली निवासी मन सूं भारतीय अर राजस्थानी मायड़ भासा रै सांचे हेताळू नै धेरां रै धोरी रै रूप में लेखक अेक सांची सरधांजली दीवी।

'धोरां रो धोरी' उपन्यास री तत्त्वां रै आधार पर समीक्षा इण भांत है–

6.4.1 कथानक

'धोरां रो धोरी' रै कथानक री सरुआत इटली रै उदीणै नगर रै अेक घरा सूं हुवै। अेल.पी.

टैसीटोरी नाम रो अेक नव जवान आप री मां सू इटली छोड़'र भारत जाणै री इजाजत मांगै। मां आपरी ममता रै कारण बेटै नै भारत जाणै सूं बरजै। बा कोनी चावै कै उण रो बेटो उण नै छोड'र भारत जावै। बेटो बीं नै याद करावै कै भारत सूं आयेड़ै अेक जोतसी उण नै बतायो कै थां रो बेटो भारत जासी अर दुनियां में आप रो नाम कमावैलो। फैर आज बा उण नै क्यूं रोकै? टैसीटोरी मां नै कैवै कै मार्कोपोलो, ओड़ोरिको आद मिनख घर छोड'र बारै निकळया जद ई बां नै दुनियां जाणै, घरां बैठ्या रैंवता तो कुण जाणतो? मां जवाब में कैवै जिण तुलसीदास पर सोध कर्यां थांनैं डाक्टरी री पदवी मिली, बो इतरो बड़ो कवि देस छोड'र कठैई कोनी गयो। फेर भी बड़ो हुग्यो। टैसीटोरी तरक दैतो रैवै, विदेस जाणै रा पण मां आप री ममता रै कारण कोनी मानै। मां जीमती बखत टैसीटोरी री थाळी में मांस पुरसै पण बो मांस कोनी खाणौ चावै क्यूं के अेक भारतीय पिंडत उण नैं बतायो कै इण सूं जीव हित्या हुवै। मिनख नै आप री जीभ रै स्वाद तांईं जीव हित्या नीं करणी चायजै। टैसीटोरी री बैन मारिया है बा भी भाई सूं खूब प्रेम करै। उण रै विदेस जाणै री खबर सुण बा भी उदास हो ज्यावै। आखीर में मां नै खुस करणै तांईं टेसीटोरी आगलै दिन विदेस जावणै रो विचार रद्द कर देवै। मां, ममता बस अेकर रोकै तो है पण बेटै री तरक्की देखतां उण नै इजाजत दे देवै। उदीणै नगर सूं चाल'र टैसीटोरी आप रै भाई सी.पी. टेसीटोरी नै मिलणै तांईं फ्लोरैंस सहर में जावै।

फ्लोरैंस में उण रो भाई भणाई करै। तीन बरसां पैली अठै अेल.पी. टैसीटोरी भी भणया करतो। उण रै गुरुआं नै बेरो लाग्यो कै अेल.पी. टेसीटोरी फ्लोरैंस आयो है तो बीं रै स्वागत में अेक जळसो करीजे जिण में उण री उपलब्धियां रो बखाण करीजै। अेल.पी. टेसीटोरी सिर्फ चौबीस बरसां री उम्र में ई पी–एच.डी. री डिग्री बिना गुरु री सहायता रै लेली। वाल्मीकि रामायण रो रामचरित मानस माथै प्रभाव बताणै सरिखै उण रै काम हो। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश हिन्दी, गुजराती, डिंगल, बंगला भासावां रो जाणकार टैसीटोरी सिर्फ किताबां भण'र ई होग्यो। जलसै में भासण देंतां उण रै सहपाठी अर बाळगोठियै गुरामी ट्रेपिन ओ भी बतायो कै टैसीटोरी अेक भूलेड़ै संस्कृत ग्रंथ ''भव वैराग्य शतक'' रो संपादन भी कर्यो है। इण जलसै री अध्यक्षता टैसीटोरी रै गुरु पैवीलिनी करी। फ्लोरैंस में अेल.पी. टैसीटोरी आप रै भाई सी.पी. टैसीटोरी कनै रुक्यो। सी.पी. रो अेल.पी. साथै घणो हेत हो। छोटो भाई बड़ै भाई नै विदेस जांवतां देख'र धीरज छोड़दै अर खूब रोवै। बड़ो भाई धीरज बंधावणै री कोसीस करै। छोटो भाई, बड़ै भाई नै मंगळ कामनावां देवै अर नेपल्स सहर जाणै तांई विदाई देवै।

उदीणै नगर री रैवण वाळी डोरोथी या डोरा, टैसीटोरी री सहपाठण ही। बा मन ई मन उण सूं प्रेम करण लागगी। बीं नै जद बेरो लाग्यो कै टैसीटोरी भारत जावैलो तो बा मोटर लेय'र अेकली ई रात री दस बज्यां नेपल्स रै उण होटल में पूगगी जठै टैसीटोरी रूकेड़ो हो। बा टैसीटोरी सूं मिळी अर आप रै प्रेम रो इजहार कर्यो। इण बात पर टैसीटोरी कैयो कै बो भारत जाणै सूं तो रुक कोनी सकै। डोरोथी आप रै बाप री अेकली ओलाद अर उण री सगळी दौलत री वारिस भी ही। डोरोथी उण नै आप री जायदाद सूंपणै तांईं कागद लिख'र दे दियो फेर भी टैसीटोरी टस सूं मस कोनी हुयो। उण डोरोथी नै बतायो कै बीं नै धन री लालसा कोनी। उण रो उद्देस्य भारत में राजस्थान में जाय'र अलेखूं ग्रंथ जिका गुमनामी रै अंधेरे में पड़्या है उणां नै नस्ट होवणै सूं बचावणो है। उण अगर ओ काम नीं कर्यो तो बां नै लिखण वाळै कवियां री हत्या हो ज्यावैली। उणां रै उद्धार तांईं उण रो जाणो जरूरी है। टैसीटोरी डोरोथी सूं वायदो करै कै बो भारत सूं वापस आय'र बीं साथै जरूर ब्याव कर लेसी। आँसू भरी आँख्यां साथै डोरोथी टैसीटोरी नै जहाज पर चढ़ाय'र विदा करै। नेपल्स सूं चाल्यां पाछे तीन दिन तक तो जातरा

ठीक रयी पण चौथे दिन समंदर में भयंकर तूफान आग्यो। जहाज डूबणै रो खतरो होग्यो। लोग जहाज छोड'र डोंगियां सूं चालणै री जुगत भिड़ावण लाग्या। इण खतरनाक बखत में भी टैसीटोरी नै पोथियां में रमेड़ो देख अेक इंजीनियर नै बड़ी हैरानी हुई। उण टैसीटोरी नै जहाज छोडणैरी कैयी तो टैसीटोरी समझायो कै तद तूफान में जहाज ई सुरक्षित कोनी तो डोंगियां सूं कांई हुवै लो? भगवान में विस्वास राखो, सब ठीक हो ज्यासी। थोड़ी देर पछै तूफान थमग्यो। पन्दरा दिनां री जातरा कर जहाज मुंबई पूग्यो। जहाज सूं उतर टैसीटोरी भारत री रज माथै सूं लगाई। अठै हरगन हली टैसीटोरी रो भायलो हो। मुंबई में घूम'र टैसीटोरी कलकत्तै आग्यो। तीन मईनां कलकत्ता रैय'र जोधपुर काम करण सारु आग्यो पण बीकानेर नै आप री करमभोम बणा ली।

टैसीटोरी बीकानेर आय–र आप'रै काम में जुटग्यो। दूर–दराज गाँवां में जाय'र लोगां सूं पूछ–पूछ'र पुराणै ग्रंथां री पाण्डुलिपि भेळी करतो, साथै ई लोकगीतां रो संग्रै भी करतो। कठैई पुराणी मूर्तियां पुरातत्त्व रा अवसेस, पुराणा कूवा, बावड़ी सब रा सैनाण भेळा करतो। उणां री खूबियाँ दरज करतो। अेक दिन बीकानेर में गणगौर री सवारी निकळै ही। हाथी, घोड़ा, ऊँट सजेड़ा हा। बीकानेर महाराजा इण जुलूस में हाथी हौदै विराजै हा। अठै टैसीटोरी बैंड री धुन पर मूमळ रो गीत सुण्यो तो सुणतो ई रैग्यो। उण घरां आय'र आप रै नौकर पन्ना नै इण बाबत पूछ्यो तो उण आधो गीत तो सुणा दियो पण फेर बोल्यो पूरो गीत तो बीं री बै'न नै आवै। टैसीटोरी जद पन्ना री बै'न नै बुलाई तो उण री मां उण नै बरजदी। पन्नौ भी टैसीटोरी री नौकरी छोड़ग्यो। उणां नै टैसीटोरी री नीयत पर सक हो। टैसीटोरी नै इण बात रो घणो दुःख हुयो कै विदेसी लोग अठै आय'र जिकी बदचलनी करै बीं रो फळ उण नै भुगतणो पड़्यो है। बो उदास रैवण लागग्यो। आप रै भाई री मौत रो समाचार उण नै जोधपुर में मिल्यौ हो बो तो उण झेल लियो पण अैड़ो वैवार उण नै विचलित करग्यो। बो राजा जी सूं मिल्यो। राजा जी उण नै मायड़ भासा रै उद्धार अर दूजै कामां तांईं खूब स्याबासी दी। टैसीटोरी रो हौंसलो बध्यो। बो ओजूं आप रै काम में जुटग्यो।

इण बिचाळै पन्ना रै बाप रो सुरगवास होग्यो। टैसीटोरी उण नै दुबारा नौकरी पर राख लियो। अब पन्ना री मां रै मन स्यूं टैसीटोरी बाबत गळतफैमी भी निकळगी। अब पन्ना री मां अर बै'न रतन रोजीना टैसीटोरी री कोठी में काम करण नै आवै। बो उणां सूं लोकगीत सुणै अर सावधानी सूं लिख लेवै। घरेलू कामां तांईं और नौकर राख लियो। इण बिचाळै डॉ. टैसीटोरी पृथ्वीराज राठौड़ रचित 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' भी पुराणै पोथी–पानड़ां मांय सूं खोज'र सम्पादित कर दी तो अठै रै सगळै विद्वानां नै घणो अचरज हुयो। अेक दिन टैसीटोरी आप रै सोध सहायक किसोरदानजी चारण साथै देसनोक गयो। उणां रै सुआगत में अठै रा चारण कवि भेळा हुया। अेक कवि अज्ञानतावस इटली नै पिछड़्यो देस बताय'र टैसीटोरी री बडाई करी। टैसीटोरी जद आप रै देस रो इतिहास बतायो तो चारण कवि माफी मांगी। डॉ. टैसीटोरी अठै अैड़ो घुळ–मिळग्यो कै अेक चारण कवि रै घरां जाय'र राबड़ी रोटी भी जीम्यो।

टैसीटोरी पन्ना नै भणाणै तांईं इस्कूल में भरती करवा दिया। इस्कूल रो हैडमास्टर पन्ना री जात रो दरोगो ई हो। भणणै–लिखणै में पन्ना नै होसियर देख'र बो सोचै हो के छोरो उण री छोटी तांईं ठीक है। बा पन्ना री मां नै सनेसो भेज्यो। पन्ना री मां मानगी क्यूंकै बा सोचै ही जिको दायजो ब्याव में पन्नै नै मिळैगो बीं नै बा आप री बेटी रतन रै दायजै में दे देवैगी। पन्ने पैली तो ब्याव करवाणै तांईं नटग्यो पण पछै आप रै परिवार री परिस्थितियाँ देख'र मानणो पड़्यो। थोड़ै दिनां पछै पन्ना रो ब्याव मंडग्यो। ब्याव में टैसीटोरी अर उणां रो सहायक भगवान दास

गाँधी दोन्यूं जावै। बे ब्याव रा सगळा नेग–चार देखै। लेखक अठै ब्याव रै गीतां रा उदाहरण भी दिया है। पन्ना रो ब्याव होग्यो पण मां चायी बात कोनी हुयी। पन्नै री घरवाळी अैड़ी आई कै उण किणी नै आप रै दायजै रै सामान रै हाथ ई कोनी लगाण दियो। बा किणी सूं सीधै मूंडै बात भी कोनी करती। पन्नै रो ध्यान अब भणाई–लिखाई सूं हटग्यो। रतन खातर अबै तांईं अेक भी रिस्तो कोनी आयो। रतन री माँ सोच्यो कै जे बा बिरादरी सूं बारै छोरी रो ब्याव करदियौ तो कांई हरज है? पन्नै री माँ घर में सलाह कर'र पन्नै रै इस्कूल मास्टर हरजी राम जाट सूं रतन रो ब्याव करणै री सोचै। इण बात रो बिरादरी में बेरो लागग्यो। कानासर गाँव रै वासी स्व. धनसिंह (पन्नै रो बाप) रै परिवार सूं बदळो लेणै तांईं बिरादरी रै लोगां नै भेळा कर'र बीकानेर में आय'र डेरो जमा दियो। पन्ना री मां डर ज्यावै। बा टैसीटोरी सामी आप रो दुःख रोवै। टैसीटोरी आप ही सूझ–बूझ सूं उणा नै ठंडा–मीठा कर पाछा भेज देवै।

डॉ. टैसीटोरी आप रै नौकर मालसी नै साथै लेय–र दूर–दराज धोरां में बसेड़ै–गाँवां में पुराणा ग्रंथ, मूर्तियाँ या पुरातत्त्व री महताऊ चीजां ढूंढ़णै तांईं ऊँटां पर चढ़'र रात–दिन दौरा करै। बे मेह–आँधी, सरदी–गरमी, दिन–रात कीं कोनी देखै। अेक–दो दिन बीकानेर में बैठ'र काम करै फैर ओजू दौरै पर निकळ ज्यावै। इण दौरान अेक दिन पल्लू रै धोरां में भटकतां–भटकतां उण नै सुरसत री घणी पुराणी मूरत मिलै। और भी घणी चीजां मिलै। इणी दौरान महाराजा गंगा सिंह पैलड़ै विस्व–जुद्ध सूं पाछा आ'र दरबार में आपरा जुद्ध रा अनुभव सुणावै। अठै टैसीटोरी भी महाराजा नै खुद री खोज मुजब बतावै। महाराज घणा राजी हुवै अर इण सगळी चीजां तांईं अेक संग्रहालय बणावणै री तेवड़ै।

पन्ने री मां री चिन्ता बधती जावै। अबै तांईं रतन रो ब्याव कोनी हो सक्यो। टैसीटोरी नै इटली सूं भेजेड़ा डोरोथी रा खत मिळै। उणां सूं बेरो पड़ै कै डोरोथी री तबीयत खराब चालै। इण बखत भी टैसीटोरी काम में उल्झेड़ो हो। थोड़ा दिनां पछै डोरोथी रो अेक और खत मिल्यो जिण में उण आप रो दिल काढ़'र धर दियो हो। टैसीटोरी खत लिखणो कोनी टाळ सक्यो। उण भी दिल री गै'री भावनावां सूं भरेड़ो खत डोरोथी नै लिख्यो। डोरोथी रै खत रै अेक–अेक आखर सूं बिथा छळकै ही। काम रै घणै दबाव सूं या सरीर कानी ध्यान नीं देणै सूं टैसीटोरी भी बीमार पड़ग्यो। खड़्यो होणै री हिम्मत भी कोनी रयी। काम धंधो भी छूटग्यो पण इण बखत पन्ना, पन्ने री मां अर रतन तीनूवां मिल'र टैसीटोरी री खूब सेवा चाकरी करी। टैसीटोरी ठीक होग्यो। अबकाळै पन्ने री मां बीमार पड़गी। अैड़ी बीमार पड़ी कै सगळी दरवायां बेअसर होगी। अेक दिन तद टैसीटोरी, नौकर नै साथै लेय'र दौरै पर जावै हो तो पन्नै री माँ उण नै पन्नै अर रतन मुजब भोळावण देय'र दुनियां सूं भीर हुगी।

इणरै पछै टैसीटोरी अठै कीं दिन काम तो कर्‌यो पण उण रो जी उचटग्यो। इण कारण बो इटली पाछो चल्यो गयो। बठै जाय'र बेरो पड़्यो कै उण री माँ रो सुरगवास होग्यो। डोरोथी रै घरां गयो तो डोरोथी रै बाप बतायो कै डोरोथी बीं रै प्यार में घुळ–घुळ'र मरगी अर मरती बारी आपरी जायदाद रो वारिस टैसीटोरी नै बणागी। बाप बे सगळा कागजात टैसीटोरी नै सूंप दिया। टैसीटोरी घरां पाछो आय'र घर रै ताळो लगाय'र कूंची पाड़ौसियां नै सूंप पाछो भारत जातरा तांईं टुरग्यो। बो रास्तै में ई बीमार पड़ग्यो। बीकानेर आ'र तबीयत घणी खराब रैवण लागगी। रतन अर पन्नै डॉ. टैसीटोरी री घणी ई सेवा करी पण बो ठीक कोनी हुयो अर अेक दिन बत्तीस बरसां री छोटी सी उम्र में इण दुनियां नै त्याग दी।

'धोरां रो धोरी' राजस्थानी भासा रै सरुआती उपन्यासां में एक है। इटली निवासी अेल.पी. टैसीटोरी नै नायक बणा'र लिख्यो गयो राजस्थानी रो ओ पैलो जीवणी–परक उपन्यास है।

जीवणी परक उपन्यास लिखणै में अेक खतरो सदा ई बण्यो रैवै कै भावुकता रै कारण लेखक कठैई 'अतिरंजना' रो सिकार नीं हो जावै जिन–गाणी री कोई महताऊ घटना छोड नीं देवै। लेखक इणा बातां सूं सजग रैय'र पूरी मेहनत करी है। उणा इटली निवासी कंवारी लिकनोवस्की री सहायता सूं अेल.पी. टैसीटोरी री जिनगाणी बाबत सूचनावां मंगाय'र भेळी करी। पछै भारत सूं उण रै काम अर जिनगाणी बाबत सूचनावां भेळी कर, उपन्यास रच दियो। जिनगाणी परक उपन्यासां में कल्पना री घणी फुरसत कोनी हुवै पण लेखक जठै–जठै भावनावां रै तारां नै झंक्रत कर सकै, पूरो फायदो उठायो है। इण नजर सूं धोरां रो धोरी ठीक उपन्यास बण पड्यो है। कथानक रै विकास तांईं लेखका कथा में सबसूं पैली अेक समस्या आप रै पाठकां सामी ल्यावै फेर उण रो बिगसाव करै पछै संघर्स दिखाय'र आखीर में 'फळ' दिखावै। इण उपन्यास में भी पैलै ई परिच्छेद में लागै कै टैसीटोरी जिकै मकसद सूं भारत में जाणो चावै बो पूरो कोनी होंवतो लागे क्यूं कै ममताळू मां बीं नै छोडण नै कतई त्यार कोनी। बो मां नै समझा'र इजाजत लेय'र आप रै छोटै भाई सी.पी. टैसीटोरी कनै फ्लोरैंस आवै। अठै आपस में दो भायां रो प्रेम देख'र अेकर तो इण भांत लागै कै टैसीटोरी भारत कोनी जा सकै। तीजै पड़ाव में डोरोथी सामी तो खुद टैसीटोरी आप रा हथियार समर्पित करतो लागै। इण भांत कथानक में उतार–चढ़ाव उण नै सुभाविक अर रोचक बणावै। इणी भांत टैसीटोरी रो गांव–गांव घूम'र लोगां सूं मुलाकात करणी, उणां री भासा में ई बां सूं बातां करणी, बां साथै बैठ'र भोजन करणो, नायक रै प्रति सहानुभूति अर अपणायत जतावै। राजस्थानी भासा रै ग्रन्थां री खोज, पुरातत्त्व री महताऊ चीजां नै ढूंढ–ढूंढ'र लोगां सामी ल्यावणो, अैड़ा काम है जिणा सूं अेक राजस्थान रै वासी रो अर मायड़भासा रै प्रेमी रो माथो गुमेज सूं ऊंचो उठ जावै। लेखक टैसीटोरी सारू सहानुभूति जगावण में पूरी तरां सफल हुयो है। इण भांत 'धोरां रो धोरी' रो कथानक सफल कैयो जा सकै। मुख कथा साथै कई छोटी कथावां भी हुवै जिणां रै माध्यम सूं मुख चरित्र (नायक) रो चरित्र–चित्रण हुवै। इण उपन्यास रै समानान्तर कथावां में पन्ना रै परिवार री कथा है। इण सूं टैसीटोरी रो परोपकारी, जिज्ञासु रूप उभर'र सामी आयो है। डोरोथी, टैसीटोरी, दरोगण (पन्ना री मां) आद री मौत रै कारण उपन्यास रो कथानक दुःखान्त है।

6.4.2 पात्र अर चरित्र–चित्रण

'धोरां रो धोरी' अेक जीवणी परक उपन्यास है। लेखक आपरी मायड़ भासा रै लेखक नै सबदां रै माध्यम सूं सरधांजली दीवी है। इण में लेखक अेल.पी. टैसीटोरी रै जीवण नै प्रकास में ल्याणो चावै। बियां तो उपन्यास में घणा ई पात्र आया है, जियां अेल.पी. टैसीटोरी री माँ, बै'ण मारिया, भाई सी.पी. टैसीटोरी, डॉ. पैवोलिनी (टैसीटोरी रा गुरु) साथै भणेड़ो दोस्त गुरामी ट्रेपिन, डोरोथी, जोधपुर रा देवकरण जी बारठ, महाराजा गंगा सिंह, पन्ना, पन्ना री मां दरोगण, रतन, किसोरदान, भगवान दास गाँधी, मालसी रै अलावा और भी कई पात्रां रो जिक्र आयो है, पण मुख पात्र (नायक) अैल.पी. टैसीटोरी है। आं पात्रां में चरित्र–चित्रण रै हिसाब सूं डॉ. अेल.पी. टैसीटोरी रो चरित्र ई घण महताऊ है। मां, डोरोथी, भाई सी.पी. टैसीटोरी, पन्ना री मां, रतन आद गौण चरित्र है। कथा नामक रो चरित्र इण भांत है–

डॉ. अेल.पी. टैसीटोरी :– अेल.पी. टैसीटोरी 'धोरां रो धोरी' उपन्यास रो नायक है। उपन्यास मुजब उण रै चरित्र री विसेसतावां इण भांत है–

मां रो लाडेसर :– टैसीटोरी आपरी मां रो लाडेसर बेटो है। फैर भी मिनख रो सुभाय है कै बो कीं न कीं पक्षपात करै ई है हालांकि अेल.पी. टैसीटोरी रै अेक भाई अर अेक बै'ण और है पण मां री ममता अेल.पी. टैसीटोरी पर कीं घणी है। इणी'ज कारण जद बो आप री मां नै भारत में

जाण रो कैवै तो बा उण नै जाण देणो कोनी चावै। बा हालांकि आप रै बेटै री घणी ई हेताळु है पण बिछड़णै रै नाम पर ममता आडी आ जावै अर अेल.पी. नै विदेस जाणै सूं रोकणै री कोसीस करै। टैसीटोरी भी आप री मां रो कैवणो कोनी टाळै अर उण रै कैवणै सूं रुक ज्यावै पण मां, पछै, जाणै री इजाजत दे देवै।

मां रो भगत :– डॉ. अेल.पी. टैसीटोरी आप री मां रो पक्को भगत है। बो आप री मां री भावनावां री पूरी कदर करै। उण री मां जद बीं नै भारत जाणै सूं रोक लेवै तो बो पैली समझावणै री कोसीस करै पण मां जद मानै कोनी तो बो कै देवै– ठीक है। म्हूँ भारत जाणो टाळ दियो। इणी भांत बो मांस कोनी खावै क्यूं कै भारत रै अेक पिंडत उण नै कैयो कै जीवां नै मारणो पाप है; पण मां जद उण री सेहत री दुहाई देय'र कैवै तो मां रै प्रेम नै समझ'र बो उण रो कैवणो कोनी टाळै।

भाईयां रो प्रेमी :– अेल.पी. टैसीटोरी रो भाई सी.पी. टैसीटोरी भी है। दोनूं भायां रो आपस में घणो हेत है। बिछड़ती वेळा छोटो भाई खूब रोवै। बो रोतो–रोतो कैवै, ''जिण तरां मां रा प्राण था रै सरीर में वास करै ठीक उण तरां म्हारा प्राण भी आप रै इण सरीर में निवास करै। मां नै तो म्हूं धीरज बंधास्यूं पण म्हनै समझाय'र राखण री भोळावण भी थे केई नै दीवी है'क नईं।'' इणा बातां सूं लागै कै दोन्यू भायां में आपस में कितरो प्रेम है।

विद्या व्यसनी :– टैसीटोरी नै सिर्फ विद्या रो ई व्यसन है। इणी'ज कारण बो चौबीस बरसां री छोटी सी उमर में 'वाल्मीकि रामायण रो रामचरित मानस पर प्रभाव' जैड़ै कठण विसय माथै बिना गुरु रै पी.–अैच.डी. कर'र डाक्टर बण ज्यावै। विद्या रै प्रति उणां रै लगाव रो बेरो इण बात सूं पड़ै कै रामायण री भासा संस्कृत अर रामचरित मानस री अवधी है पण फैर भी उणां नै कठैई कोई मुस्कल कोनी आई। इण बात सूं विदेसी ही नीं भारतीय विद्वान भी हैरान हा। उण आप री मेहनत सूं 'डिंगल' भासा री व्याकरण भी रच दी। इटली निवासी होय'र भारतीय भासावां पर इतरों अधिकार उण री मेहनत अर लगन नै तो दरसावै ई है पण विद्या खातर उणां री ललक भी देखण जोग है। विद्या सारू आ तास ई उणां नै आप रै देस इटली सूं खींच'र भारत ले आई।

भासाविद् :– डाक्टर अेल.पी. टैसीटोरी अेक भोत बड़ो भासा विद है। फ्रैंच, इटैलियन, जर्मन अर अंग्रेजी रै अलावा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, डिंगल, बंगला, हिन्दी, मराठी, अवधी, गुजराती आद भासावां रो गैरो जाणकार है। अै भारतीय भासावां इटैलियन भासा सूं मेळ कोनी खावै फेर भी उण अै भासावां सीख ली, आ हैरानी री बात है। अेल.पी. टैसीटोरी अैड़ो भासा विद है कै बी. अे. कर्यां सूं अेक साल पैलां ई उणां संस्कृत रै भूलेड़ै ग्रन्थ 'भव वैराग्य शतक' रो सम्पादण कर दियो। भारत पूग'र उण 'वेलि क्रिसन रुकमणी' जैड़ो ग्रंथ रद्दी कागदां मांय सूं ढूंढ'र, उण रो सम्पादन कर, डिंगल रै बड़ै विद्वानां नै इचरज में न्हांख दिया। उण री बुद्धि अर भासा कौसळ नै जार्ज ग्रियर्सन जैड़ा भासा विद अर विद्वान भी मानता हा। टैसीटोरी री प्रतिभा देख'र ई ग्रियर्सन उणा नै भारत आणै रो न्यूंतो दियो। उणा री प्रतिभा पर बोलतां थकां उणा रो गुरु पैवोलिनी कैयो, ''डाक्टर टैसीटोरी रा लेख देख नै डाक्टर ग्रियर्सन री आ पक्की धारणा बंणगी कै ओ मोटियार उमर में छोटो होणै उपरांत भी पाकी उमर आळै सोध रै विद्वानां नै मारग बतावण जोगो है।''

निरलोभी :– टैसीटोरी निरलोभी मिनख है। उण नै लालच है तो फगत विद्या सीखणै रो, भणणै लिखणै रो, और कीं कोनी। रिपियै–पीसै रो लाळच तो उण में जाबक ई कोनी। उण री प्रेमिका डोरोथी जद् बीं नै भारत जाणै सूं रोकण तांईं भांत–भांत रा तरक देवै अर कैवै कै लोग देस

छोड़'र परदेस रिपिया कमावण जावै। इण खातर बा उण नै रोकणै तांई आपरी सगली दौलत अर जायदाद उण नै सूंप दैवै। भारत आय'र अगर बो चांवतो तो जोधपुर या बीकानेर रै राजावां साथै सौदा बाजी कर लेंवतो पण बो अैड़ो कीं कोनी करै। टैसीटोरी संतोखी मिनख है।

दूरदरसी :– आ बात तो मानणी पड़ैली कै टैसीटोरी घणो दूरदरसी मिनख हो। राजस्थानी भासा री तागत रो उणां नै बेरो हो। इण कारण डोरोथी उणां नै जद रूकणै रो कैवै तो बो जवाब देवै, ''म्हूँ आपै ई कैंवतो कोझो लागूं पण फेर भी कैवणी पड़ै। भगवान म्हनै दूर देखणी नजर दी है। मनै अठै बैठै नै हाथाळी में आँवळा दीसै ज्यूं साफ–साफ दीसै है कै भारत रै राजस्थान प्रान्त में डिंगल भासा रा अणगिणती रा ग्रंथ रतन धरती रै गरभ में पड्या है अथवा रेत में रगदोळीजै है। अेक लिखार अथवा कवि रै हाथ लिख्यै ग्रंथ री रुखाली करणी कवि नै मरण सूं बचावण रै बरौबर है अर मालम हुंवतां थकां ग्रंथ रो नास हुवण देवणो कवि री हित्या बरौबर है। मनै अठै–बठै कित्ता ई अप्रकासित ग्रंथ माटी भेळा पड्या दीसै है। म्हूँ जे नीं जाऊँ तो, बां काव्यां री मौत रो भागी बणूं।''

चरित्तरवान अर संयमी :– डोरोथी री प्रार्थना रै बावजूद जद टैसीटोरी रुकै कोनी तो बा उण नै गळै लगाय'र मिलणै रो कै देवै पण टैसीटोरी टस सूं मस कोनी हुवै। उणा रो मानणो है कै सगळी बातां समै मुजब ई ठीक लागै। बो चरित् नै सबसूं बड़ो धन मानै इण खातर डोरोथी नै कैवै, ''आपां रो चरित्र आपां ऊपर है। मिनख रै कनै रुपियो तो घणो दोरो भेळो हुवै, आयेड़ो ई पाछो जावै परौ। घर बार भी मोकळा मिनखां रा घर रा को हुवै नीं भाड़ै सूं ई काम काढ़ै। रूपवान हुवणो भी हाथ री बात कोनी, भगवान रो दियोड़ो रूप आडो आवै, पण चरित् अेक इसी चीज है कै मिनख इण नै धाप'र गरीब हुंवतै थकां भी ऊँची सूं ऊँची कोटी रै संचै में ढाळ सकै। बिना पईसो खर्च करै इण नै ऊजळो राख सकै। अर डोरा! तूं तो जाणै है चरित् सगळां सूं बड़ी पूंजी है। चरित् है तो सगळी जिन्सां है। जे ओ अेक गयो, तो समझले सै गया।'' इण ओळ्यां में टैसीटोरी रै द्रढ़ चरित्र री झळक मिलै। इण सूं आगै हिन्दुस्तान में आय'र बो आप रै काम सूं काम राखै। किणी नारी कानी उण रो झुकाव कोनी दीखै। बो प्रेम करै तो सिर्फ डोरोथी सूं।

मेहनती, लगनसील अर द्रढ़ निस्चयी :– टैसीटोरी घणी मेहनत करणियो लगनसील मिनख है। बो जिको काम करणै री मन में अेकर धार लेवै फेर उण सूं लारै कोनी हटै। आप री मेहनत अर लगन रै कारण ई बो फगत चौबीस बरसां री उमर में बिना गुरु रै सोध ग्रंथ लिख'र भारतीय अर यूरोपियन विद्वानां नै हैरान कर देवै। आप री मेहनत, लगन अर पक्के मनसूबे रै बलबूतै पर बो संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, अवधी, राजस्थानी, गुजराती, बंगला जैड़ी भारतीय भासावां पर इधकार कर लेवै अर इणा भासावां रा ग्रंथ भी सम्पादित करै। आप री मां री ममता, भाई रो प्रेम, डोरोथी रो प्रेम निवेदन अर उण रा आँसू उण नै आप रै निस्चै सूं लारै कोनी हटा सक्या। राजस्थान जैड़ै गरम, रेगिस्तानी अर साधनहीण इलाकै में आय'र बो आप रो काम आप री हिम्मत सूं जारी राखणै में सफल हुवै। इणा बातां सूं उण रै चरित्तर अर संघरससील सुभाव रो बेरो चालै।

आस्तिक अर धीरज वाळो मिनख :– टैसीटोरी आस्तिक अर धीरज वाळो मिनख है। बो जाणै है कै आ मिनखां देही बार–बार कोनी मिलै इण कारण मिनख नै जिको कीं करणो है उण रै करणै में देर नीं करणी चायजै। इणी'ज कारण बो सिर्फ बत्तीस बरसां री उमर में इतरो कीं करग्यो जितरों दूजा मिनख सौ बरसां में भी कोनी कर सकै। टैसीटोरी परमात्मा में बिसास राखणियो मिनख है। उण नै भगवान में बिसास है कै बो जिको कीं हुवै या होंवतो देखै उण नै भगवान री करणी मानै। बो कैवै परमात्मा री मर्जी बिना अेक पत्तो भी कोनी हालै। ओ ईज

कारण हो कै जद बड़ो तोफान आयो समन्दर में तो बो आप रै पोथी–पानड़ै में ई खोयो रैयो। उण नै जहाज सूं बारै चालणै रो कैयो गयौ तो बोल्यो, ''जिण तोफान में जंगी जाज रा ई पता नीं लागै, बठै बापड़ी डूंगी किसी चाकरी में है। हूणियार अटल है, भगवान में भरोसो राखो, बो सगळां रो भो भांजै।'' इण सूं पतो चालै के टैसीटोरी कितरो धीरज वाळो अर आस्तिक मिनख है।

लक्ष्य सारू समर्पित :– टैसीटोरी आप रै लक्ष्य रै सारू समर्पित है। लक्ष्य सारु बो भाई, बैंण, माँ, प्रेमिका, किणी नै ई आप रै मारग में रुकावट कोनी मानै। उण रै चरित्र री आ भी विसेसता है कै बो सब नै समझाय'र सगळां सूं समायोजन कर चालणै री कोसीस करै। आंधी, मेह, तूफान, तावड़ो, छियां, पाळो, गरमी बीं नै कोई कोनी रोक सकै। बो किणी बूढ़े साथै बैठ'र बात ई करै तो पुराणी सभ्यता या संस्कृति री बात ई करै। फालतू बात कोनी करै। कठै ई ब्याव में या किणी उछाव रै मौके उण नै जाणो पड़ै तो बो बठै री रीत–रिवाज, लोकगीत अर संस्कारां बाबत जाणणै री कोसीस करै। बो जठै–जठै भी जावै या सोंवतो–जागतो आप रै लक्ष्य नै हरदम याद राखै।

संघरससील अर परोपकारी मिनख :– टैसीटोरी संघरससील मिनख है। तपतै तावड़ै अर लूआं में, बरसतै मेह या सियाळै रै दिनां री परवाह नीं कर'र बो घर सूं बारै निकळ आप रै काम में जुट्यो रैवै। गाँवा में जावै तो लोगां साथै बैठ'र राबड़ी, खीचड़ो भी जीम लेवै। बो तो कै वै म्हूँ अब इटली रो थोड़ो ई रैग्यो, राजस्थान रो होग्यो। उण री इण बात में की झूठ कोनी। टैसीटोरी परोपकारी मिनख है। पन्नै रै परिवार री बो बखत–बखत पर मदद करतो रैवै। इणी भांत बो आप री आखरी सांस लेंतां थकां भी रतन रै ब्याव तांईं दो हजार रिपिया देवै। रतन री माँ सूं बदळो लेणै तांईं जद कई गाँवा रा राजपूत भेळा होय'र आवै तो बो आप री चतराई सूं झगड़ो सुळटा देवै। उण री करणी–कथणी में फरक कोनी।

इण भांत 'धोरां रो धोरी' रो नायक अेल.पी. टैसीटोरी अेक महा मानव है। बो मानवीय गुणां री खाण है। संस्कृत री आ कैवत उण रै चरित पर पूरी ढुकै, ''उदार चरितानाम् वसुधैव कुटुंबकम्।''

डोरोथी :– टैसीटोरी पछै डोरोथी भी अेक महताऊ चरित्र है। हालांकि डोरोथी रै चरित्र रै बिगसाव रो लेखक ने घणो बखत कोनी मिल्यो या इण भांत कैय सकां कै टैसीटोरी जैड़ै महामानव रो चरित् बखाण करती बारी बाकी सगळा चरित्र घणा उभर भी कोनी सकै। इण उपन्यास में डोरोथी रै चरित्र री नीचै लिखी विसेसतावां उभर'र सामी आई है–

निस्छल प्रेयसी– डोरोथी इण उपन्यास री नायिका है। उण रो हियो टैसीटोरी रै प्रेम सूं लबालब भरेड़ो है। बा उण साथै भणती बखत भी उण सूं अेक तरफा प्रेम करै पण जद उण नै बेरो लाग्यो कै अेल.पी. इटली छोड'र भारत जावै तो बा खुद नै रोक कोनी सकी अर आप रै प्रेम रो इजहार करणै तांईं आप री गाडी लेय'र सीधी उण होटल में नेपल्स पूग'र ई दम लेवै। अेल.पी. टैसीटोरी नै नेपल्स सूं ई भारत खातर रवाना होवणो हो। इण खातर बा भळै देर कोनी करणो चावै ही।

हिम्मती अर दिलदार :– डोरोथी बड़ी हिम्मत वाळी लड़की है। जद उण नै बेरो लाग्यो कै टैसीटोरी भारत रवाना होवण वाळो है तो बा अेकली ई गाडी लेय'र नेपल्स पूग ज्यावै। बठै होटल में पूग'र अेल.पी. टैसीटोरी सामी आप रै प्रेम रो इजहार करै। उण रो सोचणो है कै टैसीटोरी रिपिया कमावणै तांईं भारत जाणो चावै इण कारण बा आप री सगळी जायदाद उण रै नाम करणै रो कागज लिख देवै। आप रै प्रेम तांईं बा सगळो कीं निछरावळ करणै री हिम्मत राखै।

त्यागण :– डोरोथी त्यागण लुगाई है। पच्छमी देसां में जठै दाम्पत्य सम्बन्धां री इतरीं परवाह कोनी करै बठै डोरोथी सिर्फ प्रेम रै कारण सगळो कीं त्याग'र टैसीटोरी रै नाम कर देवै। बा सती है इणी'ज कारण टैसीटोरी रै आवणै री उम्मीद में कंवारी बैठी रैवै अर बिणरी उडीक में बीमार पड़'र प्राण त्याग देवै। डोरोथी जैड़े चरित्र पच्छमी दुनियां में दुरलभ है।

समर्पित प्रेमिका :– डोरोथी रै मन में टैसीटोरी खातर प्रेम भावना है। बा इण बात नै भली–भांत जाणै कै परदेसां गयेड़ो मिनख बेरो नीं कद पाछो मुड़ै? पण उण नै इण बात री परवाह ई कोनी। उण नै टैसीटोरी सूं इतरों लगाव है कै जाणै सूं पैली अेक बर बा उण नै गळै लगा'र मिलणो चावै। बा, ओ तर्क भी देवै कै उणां रै समाज में ओ रिवाज आम है कोई बुरो कोनी मानै पण टैसीटोरी उण नै इण बात सूं रोक देवै। डोरोथी रो प्रेम अेकनिष्ठ भाव रो प्रेम है। उण में छळ–कपट कोनी। त्याग अर समर्पण री भावना है इण कारण कठै ई डर या लाळच भी कोनी। बस! प्रेमी नै मिलणै री लगोलग इच्छा है। बा चावै कै टैसीटोरी उण नै छोड'र नीं जावै। बदळै में बा सगळों कीं लुटा सकै। दुनियां उण नै कांई कैवैली? इण बात री बीं नै जाबक ई परवाह कोनी। इण भांत डोरोथी अेक आदर्स चरित्र है।

डोरोथी रै अलावा सी.पी. टैसीटोरी, दरोगण (पन्नै री माँ) पन्नो, रतन आद चरित्र भी है पण इणां री बणगट लेखक अले.पी. रै चरित्र–गठन तांईं करी जी है। किणी रो चरित्र मानसिक उण रै क्रिया कलापां सूं प्रकट हुवै पण अठै सगळा चरित्र गौण है। टैसीटोरी री मां रै चरित्र री भी थोड़ी सी झळक उपन्यास में अेकर दीसै पण बा भी मां सिरखी मां है जिकी आप रै बेटै नै सदीव छाती रै चिपायां राख्यो चावै।

6.4.3 देसकाल अर वातावरण

देसकाल अर वातावरण उपन्यास में अैड़ो तत्त्व हुवै जिण री प्रस्ठभोम में पात्र या चरित्र ढळै। इण उपन्यास में बीसवीं सदी रै सरुआत रो इटली अर भारत, खासकर राजस्थान रै वातावरण रो चित्रण हुयो है। बां दिनां राजा लोग तीज–तिवारां रै मौकै जनता नै दरसण दिया करता। खेल–तमासा होंता। अैड़ै ई अेक गणगौर रै जलूस रो चित्रण भी इण उपन्यास में हुयो है। ब्याव–सादी आप री जात बिरादरी सूं बारै करणै री कोई हिम्मत नीं करतो। पन्ने री मां आप री बेटी रतन रो ब्याव जात सूं हट'र करणो चायो तो सगळी बिरादरी भेळी होय'र आयगी। मेहमान नवाजी कर'र लोग आणंद मनावंता। बै चाये गरीब हा पण मन सूं इतरां अमीर हा कै आप रै मेहमान नै राबड़ी–खीचड़ो खुवा'र ई सुख मनावंता। विदेसी लोगां नै अठै रा रै'बासी आछी नजरां सूं कोनी देखता। आप री बै'ण–बेटियां सूं उणां नै सीधी बात कोनी करण देंता। आवागमन रै साधनां में ज्यादातर लोग ऊँट या घोड़ा ई राखता। समाज मृत्युभोज, दायजै, जात–पांत, आंधै विस्वासां रै बंधनां में गैरो जकड़ी जेड़ो हो। लोग खाणै–पीणै में ठीक हा। घी–दूध चोखो होंवतो। मेहमान नवाजी लोग खुलै दिन सूं कर्‌या करता। टैसीटोरी अर उण रो नौकर मालसी अेक चौधरी रै घरां जावै। बठै मालसी अेकलो ई दस सेर दूध पी ज्यावै। विदेसी लोगां री राज–दरबारां में चोखी इज्जत ही। इण उपन्यास सूं ओ भी बेरो चालै कै लोगां में आप री कलावां अर पुरातत्त्व रै प्रति चेतना रो अभाव हो। घणकरा'क लोग परम्परावादी हा। ओ ई कारण हो के टैसीटोरी सिरखै विदेसी विद्वान अठै आय'र पुराणै ग्रंथां अर पुरातत्व री महताऊ मूर्तियां अर बीजी चीजां री खोज करी। अठै रा विद्वानां में इण अणमोल धरोहर सूं या तो अणजाण हा या उणां में इतरीं खिमता कोनी ही। ज्यादातर लोग लकीर रा फकीर ई निगै आवै।

6.4.4 संवाद या कथोपकथन

उपन्यास में संवाद या कथोपकथनां रो घणो महतव हुवै। इणां रै माध्यम सूं कथानक आगै बधै अर पात्रां रो चरित्र–चित्रण भी हुवै। संवाद कथानक नै रोचक बणावै अर पाठक रै मन में जिज्ञासा पैदा करै जिण रै कारण बो उपन्यास नै भणणै तांईं तत्पर हुवै। इण उपन्यास में संवादां रो भरपूर उपयोग हुयो है। उदाहरण खातर इण उपन्यास रै संवादां री नीचै लिखेड़ी विसेसतावां है–

कथानक नै आगै बधावण वाळा संवाद :– उपन्यास में अैड़ा संवाद भी हुवै जिण सूं कथानक आगै बधै। दो पात्र जद आपस में बातचीत करैला तो लारै हुयोड़ी अर आगै होवण वाळी घटनावां बाबत जिक्र भी करैला, जिण सूं कथानक रो निर्माण हुवै। नमूनै रै तौर पर इण उपन्यास री तो सरुआत ई संवाद सूं हुई है। इण संवाद सूं आवण वाळी घटणावां अर वस्तु स्थिति रो बेरो लागै–

''मां मनै आसीस दे, तूं मुळक अर मनै छाती सूं लगा। का'ल म्हूँ नेपल्स जा सूं अर भारत खातर बईर हू सूं।'' इण अेक संवाद सूं ओ बेरो लागै कै कैवणियो भारत जाणो चावै अर आप री मां सूं विदा लेणो चावै। ओ संवाद बोलणियो कुण है? बो भारत क्यूं जाणो चावै? भारत जा'र बो कांई करैलो? भारत में भी कठै जावैगो? आद मोकळा सवाल है जिका अेक साथै पाठक रै मन में उठै। आ ईज संवाद कला री सफलता है। आगामी घटनावां री सूचना भी संवादां रै माध्यम सूं मिल सकै। जियां–

सी.पी. रुकतो–रुकतो बोल्यो, ''भारत जातरा में थां नै मोकळा विद्वान, राजा–महाराजा मिलसी। मोकळा मिनखां सूं भाअेला हुसी। रात–दिन अेक क रनै थे भरपूर मैनत रै नतीजां सूं दुनियां नै चकचूंधी करसो अर थां रो नांव ध्रुव तारै दईं सोध विद्वानां रै अकास में सदेई जगमगाट करसी तथा आगै हुवणियां नवजवानां नै काम री प्रेरणा देसी, पण .....।'' इण संवाद सूं टैसीटोरी रै भविस, काम अर जिनगाणी बाबत कितरीं बड़ी सूचना है।

भावपूरण संवाद – उपन्यास में भावपूरण संवादां नै भण'र पाठक विचलित हुवै। बो भी पात्रां साथै हांसै अर रोवै। धोरां रो धोरी में अैड़ा घणा ई भाव पूरण संवाद है जका पाठक नै आप रै साथै बहा ले जावै–

''म्हांरा लाडला! भारत खातर टुरयां सूं तूं था री मां नै दफण जावै तो फेर भलेई राजी–खुसी जा, पण मनै अधमरी छोड'र तूं सिध चाल्यो म्हांरा लाल!'' अठै मां कितरीं भावुक है अर उण रै हियै में बेटै रै सारू कितरीं ममता अर लगाव है।

बै'न मूंडो ढीलो कर नै बोली, ''थे जिकी रो वरण करसो, बा म्हांरी भाभी मनै आछी लागसी, चावै इटालियन हुवो चावै भारती। बै'न नै भाभी रै देस सूं कांई प्रयोजन? भाई री भावणी भाभी!''

सी.पी. बोल्यो, ''भाई साब! थां सूं बिछड़ते म्हारी छाती फाटै। फेर मिलाप कद हुसी आ भगवान नै ठा है। आ ओ! थे म्हां रै नेड़ा आओ! अर म्हूँ थां रै नेड़ो आऊँ। आज आपां मिल'र रळी काढ़ लेवां।''

''डाक्टर! म्हारै बाप रै धन ऊपर म्हां रो इधकार है, अर म्हूँ चावूं कै तूं म्हांरै ऊपर इधकार कर नै म्हां रै धन रो धणी बणै।''

आं संवादां में मां–बेटै, बै'न–भाई, भाई–भाई अर प्रेमी–प्रेमिका बिचाळै जिका सम्बन्ध है, जैड़ी भावनावां है, बै सामी आवै। अैड़ै संवादां नै भणतां ई आपस रै भावपूरण सम्बन्धां रो बेरो लाग ज्यावै।

चरित्र–चित्रण में सहायक संवाद :– पात्रां रो चरित्र–चित्रण करती वेळा लेखक संवादां रो प्रयोग भी कर लेवै। इण सूं चरित्र–चित्रण में सुभाविकता आवै। दो पात्र जद आपस में खुद री या किणी तीजै री बात करै तो उणां रो चरित्र भी उभर'र सामी आवै। पात्रां रो चरित्र–चित्रण करणै में सहायक संवाद उदाहरण सारू आप रै सामी है–

टैसीटोरी रो बै'ण मारिया रै इण संवाद सूं मां रै चरित्र री अेक झलक मिलै–

''थां नै ठा को हुसी नी कै मां किण तरै थां रै मूंडै रै सामी देख–देख'र दिन काढ़ै। बारै सूं आंवती बेळा जे अकारण ई थां रै चे रै माथै उदासी री छैयां हुसी, तो मां रो सौ घड़ा घी ढुळ जासी। अर जे कदे थां रै साचे ई चिण–पिण हु जावै फेर तो ईं रा अन्न–पाणी छूट जावै, नींद हराम हुजावै।''

टैसीटोरी रै गुरु रो कथन, ''मनै भरोसो है कै डॉ. टैसीटोरी आप री लगन, ईमानदारी अर तेज बुधी रै परताप आपां रै देस रो नांव ऊजळो करसी अर अखय कीर्ति कमाय'र आप रो नांव जुगां–जुगांतरां तईं दुनियां में अमर करसी।''

सी.पी. बोल्यो, ''..... पण थांरी कमी पूरण में म्हूं कियां सिमरथ हुसूं? थां री मधरी मुळक तो बैरी नै ई बस में करण आळी है, जिण में मां रा तो थे साख्यात प्राण हो। थां री अळगाई में म्हां रा सगळा जतन भी मां रै डील नै कायम राखण जोग हुसी, मनै इण में संसै है।''

आं दोनूं संवादां में टैसीटोरी री विद्वत्ता, परिवार साथै लगाव, लोगां सूं उण रो ब्योहार आद सगळी बातां रो बेरो लागै। नमूनै सारु अेक संवाद और पेस है जिण में टैसीटोरी रै चरित्र पर कितरों गैरो प्रकास पड़ै कै बो आप रै काम सारू कितरौ समर्पित है–

''पण डोरा! म्हांरी निजर में संसार रै रुपिये–पईसै री कोई कीमत कोनी। ईमानदारी सूं पेट भरणियै कंगाल नै म्हूँ अेक बेईमान लखपती सूं लाख आछो समझूं हूँ। फेर खास बात आ है कै मनै तो पईसै री लालसा भी कोनी। म्हें कदै इस्या सपना भी को लिया नीं कै म्हां रै कनै लाखूं रिपिया हुवै, म्हांरी कंपन्यां चालै, बां में हजारूं नौकर काम करै। म्हांरै सपना रो देस तो भारत है।''

उद्देस्य परक संवाद :– लेखक अैड़ै संवादा री रचणा भी करै जिण में उण रै उद्देस्य री झलक मिळै–

''डोरोथी सुण! ..... राजस्थान प्रान्त में डिंगल भासा में अणगिणती रा ग्रंथ रतन धरती रै गरभ में पड़या है, अथवा रेत में रगदोळीजै है। अेक लिखार अथवा कवि रै हाथ लिख्यै ग्रन्थ री रिच्छया करणी कवि नै मरण सूं बचावण रै बराबर है, अर माल हुँता थकां ग्रंथ रो नास हुवण देवणो कवि री हित्या बराबर है.....''

इणी भंत मालसी कैवै, ''राजस्थान री धोरां रो धरती में बूरेड़ै अमोलख रतनां नै बारे काढ'र प्रकास में ल्यावणियों तूं है, तूं है, तूं रात दिन जतन कर। जे तैं ओ काम अधूरो छोड़ दियो तो फेर पाछो कद सरु करयो जासी, आ अनिस्चित है। तूं राजस्थान रै धोरां रो धोरी है, तूं धोरां रो धोरी है।''

हालंकि उपन्यास रै मुख उद्देस्य साथै–साथै और भी कई उद्देस्य हुवै जिकां नै लेखक मौके मुजब प्रकट करै।

जिज्ञासापरक संवाद :– रचनाकार अैड़ै संवादां री रचना भी करै जिण सूं पाठक री जिज्ञासा

बणी रैवै। अेक जागां मालसी टैसीटोरी नै पल्लू बाबत बतावै, ''पल्लू कोई छानी जग्यां है? म्हारो दादाजी कैया करता कै पुराणै जमानै में पल्लू बड़ी भारी राजधानी ही अर अठै बड़ा–बड़ा राजा रैंवता। राजावां रा जंगी किला चिणयोड़ा हा अर बां नै कोई जीत नईं सकतो। जिका जीतण रै मनसूबै सूं जांवता बै पाछा नीं आंवता इण कारण ओ अेक ओखाणो भी चावौ है–

का गिरगी पल्लू पापणी, का गिरग्यो कोट कलूर।
जावै सो आवै नईं, ओ भी बड़ो फितूर।।

अे ओळयां पढ्यां पछै अेक जिज्ञासु पाठक रै मन में जिज्ञासा क्यूं कोनी पैदा हुवैली? इण भांत संवाद कला री दीठ सूं 'धोरां रो धोरी' अेक सफल उपन्यास है।

6.4.5 भासा–सैली

किणी भी रचणा री भासा सैली बा ई सरावण जोग हुवै जिकी सरल पण आप रो उद्देस्य कथन में सफल हुवै। भासा भावां रै लारै चालणी (अनुगामिनी) चायजै। कबीर नै आप री भासा में जैड़ो सबद ठीक लाग्यो उण रो प्रयोग कर लियो इणीज कारण अध्यात्म अर हठ जोग जैड़ै कठण विसय नै भी अभिव्यक्त करणै में बो सफल हुयो। भासा री सरलता सूं म्हांरो ओ ई ज मतलब है कै लेखक विसय वस्तु रै मुजब ई भासा रो प्रयोग करै पण बा आम जन तांई ग्राह्य होणी चायजै। इण दीठ सूं 'धोरां रो धोरी' री भासा आम बोलचाल री भासा है। लेखक बां सबदां रो प्रयोग करणै में कतई कोनी झिझकै जिका बीजी भासावां रा तो है पण राजस्थानी में घड़ल्लै सूं बोल्या जावै। जन–जन री जबान माथै अैड़ा सबद इण भांत–चढ़ैड़ा है कै आम आदमी उणां नै राजस्थानी सबद मान'र ई प्रयोग करै।

'धोरां रो धोरी' री भासा में अेक प्रवाह अर लय है। कठैई कोनी लागै कै भासा रै कारण भावां में अवरोध पैदा हुवै या समझणै में कोई अड़चन आवै। भासा प्रसाद गुण सूं सम्पन्न है। भासा में कितरीं सरलता अर अभिव्यक्ति री तागत है, अेक नमूनो–

''डॉक्टर! डॉक्टर!! तूं म्हां रै हिवड़ै री ठंड है, म्हांरै जोबन नै ताजो राखण आळी बरफ है। भोर री ठंड मिट्यां आळै में गरम देसां में ज्यूं सूरज री ताती किरणां सूं बिगस्योड़ी गुलाब भी झुळस जावै, इणी तरै थां रो विजोग म्हांरै खातर सूरज री तीखी किरण है जिण री आंच सूं बळ'र भसमी री ढेरी हु जासी। टैसी! अर जे तूं पछै आँसुआं री नदी भी बैवाय देसी, तो म्हांरी आत्मा में लाटां लेंवती लपटां तो बुझै कोनी। थां रा आँसूं बां में घी रो काम करसी– बै दूणी–चौगुणी हुय'र अकास रै पल्लो झालसी।''

इण भांत भासा री दीठ सूं धोरां रो धोरी अेक सोवणो अर सफल उपन्यास है।

सैली– सैली लेखक री पिछाण हुवै। उपन्यास जैड़ी बड़ी रचना में लेखक न्यारी–न्यारी सैलियां रो प्रयोग कर आप री रचना नै पूरणता देवै। बो जठै जिकी सैली नै ठीक समझै या कथानक री मांग देखै, उणी सैली रो प्रयोग कर लेवै। इण उपन्यास में नीचै लिखेड़ी सैलियां रो प्रयोग हुयो है–

(1) संवाद सैली (2) भासण सैली (3) वरणाव सैली (4) पत्र सैली आद।

(1) संवाद सैली :– पात्रां री आपसी बातचीत सूं जद कथानक आगै बधै उण नै संवाद सैली कैयो जावै। इण उपन्यास में संवाद सैली रो भरपूर अर सफलता साथै उपयोग हुयो है।

(2) भासण सैली : हालांकि भासण सैली, वरणाव सैली अर संवाद सैली रो मिल्यो–जुल्यौ

रूप है। संवाद तो छोटा हुवै पण भासण री कोई सीमा कोनी हुवै। भासण में लेखक सुतंतर हुवै। जिकी बात भासण सैली में कैयी जा सकै बा रंगत संवादां रै माध्यम सूं कोनी आ सकै। इण उपन्यास में गुरामी ट्रेपिन अर पैवोलिनी रा भासण भी अैड़ा है।

(3) **वरणाव सैली** :– वरणाव सैली में लेखक ई बोलै। बो पात्रां री मनगत भी आप कानी सूं लिखै। लेखक री नजर जितरी पैनी अर विसय री गैराई में जाणै री खिमता हुवैली उतरो ई वरणाव रोचक अर प्रभावी हुवैलो। इण उपन्यास में लेखका जग्यां–जग्यां इण सैली रो प्रयोग कर्‌यो है। टैसीटोरी जद पैली बार भारत में मुंबई बंदरगाह पर उतर्‌यो तो उण भारत भूमि री माटी आप रै माथै रै लगाई पछै मुंबई रा दरसण कर्‌या। इण मुजब लेखक कितरों सांतरो वरणाव कर्‌यो है–

भारत री सगळां सूं साफ–सुथरी अर सोवणी नगरी में घूम्यां सूं डॉक्टर रो काळजो गदगद हुयग्यो। आज जाणै कंगलो कुबेर बणग्यो! ठोठ पटींदर बिस्पत बणग्यो, गूंगै दड़ाछंट भासण देय'र सभा जीत ली हुवै, बाळपणै में अनाथ हुयेड़ै टाबर रा मां–बाप जाणै पाछा लाधग्या हुवै, इण सूं भी घणो हरख डाक्टर टैसीटोरी रै हिरदै में कैबो आप रै सपनां रै देस भारत में सांचाणी आयग्यो। उण भारत बाबत इस्कूल रै दिनां में बातां करण लागग्यो हो, जिण में लोगां री सै'रां री, गां वां री, बो घरे बैठो कळपणा करण लागग्यो हो, उण देस में आज सैं दे ही पूग'र बीं रै मन में जित्ती खुसी हुई, बा कियां बखाणीजै।

(4) **पत्र–सैली** :– डोरोथी इण उपन्यास में अेकर सामी आवै पछै टैसीटोरी रो 'करमखेत' है अर उण रा संघर्ष है, पण प्रेम रो बो बूंटो जिको नेपल्स में उगायो हो उण रो बिगसाव दिखाणै तांईं पत्र–सैली ही सटीक ही। हजारूं मील दूर बैठ्‌या प्रेमी आप रै सुख–दुःख रो हाल पत्रां रै माध्यम सूं कै सकता। लेखक इण उपन्यास में पत्र–सैली रो सफलता साथै प्रयोग कर्‌यो है।

इण भांत 'धोरां रो धोरी' राजस्थानी रो प्रारम्भिक उपन्यास होतां थकां भी भासा अर सैली री दीठ सूं अेक अनूठो उपन्यास है।

6.4.6 उद्देस्य

हरेक रचना लारै लेखक रो अेक उद्देस्य हुवै पण साथै ई रचना बहूद्देस्यीय भी हुवै। उपन्यास, जिण में मोकळा पात्र हुवै, उणां रो जीवण दरसण, रहन–सहन, बोलचाल, सोच, सगळो कीं अळगो हुवै। इणीज कारण उणां रा उद्देस्य भी न्यारा–न्यारा हुवै। कदे–कदे लेखक आप रो उद्देस्य भूमिका रै बहानै प्रकट भी कर देवै पण कदै कथानक रै माध्यम सूं भी प्रकट करै। 'घर बिद री' (भूमिका) में लेखक आप रो उद्देस्य बतांवतो कैवै, ''राजस्थान अर राजस्थानी रो इसो कोई प्रेमी सायद ई हुवै जिको महा मानव टैसीटोरी री जीवणी री जाणकारी राख'र उणां रै तांईं सरधा नईं राखतो हुवै। म्हांरो माथो भी टैसीटोरी री निरमळ कीरत आगै आपै ई लुळग्यो। मन में विचार आयो– इटली में जनम लेय नै जिकै आदमी राजस्थानी खातर आप री अमोलख सेवावां चढ़ाई, उण री यादगार थिर राखण सारु आपां जित्तो भी काम करां, बो थोड़ो है।'' इण ओळयां में लेखक ओ जीवणी परक उपन्यास लिखणै रो उद्देस्य बतायो है पण इण रै साथै–साथै उपन्यास रा कई और उद्देस्य भी है।

हजारूं मील दूर सूं आय'र अेक विदेसी जद राजस्थानी मायड़ भासा तांईं इत्तो काम कर सकै तो इण माटी रा सपूत अैड़ी हिम्मत क्यूं कोनी करै? बां नै आ सीधी चुनौती है। मायड़ भासा

खातर फेर कोई अैड़ो प्रेम दिखाय'र हिम्मत करै तो आज भी हजारुं ग्रंथां री पांडुलिपियाँ पोथीखानां में पड़ी किणी टैसीटोरी रो इंतजार करै। इण भासा रै ग्रंथां रो, इण भासा रो उद्धार हुवै, लेखक रै मन में आ पीड़ है। इणींज कारण बो आप री सरधा लेखक तांईं परगट करै जिणसूं दूजै लेखकां नै भी कोई प्रेरणा मिळै।

राजस्थान री संस्कृति जूनी अर अनूठी है। अठै रै हरेक धोरियै नीचै कोई ना कोई इतिहास दबेड़ो है अगर कोई टैसीटोरी सरिखो खोजी हुवै तो और भी नूंवां–नूंवां रतन सामी आ सकै। जिकै दिनां आज री भांत नां इतरा संचार रा साधन हो, नां इतरीं सुविधावां, अेक मिनख हजारूं कोसां दूर सूं राजस्थानी भासा अर संस्कृति रो उद्धार करणै तांईं आयो। आज भी अैड़ै लगनसील, करमठ, विद्याव्यसनी, त्यागी, समर्पित अर मेहनती मिनख री जरूरत है। ओ भी इण उपन्यास रो उद्देस्य परगट हुवै।

पुराणै जमानै में लोग अेक दूजै सूं कितरो हेत राखता ओ भी इण में दरसायो गयो है। राजस्थान री पुराणी रीत, अठै रा रिवाज, लोकगीत, लोकाचार आद रै माध्यम सूं बीसवीं सदी रै सरुआत रै राजस्थान री झांकी दिखाई गई है। जात–पांत रै नाम पर लोग किण भांत अेक जुट हो ज्यावंता। पिछड़ैपण, अणपढता रा चितराम भी सामी आवै।

टैसीटोरी री जीवणी रै रूप में ओ उपन्यास कितरैं जथारथ नै परगट कर सक्यो है बो लेखक 'घर बिद री' में कै चुक्यो है पण इण नै भणनै सूं पाठक प्रेरित जरूर हुवै आईज इण उपन्यास री सफलता है। 'धोरां रो धोरी' सफल उपन्यासां री कड़ी में जीवणी परक उपन्यास है।

6.4.7 सिरै नांव

सिरै नांव भी उपन्यास रो महताऊ बिन्दु हुवै। किणी रचना रै सिरै नांव री परख आं बिन्दुआं रै आधार पर करी जा सकै–

1. छोटो अर सारगर्भित
2. कथानक रो केन्द्र बिन्दु
3. प्रतीकात्मक अर आकर्षक
4. जिज्ञासा पूरण
5. उद्देस्य पूरण।

'धोरां रो धोरी' सिरै नांव इण बिन्दुआं पर खरो उतरै कै नईं बिन्दु वार चर्चा इण भांत है–

(1) **छोटो अर सारगर्भित** :– 'धोरां रो धोरी' दो सबदां रो सिरै नांव है। धोरा तो राजस्थान साथै जुड़ेड़ा ई है पण धोरी रो अठै कांई मतलब हो सकै? 'धोरी' रो कोसगत अरथ है 'बळद' के मुखिया, अगुआ, प्रधान, भार उठावण वाळो। आं सबदां रो अरथाव करता कैय सकां धोरां रो मुखिया या अगुआ या धोरां रो प्रधान या धोरां रो भार उठावण वाळो। सीधो–सीधो ओ अरथ भी कैवां कै धोरां रो बळद! तो बळद कांई काम करै? बो धोरां नै चीर'र धरती नै उपजाऊ बणावै। 'भार उठावण वाळो' कैवां तो ओ सिरै नांव सारथक है। इण धोरां में अनेक साहित्य रतन दबेड़ा हा उणां नै प्रकास में ल्यावणै रो भार उठावणियो ई धोरां रो धोरी कैवाय सकै। इण अरथ में ओ सिरै नांव छोटो भी है अर सारगर्भित भी। आपां कै सकां कै ओ अेक सफल सिरै नांव है।

(2) **कथानक रो केन्द्र बिन्दु** – 'धोरां रो धोरी' कुण? अर्थात् अेल.पी. टैसीटोरी। ओ अरथाव

होंवतां ई उपन्यास रो सगळो कथानक समझ में आ जावै कै ओ उपन्यास अेल.पी. टैसीटोरी री जिनगाणी नै केन्द्र में राख'र रच्योगयो है। टैसीटोरी राजस्थान में आय'र जिण मेहनत अर लगन सूं अठै रै जूनै साहित्य नै ढूंढणै री, लोक गीतां, लोक कलावां नै बचावणै री अथक कोसीस करी। इण कारण ओ 'शीर्षक' कथानक रो केन्द्र बिन्दु है।

(3) **प्रतीकात्मक अर 'आकर्षक'** :– 'धोरां रो धोरी' प्रतीकात्मक अर साथै ई आकर्षक सिरै नांव है। इण सिरै नांव नै भणतां ई पाठक सोचणै पर मजबूर हुवै कै धोरा अर धोरी सबद किण–किण रा प्रतीक है। सीधो सबदाऊ अरथ करां तो धोरा बाळू रेत रै ऊँचै–ऊचै टीबां नै कैवै अर धोरी बळद नै। बळद जिको धोरां नै सारथक बणावै। 'धोरां रो धोरी' सबद इण बात रो प्रतीक है कै इण धोरां में अगुआ कुण है? धोरा अगर साहित कला अर संस्क्रति रा प्रतीक है तो धोरी बिण अमोल विरासत नै बचावण वाळै रो।

(4) **जिज्ञासा भरियो** :– 'धोरां रो धोरी' जिज्ञासापूरण सिरै नांव है। इण रो अर्थ समझ में आंवतां ई पाठक ओ जाणणै तांईं तत्पर हो ज्यावै कै इण रै कथानक सूं परिचै कर्‌यो जावै। टैसीटोरी ही अगर 'धोरां रो धोरी' है तो बिण अैड़ा कांई काम कर्‌या है जिण रै कारण बिण नै आ इज्जत दीवी है।

(5) **उद्देस्य लियोड़ो** :– लेखक जद भी आप री रचना रो नांव देवै तो बो खूब सोच–विचार करै क्यूं कै नांव अेक भांत बड़ रै बीज भांत हुवै। जिण भांत बड़ रै छोटै सै बीज में महान दरखत री सगळी संभावनावां विद्यमान हुवै उणी भांत सिरै नांव में भी कथानक बाबत सगळी संभावनावां हुवै। नांव भणतां ई पाठक रै ओ समझ में आ ज्याणो चायजै कै अैड़ो सिरै नांव राखणै रो उद्देस्य कांई है? इण बिन्दु पर विचार करतां थकां आपां कैय सकां कै 'धोरां रो धोरी' अेक उद्देस्यपूरण सिरै नांव है। आं दो सबदां में गै'री व्यंजना है।

इण भांत अलग–अलग बिन्दुआं पर विचार कर्‌यां पछै ओ कैयो जा सकै कै 'धोरां रो धोरी' अेक ओपतो सिरै नांव है।

6.5 सारांस

'धोरां रो धोरी' उपन्यास रै तात्विक विवेचन पछै आप भली–भांत समझग्या हुवोला कै ओ उपन्यास राजस्थानी भासा रो महताऊ उपन्यास है। 'जीवणी परक' उपन्यासां री पैली कड़ी रै रूप में 'धोरां रो धोरी' इटली निवासी अेल.पी. टैसीटोरी री जीवण गाथा प्रस्तुत करै। लेखक इण उपन्यास अर टैसीटोरी री जीवणी नै जथारथ रूप देणै तांईं इटली निवासी कुंवारी लिकनोवस्की सूं पत्राचार कर तथ्य भेळा कर्‌या। अेल.पी. टैसीटोरी इटली रै उदीणै नगर रो रैवण वाळो हो। बचपन सूं ई बो मेहनती, लगन सील अर धुन रो पक्को हो। भारत अर राजस्थान बाबत पोथियां भणणै सूं मेंण में भारत आणै री ललक जागी। उण रामायण अर रामचरित मानस रो तुलनात्मक अध्ययन कर बतायो कै रामचरित मानस पर रामायण रो कितरो असर है? पी–अेच.डी. री उपाधि उण बिना गुरु रै ई प्राप्त कर लीवी। टैसीटोरी इटैलियन, अंग्रेजी, फ्रैंच साथै कई भारतीय भासावां रो मर्मज्ञ हो। भारत आय'र उण राजस्थान में बीकानेर नै आप री करमभोम बणाई। अनेक पुराणे ग्रंथां रो उद्धार कर्‌यो। लोक कलावां अर लोकगीतां बारै जाणकारी भेळी करी। पुरातत्त्व रै महत्त्व री चीजां भेळी करी। बां नै राखणै तांईं महाराजा गंगासिंह संग्रहालय बणावणै री घोसणा करी। टैसीटोरी री प्रेमिका रो नांव डोरोथी हो पण आप री व्यस्ततावां कारण वो कदेई दुबारा उण सूं नीं मिळ सक्यो। टैसीटोरी उदार अर विद्यानुरागी मिनख हो। उण आप री सगळी जिनगाणी भणाई–लिखाई में खपादी। सिर्फ बत्तीस बरसां री उमर में सुरग सिधारग्यो। लेखक बड़ै

भावुक मन सूं सिरधांजली देणै तांई इण उपन्यास री रचना करी है। इण रो उद्देस्य उण महामानव नै सिरधांजली देणै रै साथै–साथै मायड़ भासा अर राजस्थान री कला अर संस्कृति बाबत पाठकां रै मन में प्रेम पैदा करणो है। औपनयासिक तत्त्वां रो ध्यान राखतां थकां लेखक श्री लाल नथमल जोसी आपरौ उद्देस्य पूरो करणै में सफल हुया है।

6.6 अभ्यास रा सवाल

(1) औपन्यासिक तत्त्वां रै आधार पर 'धोरां रो धोरी' उपन्यास री समीक्षा करौ।

(2) 'धोरां रो धोरी' उपन्यास रो नायक कुण है? उण रै चरित्र री विसेसतावां बताओ।

(3) 'धोरां रो धोरी' उपन्यास रो उद्देस्य कांई है? आप रै सबदां में लिखो।

(4) 'धोरां रो धोरी' उपन्यास रै सिरै नांव री समीक्षा करो।

(5) 'धोरां रो धोरी' री भासा–सैली पर विचार प्रकट करो।

6.7 उपयोगी पोथियां

(1) उपन्यास का शिल्प – डॉ. प्रेमशंकर

(2) रचना अेक संवाद है– डॉ. राधेश्याम शर्मा

(3) बगत री बारहखड़ी– डॉ. अर्जुनदेव चारण

(4) आलोचना री आँख सूं– डॉ. कुन्दन माली

(5) धोरां रो धोरी– श्री लाल नथमल जोशी

(6) राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याण सिंह शेखावत

इकाई–7

आधुनिक राजस्थानी कहाणी–उद्‌भव अर विकास

इकाई री रूप रेखा :

7.0 उद्‌देस्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 राजस्थानी कहाणी परम्परा

7.3 आजादी रै पछै री राजस्थानी कहाणी–पैलौ–चरण

7.4 आजादी रै पछै आधुनिक राजस्थानी कहाणी रौ विकास

7.5 तीजौ चरण

7.6 सारांस

7.7 अभ्यास सारू सवाल

7.8 संदर्भ ग्रन्थ

7.0 उद्‌देस्य

इण इकाई में आप राजस्थानी कहाणी रै उद्‌भव और विकास रौ अध्ययन करौला। इण इकाई नै पढियां पछै आप राजस्थानी कहाणी रै उद्‌भव री जाणकारी प्राप्त कर सकौला –

- राजस्थानी कहाणी री परम्परा सूं परिचित हो सकौला।
- राजस्थानी कहाणी–परम्परा रा न्यारा–न्यारा चरणां री जाणकारी प्राप्त कर सकौला।
- इण इकाई में आप राजस्थानी कहाणीकारां री कहाणियां रौ परिचय प्राप्त कर सकौला।
- इण इकाई में आप आजादी रै पछै री राजस्थानी कहाणी रै रूप में आवतै बदळाव री जाणकारी ले सकौला।

7.1 प्रस्तावना

कहाणी बीत्ती ई जूनी है जित्रौ मिनख है। मिनखाजूण री आदिम अवस्था में ई कहाणी रौ सरूप लाध ौ है। कहाणी मिनख रै मन री पुड़तां खोल परगट होवण वाळी विधा है। जद सूं मिनख आपरै मन री बात दूजै सूं कैवण री तेवड़ी तद सूं कहाणी रौ प्रचलन है। आपणा जुगां जूना ग्रन्थां मायं देवतावां री अस्तुतियां रै साथै कीं छोटी–छोटी कथावां ई मिळै, वां कथावां नै ईज कहाणी रौ जूनौ रूप मान सकां हां। कहाणी अेके कांनी मिनख रौ मनोरंजन करै तौ साथै–साथै उणनै मारग ई बतावै। उणनै सीख देवण रौ काम ई करै। जूना कथा रूप 'हितोपदेस' अर 'पंचतन्तर' उणरा परतख प्रमाण है। संस्कृत साहित्य में कथा अर आख्यायिका दो सबदां रौ प्रयोग मिळै है अर साहित्य रा विद्वान वां दोनूं रूपां री विवेचना ई करी है पण आधुनिक साहित्य में कहाणी रूप परगट होवण वाळी विधा नै विद्वान लोग आथूणै जगत रै साहित्य री देन मानै है। संस्कृत साहित्य में गुणाढ्‌य रचित 'वृहत्कथा कथा' खेतर रौ सैं सूं महताऊ ग्रंथ मानीजियौ है। आज तौ वो ग्रन्थ मिळै कोनी पण उणरा प्रमाण सोमदेव रचित 'कथा सरित्सागर' अर कवि बाण रै 'हर्षचरित्' अर क्षेमेन्द्र री 'वृहत्कथामंजरी' में देखण नै मिळै है। आं रचनावा रै पछै लिखीजण वाळी रचनावां मांय 'वैताल–पंच विंशतिका', 'सिंहासन द्वात्रिंशिका', 'पंचतंत्र' अर 'हितोपदेश' प्रमुख है।

संस्कृत सूं प्राकृत अर प्राकृत सूं अपभ्रंस साहित्य परम्परा रौ हिस्सौ बणती कहाणी राजस्थानी साहित्य लग पूगी है।

7.2 राजस्थानी कहाणी परम्परा

राजस्थानी भासा रौ इतिहास घणो जूनौ है। नवमीं, दसमीं सदी सूं इण भासा रौ रूप साहित्य में परगट होवण लाग गियौ हौ। सरू आती दौर में इण भासा में साहित्य रौ काव्य रूप इज दैखण नै मिळै है पण चवदवीं सदी सूं राजस्थानी साहित्य में गद्य रौ आर्विभाव मानियौ जावै है। इण कालखण्ड में अलेखूं पद्यात्मक अर गद्यात्मक रचनावां लिखीजी। 'माधवानल काम–कंदला', 'सिंहासन बत्तीसी' अर 'ढोला मारू रा दूहा' जैड़ी पद्य रूप लिखीजियोड़ी कथावां राजस्थानी साहित्य री सबळी ओळख करावै है। चवदवीं सदी सूं राजस्थानी भासा में गद्य रा कई रूप परगट होवण लागा जकां में प्रमुख हा – 1. बात 2. ख्यात 3. विगत 4. वारता

'दवावैत' अर 'वचनिका' गद्य–पद्य मिश्रित रूप लिखिजियोड़ी रचनावां है। इणरै साथै–साथै 'टीका', 'टब्बा' अर 'बालावबोध' जैड़ी साहित्यिक विधावां ई राजस्थानी भासा में खूब लिखीजी है।

'बात' राजस्थानी कहाणी रौ जूनौ रूप है। 'ख्यात' में अठां रौ इतियास लिपिबद्ध करीजियौ है अर 'विगत' में इतिहास रै साथै सामाजिक, सांस्कृतिक अर आर्थिक परिवेस रौ वरणन अर विवरण प्रस्तुत करीजियौ है। राजस्थानी साहित्य में 'बात' री परम्परा घणी लूंठी है। आं बातां में तत्कालीन जीवण रा सगळा रंग बिखरियोड़ा है। बात साहित्य नै मौटै रूप सूं नीचै लिखिया मुजब बांट सकां हां –

1. अेतिहासिक
2. पौराणिक
3. काल्पनिक
4. हास्य
5. नीति
6. प्रेम
7. वीरता

1. अेतिहासिक दीठ सूं लिखियौड़ी बातां में पाबूजी री बात, राव अमरसिंह री बात, रावरिड़मल री बात इत्यादि उल्लेखजोग है।
2. पौराणिक दीठ सूं लिखियौड़ी बातां में 'सोमवती अमावस री बात', 'दसा माता री बात', 'बात गिणगौर री', 'रिसी पंचमी री बात' इत्याद कथावां गिणाई जाय सकै है। अै बातां घणकरी धार्मिक कथावां है।
3. काल्पनिक दीठ सूं राजस्थानी बात साहित्य में अलेखूं कथावां लिसीजी। आं कथावां में तत्कालीन जीवण रा न्यारा–न्यारा रूप देखण नै मिळै है।
4. हास्य बातां में 'ठगां री बातां', 'खापरया् चार री बात' जैड़ी कथावां है।
5. नीति री बातां में 'चोबौली री बात' जैड़ी बातां देखण नै मिळै है।
6. प्रेम री बातां में 'सयणी–बीझा', 'नागजी नागवन्ती', 'जेठवा ऊजळी', 'मूमल महेन्द्रा' री बातां आज ई राजस्थानी समाज में घणी चावी है अर घणै चाव सूं आज ई गांवा में अै घणी बातां कैइजै अर सूणीजै है।

7. वीरता री बातां में राजस्थानी समाज रै वीर नायकां री बातां देखण नै मिळै है। राजस्थान अैड़ो प्रदेस है जठै री माटी रै कण–कण में इण धरती सारू मरण वाळा वीरां रा प्रमाण मिळै है। सरणागत री रिच्छा करता या आपरै वचन रौ पालन करतां, मरण वाळां वीरां नै अठै रौ समाज मान देवण खातर बात रूप आपरी स्मृति में स्थाई वास दियौ है।

आ बातां में घटनावां रौ प्राधान्य है अर वरणण री अधिकता है। अै जूनी बातां इज राजस्थानी कहाणी रौ आधुनिक उणियारौ घड़ण में आपरौ लूंठौ योगदान दियौ है। आं बातां नै कैवणियौ अर सुणणियौ समाज रात–रात भर आ बातां रौ रसास्वादन करतौ। आं बातां री मौखिक परम्परा इज उठै घणी रैई है–छापैरवानै रौ आविस्कार होयां कई बातां छपनै आपरै पाठकां तांई पूगी है पण उण सूं पैली तौ मौखिक परम्परा रौ इज बोलबालौ हौ। केई लोग आं बातां नै लिपिबद्ध करण री कोसिस ई करी है। अैड़ा ग्रंथ आज हेमांणी रूप सांम्ही आवै।

राजस्थानी कहाणी री सरूआत –

बीसवै सइकै में राजस्थानी गद्य साहित्य में ई बदळाव आवणौ सरू होयौ। परम्परा सूं चालती विधावां री ठौड़ साहित्य रा नुवां रूप समाज में परगट होवण लागा। अंगरेजी राज रै कारण पूरै समाज री मानसिकता में बदळाव रा अैनाणं अठै देखण नै मिळै जिणसूं साहित्यकार ई अछूतौ नहीं रैयौ। गद्य री परम्परागत विधावां रै साथै कहाणी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक, जैड़ी विधावां रौ लेखन राजस्थानी भासा में सरू हुयो। छापैखानै रै चलण सूं पत्र–पत्रिकावां छपण लागी। समाज श्रव्य परम्परा सूं पाठ्य परम्परा कानी पावंडा भरण लागौ। इण काम में प्रवासी राजस्थानियां रौ योगदान उल्लेखजोग है। सामाजिक विसंगतियां अर कुरीतियां नै हटावण कांनी मिनखां रौ ध्यान गियौ अर केई संस्थावां इण काम रै पेटे सक्रिय होई। अै संस्थावां आपरै इण काम नै फलीभूत करण सारूं पत्र–पत्रिकावां निकाळी। इणी सारू आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य रौ सरूआती रूप सामाजिक कुरीतियां माथै चोट करण रौ रैयौ है। इण क्रम में बराड़ रै धामण गांव सूं 'मारवाड़ी हितकारक' पत्र अर मुंबई सूं 'मारवाड़ी मित्र' रौ प्रकासन सरू हायौ। इणी क्रम में जयनारायण व्यास 'आगीवांण' पत्र निकाळणौ सरू करियौ। राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कोलकाता सूं आदिकालीन अर मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य नै लोगां सांम्ही लावण रै उद्देस्य सूं 'राजस्थान' नाम री सोध पत्रिका सरू करी जिणरौ सम्पादन प्रसिद्ध इतिहासकार किशोर सिंह 'वार्हस्पत्य' नै सूंपियौ। किशोरसिंह 'वार्हस्पत्य' 'अखिल भारतीय चारण सम्मेलन' कानी सूं 'चारण पत्रिका' ई निकाळण लागा। ईंणी परम्परा नै आगे बधावरण सारूं कीं साहित्यिक संस्थावां ई इण काम में जुड़ी। बीकानेर री सार्दुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट कांनी सूं 'राजस्थान भारती' रौ प्रकासन सरू होयौ तौ राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर सूं 'शोध पत्रिका' छपण लागी। बिड़ला एजुकेशन ट्रस्ट सूं 'मरू भारती' राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ (झुन्झुनूं) सूं 'वरदा' पत्रिका छपण लागी।

सोध री आं पत्रिकावां में घणकरी सामग्री तौ सोध सूं संबंधित ई होवती ही पण उणरै साथै ही साहित्य री नुंवी विधा रै रूप में कहाणियां ई छपण लागगी ही। 'राजस्थान भारती' अर 'राजस्थानी' रा केई अंकां मांय श्री मुरलीधर व्यास, श्रीचन्दराय अर भंवरलाल नाहटा री कहाणियां देखण नै मिळै है। आं कहाणियां सूं ई आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरूआत मान सकां हा। राजस्थानी कथा साहित्य री सरूआत श्री शिवचन्द भरतिया रै राजस्थानी उपन्यास 'कनक सुन्दर' सूं मानी जावै है। पण राजस्थानी कहाणी खेतर में सन् 1920 सूं 1930 रै बिच्चै आगीवाण मुरलीधर व्यास, श्रीचन्द राय अर भंवरलाल नाहटा रा नाम गिणावण जोग है। आं कहाणियां में मूलतः राजस्थानी समाज रो तत्कालीन सरूप रौ चित्रण होवतौ हौ। कहाणीकार री दीठ सामाजिक कुरीतियां माथै चोट करण रौ कोई मोको नहीं छौडणी चावती ही। इणी सारूं सरूआती दौर में सामाजिक परिस्थितियां मायं फंसियोड़ै समाज अर उण परिस्थिति सूं लड़तै चरित्रां रा चितरांम खींचीजिया। कहाणीकार री भासा सीधी अर सहज होवती। वे आपरी बात नै पुख्ता

ढंग सूं कैवण सारू कहावतां अर मुहावरां रा ओपता प्रयोग करता हा।

सरूआती कहाणी लेखन –

आधुनिक राजस्थानी री पैली कहाणी कलकत्ते (अबै कोलकाता) सूं निकळण वाळी हिन्दी मासिक पत्रिका 'वैश्योपकारक' में श्री शिवचन्द भरतिया री 'विश्रान्त प्रवासी' मानीजै है। आ कहाणी विक्रम संवत् 1961 में छपी, इणरै पछै श्री गुलाबचन्द नागौरी, श्री शिवनारायण तोषनीवाल अर पं. छोटेराम जैड़ा रचनाकार री कहाणियां सांम्ही आई। अै कहांणियां तत्कालीन राजस्थानी समाज री सामाजिक कुरीतियां रै केन्द्रीय भाव नै लिया ऊभी ही, इण सारू आरै मांय सुधारवादी सुर प्रमुख हौ। अै कहाणीकार राजस्थानी समाज में व्याप्त किणी सामाजिक समस्या कांनी आपरै पाठकां रौ ध्यान खींचण री कोसिस में लागोड़ा है। इणी कारण सूं अैड़ी कहाणियां री बणगट तौ जथारथा परिवेस री होवती पण आखिर में वे अेक आदर्सवादी थिति आपरै पाठकां साम्ही प्रस्तुत करती ही। अेड़ी कहाणियां में श्री गुलाबचन्द नागौरी री 'बडी तीज' अर 'बेटी की बिकरी' तथा 'बहू की खरीदी' अर श्री शिवनारायण तोषनीवाल री कहाण्यिां 'विद्या परं दैवतम्' अर 'स्त्री शिक्षण को ओनामा' रा नाम जिणावण जोग है।

अै कहाणियां जूनी राजस्थानी बातां सूं कैई अरथां में न्यारी ही। आं रै मांय नीं तौ किणी अलौकिक घटना या अलौकिक पात्र रौ चित्रण है अर न अै कहाणियां किणी राजा या राजकुंवर री बात कैवती ही। अै तो साधारण चरित्रां रै सुभाव नै, बांरी अबखायां अर अबखायां सूं जूंझती जूंण नै बोलचाल री भासा में प्रस्तुत करण री कोसीस करै है। इणी दौर में कीं कहाणीकार अैड़ी कहाणियां ई लिखी जिणमें फगत राजस्थानी पात्रां रा आपसी संवाद राजस्थानी भासा में लिखीजियौड़ा हा। अैड़ी कहाणियां में भगवती प्रसाद दारूका री कहाणियां–'एक मारवाड़ी की घटना' (वि.सं. 1972) अर 'एक मारवाड़ी की बात' (वि. सं. 1985) रा नाम गिणवाया जा सकै है। ईंस वास्तै औ कयौ जा सकै कै आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरूआत प्रवासी राजस्थानी साहित्यकारां रै सैयोग सूं होई अर उणी धारा नै पछै राजस्थानी में रैवण वाळा राजस्थानी साहित्यकार आगै बधाई। इणामें श्री नानूराम सांस्कर्ता, श्री बैजनाथ पंवार, श्री अन्नाराम सुदामा, श्री नृसिंह राजपुरोहित रा नाम गिणावण जोग है।

आधुनिक राजस्थानी कहाणी परम्परा में दो धारावां न्यारी–न्यारी देखी जा सकै है। अेक धारा तौ सुधारवादी भावना लियां दीखै अर दूजी धारा में तत्कालीन सामाजिक जीवण में आवता बदळाव अर बां बदळावां रै कारण जीवण मूल्यां माथै पड़तै प्रभाव नै परगट करण री कोसीस दीखै। पैली धारा री कहाणियां नै आदर्सवादी कहाणियां कैय सकां तौ दूजी धारा री कहाणियां री ओळखाण जथारथवादी कहाणियां रै नाम सूं कर सकां।

7.3 आजादी रै पछै री राजस्थानी कहाणी – पैलौ चरण

देस नै आजादी मिळियां पछै राजस्थानी कहाणी रा खेतर में ई गति आई। राजस्थानी रौ आधुनिक कहाणीकार भाव अर सिल्प दोनूं ई स्तर माथै राजस्थानी कहाणी नै मांजण लागौ। अैड़ा कहाणीकारां मायं अन्नाराम सुदामा, मूलचन्द 'प्राणेश', बैजनाथ पंवार, श्रीलाल नथमल जोसी, नृसिंह राजपुरोहित, मनोहर शर्मा, राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रा नाम उल्लेखजोग है। आं कहाणीकारां री कहाणियां में विसयां री विविधता रै साथै सामाजिक जथारथ रौ तीखौ तेवर ई देखण नै मिळै। इणरै कारण राजस्थानी कहाणी रौ परिवेस विस्तार लेंवतो दीखै। कहाणी रै इण नुवै सरूप में कहाणीकार किणी समस्या रौ समाधान प्रस्तुत करतौ नीं दीखै अर नीं वो बुराई सूं पल्लौ छुडाय आदर्स स्थापित करण रौ सन्देस देवै। राजस्थानी री नुवी कहाणी मिनख रै मांय आवतै बदळाव नै पकड़ण नै खपै, तो बदळतै समाज रा चितरांम मांडै। सामंती व्यवस्था खतम होयां पछै पग पसारती राजनीति सूं गांवां मांय होवण वाळी उथल पुथल, आं कहाणियां में परगट होवै। इण रूप औ कैयौ जा सकै कै आजादी रै पछै री राजस्थानी कहाणी

मांय कहाणीकार री दीठ मिनखाजूण नै उणरी समग्रता में पकड़ण री रैई है। आजादी मिळण रै समचै मिनख रै सोचण में ई बलळाव आयौ जिणरै कारण आपसी रिस्ता प्रभावित होवण लागा। आधुनिक राजस्थानी कहाणी मांय रिस्तां मांय आवण वाळी तरेड़ां नै कहाणीकार अभिव्यक्त करण लागौ।

आजादी रै तुरन्त पछै रै राजस्थानी कहाणीकारां रौ मुख्य ध्येय सामन्ती अर पूंजीपति वर्ग रै सोसण रा सिकार करसा अर मजदूरां री पीड़ न वाणी देवणौ रैयौ है। उणरै साथै ई वे मजदूर अर किसान में फैलयौड़ी सामाजिक कुरीतियां अर परम्परा रै नाम माथै धरपीजती रूढ़ियां रो ई चित्रण करियौ है। कीं कहाणीकार पूजीपति समाज री सदासयता रा चरित्र पाठकां सांम्ही राखिया अर लक्ष्मीकुमारी चूंडावत अर सौभाग्यसिंह सेखावत जैड़ा कहाणीकार अैतिहासिक चरित्रां नै आपरी कहाणी रौ विसय बणयो। इणरै पैटै वे राजस्थान रै गुमेज भरियै इतियास अर अठै री सांस्कृतिक परम्परावां रौ चित्रण कहाणियां में करियौ। राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत री 'हूंकार री कळगी', 'राजपूताणी', 'पिउसंधी', 'हाडी राणी' इत्याद कहाणियां अर सौभाग्य सिंह सेखावत री 'लोहियाणं रौ कवर' आर 'खाट् रौ खेटौ' अैड़ी इज कहाणियां है।

7.4 आजादी रै पछै आधुनिक राजस्थानी कहाणी रौ विकास

आधुनिक राजस्थानी कहाणी रौ दूजौ चरण सन् 1970 सूं मानियौ जा सकै है। इण दूजै दौर में राजस्थानी कहाणीकार री दीठ परिपक्व होय चुकी है । अबै वो फगत सामाजिक सुधार री बात करनै नीं ढब जावै बल्कि वो आपरै पाठक रौ ध्यान वां सामाजिक विसंगतियां कांनी खींचै, जिणरै कारण समाज में वर्गभेद अर सोसण री व्यवस्था बणियौड़ी है। इण दूजै दौर री राजस्थानी कहाणी आदमी रै 'आदमी' बणियौ रैवण माथै जौर देवै। इण सारू इण बगत री कहाणी में आदमी आपरी इज बणायौड़ी व्यवस्था सूं जूंझतो दीखै। इण दौर में मोबी रचनाकारां मायं श्रीलाल नथमल जोसी, विजयदान देथा, अन्नाराम सुदामा, नृसिंह राजपुरोहित, रामेश्वर दयाल 'श्रीमाली', सांवर दइया, भंवरलाल भ्रमर, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', करणीदान बारहठ अर मनोहर सिंह राठौड़ रा नाम गिणावण जोग है। इणारै अलावा ई दूजा कैई कहाणीकार आधुनिक राजस्थानी कहाणी नै आपरी लेखनी सूं राती माती करण में लागोड़ा दीखै। श्रीलाल नथमल जोसी रौ कहाणी संकलन 'परण्योड़ी कंवारी' (1970) इण दौर रौ पैलौ महत्वपूर्ण कहाणी संकलन मानीयो जासकै। औ संकलन राजस्थानी कहाणी रौ भरोसौ करण जोगौ उणियारौ परगट करियौ। आधुनिक कहाणी रा जितरा रूप आज आपांरे सांम्ही है उणा मांय सूं घणकरा रा हळका या कम रूप इणमें देखण नै मिळै। इणरै बरसां पछै सांवर दइया जिण संवादात्मक सैली नै लैय कहाणिया लिखी उण सैली रौ ई अेक उदाहरण 'कंवारौ चौधरी' इण संकलन में पाठकां रै सामी आवै। जोशी री सैं सूं मोटी खासियत वांरी व्यंग्य करण री खिमता है। इण व्यंग्य रै कारण इज वांरी कहाणियां आपरा झीणा अरथ पाठकां सांम्ही राखै। आं कहाणियां में आधुनिक जीवण रै विगसाव पेटै उपजण वाळी सगळी खांमियां मौजूद है। अठै मिनख रा छळ–छन्द तौ है पण वे झीणै आवरण में है अर इणी सारूं वांरौ सरूप चौगुणौ होय सांम्ही आवै। इण संकलन री कहाणी 'नाटक' में बौपारी रौ व्यवहार, उणरा छळ–छन्द, अर किरंगाटियै दांई बदळतौ उणरौ रंग, सगळा इतरै सहज रूप में आवै कै पढ़णियै नै उणरौ असली उणियारौ ओळखण में घणी जेज नी लागै। खास बात आ है कै कहाणीकार इण व्यवहार माथै कठैई नहीं बोलै, उणरौ अबोलौ रैवणौ पाठक री कल्पना नै उकसावै अर वो खुद इज कहाणी रा अरथखोलण लागै।

कहाणीकार रौ औ नीं बतावण रौ भाव इण दौर री सगळी कहाणियां में देखण नै मिळै। रचनाकार फगत संकेत करै अर बाकी सै पाठक री समझ माथै छोड देवै। लेखक रो ओ भाव आपरै पाठक माथै भरोसौ करणौ है। इण सूं साहित्यिक–समाज री परिपक्वता रौ अहसास होवै।

सन् 1974 तांई आवतां आधुनिक राजस्थानी कहाणी आपरै लोककथा वाळै प्रभाव सूं पूरी तरै मुगत होय जावै। आं बरसां रौ आधुनिक राजस्थानी कहाणी रो खेतर घणौ महताऊ है क्यूंकै इणी बरस तेजसिंह

जोधा रै सम्पादन में छपती 'दीठ' में विजयदान देथा री तीन कहाणियां पाठकां रै हाथां पूगी–'अलेखूं हिटलर', 'राजीनांवौ' अर 'फाटक'। आं मायं सूं 'अलेखूं हिटलर' अर 'राजीनांवौ' आज ई आधुनिक राजस्थानी कहाणी खेतर में सिरेनांव बणियोड़ी है। आं कहाणियां में कहाणीकार री दीठ आपरै पाठकां नै अेक उण परिवेस में लेय जावै जठै साधारण चरित्र असाधारण व्यवहार करता दीखै। अै कहाणियां बतावै कै इण मसीनी जुग में समाज आपरै विकास रा पगोतिया चढतौ गुमेज रौ जकौ छत्तर ताणंण नै खपै है। उणरौ हाल कैड़ौ होवैला। अठै कहाणीकार मिनख रै भविस् माथै सवाल खड़ा कर रैयौ है। अै कहाणियां समाज रै संवेदनहीन होवते सरूप री चिन्ता करै। अै दोनूं कहाणियां दो न्यारा–न्यारा धरातल सूं उठियौड़ी कहाणियां है पण दोनूं इण संवेदनहीनता रै भाव नै न्यारा–न्यारा कोणां सूं पकड़ै अर अेक पूरण दीठ आपरै पाठकां सांम्ही राखै।

बगत रै इणी काल खंड में विजयदान देथा रै साथै सांवर दइया, भंवरलाल 'भ्रमर' अर रामेश्वरदयाल श्रीमाली री कहाणिया ई समाज रै संवेदनहीन होवतै सरूप नै आपरौ आधार बणायौ है। अै तीनूं ई रचनाकार आधुनिक राजस्थानी कहाणी रै उण रूप नै छिटकाय देवै जिणनै आपां लोकथा रै नाम सूं जाणां हां। अै तीनूं ई आपरै कहाणी सकलनां री भूमिकावां में 'कहाणी' नै परिभासित करी है। इण सारूं औ ई कैय सकां कै इण दौर ताई पूगतां राजस्थानी कहाणीकार री दीठ आपरी विधा नै लैय पूरी परिपक्व होय चुकी है।

'आज कहाणी रौ उद्देस्य मानव जीवन नै प्रतिबिम्बित करणौ है। आज री कहाणी रौ पात्र कृष्ण रै कर्मयोग री साधना में रत है। वो रूढियां में बंधणौ नीं चावै। नुंवी कहाणी री कोसिस मनोवैज्ञानिक सत्य दिखावण री है।' (भंवरलाल 'भ्रमर' तगादों री भूमिका सूं)

'साहित्य री हर अेक विधा रौ सीधो सम्बन्ध जीवण सूं होवै। कहाणी ई इण सूं अछूती कोनी। बदळता राजनैतिक–सामाजिक अर आर्थिक धरातल जीवण नै बदल न्हांखें।..... बीं नै जटिल बणाय देवै। इण बदळतै अर जटिल होवतै जीवण रै सागै सागै कहाणी रौ रूप ई बदळतौ रैवै।.... वां सूं जुड़ण रौ मतलब इत्तो ई है कै अै बदळाव क्यूं अर किंया होया–इणरी इतिहासू समझ विगसावां।'

(सांवर–दइया 'धरती कद तांई घूमैली री' भूमिका सूं)

इणा कहाणियां में उकळता सवाल फगत सवाल इज कोनी। आज री सामाजिक अर आर्थिक विसमतावां माथै करारी टीप है। इणां नै कहाणीकार री कमजोरी समझ सकां कै उणनै हकीकतां सूं टळ नै किणी झंडा रै नीचे ऊभणौ दाय को आयोनीं। तौ ई अै कहाणियां खुल्लै खातै इतरौ तौ बतावै ई है कै जीवण री इण नाजोगी हालातां सूं लड़वा सारू फगत माथौ मारियां ई काम को चालै नी, हाथ उठावणा ई जरूरी है।

(रामेश्वर दयाल श्रीमाली–'सळवटां' री भूमिका सूं)

आप आप री कहाणियां सारू मांडियोड़ी अै टीपां जठै आं रचनाकारां रै सोच नै परगटावै बठै आधुनिक राजस्थानी कहाणी रै बदळते तेवर नै ई बतावै। अै कहाणियां 'कैवण' रै भाव सूं मुगत है। वे अेक परिवेस रचण नै खपै। अै किणी भांत रै आदर्स रौ बखांण नी करै। जथारथ री ठोस जमीन माथै रचीजियौड़ी अै कहाणियां चौफर होवतै सामाजिक बदळाव अर उण बलळाव सूं उपजती विसंगतियां नै सांम्ही लावै। इण दौर री कहाणियां में मिनख रै भरोसै रौ तूटणौ, उणरी छीज, उणरी कळप, आपसी रिस्तां रौ लीर लीर होवणौ परतख दीखै। भलांई आं कहाणियां रा पात्र आपरी लड़ाई हारता दीखै पण तद ई वारै मारफत मिनख रै मिनखपणै नै बचावण रौ संकळप, बत्ती सगती सूं ऊभौ होवै। अै कहाणियां तंत्र रै आतंक अर मिनख री लाचारी नै परगट करै।

भंवरलाल 'भ्रमर' री 'बातां, तगादो या दिनचर्या', सांवर दइया री 'गळी जिसी गळी' या 'धरती कद तांई

घूमैली, रामेश्वरदयाल श्रीमाली री 'कांचळी, बडा बाबू या ईजतदार' अर करणीदान बारहठ री 'आदमी रौ सींग, दोजख, धन घड़ी धन भाग' जैड़ी कहाणियां सामाजिक संस्थावां नै जंमीदोज करण रौ कारण बण सकै। जथारथ जद कहाणी रौ हिस्सौ बणै तद वा आपरै परिवेस रै बत्ती नैड़ी होय जावै। कहाणीकार री तटस्थता अठै आं कहाणियां री ताकत बणै।

7.5 तीजौ चरण

सन् 1985 रै पछै री राजस्थानी कहाणी मूळ रूप सूं वां जवान लेखकां री कहाणी है जकां रौ जलम देस नै आजादी मिळियां पछै होयौ, इण सारूं वारै कनै आजादी रै समचै मिळण वाळै आणंद रौ कोई सपनौ कोनी है पण इणी सारू आजादी रै पछै राजनैतिक स्तर माथै उपजियोड़ौ मोहभंग रौ भाव ई है। आज कहाणीकार कनै तौ वो खरौ साच है जकौ जथारथ रौ रूप धारियां ऊभौ है अर जिणनै झेलणौ वांरी नियति है। राजनीति आज धन्धौ बणगी है, भ्रस्टाचार आज रै जुग री औळख बणियोड़ौ है, बेरोजगारी रौ बधतौ दबाव, समाज रै जोध जवानां सूं वांरी हूंस खोसली है, दिखावौ समाज रै हर पावंडै आपरौ मूंडौ पोतयोड़ौ ऊभौ है। आज रै कहाणीकारां रा पात्र आं सगळा दुस्चक्रां बिच्चै घिरियौड़ा ऊभा है, असहाय अर निस्तेज। खास बात आ है कै वांरा परिवार ई वां सूं कीं दूजी अपेक्षावां करियौड़ा बैठा है। भणाई रौ भरम उण जवान री जूण में उदाई दांई लागोड़ौ है। पूरौ समाज संवादहीनता री स्थिति में जीवण नै मजबूर है। चारूं कानी अेक सूंन पसरियौड़ी है। अैड़ी स्थिति में आं कहाणियां रा पात्र आपरी रीस अर आपरौ आक्रोस किण माथै निकाळै अर किण सांम्ही निकाळै औ वांनै खुद नै ठा नी है। आपरी पैली प्रतिक्रिया में वे खुद री परम्परा, संस्कृति अर जीवण मूल्यां नै भूंडता दीखै।

सहायता री कोई उम्मीद वारै कनै बचियौड़ी कोनी है। असहायता रौ भार आपरै खंवां ऊंचाया वांनै फगत चालणौ है। आज री राजस्थानी कहाणी इणी असहायता री मानसिकता रा न्यारा–न्यारा पहलू लैय नै सांम्ही आवै। तीजै चरण री इण पीढ़ी में मालचन्द तिवाड़ी, मीठेस निरमोही, चेतन स्वामी, रामकुमार ओझा, रामपालसिंह राजपुरोहित, माघव नागदा, मदन सैनी, हनुमान दीक्षित, चन्द्रप्रकाश देवल, श्यामसुन्दर भारती, रामस्वरूप किसान, भरत ओळा, सत्यनारायण सोनी, चैनसिंह परिहार अर बुलाकी शर्मा जैड़ा कहाणीकार राजस्थानी कहाणी री परम्परा नै अंगेजियां ऊभा है।

आधुनिक राजस्थानी कहाणी सारू आ बात गुमेज करण जोग है कै उण कनै आधुनिकता रौ आथूणौ सोच नीं है। उण सारूं अेक बगत में जकौ अेकलापै रौ दुखदाई रूप दूजी भासा री कहाणियां में देखण नै मिळियौ वो अठै नीं मिळै। औद्योगीकरण रै पसराव साथै मिनख रै अेकलै पड़तै जावण रौ दुख थोड़ै बदळियौड़ै रूप में देखण नै मिळै। अठै टाबर कमावण नै सैर गिया है अर गांव में माईत अेकला है। धणी परदेस गियोड़ौ है अर लुगाई दुख रा दिन काट रैई है। आज री कहाणी अैड़ा पात्रां री पीड़ नै जबान देवै। औ अेकलापौ आपरा सूं जुड़ाव री खपत नै अभिव्यक्ति देवै।

आपरी सुरूआत में राजस्थानी कहाणी भावना केन्द्रित रैई इण सारूं उणरा विसय ई भावनात्मक सम्बन्धां सूं जुड़ियौड़ा हा पण ज्यू ज्यूं इण विधा रौ विकास हुयौ तौ इणरै घेरै में राजनैतिक अर आर्थिक थितियां ई कहाणीकार, समेटण लागौ जिणरै कारण जीवण री जटिलता कहाणी रौ हिस्सौ बणण लागी। इणरै कारण आधुनिक राजस्थानी कहाणी री न्यारी ओळखांण बणण लागी। आ कहाणी री तीजी छलांग है अर इणनै आज री कहाणी कैय सकां हां।

आज रा कहाणीकार अेक स्थिति नै उठावै अर उणनै उणरी सगळी पेचीदगियां साथै देखण री कोसीस करै। आ कोसीस फगत मनोविस्लेसण तांई इज नीं रैवै बल्कि उण सूं आगै उण स्थिति रै लारै छिपियौड़ी मानसिकता नै पकड़ण री रैवै जिणसूं वे आपरै बगत रै आंम्ही–सांम्ही होय सकै। अठै कथ महताऊ नीं है बल्कि वर्ग री मानसिकता तांई पूगणौ महताऊ है। मालचन्द तिवाड़ी री 'सेलिब्रेसन' होवौ या 'कीमिया

रो बाप' होवौ – अै कहाणियां पाठक नै उण व्यापक संदर्भ सूं जोड़ै जकौ उणरै चारूं कांनी पसरियौड़ो है। आ कहाणिया में हर छोटी हालात अेक बड़ी स्थिति कानी संकेत करती लागै। इण ढाळै आं कहाणियां रौ संघर्स किणी अेक पीढ़ी रो संघर्स नीं होय पूरी परम्परा रौ संघर्स बण जावै। आजादी री परम्परा, नीति री परम्परा, साच री परम्परा अर जीवण मूल्यां री परम्परा रौ संघर्स बण जावै। मीठेस निरमोही री 'गवाही' अर 'अमूझता आखर' होवौ या चेतन स्वामी री 'पुण्याई' या 'थांभ' कहाणी होवौ–अै इणी संघर्ष री साख भरती कहाणियां है।

राजस्थानी कहाणीकारां री आ नुंवी पीढ़ी मिनख रै न्यारै–न्यारै रूपां नै समझण रौ जतन करै। यूं तौ साहित्य आपरै तरीकै सूं अनादिकाल सूं ई मिनख नै समझण रा मारग माथै चालतौ आयौ है पण इण जुग में वो मिनख रै मांयले रूप नै पकड़ण री आफळ कीं बत्ती करै आ इज आफळ राजस्थानी रा आज रा कहाणीकारां री कहाणियां में देखण नै मिळै है। आ कहाणीकारां री तलास किणी आदर्स कानी आपरै पाठक नै ले जावण री नीं है बल्कि वे तौ जैड़ौ है, अर जठै है उणनै पकड़ण नै खपै। अै आपरै पाठकां सांम्ही आरसी लियां ऊभा होवै जिण में पाठक आपरौ उणियारौ साफ–साफ देख सकै। मदन सैनी री 'फुरसत' या 'दया', माघव नागदा री 'नारायण दा', चन्द्रप्रकाश देवल री 'घासलेट री खुसबू' अर रामस्वरूप किसान री 'दलाल' जैड़ी कहाणियां मिनख रै मांयले 'मिनख' नै आप आप रै तरीकै सूं समझण नै खपै। औ मिनख अेक साथै स्वार्थी अर परमार्थी रौ भेळ लियौड़ौ ऊभौ है। अेक ई खोळियै में वो आछौ अर भूंडौ दोनूं ई रूपां नै समेटियां ऊभौ दीखै। यूं कैय सकां कै अै कहाणियां मिनख में 'मिनख' रै रूपान्तरण री कहाणियां है अर कहाणीकार वारै रूपान्तरण री उडीक में तटस्थ ऊभौ है।

7.6 सारांस

इण इकाई में राजस्थानी कहाणी रै उद्‌भव नै समझण री अर पछै उणरै विकास री दिसा अर दसा नै जांणण री कोसिस करीजी है। औ देखियौ कै आजादी सूं पैली आधुनिक राजस्थानी कहाणी रौ रूप कांई हौ अर कुण कहाणीकार उणरै सरूआती दौर में कहाणियां रचता हा। आधुनिक राजस्थानी कहाणी रा न्यारा–न्यारा चरण नै समझता अर वांरै फरक नै समझता हुया इणां में वां कहाणीकारां री कहाणियां बाबत ई बातां करी जी है।

7.7 अभ्यास सारू सवाल

1. राजस्थानी कहाणी री सरूआत कद सूं मानीजै ?
2. राजस्थानी कहाणी रै सरूआती कहाणीकारां रा नाम बतावौ।
3. आजादी रै पछै री राजस्थानी कहाणी रा प्रमुख कहाणीकार कुण कुण है ?
4. आधुनिक राजस्थानी कहाणी री विसेसतावां बतावौ।

7.8 संदर्भ ग्रन्थ

1. राजस्थानी कहाणी : परम्परा अर विकास – अर्जुन देव चारण
2. कहानी : नई कहानी – नामवर सिंह
3. नई कहानी की भूमिका – कमलेश्वर
4. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

इकाई–8

आधुनिक राजस्थानी कहाणी–परिभासा, तत्व अर सिल्प

इकाई री रूप रेखा :

8.0 उद्देस्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 कहाणी री परिभासा

8.3 कहाणी अर उपन्यास में अन्तर

8.4 कहाणी रा भेद

8.5 कहाणी रा तत्व

8.6 कथावस्तु या कथानक

8.7 चरित्र–चित्रण

8.8 कथोपकथन

8.9 देसकाल अर वातावरण

8.10 भासा अर सैली

8.11 उद्देस्य

8.12 सारांस

8.13 बोध सवाल

8.14 संदर्भ ग्रन्थ

8.0 उद्देस्य

- विद्यार्थियां नै कहाणी री परिभासा सूं परिचित करावणौ।
- विद्यार्थियां नै कहाणी विद्या रौ महत्व बतावणौ।
- विद्यार्थियां सांम्ही कहाणी अर उपन्यास रो अन्तर समझावणौ।
- विद्यार्थियां नै कहाणी रै रचना विधान री जाणकारी दैय उणरै तत्वां री जाणकारी देवणी जिणसूं वे वांरी विवेचना कर सकै।
- कहाणी री भासा अर सैली नै विद्यार्थियां सांम्ही राखणौ।
- विद्यार्थियां नै कहाणी रा न्यारा–न्यारा भेद बतावणा।

8.1 प्रस्तावना

हर रचनाकार की कोसीस आ होवै कै वो बगत रै साच नै सोध लैवै। साच नै सोधण री आफळ उणनै लगोलग उकसावती रैवै अर वो घड़ी घड़ी आपरी रचना रै मारफत उण साच तांई पूगण नै खपतौ रैवै। साच नै सोधण री आ खपत ई आधुनिक जुग रा कहाणीकार नै दूजी विधावां सूं न्यारौ ऊभौ करै। औ सही है कै कहाणी अतीत रै बोध सूं कदैई मुगत नीं होवै पण आजरै कहाणीकार रौ काम फगत किणी

घटना या किणी चरित्र रौ बखांण करणौ नीं होवै बल्कि वो तौ अेक परिवेस नै रचै। वो मिनख रा मन नै सुख अर सीख ई देवै। कथा परम्परा में पंचतंत्र होवौ भलांई हितोपदेस सगळां रौ महत्व इणी बात में है कै वे मनोरंजन रै साथै उपदेस ई देवता रैवै। अठै 'कथा' अर 'आख्यायिका' नाम सूं संस्कृत साहित्य में कहाणियां पढ़ण नै मिळै है। राजस्थानी साहित्य परम्परागत कथारूपं सूं न्यारी मानीजै अर उणरो वर्तमान सरूप पश्चिमी साहित्य सूं आयोड़ौ है।

8.2 कहाणी री परिभासा

पस्चिमी अर भारतीय विद्वान कहाणी री आप आपरै हिसाब सूं परिभासा दी है। कीं खास परिभासावां इण भांत है –

1. **हडसन** – कहाणी में फगत अेक मूळ भाव होवै। उणरौ विकास तार्किक निस्कर्सां साथै लक्ष्य री अेकनिस्ठता नै बणाया राखता थकां सरल अर सुभाविक गति सूं करियौ जावणौ चाइजै।
2. **जॉन हैडफील** – कहाणी उणनै कैवै जकी घणी बडी कोनी होवै।
3. **एलरी** – कहाणी घुड़दौड़ दांई होवै, जिण तरै सूं घुड़दौड़ में सरूआत अर अंत महताऊ होवै उणी तरै सूं कहाणी में सरूआत अर अंत घणा महताऊ होवै।
4. **मुंशी प्रेमचन्द** – कहाणी कोई अैड़ौ बाग कोनी जिणमें भांत–भांत रा फूल अर बेलां सजियौड़ी होवै। वा तौ अैड़ौ बगीचौ है जिणमें अेक ई गमलै री सौरभ पूरी तरां बिखरै।
5. **इलाचन्द जोशी** – जीवण री परिस्थितियां री सुभाविक गति प्रदर्सित करण वाळी विधा कहाणी होवै है।
6. **जयशंकर प्रसाद** – आख्यायिका में सौन्दर्य की झलक रौ रस हुवै। आं परिभासावां रै आधार माथै कहाणी री निम्नलिखित विसेसतावां सांम्ही आवै –

    1. **छोटौ आकार** – सगळा विचारक इण बात माथै सहमत है कै कहाणी रौ आकार छोटौ होवणौ चाइजै। उण मांय छोटै सै काळ खंड रौ चित्रण अेकाध घटना रै माध्यम सूं होवणौ चाइजै। आकार में छोटी होवण रै कारण पाठक उणनै आधै घंटे में पढ़ सकै।
    2. **गैरी संवेदना** – कहाणी में गैरी संवेदना रौ हावेणौ जरूरी है। कहाणी रौ विसय मिनखाजूण री कोई घटना या कोई भावना होवै, उणनै आछी तरै सूं अभिव्यक्त करण वास्तै गैरी संवेदना जरूरी होया करै, तद् ई वा आपरे पाठक रै हियै उतर सकैला।
    3. **अंत रो प्रभाव** – जद पाठक कहाणी रै पात्रां साथै अेकमेक हो जावै अर उणरै वातावरण में रम जावै तौ उणरै मन में ई वैड़ी ई संवेदना जाग जाया करै इणनै ही प्रभावान्विति या अंत रो प्रभाव कैया करै है।

8.3 कहाणी अर उपन्यास में अन्तर

कहाणी अर उपन्यास दो न्यारी विधावां है हालांकै दोनुवा मांय कथा तत्व री प्रधानता होवै है। इणी सारू कैई बार कीं लम्बी कहाणियां ई लिखी जावै जकी उपन्यास रौ भरम उपजाया करै है। कहाणी अर उपन्यास गद्य री दो न्यारी विधावां है अर दोनुवां री बणगट में घणौ फरक है। आं दोनूं विधावां रै फरक नै इण भांत दरसायौ जा सकै है –

1. कथानक कहाणी सारू भी जरूरी मानीजियौ है पण कहाणियां बिना कथानक रै लिखी जा सकै है जद कै उपन्यास सारू कथानक रौ होवणौ घणौ जरूरी है। उपन्यास मांय जीवण रै

न्यारा–न्यारा पखां (पक्षां) रौ चित्रण होवै अर कहाणी किणी अेक विचार या अेक वस्तु माथै इज केन्द्रित होवै है।

2. कहाणी मायं जीवण रौ अेक अंस परगट करणौ कहाणीकार रौ ध्येय होवै अर उपन्यास जीवण नै उणरी पूरणता में पकड़ण री या देखण री कोसीस करिया करै।

3. कहाणी आकार में छोटी होवै अर उणनै अेक ई बैठक में पढ़ी जा सकै है जद कै उपन्यास आकार में बडौ होवै अर उणनै पढ़ण वाळौ कैई बार में पढ़ने पूरौ करै।

4. कहाणी में कहाणीकार आपरी कल्पना रौ संयमित उपयोग करिया करै अर्थात् कहाणी में कल्पना रै विस्तार री घणी गुंजाइस नीं रैवै पण उपन्यास में कल्पना रै विस्तार री पूरी छूट उपन्यासकार नै मिळै बठै कल्पना रै पसराव री पूरी छूट रैया करै।

5. कहाणीकार विचार अर भाव रै स्तर माथै कीं चुणियौड़ा मार्मिक खेतर ई परगट कर सकै पण उपन्यासकार कनै आपरै विचार अर भावां नै परगट करण सारूं लम्बा–लम्बा विवरण प्रस्तुत करण री पूरी गुंजाइस रैया करै।

6. कहाणी में पात्रां री संख्या सीमित होवै जद कै उपन्यास में पात्रां री संख्या घणी होवै। कहाणी में किणी अेक पात्र रै मनोभाव नै कहाणीकार घणौ लम्बौ नीं खींच सकै पण उपन्यास में पात्रां रै मनोभाव नै, उणरै अन्तर्द्वन्द्व नै विस्तार सूं परगट करण रौ पूरौ अवसर उपन्यासकार नै मिळिया करै।

7. चरित्र चित्रण रै स्तर माथै कहाणी मांय विस्तार री छूट नीं होवै पण उपन्यास में किणी चरित्र रै हर पहलू रै चित्रण री पूरी छूट उपन्यासकार नै मिळिया करै।

8. कहाणी री बणगट में किणी अेक सैली रौ इज उपयोग कियौ जा सकै है पण उपन्यास रै लेखन में केई सैलियां रौ प्रयोग संभव है।

8.4 कहाणी रा भेद

कहाणी विधा माथै विचार करता थकां कहाणी रा आलोचक उणरा कैई भेद करिया है। प्रमुख रूप सूं कहाणी रा नीचै लिखिया भेद है –

1. **घटना प्रधान कहाणी** – जिण कहाणी में घटनावां री प्रधानता होवै अर कहाणी नै पढ़तां पाठक रै सांम्ही कौतुहल बणियोड़ौ रैवै अैड़ी कहाणियां घटना प्रधन मानीजै।

2. **चरित्र प्रधान कहाणी** – जिण कहाणी में लेखक किणी चरित्र नै केन्द्र में राख नै कहाणी रचै वा चरित्र प्रधान कहाणी बाजै।

3. **वातावरण प्रधान कहाणी** – जकी कहाणियां में कहाणीकार किणी जुग या परिस्थिति रै वातावरण नै केन्द्र में राखै वे कहाणियां वातावरण प्रधान कहाणियां बाजै।

4. **अैतिहासिक कहाणी** – जिण कहानी में किणी अैतिहासिक घटना या चरित्र रौ चित्रण करीजै वा कहाणी अैतिहासिक कहाणी कहलावै है। राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत अर श्री सौभाग्यसिंह शेखावत री लिखियौड़ी कहाणियां इणी श्रेणी री है।

5. **सामाजिक कहाणी** – जकी कहाणियां में किणी सामाजिक समस्या रौ चित्रण करियौड़ौ होवै वां नै सामाजिक कहाणियां कैय सकां हां। राजस्थानी री सुरूआती कहाणियां खासतौर सूं इण रूप देखी जा सकै है, हालांकै आज ई कैई कहाणीकार किणी सामाजिक समस्या नै लेय'र कहाणी लिखे है। मनोहरसिंह राठौड़ री 'सांड' अर 'बळद' अर यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' री केई कहाणियां

इणी भांत री है।

6. **मनोवैज्ञानिक कहाणी** – जकी कहाणी में चरित्रां रै मन री उहापोह नै या मिनख रै अन्तर्द्वन्द्व नै सीधौ–सीधौ या प्रतीकां रै माध्यम सूं परगट करीजै वांनै मनोवैज्ञानिक कहाणी कैय सकां हां।

7. **प्रतीकवादी कहाणी** – प्रतीक कहाणी रै सिल्प रौ महताऊ माध्यम है पण तद ई कैई वार कहाणीकार कीं अैड़ी कहाणियां लिखै जिण में अेक प्रतीक रै माध्यम सूं वो आपरै भाव नै पाठक तांई पूगावणी चावै। अैड़ी कहाणी प्रतीकवादी कहाणी वाजै।

8. **हास्यव्यंग्यप्रधान कहाणी** – जकी कहाणी आपरै पाठक रौ मनोरंजन करण रै साथै किणी सामाजिक या राजनैतिक विसंगति माथै चोट करै वा हास्य–व्यंग्य प्रधान कहाणी बाजै।

8.5 कहाणी रा तत्व

आलोचक औ मानै है कै आधुनिक कहाणी रौ रचना विधान आथूण सूं अर्थात् पस्चिम सूं आयौड़ौ है पण परम्परागत रूप सूं आपणै अठै कहाणी रा निम्नलिखित तत्व मानीजिया है –

8.6 कथावस्तु या कथानक

कहाणी रौ मूळ ढांचौ जकी घटनावां, विचार, भाव या परिस्थितियां माथै ऊभो होवै उणनै कथावस्तु कैया करै है। कथावस्तु रै विगसाव वास्तै कहाणीकार आपरै दैनिक जीवण री घटनावां सूं तौ प्रेरणा लेवै ई है पण साथै–साथै वो आपरै इतिहास या पुराण सूं ई सामग्री लेवतौ रैवै। इण बारै में कहाणी–समीक्षक हडसन केवै कै कोई नाटकीय घटना या परिस्थिति, कोई प्रभावी दरसाव, कोई महताऊ अनुभव, खण्ड या जीवण रौ कोई मार्मिक पख या कोई नैतिक लक्ष्य उण मांय सूं कोई अेक या सैकडूं दूजी प्रेरणावां सूं उपजियौड़ौ कोई भाव किणी कहाणी रौ आधार या मूळ भाव बण सकै है। हिन्दी रा चावा कहाणीकार प्रेमचन्द लिखियौ है– ''आज लेखक केवल कोई रोचक दृश्य देखकर कहानी लिखने नहीं बैठ जाता। उसका उद्देश्य स्थूल सौन्दर्य नहीं है। वह तो कोई ऐसी प्रेरणा चाहता है जिसमें सौन्दर्य की झलक हो और इसके द्वारा वह पाठक की सुन्दर भावनाओं को स्पर्श कर सकै।''

प्रेरण रै साथै कथावस्तु में कल्पना रौ ई घणौ महत्व है। कहाणी री सिरजणा में कल्पना रौ घणौ योगदान होवै है। कल्पना रै अभाव में कहाणी फगत तथ्यां रौ लेखौ जोखौ या इतिहास बण नै रैय जावै। कहाणी नै कलात्मकता, कल्पना रै पांण इज मिळिया करै है।

कहाणी रै कथानक में कौतूहल, औत्सुक्य, करूणा अर हास्य रै तत्वां री प्रतिस्ठा होवणी चाइजै। पास्चात्य आलोचक बिल्की कालिन्स कैयौ है कै बोही कहाणीकार श्रेस्ठ होवै जकौ आपरी कला सूं पाठकां सांम्ही कौतूहल पैदा करै अर वांरी उत्सुकता नै जगाय देवै, वांनै पल में हंसाय देवै अर पल में उणारी आंख्यां में आंसू आ जावै।

कहाणी रा आलोचक कथानक नै खण्डां मांय बांट नै देखण री जरूरत बताई है। कैई कहाणियां में कथानक इत्तौ छोटौ होवै कै उणनै किणी खण्ड री जरूरत नीं पड़ै पण कैई कहाणियां रौ कथानक फैलयौड़ौ होवै। उणमें कैई चितरांम मंडियोड़ा होवै। अैड़ी कहाणियां रै कथानक नै खंडा मांयं बांटणौ ठीक रैवै। डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा कथानक नै खंडा मांय बांटण रा चार सिद्धान्त बताया है –

1. कथा रै प्रवाह में बगत रै व्यवधान नै बतावण सारू।
2. दरसाव अर स्थान रै बदळाव रा चितराम परगट करण सारू।
3. चरित्र री मानसिक वृतियां री आछाई अर बुराई बातावण सारू।

4. प्रभावान्विति नै लगोलग तीखी करण सारू।

इण भांत आपां देख सकां कै कहाणी री मार्मिक अर कलात्मक अभिव्यक्ति सारू कथानक नै खंडां में बांट देवणौ कहाणी सारू जरूरी होवै है।

8.7 चरित्र–चित्रण

कहाणी में चरित्र चित्रण रौ घणौ महातम है। मिनख रौ होवणौ अर मिनख री ओळखांण उणरै चरित्र सूं ई होवै। चरित्र में मिनख रौ बारलौ अर मांयलौ दोनूं ई रूप अेकठा होयौड़ा दीखै। बारला रूप में उणरी वेसभूसा, उणरी चाल ढाल, उणरौ रैण–सैण, उणरी बोलचाल अर उणरा कामकाज गिणीजै अर मांयला रूप मांय उणरी मन री इच्छावां, उणरा मानवीय गुण–अवगुण, उणरा राग–विराग सामिल है। कहाणियां में चरित्र चित्रण नाटकीय भी होय सकै अर विस्लेसणात्मक ई होय सकै है।

आथूणा आलोचक हडसन रौ मानणौ है कै कहाणी में चरित्र रौ फगत उद्घाटन ई करीजिया करै है जद कै उपन्यास में चरित्र रौ विकास दिखायौ जावै। इण वास्तै कैय सकां कै कहाणीकार रौ काम उपन्यासकार करतां घणौ अबखौ है। कहाणीकार हमेसां चरित्र रै मूळ भाव नै पकड़नै सुळझावण री कोसीस करिया करै। इणरी अभिव्यक्ति जितरी नाटकीय होवै उत्तौ ई वो चरित्र आपरै पाठकां रो ध्यान आप कांनी खींचिया करै। कहाणी रा आलोचक आ बात मानै है कै कहाणी में चरित्रांकन री सैसूं प्रभावी अर व्यावहारिक पद्धति होवै जिण में नाटकीय विधि रौ उपयोग होवै। इण विधि मुजब संवादां रै बीच पात्र खुद आपरै मूंडै सूं आपरै चरित्र बाबत अर्थात् आपरी रूचि–अरूचि, आसा–निरासा, आकांक्षावां अर आदर्सा बाबत बतावै। जद वो खुद रै बारै में बोलै अर आपरी इच्छा बतावै तो उणरै मन रा भेद खुदो–खुद परगट होय जाया करै।

साहित्य रै खेतर चरित्र रौ जकौ सरूप आपनै देखण नै मिळै वो जथारथ होवता थकां ई जथारथ सूं जुदा होया करै, क्यूंकै साहित्य में जथारथ–जगत री बात ई कल्पना रै माध्यम सूं परगट होवै। कहाणी में चरित्र चित्रण करतां अेक बात रौ ध्यान राखणौ पड़ै कै पात्रां री संख्या बठै घणी नीं हूय जावै। घणा पात्रां नै कहाणी रै कलेवर में बांधणौ मुस्किल होवै। कहाणी में प्रमुख पात्र रौ चरित्र चित्रण ई इण भांत करणौ चाइजै कै उणरै आसरै दूजा सहयोगी पात्रां रै चरित्र री ई ओळखांण होय सकै।

8.8 कथोपकथन या संवाद

पात्रां रै आपसी वार्तालाप नै कथोपकथन या संवाद कैया करै। कथोपकथन रौ उपयोग कथानक रै विगसाव अर चरित्रां रौ चित्रण करण सारू होवै। जे कथोपकथन परिस्थिति अर पात्रां री मनगत रै अनुकूल नीं होवै तो उणमें अस्वाभाविकता आय जावै। इण सारू संवाद या कथोपकथन में देसकाल अर वातावरण रौ ई ध्यान राखणौ चाईजै। कहाणी रा आलोचक तौ कथोपकथन नै कहाणी रा प्राण मानै है। इणी सारू वे कहाणी नै परिभासित करता थकां उणनै 'संवादात्मक चित्र–विधा' कैवै। संवाद कहानी में कैई महताऊ काम करिया करै जका इण भांत है –

1. पात्रां रै चरित्र नै उभारै।
2. वरणन में रोचकता ल्यावै अर प्रवाह बणावै।
3. कथावस्तु रौ विकास करै।
4. कहाणी में स्वाभाविकता ल्यावै।

इण सारू जरूरी है कै कहाणीकार आपरै संवादां माथै खास ध्यान देवै। आछा संवाद होवण सूं कहाणी आपरै पाठकां तांई सीधी सम्प्रेसित होय जावै। सफल संवाद में नीचे लिख्या गुण हुया करै –

1. संवाद देसकाल, पात्र, वातावरण अर भाव रै अनुकूल होवणा चाइजै।
2. संवाद छोटा, नाट्यात्मक अर ध्वन्यात्मक होवणा चाहजै।
3. संवाद तर्कयुक्त, व्यंग्य प्रधान अर चरित्र या घटना नैं पूरे आवेग साथै परगट करण में सक्षम होवणा चाइजै।
4. संवाद में विराम, गति अर यति रौ ध्यान राखणौ चाइजै।

8.9 देसकाल अर वातावरण

कहाणी री कथावस्तु, उणरा चरित्र अर चरित्रां रा आपसी संवाद जद तांई अेक खास देसकाल अर वातावरण रै अनुकूल नीं हुवै तद तांई वांरौ कोई महत्व नहीं मानीजै। कहाणी पढ़तां पाठक जिण तरै सूं कहाणी नै ग्रहण करै उण में इज देसकाल अर वातावरण छिपियौड़ौ होवै। देसकाल में घटनावां सूं सम्बंधित स्थान अर बगत रौ वरणन हुया करै। प्रकृति रौ वरणन और जागां भी देसकाल रौ ई अंग मानीजै। कहाणी में स्थानीय रंग सूं कहाणी रो प्रभाव बध जाया करै।

8.10 भासा–सैली

कहाणीकार नै आपरी कहाणी में भासा अर सैली माथै घणौ ध्यान राखणौ पड़ै। जे भासा सरल अर सहल नहीं होवै, उणमें कहावतां अर मुहावरां रा ओपता प्रयोग नीं होवै तौ वा निर्जीव लागण लाग जावै। इणी भांत सैली में रोचकता और सजीवता होवै अर वा कम सूं कम सबदां में आपरी बात कैवण में माहिर होवणी चाइजै। सैली री दीठ सूं कहाणियां पांच प्रकार री होवै –

1. **अैतिहासिक** – इण सैली में कहाणी लिखण वाळा कहाणीकार अन्य पुरुस रै रूप में कहाणी लिखै। इणमें इतिवृतात्मक घटनावां नै खास ठौड़ मिळै।
2. **आत्मकथन** – आ सैली प्रथम पुरुस–प्रधान सैली कैयी जा सकै है। इणमें कहानी रौ नायक इज आपरै मूंडै सूं आपरी बात कैया करै है। अैड़ी कहाणिया पढतां अैड़ौ लागै कै कोई परिचित मिनख आपरै जीवण री साची घटना आपरै सांम्ही राख रैयौ है।
3. **संवादात्मक** – इण सैली में लिखियौड़ी कहाणियां मांय कथोपकथन री प्रधानता रैया करै है। सांवर दइया री लिखियौड़ी कहाणियां इण सैली रौ सबळौ उदाहरण है।
4. **पत्रात्मक सैली** – कैई कहाणियां किणी कागद रै पडूतर रूप लिखीजै, वांनै पत्रात्मक सैली री कहाणिया कैया करै है।
5. **डायरी सैली** – कैई वार कहाणीकार कहाणी नै डायरी रै रूप लिखिया करै। उणमें अैड़ौ लागै जाणै आपां किणी दूजै री डायरी रा अंस पढ़ रैया हां। राजस्थानी भासा में डायरी सैली में छपी कम कहाणियां लिखीजी है।

8.11 उद्देस्य

कहाणी री घटना, उणरै पात्रां रौ चरित्र चित्रण अर उणरै वातावरण सूं पढ़ण वाळां रै मन माथै अेक खास प्रभाव पड़ै। इण प्रभाव नै इज कहाणी रो उद्देस्य कैवै। मोटै रूप सूं देखां तौ कैय सकां कै कहाणी रौ उद्देस्य मिनखाजूण रै साच नै आपरै पाठकां तांई पूगावणौ होवै क्यूंकै कहाणी आपरै कलेवर में छोटी होवै इण सारू उणरै माध्यम सूं आखै जीवण री व्याख्या तौ नीं करी जा सकै पण जीवण रै किणी अेक पख री प्रस्तुति उणरै माध्यम सूं कहाणीकार करिया करै। कैई वार कहाणीकार किणी चरित्र विसेस री प्रतिस्ठा खातिर ई कहाणी रचिया करै है वे उण चरित्र रै मारफत जीवण रै किणी साच नै उघाड़णौ चावै।

आं बातां रै अलावा मनोरंजन तौ हमेसा सूं साहित्य रो अेक उद्‌देस्य रैयौ ई है अर हमेसा रैवैला पण फगत मनोरंजन ई करणौ कदैई साहित्य रौ उद्‌देस्य नीं होया करै, आ बात ध्यान राखणै री है।

8.12 सारांस

कहाणी गद्य री अेक प्रमुख विधा है। वा आकार में छोटी होया करै अर उणरै माध्यम सूं जीवण रै किणी अेक पख री या जीवण रै किणी अेक सांच री ओळखांण करावणौ कहाणीकार रौ ध्येय होया करै है। आज रै जुग में आ अेक जगचावी विधा है। इण इकाई में कहाणी री परिभासा, उणरै तत्वां नै अर उणरी सैली ने समझाण री कोसीस करी हां।

8.13 बोध सवाल

1. कहाणी री परिभासा लिखो।
2. कहाणी रै तत्वां री ओळखांण करावौ।
3. उपन्यास अर कहाणी में कांई अन्तर है ? समझावौ।
4. कहाणी में कथावस्तु रै महत्व नै परगट करौ।
5. 'संवाद कहाणी रा प्राण है' इण कथन री समीक्षा करौ।
6. देसकाल अर वातावरण सूं आप कांई समझौ–कहाणी रै रचना–विधान में उणरी कांई भूमिका होवै ? समझावो।

8.14 संदर्भ ग्रन्थ

1. कहानी – नई कहानी – नामवरसिंह
2. नई कहानी की भूमिका – कमलेश्वर
3. हिन्दी कहानी : उद्‌भव और विकास – डॉ. हेतु भारद्वाज
4. हिन्दी कहानी : स्वरूप और संवेदना – राजेन्द्र यादव

इकाई–9

राजस्थानी भासा रा प्रमुख–कहाणीकार मुरलीधर व्यास

इकाई री रूप रेखा

9.0 उद्देस्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 सरुवात

9.3 कहाणी री परिभासा

9.4 कहाणी रौ रचना–विधान

9.4.1 कथानक

9.4.2 पात्र या चरित्र–चित्रण

9.4.3 संवाद

9.4.4 देसकाल अर वातावरण

9.4.5 भासा–सैली

9.4.6 उद्देस्य

9.5 मुरलीधर व्यास : जाणकारी अर कहाणी कला

9.6 व्यास री कहाणी 'भाठौ' रौ सारांस

9.7 भाठौ कहाणी रौ कथ्य

9.8 मोवन रै चरित्र री विसेसतावां

9.9 भाठौ कहाणी री समीक्षा

9.10 कीं व्याख्यावां

9.11 सवाल

9.12 संदर्भ ग्रन्थ

9.0 उद्देस्य

राजस्थानी कहाणी री परम्परा अर विकास नै देखता थकां मुरलीधर व्यास री कहाणी कला अर वां रै योगदान नै दिखाणो ई वास्तै जरूरी हैकै मुरलीधर व्यास राजस्थानी रा पैलड़ा कहाणीकार है जका उण बगत री समस्यावां सूं जागरूकता रै साथ जुड़या रैया अर ठावी कहाण्यां लिखी। आज आं री कहाण्यां रै माध्यम सूं आजरै युग री संवेदना अर उण स्थितियां नै चोखी तरिया सामै ल्याई जा सकै हैं जिण सूं रचनाकार री संवेदनावां नै प्रगट करी जा सकै है।

9.1 प्रस्तावना

राजस्थानी गद्य री परम्परा घणी पुराणी है। चौदवीं सताब्दी सूं राजस्थानी में लिख्योड़ै गद्य रौ नमूनो मिलै। राजस्थानी गद्य सिरजण में जैन विद्वानां री भूमिका महताऊ कहीजै। राजस्थानी उपन्यास अर नाटक रा पैला लिखारा जिया शिवचन्द्र भरतिया मानीजै, बियां राजस्थानी कहाणी भी सैसूं पैला शिवचन्द्र भरतिया ई लिखी। भरतिया री पैली कहाणी सन् 1904 में 'विश्रान्त प्रवासी' रै नांव सूं छपी। ई पछै कहाणी री सुरूआत हुई अर केई कहाणीकार सामाजिक समस्यावां नै लेयर कहाणी लिखी। पण कहाणी आधुनिक विधा है ई वास्तै राजस्थानी कहाणी रौ समूल विकास आधुनिक काल में ई हुयो।

9.2 प्रारम्भ

राजस्थानी में सरू में जैन साधु आपरै धरम रै प्रचार वास्तै गद्य रौ सहारो लियो, इणमें कहाणी विधा भी खास ही। अै जैन साधु जैन धरम रा उपदेस सीधी–सादी भासा में धरम कथावां रै माध्यम सूं लोगां नै दिया जिण सूं लोगां रै मांय कहाणी पढणै री रूचि जाग्रत हुई। आं धरम कथावां रौ जैन धरम अर कहाणी साहित्य री दीठ सूं घणो महत्व हो। अै जैन कथावां धरम रै मूळ सूत्रां रौ कथावां रै माध्यम सूं चोखो विस्लेसण करियो। आं में सगऴा सूं पुराणी जैन कथा 13वीं सताब्दी में मिलै। अठै आ बात भी ध्यान में राखणो जरूरी है' कै आं धरम कथावां रौ गद्य सांतरो अर प्रौढ़ भी है। राजस्थानी साहित्य में अठै सूं कहाणी री परम्परा सुरू हुई अर धरम नै प्रमुखता देवती आगै चाल'र समाज री समस्यावां कानी मुड़गी। उण बगत साहित्य सिरजण रै लारै मनोरंजन रै साथै–साथै मिनख अर समाज री बात करणों कलमकार रै वास्तै जरूरी हो। बात नै इण ढंग सूं कही जा सकै कै बात रौ प्रभाव हुवै अर बात कोई मर्मभेदी स्थिति नै उजागर करै। सरू री कहाणी समाज रै सुधार री भावना सूं ई लिखीजी। उणा में कहाणी–कला री दीठ सूं केई खामियां भी निजर आवै।

शिवचन्द्र भरतिया रै पछै गुलाबचन्द नागौरी री 'बड़ी तीज', 'बेटी की बिकरी' अर 'बहू की खरीदी' कहाण्यां अलीगढ़ सूं छप्योड़ी 'माहेश्वरी' पत्रिका में मिलै। नागौरी रै पछै शिवनारायण तोसनीवाल री 'विद्या परंदेवतम' अर 'स्त्री शिक्षण को ओनामा' पत्रिका में 'पंचराज' कहाणी मिलै। अठै आ बात भी उल्लेखजोग है कै अै सगऴी कहाण्या प्रवासी रचनाकारां री ही लिख्योड़ी ही। समाज सुधार अर आदर्सवाद आं कहाण्यां री मूळ प्रेरणा ही।

आं कहाण्यां रै पछै 20 साल ताईं राजस्थानी में कोई कहाणी नी लिखीजी। पछै सन् 1935 रै आसै–पासै दुबारा कहाणी लिखणो सुरू हुयो अर इण बगत रा प्रमुख कहाणीकारां में मुरलीधर व्यास भी अेक हा। आं रचनाकारां नै कहाणी लिखणै री प्रेरणा बंगला भासा सूं मिली अर बंगला भासा री तर्ज माथै ई अै भी राजस्थानी कहाणी में आयोड़ा ठैराव नै तोड़यो अर फेरूं राजस्थानी में कहाण्या लिखणो चालू करयो। आं री कहाण्यां री संवदेना रौ आधार भी सामाजिक समस्यावां ई ही। उण बगत में हिन्दी में जकी कहाण्या लिखीजी, बै सगळी सामाजिक अर आदर्सवादी ही। मुरलीधर व्यास रौ पैलो कथा–संग्रै 1956 में प्रकासित हुयो पण इण सूं पैलां बां री कई कहाण्यां पत्र–पत्रिकावां में छप चुकी ही। व्यास रै साथ राजस्थानी में लिखण वाळा कहाणीकारां में नानूराम संस्कर्ता, नृसिंह राजपुरोहित, बैजनाथ पंवार, श्रीलाल नथमल जोसी, डॉ. मनोहर शर्मा, अन्नाराम सुदामा, दामोदर प्रसाद शर्मा, करणीदान बारहठ, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, मूलचंद प्राणेश, दीनदयाल ओझा इत्याद है।

सन् 1970 रै पछै फेरूं राजस्थानी कहाणी रै कथ्य अर सिल्प में बदळाव आयो। अै कहाण्या आज भी राजस्थानी कहाण्यां में आपरी ठावी ठौड़ राखै। आं कहाणीकारां में सांवर दहया, रामस्वरूप परेस, मनोहरसिंह राठौड़, बी.एल. माली 'अशान्त', नंद भारद्वाज, हनमन चौहान इत्याद प्रमुख हैं। आं

कहाणीकारां री कहाण्यां में आज री जिंदगी री विसंगती, खोखलापण, कुंठा इत्याद रौ सांतरो चित्रण है। कहाणी में जठै संवेदना या कथ्य री दीठ सूं बदलाव आयो, बठै सिल्प में नुवां नुवां प्रयोग हुया। अै कहाणीकार राजस्थानी कहाणी नै भरोसो दिरायो अर आज राजस्थानी में केई जणां सांतरी कहाण्या लिख रैया है।

9.3 कहाणी री परिभासा

बियां तो कहाणी, बती ई पुराणी है जतो पुराणो मानखो। जद सूं मिनख में आपरी संवेदनावां नै प्रगट करणै री खिमता आई, तद सूं ई बो समाज में कहाणी सुणतो आयो है। कहाणी सुणणो अर कहाणी कैवणो आ मिनख री सदा सूं ई प्रवृति रैयी है अर इण रै बलबूतै सूं बो समाज री समस्यावां नै उठातो रैयो है तौ उणां रा समाधान भी ढूंढतो रैयो है। मौखिक परम्परा में कहाणी घणी जूनी रैयी है आज भी कहाणी आपरी ठावी ठौड़ राखै।

विद्वान लोग आधुनिक कहाणी री केई परिभासावां करी है। आपणै हिन्दी में उपन्यासकार प्रेमचंद लिख्यो है कै कहाणी अेक रचना है जिण रै मायं जिंदगी रै किणी अंस या मनोभाव नै कहाणीकार प्रगटै। इण सूं लागै कै कहाणी जिंदगी सूं जुड़योड़ी विधा है अर जिंदगी नै उजागर करणो ई उण रौ ध्येय है।

9.4 कहाणी रौ रचना–विधान

कहाणी अैड़ी विधा है जिण रै मांय जिंदगी रो यथार्थ चित्रण आज रो कहाणीकार करै। कहाणी कहाणीकार रै अनुभव यथार्थ रो हूबहू चित्रण है अर आ ई कहाणी री खास विसेसता मानी जावै। कहाणीकार आपरी जिंदगी में जको अनुभव करै, वो ई कहाणी रै मांय उतरै अर पाठक नै अेक नुंवी संवेदनां सूं परिचित करावै। कहाणी समीक्षक कहाणी रै मूल्यांकन सारू कीं अैड़ा तत्व अंगेज्या हैं जिण रै माध्यम सूं किणी भी कहाणी रो मूल्यांकन करयो जा सकै है। कहाणी रै इण रचना–विधान में अै तत्त्व मानीज्या हैं– 1. कथानक 2. पात्र अर चरित्र–चित्रण 3. संवाद 4. देसकाल अर वातावरण 5. भासा–सैली 6. उद्देस्य

9.4.1 कथानक

जिण कथा या घटना माथै कहाणी रो ढांचो तैयार हुवै, बो कथानक कहीजै। कहाणीकार आपरै आसै–पासै री या खुद री जिंदगी री किणी घटना नै कथानक रो आधार बणा'र कहाणी लिखै। घटना जती यथार्थ हुवैली, कहाणी बती ही प्रभावसाली हुवैली। कहाणी में कथानक रो विकास सांतरै ढंग सूं हूवणो चाइजै अर घटना चरम सीमा माथै जाय'र खत्म हुय जावै। कहाणी रो कथानक रोचक अर मनोवैग्यानिक होवणो चाइजै। कथानक रो सम्बन्ध सामाजिक, राजनैतिक या धार्मिक स्थितियां सूं हुय सकै। कथानक में यथार्थ हुवणो ई चाइजै विकास री दीठ सूं कथानक री भी च्यार स्थितियां मानीजी है– 1. आरम्भ 2. विकास 3. चरमसीमा अर चौथी अंत।

9.4.2 पात्र या चरित्र–चित्रण

कहाणी में घटनावां रो अतो महत्त्व नी, जतो उण रै आयोड़ा पात्रां री मानसिक या मनोभावां नै प्रगट करण वाळी स्थितियां रो है। कहाणी रो कथानक पात्रां रै च्यारूमेर ई घूमै। इण वास्तै कहाणीकार आपरी कहाणी में पात्रां रै चयन रो पूरो ख्याल राखै अर अैड़ा चरित्र उतारै जका अेक नुवीं संवेदना या आज रै यथार्थ सूं जुडयोड़ा हुवै। पात्रां बाबत कहयो गयो हो के बै सहज, सुभाविक अर जीवंत हुवै। बै खुद आपरी जिंदगी रा सुख–दुःख झेलणिया हुवै, जिण सूं बां रै चरित्र रो प्रभाव पाठकां माथै पड़ै। कहाणी छोटी हुवै ई वास्तै कहाणी में पात्र थोड़ा हुवै जिण सूं बां रै चरित्र रो ढंग सूं विकास दिखायो जावै। पात्र जता भी हुवै, आपरै चरित्र री गरिमा या

आपरी खासियत लियोड़ा हुवै बै आपरी भावनावां अर विचारां नै मजबूती रै साथ प्रगट कर सकै।

9.4.3 संवाद

कहाणी रै मांय जठै पात्र आपसरी में बतळावै, वै संवाद कहया जावै। संवादां रो आपरो न्यारो महत्त्व कहाणी में है। इण सूं कहाणी में जठै जीवंतता आवै, बठै ई कहाणी रै कथानक को विकास हुवै अर पात्रां रै चरित्र माथै प्रकास पड़ै। जे कहाणी फगत वर्णनात्मक हुवै तो कहाणी रोचक भी नी हुवै अर इण साथै ई चरित्रां रो विकास भी नीं हुवै। सवादां री आ विसेसता है'क बै छोटा, परिस्थिति अर घटना रै साथै ई साथै पात्रां रै अनुकुल हुवै। कहाणी रै संवादां में जती सुभाविकता होसी, कहाणी बती ई प्रभावसाली होसी। संवादां रै में व्यग्यात्मकता, चुटीलपणो अर सरलता होवणी चाइजै। कहाणी रै मांय घटना रो जको विस्तार नजर आवै उणनै रोचकता संवाद सूं ई मिलै। ई वास्तै सजीवती, रोचकता अर संवादां रो छोटो होवणो कहाणी री मार्मिकता अर प्रभावोत्पादकता रै वास्तै घणो जरूरी है।

9.4.4 देसकाल अर वातावरण

कहाणी किणी देस अर किणी जुग विसेस री परिस्थिति सूं जुड़ी हो सकै। ई वास्तै जैड़ी सामाजिक, राजनीतिक अर धार्मिक स्थिति हुवै, कहाणी में उण रो यथार्थ चित्रण होवणो चाइजे, ई सूं कहाणी जीवंत हुवैली। आलोचक इण नै स्थानीय वातावरण भी कैवै कै जी परिवेस सूं कहाणी जुड़योड़ी हुवै, वो परिवेस यथार्थ रूप में कहाणी में चित्रित होवणो चाइजै। आज कहाणी में परिवेस अर पात्र दोनूं अेक दूजै सूं जुडयोड़ा है।

9.4.5 भासा–सैली

कहाणी री भासा सीधी–सरल अर पात्रां रै अनुकूल होवणी चाइजै। जद आपां किणी परिवेस नै उजागर करणो चावां तो उण परिवेस सूं जुडयोड़ा पात्रां री भासा भी उणी मुजब हुवै तो कहाणी घणी यथार्थवादी अर प्रभावी कही जा सकै है। कहाणीकार री भासा में सहजता, सुभाविकता अर रोचकता हुवै। जठै ताईं सैली रो सम्बन्ध है, कहाणी री सैली में रोचकता, संकेतात्मकता अर प्रभावोत्पादकता होणी चाइजै। सैली रा केई रूप कहाणी में विसै रै अनुकूल ल्याया जावै, जियां वर्णन सैली, आत्मकथात्मक सैली, पत्रात्मक सैली, डायरी सैली, संवादात्मक सैली। रोचक सैली सूं कहाणी में प्रभावसीलता आ जाती है।

9.4.6 उद्देस्य

हरेक कहाणी मनोरंजन भी करै तो उण रो अेक उद्देस्य भी हुवै। कहाणीकार घटना–प्रसंग या स्थिति विसेस रै माध्यम सूं आपां नै की कैवणो चावै, किणी स्थिति नै चित्रित कर'र किणी सामाजिक सरोकार रो सवाल पैदा करै, जिण सूं कहाणी महताऊ वणै। प्रेमचंद रो कैवणो हो कै कहाणी मानव जीवन रै किणी सत्य नै दुनियां सामनै प्रकट करणो चावै। आज कहाणी फगत यथार्थ नै हूबहू आपणै सामी राखै।

9.5 मुरलीधर व्यास : जाणकारी अर कहाणी कला

राजस्थानी साहित्य में गद्य री सुरूआत तो हिन्दी सूं भी पैला मानी जावै। राजस्थानी में लिख्योड़ी बात, विगत अर ख्यातां सूं सम्बन्धित मोकळो साहित्य मिलै अर इण गद्य रो जातरा छठै–सातवें सइकै तांई राजस्थानी चालती रैयी है। कहाणी जरूर थोड़ी पछै लिखीजी।

अठै ओ भी अेक महताऊ तथ्य है कै राजस्थानी भासा में कहाणी रो सिरजण सबसूं पैला जका कहाणीकारां रै माध्यम सूं हुया बै सगळा प्रवासी हा। बां रो हिन्दी सूं लगाव अर हिन्दी रै साथै–साथै बै बंगला भासा रै कथा–साहित्य सूं ई परिचित हा। इण कारण बीं बगत री बां री राजस्थानी माथै हिन्दी रो भी प्रभाव पड़यो ई वास्तै भासा में थोड़ो लहजो हिन्दी रै नेड़ै जरूर है, पण बै कम सूं कहाणी री नींव पटकी अर आपरी जागरूकता रै पाण सामाजिक समस्यावां कानी ध्यान दियो। आं री भासा में संस्कृत अर हिन्दी रै सबदां री भरमार रैयी। आ कहाणीकारां में शिवचन्द्र भरतिया, भगवती प्रसाद दारूका, पं. माधवप्रसाद मिश्र, शिवनारायण तोसनीवाल इत्याद प्रमुख हा।

मुरलीधर व्यास

वास्तव में देख्यो जाय तो राजस्थानी कहाण्यां री सुरूआत मुरलीधर व्यास अर नानूराम संस्कर्ता जैड़ा कहाणीकारां सूं ही कही जा सकै है। आप राजस्थानी कहाणी रा सिरैनाव कथाकार कहीजै। आपरो जलम सन् 1898 (चैत्र सुदी 12 वि.सं. 1955) में बीकानेर में हुयो। आपरी सरू सूं ई कहाणी लिखणै में रूचि रैयी। इण सूं पैला पत्र–पत्रिकावां में आपरी कहाण्यां छपीजगी ही। आपरी कहाण्यां सूं राजस्थानी में कहाण्यां री भरोसै आळी सुरूआत हुई। 'बरस गांठ' कहाणी संगै री प्रस्तावना में प्रो. नरोत्तमदास स्वामी लिख्यो है– 'राजस्थानी रो प्राचीन बात–साहित्य समृद्ध है, जितौ ई आधुनिक बात साहित्य दीन–हीन है। आज सूं कोई पचास बरस पैलां राजस्थानी साहित्य रा यशस्वी लेखक शिवचन्द्रजी भरतिया 'कनक–सुन्दर' नाम री एक लम्बी वारता लिखी ही। बाद में इणनै उपन्यास रूप में मान लियो गयो। जिण में राजस्थानी जीवण रो सुन्दर चित्रण हुयो हो, जिण रै बाद राजस्थानी भासा रा मोटा अनुरागी गुलाबचन्द नागौरी, मारवाड़ी हितकारक रा सम्पादक श्री छोटाराम शुक्ल, श्री शिवनारायण तोसनीवाल, श्री वृजलाल बियाणी इण दिसा में छोटा–मोटा प्रयास किया है।' इण रै पछै आगै स्वामी जी लिखै– 'आधुनिक राजस्थानी बातां रा प्रथम महत्त्वपूर्ण लेखक श्री मुरलीधर व्यास है। आज सूं बीस बर्ष पैलां अर्थात् सं. 1993 मांय आप राजस्थानी में नवीं शैली री बातां लिखणी सुरू की।' इण सूं लागै कै राजस्थानी में आधुनिक बोध अर नुवै सिल्प री कहाण्यां लिखणै रो पैलो नांव मुरलीधर व्यास रो लियो जा सकै है।

डॉ. किरण नाहटा प्रवासी लेखकां रै बाबत लिख्यो है कै 'कई कारणां सूं प्रवासी कहाणीकार इण धारा नै बरोबर आगै नी बढ़ा सक्या दूजै कांनी बांनै राजस्थान रा रचनाकारां रो सैयोग भी नी मिल्यो, इण वास्तै प्रवासी लोगां री आ सिरजण धारा बेगी ई समाप्त होगी।' इण तरै राजस्थान में कीं दसक पछै आधुनिक कहाण्या लिखणो जरूर सुरू हुयो–पण प्रवासी कहाणीकारां री धारा अर उण रो सिरजण दूजी भांत रो हो। इण वास्तै आ कहाणीकारां नै उणां सूं नी जोड़ सकां।

मुरलीधर व्यास पैला अैड़ा कहाणीकार है जका बात सूं कहाणी कानी चाल्या अर कहाणी नै आपरै जुग री समस्यावां सूं जोड़'र सांतरी कहाण्यां लिखी। व्यासजी कहाणी रै अलावा लघु कथावां, संस्मरण, रिपोर्जाज, नाटक, निबंध, दोहा, सोरठा इत्याद कई विधावां में भी रचनावां लिखी। सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या रो कैवणो है कै व्यास जी बंगला रा शरत् बाबू सूं घणा प्रभावित है।

व्यास री बाकी रचनावां में 'राजस्थानी कहावतां : भाग अेक' 'दाढ़ी पर टैक्स', 'उज्जवल माणिया : घूमर, जूना जीवता चितराम, इक्के आळो' इत्याद पोथ्यां हैं। व्यास री रचनावां में प्रौढ़ता अर विसै री विविधता है। वां रौ राजस्थानी साहित्य में मेहताऊ योगदान मान्यो जासी।

9.6 व्यास री कहाणी 'भाठौ' रौ सारांस

व्यास जी कहाण्यां में सामाजिक समस्यावां नै सांतरै अर यथार्थ रूप में उठावता थकां रूढ़ीवादी विचारां

माथै तीखो व्यंग्य करयो है। समाज स्त्री बाबत मानतो रैयो है कै स्त्री तौ चोकै–चूल्है री ठौड़ हुवै। उण नै नी तौ मिनख री बरोबरी करणो चाइजै अर नीं मिनख रै सामी बोलणो चाइजै। जुगां–जुगां सूं मिनख समाज स्त्री रौ सोसण करतो आयो है अर आज भी मिनख समाज रै अत्याचार अर जुल्म सूं स्त्री दुःखी है।

'भाठौ' व्यास री महताऊ कहाण्यां मांय सूं अेक है। ई रै मांय नारी री सामाजिक स्थिति रौ सांतरो चित्रण करयो गया है। आ कहाणी घणी मार्मिक है अर इण री संवेदना आज री स्थितियां माथै भी सोचणै सारू केई सवाल उठावै। कहाणी में व्यंग्य री तीखी मार है।

कथानक

घर रै मांय अेक लड़की जलम लेवे। घर रै बुजुर्ग नै ठा पड़ै तो बो निरास हुय ज्यावै। लुगाइयां कैवै घर में भाठौ आय पड़ियौ। पछै भाठौ (बा लड़की) धीरै–धीरै बधण लागै तो उण नै तरै–तरै रा ताना–माना मारया जावै– उण नै 'रांड' कैय'र बतळायो जावै। पण लड़की रौ सागै भाई उण नै 'ओहल्या बाई' कैवतो अर दूजा लोगां नै समझावतो कै टाबर रो नांव नी बिगाड़णो चाइजै पण लोगां नै समझावणो दोरो हो। मोहन बड़ो होय'र मैट्रिक पास करी।

अेक दिन मोवन री मासी आवे जद टाबरां नै मिठाई बांटै तो मासी मोवन नै घणी अर छोरयां न कम देवै। आ दूभांत मोवन नै चोखी नी लागै। बो कैवै– आ बात चोखी नी। पण मासी कैवै– तन्नै ठा नी। थारी बेळा तो थाळी बाजी ही अर अै जलमी जद ठीकरौ। पण मोवन मासी सूं बहस करणै लागै अर उणने समझावै के आपां नै छोटी–छोरी में ओ भेदभाव नीं बरतणो चाइजै। दोन्यू ठाकुर जी रै घर सूं आया है अर दोन्यू बरोबर हैं। इण वास्तै छोटी–छोरी नै लेय'र खावण–पीवण में किणी बात री दुभांत करणो चोखी नी। मोवन री बात मासी रै समझ में नीं आई पण मोहन मानग्यो कै ओ भेदभाव तो समाज री तरफ सूं है अर ई रौ दोस समाज नै दियो जा सकै है।

मोवन घरां सूं आगै चाल्यो तो देख्यो कै अेक आदमी आपरी लुगाई नै पीट रैयो हो। मोवन बठै ठैर उण नै समझावण लाग्यो कै लुगाई ऊपर हाथ उठावणो पाप है जणा उण रो पति बोल्यो– अरै थानै ठा नी लुगाई री जात नै माथै चढावणो चोखो नी है। पछै तन्नै कांई पंचायती है तूं थारै घरां जा। मोहन आपरो सो मूंडो लेय'र घरां कानी टुरग्यो।

अब अहिल्या जद बड़ी हुवण लागी तो मोवन आपरी मां नै कैयो घर में टाबर धमा चौकड़ी मचावै है आं नै स्कूल में भेजणो चाइजै जिण सूं अै दो आंक सीख लेवै। पण मां ई बात रो विरोध करै अर कैवै कै छोरां नै तो कमावणो है, छोरियां नै थोड़ो कमावणो है। पण मोवन बां रै विचारां रो खंडन करतो हुयो कैवै के अै बातां गळत हैं आज छोरयां नै पढ़ावणो जरूरी है। खैर, पछै मोवन री तीन्यू बैनां थोड़ी भोत पढ ली।

अेक दिन अेक बुजुर्ग आय'र मोवन रै ब्याव री बात चलाई कै अबै मोवन ब्यावण–सावै है इण रो ब्याव कर देणो चाइजै पण मोवन री मां कैयो कै पैलां आपां नै छोरयां री फिकर करणी चाइजै। मोवन भी आ बात कैवै। मोवन रो कैवणो है कै आपां री छोरयां भणी गुणी है। इण वास्तै आपां नै भी भण्या–गुण्या टाबरां रै साथै ब्याव करणो है। पण मोवन री बात नै उण री मां नी मानी अर कैवै कै आपां नै अब उडीक नी करणी चाइजै। आपणी छोरयां नै बारवों–तेरवों बरस लागरयो है, इण वास्तै ब्याव कर देवणो चाइजै। पछ मोवन कांई करै, उण नै मानणो पड़यो अर छोरयां रा ब्याव तय हुय ज्यावै।

ब्याव रै पछै मोवन आपरी बैनां नै 'विदुषी' परीक्षा पास करवा दी। छोरयां आपरै गुणां सूं आपरै सासरै आळा नै मोय लिया–पढ़ी–लिखी अर चतर पछै किणी री आंख में घाली ई नी रड़कै। अेक दिन मोवन

आपरी मां नै महिला मंडल रै प्रोग्राम में लेग्यो। बठै अहिल्या बाई हिन्दी में धारा प्रवाह स्त्री जाति री उपेक्षा माथै भासण देवै ही। हजारूं लोग चितराम सा सुणै हा। उण बखत मोवन आपरी मां नै कहयो– देख मां भाठै मांय सूं फूल झड़ै हैं। मां आ देख'र अणूती राजी ही।

कथानक री समीक्षा

भाठौ कहाणी समाज री अैड़ी जबर समस्या नै उठाई है जकी आज रै परिवेस में भी सांची अर विचारण जोग है। भारतीय समाज में सदा सूं ई औरत रो मिनख पछै दूजो दरजो मान्यो गयो है अर उणनै आदमी जती सुतंतरता, समानता या उण रा अधिकारां री सुविधा कदै नी रैयी। आज भी स्थिति में घणो सुधार नी हुयो है पर आज आ समस्या बियां री बिंया है। आज औरत पढ़ी–लिखी है आपरै अधिकारां वास्तै संघर्स भी करै, पण आदमी री रूढ़ीवादिता में घणो फरक नी आयो है। 'भाठौ' कहाणी रो कथानक पांच छः स्थितियां में बंटयोड़ो है अर अेक–अेक स्थिति अेक–अेक संवेदना सूं जुडयोड़ी है।

कथानक में रोचकता

'भाठौ' कहाणी घणी लाम्बी नीं है। उण रै कथानक री सुरूआत सांतरै ढंग सूं हुई है। परिवार में सगळा री इच्छा आ ही कै लड़को हुवण चाइजै– सगळा घणी उडीक करा हा– पण संजोग सूं लड़की हुयगी। लड़की हुवता ई उणां रा चेरा बदलग्या अर बै उण रो अपमान करता थकां कहयो कै घर में भाठौ आ पड़यो। भाठौ किणी काम रो नी, बियां ही लड़की भी भाठा की दांई घर में बोझ री भांत लखाई। ई पछै लड़की धीरै–धीरै बड़ी हुवण लागी तो उण रै साथै भेदभाव। उण रै सामै अैड़ा ताना–माना मारया कै घर में लड़की हुवण री कोई खुसी किणी भी मिनख नै नीं हुई। फगत लड़की रो भाई की चोखा विचारां रो हो, बो मां अर दूजा लोगां नै समझावतो, पण समाज री विचारधारा दूजै भांत री ही। भाई मोवन री आधुनिक विचार धारा रै पूरो परिवार खिलाफ हो, पछै मोवन री प्रेरणा सूं दोन्यू बैनां पढाई जावै अर पढया लिख्या परिवार में सादी हुवै। अेक दिन किणी कार्यक्रम में जद मोवन री भाण आपरो भासण देवण आवै मोवन आपरी मां नै भी ले जावै अर मां आपरी पढ़ी लिखी लड़की रो भासण सुणनै सुखी हुवै।

कथानक री सुरूआत सूं लेयर अंत तांई पाठक रै मन में जिग्यासा बणी रैवै कै आगै कांई होसी। कहाणीकार अेक छोटी सी समस्या रो सांतरो समाधान ईं में प्रस्तुत करयो है।

कथानक में प्रवाह

'भाठौ' कहाणी रै कथानक में वर्णनात्मकता नी हुय'र मूल कथानक री स्थितियां रो चोखो विभाजन करयो गयो है। घर, समाज अर समाज में नारी उपेक्षा, उण माथै हुवण आळा अत्याचारां रो सांकेतिक रूप में अतो चोखो वर्णन करयो है कै कहाणी में सांतरो प्रवाह आयग्यो है। छोटी हुवतां थकां भी कहाणी समाज री मनोव्रति अर औरत री उपेक्षा रो मार्मिक चित्रण करै । कहाणी रै कथानक में सरसता अर प्रवाह है, गति है अर आपरी चरम सीमा तांईं पूगण री प्रभावी संवेदना है।

कथानक री चरम स्थिति

'भाठो' कहाणी रो कथानक आपरी चरम स्थिति में पूग'र समस्या रो चोखो समाधान प्रस्तुत करै। जको मां लड़का–लड़की रै खाण–पाण में दुभांत करती, जकी लड़क्या नै पढ़ावणो नी चावती, जकी बेगी सूं बेगी बां नै पराई कर देवणो चावै। चाये किस्यो ई घर हुवै अर किस्यो ई बर हुवै। ई रो मोवन विरोध करै। जकै दिन पढ़ी–लिखी लड़क्या रा ब्याव हुया अर जकी अहिल्या नै जलमता ई भाठौ कहयो बा आपरै भाई मोवन री मदद सूं जगां–जगां औरतां रै सुधार वास्तै महिला मंडल री थापना करै। अेक दिन मोवन खुद आपरी मां नै अेक सभा में ले ज्यावै। बठै भाठौ कहीजण आळी अहिल्या औरतां री उपेक्षा

बाबत हिन्दी में भासण देवै। मां आपरी बेटी रो भासण सुण'र खुस हुय ज्यावै, उण री आंख्यां सूं हरख अर प्रेम रा आंसू निकळ पड़ै। 'भाठौ' आज भाठौ नी हो। जरूरत ही उणनै पढ़ावण–लिखावण री। कहाणी रा आ चरम स्थिति कहाणी नै प्रभावी बणावै।

कथानक में मनोवैग्यानिकता

कथानक रै मांय मनोवैग्यानिकता भी होवणी चाइजै जिण सूं बा आज रै समाज मनोविज्ञान नै आपणै सामै प्रकट करै। 'भाठौ' कहाणी पूरी तरै सूं मनोवैग्यानिक है। आजादी रै इत्ता दिनां पछै भी आज रै व्यक्ति अर समाज रै द्रस्टिकोण में घणो आतरो नी आयो है। आज भी आदमी मानै कै औरतां नै आदमी री बरोबरी नी करणी चाइजै। बां रौ खेतर परिवार है अर घर–बारै सूं दूजा खेतर में मिनख आपरै बुद्धिबळ सूं काम करै ओ परम्परावादी अर रुढ़ीवादी द्रस्टिकोण आज रै समाज रो है इण सूं औरत रो सोसण हुवै अर उण री प्रतिभा रो विकास नी हुवै। 'भाठौ' कहाणी मनोवैग्यानिक है। ई रो सीरसक भी मनोवैग्यानिक है क्यूकै लड़की नै जलमतां ई भाठौ कैय'र उण रै विकास नै रोक देवणो जायज नी। मोवन प्रगतिसील विचारधारा रो है जको परिवार अर समाज रा इण रूढ़ि नै तोड़ै।

9.7 'भाठौ' कहाणी रौ कथ्य

घणै बरसा पैलां लिख्योड़ी इण कहाणी रो कथ्य आज भी सांचो अर यथार्थवादी है। स्त्री–पुरस री समानता नै लेय'र आज भी बहस जारी है अर आज भी स्त्री नै समाज में दूजो दरजो दे राख्यो है। कहाणी इण ज्वलंत समस्या रो सांतरो समाधान प्रस्तुत करयो है। इण कहाणी रै कथ्य नै आं बिदुवां माथै देख्यो जा सकै है–

1. **आज रै जीवन रो यथार्थ**– 'भाठौ' कहाणी में आज रै जीवण रो यथार्थ रूप प्रस्तुत हुयो है। भारतीय परिवारां रै ढांचै में आज भी नारी दूजै दरजै रो प्राणी है। पढयो–लिख्या परिवारां नै या सहरी परिवारां नै छोड़दयां तो आज भी नारी नी तो अती पढ़ी–लिखी है अर नी अती जागरूक। लड़की जलमता ई तरै–तरै री बातां हुवण लागै अर जद बा बड़ी हुवै तो वा घर में उपेक्षा अर अपमान रो सिकार बण ज्यावै। उण रै साथै दुभांत हुवै। लड़का नै चोखो पढ़ावै–लिखावै, उण रो खाणो–पीणा भी चोखो करै पण लड़की नै हर तरै सूं दबायोड़ी अर उण रै साथ चोखो व्यवहार नी करैं। समाज री इण रूढ़ीवादिता रो सांचो चित्रण ईं कहाणी में है अर लेखक भोत चोखै ढंग सूं इण नै प्रकट करयो है। आज भी जे लड़की पढ़ी–लिखी हुवै तो बा आपरी प्रतिभा रो परिचै देवै, आगे बढ़ै अर आपरे परिवार रो नांव रोसन करै। अहिल्या कदै 'भाठौ' कैय'र अपमानित हुई, पण पढ़ लिख'र जद बा नारी–सुधार रै वास्तै मंडल बणावै अर बठै भासण देवे तो उण री मां नै भी घणी खुसी हुवै। उण रै मान–सम्मान नै देख'र अहिल्या री मां खुसी सूं मगन हुय जावै।

2. **लड़का–लड़की सारू दुभांत**– कहाणी में आज रै घर परिवार रो यथार्थ प्रकट हुयो है। आज भी घर में लड़की हुवै जद खुसी नी हुवै अर जद लड़को हुवै तो थाळी बजाई जावै। कहाणी में जद मोवन री मां आवै तो बां कैवै– ''रांडां कु–धन अर कु–सीली, भाई री बरोबरी करसी, क्यूं?'' मासी रो ओ कथन घणो मार्मिक है। लड़की नै कु धन कैवणो उण रो अपमान अर उण री उपेक्षा है। आ लड़का लड़की में सरासर दुभांत है। अबोध लड़क्यां नै दुतकारती मासी कैवै– रांडो थे भाई री बरोबरी किंया करो हो अै। इण री बेळा थाळी बाजी ही, अर थां री बेळा ठीकरौ।' जलम लेवणो तो कोई रै बस री बात नी पण जे लड़की रो जलम ई मिलग्यो तो अतो बड़ो अपमान सैण करणो किणी भी लड़की री सैणसगती सूं बारै है। पण जोर कांई करयो जावै

अबोध अर नादान लड़क्यां। मां अर मासी ई अैड़ा बोल सुणावै तो टाबरां रा मन सांच्याई भाठा हुय ज्यावै। कहाणी परिवार अर समाज री रूढ़िवादिता माथै तीखो प्रहार करै। लड़की नै नी पढ़ायो जावै अर नी चोखो खुवायो जावै, ओ बच्ची री कोमल भावनावां नै कुचळनो है अर बो भी माइतां रै विचारां सूं।

3. **अपेक्षा री सिकार नारी**– 'भाठौ' कहाणी में आज रै नारी री उपेक्षा साफ साफ झलकै। लड़की नै लड़की नी कैय'र उण नै 'भाठौ' कैवणो घोर उपेक्षा है। लड़की रै जलमतां ई कोई खुसी नीं। मां कैवै– 'बाबाजी भाठौ आय पड़ियौ।' जद बाबोजी आ सुणी तो बोल्या– खैर भाग री बात, म्हारा तो गोडा टिकग्या। नीठ माळा फेरतां–फेरतां औ संजोग बणियो हौ, पण भाग में भाठौ लिखियो। कदैस भळै जिसो होवतो तो थनै राजी करता अर मन री आफां भाण काढता।' लड़की नै भाठौ कैवता अर बोल–बतलावण में रांड जैड़ा सबद सूं अपमान करणो, ओ परिवार में अैड़ो धारो हो जिकै सूं लड़की रोंवती अर मन मसोसती रैवती। ओ लड़की री कोमल भावनावां माथै अत्याचार है।

4. **भणाई समाधान**– कहाणीकार ओ बतावणो चावै कै घर–समाज में नारी री ईं स्थिति में सुधार ल्यावण रो साधन पढ़ाई है। आज समाज नै आपरो द्रष्टि कोण बदलणो चाइजै। समाज में केई तरै री रूढ़ियां अर परम्परावां है जिणारै कारण नारी रो जीवन दुःखी है। आज भी लड़की नै पढ़ावणै रै पछै अेक संकीर्ण दीठ है जिण रै कारण बा परबस है। जे लड़की पढै तो बा आगै बढ़ सकै है। कहाणी में अहिल्या अर उण री बैना 'विदुषी' पास करै अर आपरै सासरै आळै नै आपरी योग्यता सूं प्रभावित करै। मोवन अर उणरी बैना महिलावां सारू जगां–जगां 'महिला–मंडल' री थापना करै अर समाज में जागृति ल्यावै। जद पढ़–लिख'र अहिल्या हिन्दी में धारा–प्रवाह भासण देवण लागै तो ईं स्थिति नै देख'र उणरी खुद री मां नै भी अचूंभो हुवै अर वा लोगां नै बतावै कै आज महिलावां पिछडयोड़ी क्यूं है। इण सूं लागै कै कहाणी महिला सिक्षा नै बढावो देवण रो पुरजोर समर्थन करै। आज बेटा–बेटी में भेद करणो भूल है। बेटी, बेटा रै बराबर है। समाज में कीं बदळाव आयो है अर लड़क्यां भणबा लागी है।

5. **रूढीवादित रो विरोध**– आ कहाणी समाज में फैली रूढिवादिता रो भी घणो विरोध करै जद मोवन आपरी बैना नै पढावण री बात कैवै तो उण री मां कैवै– 'कांई भण'र करसी? कठैई कमावण थोड़ै ई जावणो है?' पण जद मोवन ईं बात पर जोर देवैतो उण री मां कैवै– 'आघो ज, म्हारै तो भणावणी कोनी। आ सासतर परमाण बात कोनी। मोवन कैवै कै अब सासतर री बात छोडो अर आज रै सासतर रै पाण तो पढ़ाई–लिखाई घणी जरूरी है। पढ़–लिखर लड़की आपरो जमारो सुधारै अर जे दूजै घर में जावै तो बठै भी वा आपरा परिवार री सांतरी सेवा करै आपरै टाबरां नै पढ़ावै। अर जे बा कमावै तो भी इण में कांई दोस है। समाज में आ रूढ़ि भी है के वो महिला रै नौकरी करणै रो समर्थन नी करै। अहिल्या री मां कैवै– छोरा नै तो कमावणो है छोरिया नै थोड़ो ई कमावणो है।' आ समाज में सदा सूं रूढ़ि रैयी है। बै महिला रो क्षेत्र फगत चूलो–चौको करणै तांईं ई मानै। पण आज स्थिति बदळगी। ईं वास्तै मोवन कैवै कै – 'कमावै तो कांई दोस है? भणनै सूं हिरदै में चानणो हुवै। कैबत ई है, 'पडयोड़ै रै चार आंख्या हुवै।' पण मोवन री मां ई बात नै मानै नी। बा मोवन नै कैवै– 'चोखो, माथो मत खपा, म्हैं तो भणण नै को भेजू नी।' मोवन अर उण री मां रै बिचै भणाई नै लेय'र बहस हुवै। अंत में मोवन आपरी बैनां नै स्कूल में भेजै अर उणां नै पढ़ा लिखा'र सासरै भेजै। मोवन आज रै विचारां रो है अर इण री मां अंत में आपरै बेटा री बात नै मान भी लेवै।

6. **नारी माथै अत्याचार**– मिनख सदां सूं औरत नै घर रै मांय राखी अर आपरै खुसियां वास्तै उण माथै अत्याचार भी करतो रैयो। कहाणी में अेक जणो आपरी लुगाई नै पीटै, गाळया काढ़ै अर लुगाई बापड़ी थर–थर कांपै। बठै केई जणा इकट्ठा हुय ज्यावै, जणा बो बतावै कै– कांई बताऊ रांड निखेत है, म्हैं इणनै केई बार कह दियो कै पाड़ोस्यां रै मत जा, पण आ म्हारी बात मानै कोनी। जद उण री लुगाई कैवै कै थे जियां आपरा भायलां में जावो, बिंया म्हैं भी म्हारी पाड़ोसण सूं बताळाऊं– पण आ बात उण रै पति नै चोखी नी लागै। वो कैवै– 'आ रांड मिनखा री बराबरी करैला।' .... थां जिसा अंगरेजां ..... तो आ बात बिगाड़ी है।' इण सूं लागै कै मिनख महिलावां माथै अणूता अत्याचार करतो रैयो अर जे बा आपरी थोड़ी भोत आजादी चाई तो उणनै मारी–पीटी। इण मोकै जे कोई दूजा नारी रो पख लियो तो उणानै भी दुत कारया अर कहयो कै नारी मिनख री बरोबरी नी कर सकै। अै तो अंग्रेजी संस्क्रति रा विचार है। कैबत तो आ है कै नारी माथै हाथ उठावणो महापाप है पण मिनख आपरै सुवारथ सारू उणनै मारतो–पीटतो रैयो है, इत्याचार करतो रैयो है अर उणनै गुलाम बणा'र राखी है। कहाणी में नारी अत्याचार रो यथार्थ वर्णन है, सराबी पति घर में आय'र दारू तांई पीसा मांगै। अर जे लुगाई नटै तो वो उणनै पीटै। नारी रै इण दरद रो सांचो वर्णन भी ईं कहाणी में आयो है। सराबी जुवो खेले, गैणा बेचै अर रात–दिन घर में लड़ाई झगड़ो करै। कहाणी में औरत रो पति कैवै– 'रांड री जात नै माथै नी चढाणी आं री तो पूजा उतारयोड़ी ई आछी है, पड़ग्या खल्ला उड़गी खेह, फूल पकड़ सी हुयगी देह।' इण सूं लागै कै मिनख समाज महिलावां रै वास्तै सदा सूं ई क्रूर अर कठोर रैयो है। कहाणी में इण छोटी सी स्थिति रो सांतरो वर्णन हुयो है।

इस तरै ओ कहयो जा सकै है कै कहाणी में जकी संवेदनावां प्रस्तुत करी हैं, बै आज भी सांची एवं यथार्थ है अर प्रासंगिक भी। आज स्त्री अर पुरूस री समानता नै लेय'र बहस छिडयोड़ी है कहाणी हर तरै सूं आज री ज्वलंत समस्या नै आपणै सामै राखै।

9.8 मोवन रै चरित्र री विसेसतावां

'भाठौ' कहाणी में मोवन अेक प्रमुख अर खास चरित्र है जको ईं कहाणी रा मूल संवेदना अर इण रै कथानक सूं घणो जुड़योड़ो है। कहाणीकार मोवन रै विचारां रै माध्यम सूं ई आपरा विचार पाठकां रै सामी राखै अर कहाणी री समस्या रो समाधान प्रस्तुत करै। कहाणी रा दूजा पात्र सहायक है। मोवन री मां मोवन रै विचारां रो विरोध करै पण अंत में मोवन रै विचारां सूं सहमत भी हो ज्यावै। कहाणी में मोवन रै चरित्र री नीचै लिखी विसेसतावां इण मुजब हैं–

1. **भण्यो–गुण्यो युवक**– मोहन आपरै घर में पढयो–लिख्यो युवक है। पढाई लिखाई रै कारण उण रा विचार आज रै जमाना मुजब हा। इण वास्तै उण रो सगळा सूं ताल मेल नी बैठतो। घर में उण री घणी इज्जत नी ही क्यूं कै घरआळा लोग रूढ़िवादी अर परम्परावादी हा। इण वास्तै मोवन रो सोच उणां सूं मिलतो नी पण घर सूं बारै जका पढ्या–लिख्या हा, बै मोवन री इज्जत करता। कहाणीकार कैवै– 'घरवाळा तो उणरी कदर करता नी, पण बारवाळां में उण रौ सिक्कौ जमियोड़ौ हो। वो मैट्रिक पास कर'र साहित्य सम्मेलन री 'साहित्य रत्न' री पदवी सनमान समेत प्राप्त कर चुक्यो हो। हरेक सभा सोसायटी अर साहित्य रै जमावड़ै में उण रौ नम्बर सगळा सूं आगै रैवतो।' मोवन जठै खुद पढयो–लिख्यो हो, बठै बो आपरी बैना नै भी पढ़ावणो चावो हो। ओ ई कारण है कै बो अहिल्या नै 'विदुषी' परीक्षा पास करवाई अर वास्तव में उण नै 'विदुषी' बणाई। अहिल्या नारी जागृती वास्तै आगै आई अर हिन्दी में धारा प्रवाह भासण देवण लागी। ओ मोवन री प्रेरणा रो ई फल है।

2. **बैन सारू प्रेम**– मोवन में आपरी बैनां सारू घणो प्रेम हो। जद कोई बांनै 'भाठौ' रांड कैवतो तो वो कैवतो। इण नै अहिल्या बाई कैयर बतळावो। रांड अर भाठौ कैवणआळा नै समझावतो कै टाबरां रा नांव नी बिगाड़णा चाइजै। पण चौपड़ियै घड़ै छांट लागै तो वारै बात लागती। इण सूं साफ है कै मोवन आपरी बैना नै ओछा या अपमान करण वाळै सबदां नै सुणबो नी चावो हो। मोवन चावतो कै म्हारी बैना पढ लिख'र चोखै घर में जावै अर बै घर वांळा री सेवा करै। मोवन री मां ई बात रो विरोध करती कै छोरयां नै पढाणै सूं कांई होसी। आं नै तो सेवट घर रो ई काम करणो है। जद मोवन री मासी आवै अर फल मिठाई देवे तौ मोवन जार देवे, ईं नै लेयर बैना एतराज उठावै– 'म्है ई म्हारै भाई रै बरोबर पांती लेस्यां। मासी बोले– 'रांडा थे भाई री बरोबरी किंया करस्यो। इण री बेळा थाळी बाजी ही, अर थारी बेळा ठीकरौ। जावो थानै भाई रै बरोबर पांती को मिळै नी'। मासी री आ बात मोवन रै घणी चुभी। बो ओ मानतो कै सागै भाणां रै बारै में सोच ठीक नी।

3. **लड़का–लड़की रै भेदभाव रो विरोधी**– मोवन पढयो–लिख्यो होबो ईं बात नै भी अनुचित मानतो कै समाज लड़का अर लड़की में भेद राखै। आज तो लड़का–लड़की बरोबर है आ अेक रूढ़ि है कै लड़की नै परिवार में घणी सुविधावां नी देवै अर लड़का रा लाड–कोड घणा करै। समाज री मानता है के लड़की तो पराई हुय ज्यावैली पण लड़को घर में रैवेगो, कमावेगो अर मां–बाप री सेवा–पूजा करैगो। पण ओ सोच स्त्री जाति रो अपमान है। जद उण री मासी आ कैवै कै 'रांडा! कु धन अर कुसीलो, भाई री बरोबरी करसी, क्यूं?' तो मोवन पूछै– 'मासी थे आं नै 'कु–धन अर कुसीलो कियां कैवो?' .... 'छोरै री होड छोरी थोड़ी ई करै'। पण मोवन कैवेतो– 'टाबर टाबर सैंग बरोबर कांई छोरा कांई छोरी। कांई छोरियां ऊपर सूं पड़ै अर छोरा ई मां रै पेट मांय सूं जलमै? कांई परमात्मा छोरिया रै हाथ–पग, आंख–नाक छोरां सूं कमती घड़ै है? दुनियां में छोरो अर छोरी दोन्यू बरोबर हुवै अेक रै बिना दूजो अधूरो है, निकमौ है।' मासी मोवन री बात नै काटती थकां कैवण लागी कै 'आ बात कही जकी तो ठीक, पण छोरो छोरो ई हुवै। छोरो घर रो चानणौ, घर री रेवकी हुवै। छोरयां रो कांई? ठाकुरजी ई नीची बणाय दीवी'। मोवन आं बातां रो विरोध करै। अै बातां उण री समझ सूं बारै ही। मोवन खुद ई बात नै मानतो'कै अै सगळां रूढ़ीवादी विचारां रा लोग है अर आं रै मन में आज भी लड़का अर लड़का रै प्रति भेदभाव रो फरक है जको साव गलत है।

4. **अत्याचारां रो विरोध**– मोवन प्रगतिसील विचारां रो युवक है। पढ़ाई–लिखाई रै कारण उणरो सोच घणो आगे है। इण वास्तै जद अेक जणो आपरी लुगाई सूं दारू पीवण रै वास्तै रिपिया मांगै तो बा नट ज्यावै, ई वास्तै बो उण नै पीटणो सुरू कर देवै। बो उणनै आपरै पड़ोस्यां रै नी जावण दे। बो आपरी लुगाई ने रांड बिना बतळावै कोनी। कैवै– 'कांई बताऊ भाई रांड बड़ी निखेत है। इण नै लाख लाख बार समझा दी के तूं पाड़ोस्यां रै घरै मत जाया कर, पण रांड किसी मान जावै। बठै बळिया बिना रैवेनी। पराये कनै बैठै जणा घर री बात कैवण में आवै। इस्यो काम क्यूं करणौ?' जद लुगाई दारू सारू रिपिया नी देवै तो बो उणनै पीटण लाग ज्यावै। आज भी मिनख लुगाई माथै अत्याचार करै। मोवन समझावै अर इण बात रो विरोध करै।

5. **पढ़ी लिखी औरत रो समर्थक**– मोवन आपरी मां नै समझावै के आपां नै आज लड़क्या नै पढ़ावणौ चाए। पण मां कैवै कै लड़क्यां नै पढ़ावण रो कांई सास्तर प्रमाण है जद मोवन आपरी मां री बात रो खंडन करै अर कैवै कै – आगे लुगायां मिनखां सूं बती भणियोड़ी हुती ही मां। पण मां कैवै – तूं तो आर्य मत रौ है। ये फीटिया छोरियां नै भगावै है। छोरिया भण ज्यासी, जद छोरा कांई करसी?।' पण मोवन रो कैवेणो है कै छोरा अर छोरिया दोनूवां नै ई पढ़ावणो चाइजै।

मोवन नारी सिक्षा रो हिमायती अर समर्थक हो। बो आपरी बैनां नै पढ़ाय'र समाज रै साम्ही अेक आदर्स राख्यो अर दूजा लोगं नै ई प्रेरणा दी।

इण तरै 'भाठौ' कहाणी रो प्रमुख पात्र मोवन आधुनिक विचारां रो युवक है अर वो आजरी विचारधारा नै पाठकां सामी राखै। कहाणी में एक ठौड़ रूढ़ीवादी विचारां रो चक्कर है तो दूजै कानी प्रगतिसील विचारां रो। ओ संघर्स है ईं कहाणी रां मूल संवेदना है। मोवन रो चरित्र सुभाविक अर प्रभावसाली है।

9.9 भाठौ कहाणी री समीक्षा

किणी भी कहाणी री समीक्षा कहाणी रै प्रमुख तत्त्वां रै आधार माथै करीजै। आलोचक कहाणी रा छः तत्त्व मानै– कथानक, संवाद, पात्र अर चरित्रचित्रण, देसकाल अर परिस्थिति, भासा–सैली अर उद्देस्य। आं मानदंडा रै आधार माथै किणी भी कहाणी रौ मूल्यांकन हुवै।

'भाठौ' कहाणी मध्यवर्गीय परिवारां री रूढ़िवादी मानीता सूं जुडयोड़ी कहाणी है। इण रै मांय कहाणी कला रा तत्त्वां रौ सुन्दर समावेस हुयो है। इण द्रस्टि सूं कहाणी री समीक्षा इण भांत करी जा सकै है–

1. **कथानक**– कहाणी रो कथानक एक दो घटनावां नै लेय'र चालै। कथानक छोटो, प्रभावसाली अर मूल संवेदना नै ढंग सूं प्रस्तुत करणै वाळो होणो चाइजै। 'भाठौ' कहाणी रो कथानक भी अैड़ो ई है। अेक परिवार में जद अेक लड़की रो जलम हुवै तो परिवार उण री उपेक्षा करै। उण रै जलम नै लेय'र लोग कैवै कै लड़की कांई हुई– 'भाठौ आ पड़यो।' बै आपरी नाखुसी प्रगटै अर आपरै नसीब नै दोस देवै। उणा रो कैवणो है कै लड़का सारू घणी माळा फेरी पण नसीब में छोरी ई लिखी ही। ईं पछै लड़की नै लेय'र केई तरै रा ताना मारया जावै। उण नै रांड कैयर बतळावै उण रै साथै भेदभाव बरतै अर उण री पढ़ाई रो विरोध करै। परिवार में हर तरै सूं लड़का–लड़की रो भेदभाव दीसे। भाई मोवन आं बातां रो विरोध करता थकां आपरी बैनां नै पढावै अर बां रा चोखै परिवारां में ब्याव करै। बै 'विदुषी' री परीक्षा पास करै अर आगै चाल'र नारी रै उद्धार सारू महिला मंडल री थापना कर'र चोखा भासण देवै अंत में जंद मोवन री मां नै आपरी बेट्यां री प्रतिभा रो पतो चालै तो बा घणी खुस हुवै। कहाणी रो कथानक रोचक अर जिज्ञासा आळो है। सुरू सूं लेय'र अंत तांई पाठक रै मन में जिज्ञासा बणी रैवै। इण रै मांय आरम्भ, विकास, चरमसीमा अर अंत रो उचित संयोजन है। कथानक निम्न मध्य वर्ग री रूढ़िवादी चेतना सूं जुड़योड़ो है जठै औरत माथै अत्याचार हुवै अर लड़का अर लड़की में भेद मान्यो जावै। कहाणी आपरी संवेदना नै प्रभावी ढंग सूं प्रस्तुत करै।

2. **संवाद**– संवाद कहाणी रै कथानक नै गति देवण वाळा हुवै। इण रै साथै ई साथै पात्रां रै चरित्र नै भी उजागर करै। संवाद छोटा, पात्रां रै अनुकूल अर रोचक हुवणा चाइजै। 'भाठौ' कहाणी रा संवाद सुभाविक, संक्षिप्त अर पात्रां री मनगत नै प्रगट करण वाळा है। आं संवादा सूं कहाणी रै मांय गतिसीलता आवै अर पात्रां रो मनगत उजागर हुवै। जियां–

   'छोरिया अर छोरा दोनां नै भणतणो चाइजै।'

   'छोरां नै तो कमावणो है, छोरियां नै थोड़ौ ई है?'

   'कमावै तो कांई दोस है? भणनै सूं हिरदै में चानणो हु जावै। कै बात ई है, भणियोड़ै रै चार आंख्यां हुवै।'

   'चोखो माथै मत खपा, म्हैं तो भाणण नै को भेजू ना।'

'तो बाबा मत भणावोना। सीणा–पिरोणो, कसीदो काढणो तौ सिखासो कै नी?

'हां, ओ तो सीखणो छोरियां रौ धरम है।'

तो ओ ई चोखी तरै सूं मदरसै में सीखावै है।

इयां ई अेक जगा–

'अै बातां सीखणो इस्त्रां रो सगळा सूं पैलो काम है।'

'तो अै बातां मदरसै री पोथ्यां में लिखियोड़ी हुवै है।'

'बता, म्हैं किसी पोथी पढी रे? कुण सै मदरसे गई?

'थे कैवता हा नी के म्हारी अस्सी बरसां री दादी म्हने आं बातां री सीख दिया करती ही?–

'हां'

'तो थे तो आं नै लड़ती ई रैवो हो?'

'जिको'

'इण वास्तै मदरसै भेजणो जरूरी है'

'जा माथौ मत खा! देखी जासी, तू बातां में जीतण को दैनी'। इण तरै कहाणी रा संवाद पात्रां रै अनुकूल है।

3. **पात्र अर चरित्र चित्रण**– कहाणी रो कथानक छोटो हुवै इण वास्तै उण रै मांय पात्रां रै चरित्र चित्रण री गुजांइस कम रैवै। पण प्रमुख पात्रां रो दो च्यार खासियतावां सूं उणां री मूल विचारधारा तो पतो लाग ज्यावै। इण कहाणी रो मूल पात्र मोवन है। बो पढयो लिख्यो, प्रगतिसील विचारां रो, नारी सिक्षा रो हिमायती अर नारी नै सम्मान देवण री भावना रो है। दूजै कानी मोवन री मां अर मासी रूढ़ीवादी विचारां री है। मोवन नारी सिक्षा रो समर्थक, बाल विवाह रो विरोध, नारी री उपेक्षा रो विरोधी अर आर्य समाज री विचारधारा रो है। घटना–प्रसंग रै माध्यम सूं मोवन री अै चारित्रिक विसेसतावां छोटै सै कथानक में सांतरै ढंग सूं प्रगट हुई है।

मोवन री मां रूढिवादी विचारां री। ओ इज कारण है कै लड़की रै जलम नै बा भाठौ केयर बतळावै। मोवन री मासी रूढिवादी विचारां री है बा मानै कै लड़का–लड़की में भेदभाव जरूरी है। बा छोरयां नै रांडा कैय'र बतळावै। ओ स्त्री–समाज रो अपमान है। बा छोरयां नै हर तरै री सुविधा देवण रै खिलाफ है पण आविचारधारा आज रै जुग रै अनुकूल नी पड़ै। मोवन नै सगळी स्थितियां माथै जूंझणौ पड़ै अर केई बार जूंझल आय'र कैवणो पड़ै– 'हाय रै समाज' इण सूं लागै कै बो समाज री गत नै भली भांत समझै पण उणरी मजबूरी है। पुराणी मानसिकता सूं मुगती आसानी सूं नी मिलै। मोवन री मां कैवै– 'छोरिया भणनै जासी, जणै छोरा कांई करसी।' मोवन री मां रो ओ सोच रूढ़िवादी है।

कहाणीकार पात्रां रै चरित्र रो सांतरो वर्णन आपरी कहाणी में करता थका कहाणी नै प्रभावसाली बणाई है। सगळा पात्रां रा चरित्र सुभाविक अर सांतरा है। इण तरै कहाणी री पात्र–योजना अर चरित्र–चित्रण कहाणी री मूल भावना नै आगै बधावण वाळा है।

4. **वातावरण अर देस काल**– कहाणी रो वातावरण देस काल अर परिस्थिति रै सजीव चित्रण सूं

उपजै। ओ वातावरण भौतिक भी हुवै तो मानसिक भी। ई सूं कहाणी में जीवंतता अर यथार्थता आवै। प्रस्तुत कहाणी निम्न मध्यवर्ग समाज री रूढ़िवादिता माथै तीखो व्यंग्य करै। सदा सूं समाज में लड़का–लड़की में भेद हुंवतो आयो। लड़को जलमतो जणा थाळी बाजती अर गीत गांवता। जद लड़की हुवती तो उण नै भाठौ कैवता। कैवणो मतलब लड़की किण काम री। ई पछै हर वखत लड़की रै साथै दुभांत रैवती। खाणै–पीणै अर पढ़ावणै में। जे कोई चीज भी दी जावती तो लड़कै नै घणी अर लड़की नै थोड़ी। आ दूभांत समाज री मानसिकता रो परिणाम हो। आज भी रूढ़िवादी परिवारां में लड़का री चावना घणी अर लड़की री कम रैवै। लड़की नै पढ़ावणो भी कम चावै। परिवार रै ई वातावरण रो कहाणी में सजीव चित्रण हुयो है। कहाणी रो पात्र मोवन आं विचारां रो विरोधी है अर वो हर जगां लड्की री पढ़ाई लिखाई नहीं करावण, उपेक्षा अर अपमान रो विरोध करै। वो आपरी बैना नै पढावै अर चौखै परिवार में देवै।

मोवन री मासी भी पुराणै विचारां री है। बा भी ई बात माथै ई जोर देवे कै आपां नै लड़का–लड़की रो अन्तर नी करणो है। कहाणी में अेक सहायक घटना भी है जठै मिनख आपरी ब्यायतां औरत नै मारै–पीटै–उपेक्षा करै उणनै घरां सूं बारै जावण नी देवै अर दारू सारू रिपिया मांगै। जद बा नी देवै तो उणनै पीटणै लाग ज्यावै। मोवन जद समझावण जावै तद उणनै उणणो पड़ै तनै अठै पंचायती करणै री जरूरत नीं, तू थारे पाप–पुन्न लाग। आयो है ई रांड रो भाई बण'र। कानून छांटै, कांई सैणप लगावै है।'

आं सगळा पात्रां अर दोन्यू घटनावां रै माध्यम सूं कहाणी कार अेक सजीव वातावरण इण कहाणी में दरसायौ है–

5. **भासा–सैली**– पात्रां री भासा नै प्रगट करणै वास्तै पात्रां रै अनुकूल भासा–सैली हुवणी चाइजै। भासा सीधी, सरल अर समझ में आवण आळी हुवणी चाइजै जकी कहाणी री मूल संवेदना नै उजागर करै। भासा में प्रवाह अर सुभाविकता हुवै। भासा जती सहज हुवैली, कहाणी बती ई पाठक नै प्रभावित करैली। कहाणी रो नांव ई भाठौ राख्यो है ओ प्रतीकात्मक है– मूरखता, जड़ता, निरर्थकता अर उपेक्षा री। जद लड़की जलमै उण बखत, उण नै भाठौ कैय'र पुकारै। 'बाबो जी निसकारो नाखता बोल्या– खैर, भाग री बात है, म्हारा तो गोडा टिकग्या। नीठ माळा फेरतां–फेरतां ओ संजोग बणियो हौ, पण भाग में भाठौ लिखियौ। कदास भळै जिसो हुवतो तो थनै राजी करता अर मन रा हांफ।' बात काटती सोनकी बोली– म्हारै नसीब री बात, किणनै दोस? खैर, बापड़ी जीवती रैवो। आंधी लारै कदै'ई मेह ई आसी।' इण तरै कहाणी री भासा संजीव अर व्यंजनात्मक है। कहाणी में कहावत अर मुहावरां रो ई सांतरो प्रयोग हुयो है। औरत रै बारै में अेक जणो कैवे– 'पड़ग्या खल्ला उडगी खेह, फूल फकड़ सी हुयगी देह।' लड़की रै जलम नै 'पटकी पड़गी, भाठौ आय पड़ियौ' कैवणो– अर बात–बात में 'रांड' कैय'र पुकारणो, आ भासा सुभाविक है।

कहाणी रै मांय व्यंजनात्मक अर संवादात्मक सैली रो सांतरो प्रयोग हुयो है।

उद्देस्य– मनोरंजन रै साथै–साथै कहाणी रो अेक उद्देस्य हुवै। 'भाठौ' कहाणी नारी रा उपेक्षा, उण रै साथ समाज रै माध्यम सूं बरती जावण आळी उपेक्षा रो सांतरो चित्रण है। कहाणी में नारी री उपेक्षा, अपमान, सोसण, अत्याचार इत्याद रो चित्रण दिखा'र ओ बतायो है कै जे नारी नै पढाई–लिखाई जावै तो बा समाज रै मांय अेक सकारात्मक भूमिका निभा सकै है जिंया अहिल्या निभावै। लड़का–लड़की रै साथै दुभांत करणो उचित नी। सिक्षा रो अधिकार लड़का–लड़की दोन्यां नै ई है। इण तरै कहाणी आपरै उद्देस्य में सफल है।

9.10 कीं व्याख्यावां

कहाणी री सवेदनावां साथै कहाणीकार रा केई विचार भी गुंथ्योड़ा हुवै अर बै विचार ई कहाणी रै उद्देस्य नै आपणै सामी राखै। केई बार अेक विचार भी घणो महताऊ हो सकै अर वो समाज नै अेक मार्ग–दर्सन अर चिंतन देय सकै है। आं विचारां रै कारण कहाणी आपणो नुवोपणो अर आपरै मूल कथ्य नै सामी लावै। जियां आपां दो च्यार अैड़ा प्रसंगां नै लेय सकां हां–

1. 'बड़ी दुःख री बात है छोरी जलमै। जद पटकी पड़गी, भाठौ आय पड़ियौ केवै। थोड़ी–सी बड़ी हुवै जद उणनै लाड–प्यार में ई रांड बिना बतळावै कोनी। पण थे तो अस्त्री हो, थानै तो अस्त्री जात नै इत्ती हीण नी समझणी चाईजे।'

व्याख्या– अठै कहाणीकार ओ कैवणो चावै कै लुगाई रै बारै में समाज रो द्रष्टिकोण कतो छोटो है, ई बात नै सुरू सूं लेय'र अंत तांई सातरै ढंग सूं समझाई है। अर अेक दुःख री बात है कै जद लड़की रो जलम हुवै तो उण रै साथै ई अेक भ्रांति आ बण्योड़ी है कै लड़की तो पराई हुवै इण वास्तै उण रो पालन पोसण अर मैनत सूं लाभ कांई? ई वास्तै उणनै कैवै कै कांई करां घर में भाठौ आयगो। पण पछै मजबूरी आ हुवै कै उणनै पालणी–पोसणी पड़ै तो उण रो लाड–प्यार अेक लोकलाज अर मजबूरी बण ज्यावै। पण मांय सूं कोई खुस होय'र अैड़ो काम नी करै। पछै भी मन री भावना प्रगट हुया रैवै नी। घर में उण री उपेक्षा अर उणनै 'रांड' कैय'र बतलावणो इण बात रो सबूत है कै करां तो कांई करां, पण मजबूरी है ई वास्तै उणनै रांड कैय'र आपणी भावना नै प्रगट करणो मन री हकीकत नै प्रगट करणो हुवै। ताजुब री बात तो आ हुवै कै खुद परिवार री स्त्री जकी कदै खुद भी लड़की रैयी है वा भी उण रो अनादर करै, आ घर–परिवार री रूढ़ियां मिनख समाज रो अैड़ो धारो पड़ग्यो कै वो स्त्री नै ईं नजर सूं देखे, पण खुद स्त्री भी जे स्त्री नै अती हीण द्रस्टि सूं देखे तो आ इचरज री बात है। स्त्री खुद आपरी जाति रो अपमान करै।

टिप्पणी– अठै पारम्परिक समाज में नारी री स्थिति रो बखाण करयो गयो है कै मिनख समाज रो नारी रै प्रति घणो छोटो सोच है।

2. कुमावै तो कांई दोस है? भणनै सूं हिरदै में चानणो हु जावै। कैबत ई है, भणियौड़ै रै चार आंख्या हुवै।''

व्याख्या– अठै कहाणी रो पात्र मोवन सिक्षा रो समर्थन करतां थकां कैवै कै स्त्री नै पढावणो जरूरी कोनी, आ गलत धारणा है अर सदा सूं चली आ रैयी है पण स्त्री तो पुराणा जमाना में भी पढ़ी लिखी होवती अर मिनख सूं भी घणी पढ़ी लिखी होवती। ई वास्तै नारी–सिक्षा रो विरोध करणो अज्ञानता है। घणकरा लोग कैवै कै औरतां नै किसी पढ लिख'र नौकरी करणी है। क्यूंकै नौकरी अर कमावण रो काम तो पुरसां रो है। पण जे आपां थोड़ी देर आ बात भी सोचां कै औरतां नै कमावणो नीं तो भी पढणै में नुकसान कांई है। पढी–लिखी औरत नै दुनियादारी रो ग्यान हुवै, वा आपरै विवेक–बुद्धि सूं काम करै, निर्णय ले। आपरा टाबरां नै पढावै। इण वास्ते सिक्षा कोई बुरी चीज कोनी। बा पुरुस समान ई हुवै अर औरत अग्यानता में रैवै– अैड़ी बात नी है। ओ सोच घणो पुराणो है। सिक्षा रै वास्तै तो कहयो गया है कै सिक्षा सूं मिनख रै हिरदै में ग्यान रो प्रकास हुवै, च्यानणो हुवै, समझ आवै अर बात–न्यात रो म्यानो समझ में आवै। पढ़ाई लिखाई तो चोखी। सिक्षा सूं समझ आवै, ग्यान बढ़ै अर समस्यावां नै सुधारण में मदद मिलै।

टिप्पणी– सिक्षा अर ग्यान मिनख समाज नै दिसा–द्रदीठ देवण रो माध्यम है।

3. मां! छोरिया भेड़–बकरियां को है नी कै चावां जिकै रै लारै टोर देवा। म्हैं आछी तरै जाणूं वां

छोरां नै। वानै देवणी अर कूवै में नाखणो बरोबर है। हुकम तो आप दोनां रौ ई चालसी, पण राय तो म्है ई देय देवां।

व्याख्या– मोवन आपरी बैनां रै सम्बन्ध बाबत कैवे के आपां नै सोच समझ'र आं रा ब्याव करणां चाइजै। आं रो आपरो व्यक्तित्व है। अै भेड़–बकरी कोनी के जचै जका रै लारै कर देवां। आपां नै जठै सम्बन्ध करां, बठै बीं छौरा नै भी चोखी तरिया जाण लेणो चाइजै। जै हर कोई रै लारै आं नै कर दिया तो पछै आं री जिदंगी कांई हुसी। आं रा भी सपना है, सोच है अे भी आपरै सुखी जीवन सारू कई अरमान राखै। आ बात आपां नै सोचणी है ई वास्तै फगत पीसा आळा रो मानदंड ई सोक्यूं नी है– केई बातां आपा नै देखणी चाइजै। आज लड़की नै परायो करती बखत घर सूं बारै काढणा ई मोटो काम नीं है, पण आ भी सोचणो है के वा परायै घर में सुखी रैवै, आपरा सपना नै साकार करै जद ई माइत री आत्मा नै सुख मिल सकै है। जै आपां इस्या–बिस्या घर में देवा तो ओ तो वानै कुवै नाखणो बराबर है। आपां नै आ बात गंभीरता सूं सोचणी है के आपां री लड़की सुख पावै। आ कामना हर माता–पिता री हुवै, पछै मोवन कैवै मैं तो आपरै हुकम नै तो मानस्यू पण म्हारी तो आ राय है।

टिप्पणी– लड़की नै पराई करती बखत उण नै अैड़ा घर में देवणी जठै वा आपरा सपना साकार करै। वा खुद नी बोले तो कांई भेड़–बकरी थोड़ी ई है वा भी मिनख है। अब उण री भावी स्थिति खुद मायतां ने सोचणी चाइजैं।

2. लड़की रो आपरो व्यक्तित्व हुवै, अस्तित्व हुवै।

9.11 सवाल

1. राजस्थानी कहाणी री उत्पति कुण सी सताब्दी सूं हुई?
2. राजस्थानी रा पैला कहाणीकार आप किणनै मानो?
3. राजस्थानी कहाणी री कांई परिभासा करोला?
4. राजस्थानी कहाणी रा तत्त्व कुण सा है?
5. कहाणी रै कथानक री विसेसता बतावो?
6. कहाणी रा तत्त्वा रो विवेचन करो।
7. कथानक री विसेसतां बतावो।
8. कहाणी री समीक्षा किण तत्त्वां रै आधार माथै हुवै?
9. कहाणी रै तत्त्वां रै आधार माथै समीक्षा करौ।

9.12 सन्दर्भ ग्रंथ

1. राजस्थानी साहित्य रौ संक्षिप्त इतिहास : डॉ. गोरधनसिंह शेखावत
2. राजस्थानी भासा और साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया
3. आधुनिक राजस्थानी कहानी में लोक जीवन : डॉ. चेतन स्वामी
4. राजस्थानी साहित्य रौ इतिहास : बी.एल. माली
5. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य : डॉ. कल्याण सिंह शेखावत

इकाई–10

राजस्थानी भासा रा प्रमुख कहाणीकार : करणीदान बारहठ

इकाई री रूपरेखा

10.0 उद्देस्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 आवस्यकता

10.3 महत्त्व

10.4 करणीदान बारहठ रौ कथा जगत

10.4.1 आदमी रौ सींग

10.4.2 माटी री महक

10.5 बारहठ री कहाणियाँ री प्रवृत्तियाँ

10.5.1 राजस्थानी गाँवा रा चितरांम

10.5.2 करसै रै परिवारां रा चितरांम

10.5.3 कारसां री बिथा कथा

10.5.4 आर्थिक सोसण

10.5.5 अंध विस्वास

10.5.6 राजस्थान में पड़णआळा काळ

10.5.7 सामन्तवादी प्रवृत्तियाँ रौ विरोध

10.5.8 बीजी प्रवृत्तियाँ

10.6 भासा

10.7 राजस्थानी कहाणी नै बारहठ रौ योगदान

10.8 सारांस

10.9 अभ्यास रा सवाल

10.10 उपयोगी पोथियाँ

10.0 उद्देस्य

कहाणी साहित्य री टाळवीं अर लोकप्रिय विधा है। राजस्थानी में बीजी विधावां रै साथै–साथै कहाणियाँ भी खूब लिखीजी है। राजस्थानी में कहाणी विधा रौ विकास केई समीक्षक तौ परम्परा सूं मानै। उणां मुजब राजस्थानी में बात री परम्परा घणी जूनी है, उण सूं ई आधुनिक राजस्थानी कहाणी रौ बिगसाव हुयो है। दूजै धड़ै रा समीक्षक इण नै अंग्रेजी साहित्य सूं आयेड़ी विधा बतावै। डॉ. भंवर सिंह सामौर रौ इण मुजब कैवणो है, ''आ विरासत अेक पीढ़ी सूं दूसरी पीढ़ी लग पूगती रैंवती अर बात चालती रैंवती। राजस्थानी री आ लूंठी विरासत ई आज री राजस्थानी कहाणी री मूळ जड़ है। राजस्थानी रा केई विद्वान इण बात नै मानण नै त्यार कोनी। बै कैवै है कै आज री राजस्थानी कहाणियाँ पिच्छम रै साहित्य री देन है। म्हाँ रै आ बात समझ में कोनी आवै कै आपणै अठै आ परम्परा संजोरै रूप सूं चालती आई है तौ उण नै नकार'र पिच्छम सूं जोड़ण री जरूत कांई है'' पण आज इण सगळै विवादां सूं ऊपर उठ'र राजस्थानी कहाणी जैड़ै मुकाम पर खड़ी है उण नै अठै तांईं पुगावणै रो श्रेय घणकरै लूंठै साहित्यकारां नै है। उण में करणीदान बारहठ बै आगीवाण साहित्यकार है जिकां राजस्थानी कहाणी नै परम्परागत कहाणी सूं अळगी कर साहित्य रै मंच पर ऊभी करी है। आप रै पैलै कहाणी संग्रै री भूमिका (म्हारी दो बात) में बै कैवै, ''कहाणी राजस्थानी वास्तै नई कोनी। पण आज जिनगी रा मूल्य बदळण लागर्‌या है, इण वास्तै राजस्थानी कहाणी नै भी नयो मोड़ लेणो पड़सी। आज बोदी बात पाठकां नै कोनी सुहावै, जे कोई धिंगाणै ई नाण देणो चावै तो बात दूजी है। राजस्थानी नै पाठकां रै नेड़ै लेवण खातर कैवणै रौ तौर–तरीको बदळणो पड़सी।'' इण सूं आ बात प्रगटै हुवै कै समै–समै पर साहित्य में जैड़ा बदळाव आवै बै जुग री मांग हुया करै। करणीदान बारहठ साहित्यकार रै नाते इण बदळाव नै मैसूस कर्‌यो अर आपरी सांवठी दीठ सूं आं कहाणियाँ री रचना करी है। इण इकाई में करणीदान बारहठ रै कहाणी संसार मुजब आप जाण सकोला। इण इकाई नै भणयां पछै आपने बेरौ चालसी–

- करणीदान बारहठ कहाणी रा अैड़ा हस्ताक्षर है जका आपरी कहाणियाँ सूं आधुनिक राजस्थानी कहाणी साहित्य री नींव नै मजबूत करी।
- करणीदान बारहठ रै कहाणी संसार रै माध्यम सूं आप जाण सकोला कै आज समै मुजब राजस्थानी कहाणी में कितरां बदळाव आ चुक्या है।
- राजस्थानी कहाणी में आम आदमी रै दु:ख–दर्द नै चित्रित करणै री कितरी खिमता है।
- राजस्थानी कहाणी नै करणीदान बारहठ रौ कांई योगदान है?

10.1 प्रस्तावना

अेम.अे. (राजस्थानी) में आप राजस्थानी रै आधुनिक कहाणीकारां बाबत अध्ययन करोला। करणीदान बारहठ राजस्थानी रा आगीवाण कहाणीकार है जिकां आधुनिक राजस्थानी भासा नै अेक रूप देणै री कोसीस करी। हिन्दी में प्रेमचन्द आप री कहाणियाँ में किरसाण अर आर्थिक रूप सूं पिछड़ेड़ै लोगां रा चितरांम खींच अेक अैड़ी दुनियां सूं लोगों नै रूबरू करवायां जिण सूं बै अणजाण हा। करणीदान बारहठ भी आप री कहाणियाँ में खेतीखड़ लोगां री अबखायां अर उणां री जिनगाणियाँ रा चितरांम खींच राजस्थानी कहाणी नै अेक आधार दियो। आजादी पछै खेती प्रधान देस रा करसा किण भांत काळ सूं जूंझै, सोसण री चाकी में पिसै। गुलछर्रा उडांवता ऊँचै वर्ग रा लोग आजादी पछै पनप्या है। मरगोजो भी तो बीजै पौधां री जड़ सूं पाणी खींच खुद नै पोखै। बीजै लोगां रो हिस्सो खाय'र पणप्यै लोगां री तसवीर करणी दान बारहठ री कहाणियाँ में मिलै। भारतीय ग्रामीण समाज रा अळगा–अळगा रंग करणी दान बारहठ री कहाणियाँ में देखणै तांईं मिलैला।

10.2 आवस्यकता

राजस्थानी कहाणी री दसा अर दिसा जाणणै तांईं कै आज बीजी भारतीय भासावां रै मुकाबलै बा कठै खड़ी है? उण रै सरुआत में कांईं प्रवृत्तियाँ उभरी? उण रो बिगसाव किण दिसा में हुयो? इण सगळै सवालां रा जवाब ढूंढ़णै तांईं राजस्थानी रै आगीवाण कथाकारां री कहाणियाँ भणणो जरूरी है। आप रै सरुआती काल सूं लेय'र आज तांईं बां में कांईं बदळाव अर मोड़ आया है इण रो बेरो करणीदान बारहठ री कहाणियाँ सूं चालसी। राजस्थान में भोत रजवाड़ा हा। आजादी पछै रियासतां रो अस्तित्व तो खतम हुयग्यो पण छोटा सामन्त हा उणां री ठसक कोनी गई। काम धंधा छूटग्या अर बै तर–तर गरीबी री गिरफ्त में आंवता गया। चरमरार हेठां पड़तै सामन्ती ढांचै रा मार्मिक चितरांम आपनै इणा कहाणियाँ में देखण नै मिलैला।

10.3 महत्त्व

देस री आजादी पछै समाज री सोच, रहन–सहन में बदळाव नै देखतां आं कहाणियाँ रो घणो महत्त्व है। राजस्थान में पड़ता काळ अर करसां री हालत लगोलग गिरती जावणो चिन्ता रो विसय है। राजस्थान में सामन्तसाही रा भवन तो ढ़ग्या पण बां रा अवसेस अवै भी बाकी है। लेखक आप री रचनात्मक ऊर्जा समाज सूं ई ग्रहण करै अर समाज नै पाछी दे देवै। राजावां, रजवाड़ां रो इतिहास तो आप इतिहास री पोथियाँ में भण सको पण समाज रो इतिहास भणणै तांईं साहित्य रो अनुसीलन करणो पड़ैलो। करणीदान बारहठ री कहाणियाँ रो महत्त्व इण बात में भी है कै बां में आपणै समाज रा जथार्थ चितरांम मिलैला। औसर, दायजो, अंधविस्वास आपणै ग्रामीण समाज नै कठै तांईं जकड़ राख्यो है ओ जाण'र आप नै इचरज हुवैलो कै अेक भारत ओ भी है।

10.4 करणीदान बारहठ रो कथा जगत

करणीदान बारहठ बहुमुखी रचनाकार हा। आप हिन्दी अर राजस्थानी दोन्यूं भासावां में लेखन करता। आप टाबरां तांईं भी लेखन कर्‌यो। 'झींडियो' टाबरां खातर लिखेड़ी कवितावां है। इणीज भांत आप टाबरां तांईं अेकांकी भी लिख्या। 'शकुन्तला' आप रो राजस्थानी महाकाव्य है। 'दायजो' अर 'लिछमी' अेकांकी संग्रै 'मन्त्री री बेटी' अर 'बड़ी बहन जी' दो उपन्यास है। 'आदमी रो सींग' अर 'माटी री महक' दो कहाणी संग्रै है। इणीज भांत करणीदान बारहठ रो हिन्दी में लिखेड़ो साहित्य भी घणो ई है। 'बड़वानल' उणां रो काव्य संग्रह, 'कलाई का धागा', 'प्रेमलता', 'चाय के धब्बे', 'कोहरा और किरणें', 'खुरदरा आदमी' हिन्दी उपन्यास है अर 'औरत और ज़हर' कहानी संग्रै है। इण भांत हिन्दी अर राजस्थानी रा रचनाकार करणीदान बारहठ रो साहित्य अजै तांईं भली भांत कूंतीज्यो नीं है।

करणीदान बारहठ रो कथा जगत (राजस्थानी) इण भांत है–

10.4.1 आदमी रो सींग

'आदमी रो सींग' कहाणी संकलन रो प्रकासन सन 1974 में हुयो। इण में कुल 13 कहाणियाँ हैं। लेखक इण पोथी री भूमिका (म्हारी दो बात) में कैवै ''राजस्थानी जद तांईं जन जीवन में नई प्रगटै, भासा आपणो अलग सूं अस्तित्व नीं बणा सकैली। राजस्थान री धरती पर निरा उपन्यास कहाणियाँ काव्य मंड्या पड्‌या है। फेर लेखक जूठ खावण नै क्यूं जावै?'' लेखक अठै रै जीवन रै जथार्थ रा चितरांम कहाणी में देय'र उण नै विस्वसनीय बणायो चावै। इण कहाणियाँ रो संक्षिप्त परिचै इण भांत है–

सूवटी री बेटी– सूवटी री बेटी सोनड़ी आप री ही। बा ज्यूं–ज्यूं बड़ी होण लागी उण रो सोवणो रूप देख'र मां नै घणी चिन्ता, क्यूं कै बा घणी चंचल। उण रो बडो बेटो कानियो ठाकर गुटू सिंह रै सिरी रळग्यो। ठाकर रै कंवर री नजर सोनड़ी पर। सूवटी उण नै घणी ई रोकणै री कोसीस करी पण सोनड़ी नीं मानी। बा कठै ई आड़ोस–पाड़ोस में जावै तो ठाकर रो कुंवर घर में बड़ ज्यावै। गरीबणी बोल भी कीं नीं सकै। अेक दिन बा जद पाड़ोस सूं घरां पाछी आवै तो सोनड़ी अर कुंवर नै गळत ढंग में देख'र आप रो माथो पीटल्यै। बा ठाकर सूं मिल'र सोनड़ी रो ब्याव अेक रेवड़ रै गवाळियै सूं करवा देवै। सोनड़ी रो सासरै सूं पाछो आय'र भी रंग ढंग कोनी बदळै। कुंवर सूं उण रै अेक छोरो हुवै पण थोड़ै दिनां रो होय'र मर ज्यावै। अेक दिन सोनड़ी रो धणी उण नै लेवण आवै। बा कुंवर री यादां साथै लियां सासरै भीर हो ज्यावै। इण भांत इण कहाणी में अेक कानी तो घोर गरीबी रो चितरांम है दूजी कानी सामन्ती सोसण रो। गरीबी अर भूख रै कारण आप री लाज लूटण वाळै रै खिलाफ भी कीं कोनी बोल सकै। प्रेम आंधो हुवै अर जवानी रो जोस किणी रो उपदेस नीं सुणै इण कहाणी रो ओईज उद्देस्य है।

ठिकाणो– चिमन सिंह कदे बड़ै ठिकाणै रो धणी हो। आज तो उण रै गढ़ रा कोर–कंगूरा झड़ग्या। खंडर बणेड़ै इण ठिकाणै में कदे अठै हाथी–घोड़ा झूलता। लोग लुळ–लुळ जुहार करता। चिमन सिंह रै चाये पुराणा ठाठ–बाट कोनी रैया पण अकड़ सागी है। आखै दिन मूंछ मरोड़तो रैवै। घर में जवान बेटी कुंवारी बैठी है। घरवाळी अर उण रो बेटो चावै कै बीं रै जाणकार अेक अफसर लागेड़ै छोरै साथै कुंवरी रो ब्याव कर दियो जावै। ठाकुर चिमन सिंह छोरै नै छोटै ठिकाणै रो बता'र ठुकरा देवै। बडै ठिकाणां में दहेज री समस्या। ठाकर कनै कीं कोनी। आखीर अेक दूजवर अधबूढ़ रै साथै कुंवरी नै परणाद्यै। चिमन सिंह अब राजी है कै ठिकाणो बडो मिलग्यो। इण भांत 'ठिकाणौ' कहाणी में ढहता सामंतवाद रा महल, अणमेल ब्याव, दायजै री समस्या आद रा चितरांम है। साथै ई कहाणी पुरुस प्रधान है, सामन्ती समाज में नारी सिर्फ एक सरीर है, इण बात नै भी प्रगट करै। कहाणी मार्मिक है।

चूनकी री माँ– चूनकी दूसरी छोरियाँ साथै पोठा भेळा करै। अेक दिन पोठा चुगती चूनकी री किणी दूसरी छोरी साथै लड़ाई होगी। उण चूनकी नै 'बिना बाप री' कैय'र तानो मार्‌यो। चूनकी पोठा छोड'र रोंवती–रोंवती घरां पूगी अर आपरी माँ नै सगळी बात बताई। मां बीं री बातां सुण'र लारली यादां में गुमगी। जद उण रो बेटो भूरियो तीन बरस है, उण रै घरआळै रो सुरगवास होग्यो। जमीन अर भूरियै रै सहारै उण आप री उम्र बितावणै री सोची, पण काळ पड़ग्या। लोग घर छोड 'मऊ' जांवता रैया। चूनकी री माँ कठैई कोनी गई। अेक दिन घर में खाण–पीण नै कीं कोनी हो। बा हार'र चौधरी रामधन सूं नाज उधारो मांगण गई क्यूंकै भूरियो भूखो मरतो रोवै हो। चौधरी नाज रै बदळै उण रै सरीर री मांग करी। बा पाछी आगी पण रामधन चौधरी उण रात खाण–पीण रो सामान लेय'र बीं रै घरां पूगग्यो। उण ई रात चूनकी कूख में आई। इण भांत इण कहाणी में दरसायो गयो है कै पेट री भूख आगै तन समर्पण कर देवै। तन री भूख भी छोटी नीं हुवै। घणा लोग इण भांत गरीबां रो सोसण करै। काळ में लोग घर–बार छोड'र पेट भराई तांईं कठैई चल्या जांवता उण नै मऊ जाणो कैंवता। कहाणी में जथार्थ चित्रण है।

धरती रो रंग– किसनो सीधो सादो करसो है जैड़ो आप रै काम सूं काम राखै। ना किणी सूं कीं लेणो नै कीं देणो। बो कदे आप रै काम सारुईबाजार जांवतो। पण अबकाळै उण रै खेत पाड़ोसी आप री जमीन अेक सिख नै बेचदी। सिख लड़ाई खोर हो। उण किसनै साथै लड़ाई राखणी सरु कर दी। उण किसनैं री जमीन भी दाबली। किसनै पटवारी सूं जमीन नपाय'र पाछी

लेली तो सिख अदालत में उण पर दावो ठोक दियो। किसनो किणी नै जाणै नीं पूछै। तारीख आळै दिन बो त्यार होय'र ऊँट पर चढ़ स्हैर गयो। कचेड़ी में बाबू, चपड़ासी, पेसकार उण नै कनै ई कोनी फटकण दियो। किसनै तहसीलदार नै देख्यो। उण ई तो ओ फैसलो करणो हो। तहसीलदार मंगळ सिंह तो टाबर पणै में उण रै घरां आंवतो अर मतीरिया खाया करतो। बो तहसीलदार सूं मिलणो चावै हो पण चपड़ासी भीतर कोनी जाण दियो। निसासु होय'र आथुणै जद किसनैं घर नै भीर हुयो तो कचेड़ी में भी छुट्टी होगी। मंगळ सिंह किसनै नै देख्यो तो पिछाण लियो अर घरां चालणै रो नूंतो दियो। किसनो घणो राजी हुयो। अब उण नै धरती आभै सगळां रो रंग बदळतो दिखै हो। इण भांत इण कहाणी में कोर्ट–कचेड़्या रै वातावरण, बाबू चपड़ासियां रो आम मिनख साथै ब्यौहार, लालफीतासाही आद रो जथार्थ चित्रण है।

दोजख– मास्टर मंगतूराम रै घर–गिरस्त री कहाणी है। तीन छोरियाँ–दो छोरां रो परिवार। आमदनी रो साधन सिर्फ मास्टर मंगतूराम री तिनखा। पार नीं पड़ै जद बो लोगां रै घरां जा'र टाबरां नै 'ट्यूशन' पढ़ावै। मास्टर मंगतूराम रै घर री आर्थिक हालत नाजुक है। बड़ी बेटी गोमती ब्या'वण सार है पण तंगी रै चालतां मास्टर कठै ई जा भी कोनी सकै। रिस्ता चोखा देखै तो दायजो भी चोखो देणो पड़ै। आजाद भारत में आ कैड़ी विडम्बना है कै अणपढ़ अर चालू लोग देस रा नेता बण जावै अर खूब धन लूटै। उण रा दो–तीन बाळगोठिया अर विद्यार्थी राजनीति में है। लायक अर भणेड़ा लोग नौकरी लाग'र कोल्हू रै बळदां तांईं जिन्दगी री घाणी चलायां जावै। कहाणी में जथार्थ रा दरसण हुवै।

परलै– जमीन करसै री मां हुवै। बीं सूं उण रो गैरो तन–मन रो जुड़ाव हुवै। इण कहाणी में कथा नायक आप रै बाबै (ताऊ) री बात बतावै, कै बै कर्मठ मिनख हा। देस में भी घूमेड़ा हा। अस्सी बरसां री उम्र ही पण ओजूं कड़क हा। आजकाल बै बात–बात में लोगां नै कैवै परलै होसी। उणां रो माथो फिरग्यो लागै। कथानायक बतावै कै अेक दिन जद घणो मेह बरस्यो तो बाबो, ताई, उण रो भाई जुगल सगळा उदास होग्या। कथा नायक घरां जाय'र आप री माँ सूं हकीकत पूछी तो बेरो लाग्यो कै उण रै बाबै सगळी जमीन अडाणै धर छोरां रो ब्याव कर दियो। ऊपर सूं दस हजार रो कर्जो और होग्यो। बाबै रा छोरा कीं कमावै–धमावै कोनी। कदे–कदास कठैई काम करै तो उण पईसां नै उडादेवै। अब खेत कोनी तो मेह रो कांई करै? इण कारण उदास है।

इणमें करसै री मनोदसा रो सूक्ष्म अर मनोवैज्ञानिक चित्रण है। जमीन अडाणै धर्‌यां उण री हालत पागल सिरखी हो ज्यावै पण दुनियादारी रा काम तो करणा ई पड़ै। ब्याव में खर्चा करणा पड़ै तो पइसा जमीन सूं ई मिलै।

पांड– गोविन्दो घणो मेहनती है। दिन–रात खेत में काम करै। अेक दिन उण री जोड़ायत आप रा लीर–लीर गाभा दिखा'र नूंवां गाभा ल्यावणै रो कैवै। गोविन्द सेठ री दुकान पर जाय'र उधार कपड़ा मांगै। सेठ उण रै खरै ब्यौहार नै जाणै इण कारण अेक गाभै री बजाय पांड साथै बांध द्यै। आप रै मन मुजब भाव लगावै। काळ पड़णै रै कारण बो सेठ रा पईसा कोनी चुका सक्यो तो सेठ उण नै खारी–खारी बातां सुणावै। बेइज्जत हुएड़ो गोविन्दो आप री घराळी रो सोनै रो बोरियो ल्या'र सेठ नै दे देवै तो सेठ ओजूं पळटी मार ज्यावै। घणो मीठो बोल'र उण सूं माफी मांगै अर आप रो माथो खराब बतावै। बो गोविन्दै नै पइसा नीं देय'र ओजूं कपड़ै री पांड साथै बांधद्यै। इण भांत भोळै–भाळै करसां नै ठगणै रा जथार्थ चितरांम इण कहाणी में है।

धन घड़ी धन भाग– इण कहाणी में आज री छात्र राजनीति रो चित्रण है। अध्यापक लोग कीं नेता अर विद्यार्थियां नै पटा'र प्रिंसीपल नै कठ–पूतली री भांत नचावै। नेतावां रो संरक्षण मिलणै रै कारण अध्यापक ना तो अनुसासन में रैवै अर ना ही छात्रां नै भणावै। चुणाव में छात्र हिंसा करै। जनता री सम्पत्ति नै नुक्सान पुगावै। इण भांत आ कहाणी सुतंतरता पिछै स्कूलां में तर–तर कम होती भणाई अर विद्यालयां रै राजनीति रो गढ़ बणणै रो कच्चो चिट्ठो पेस करै। कहाणी सिक्षा जगत रै भ्रस्टाचार नै उजागर करै।

चिमनी रो च्यानणो– ठाकर भैरूं सिंह रै वैभव रा दिन तो बीतग्या। देस री आजादी पछै नौकर–चाकर, बांदी सगळा छोड–छोड'र जांवता रैया। उणां नै राखणै री ठाकर री औकात कोनी रैयी फेर भी बाहरी दिखावो उतरो ई है। ठाकर रै घरां अेक पंडत आ ज्यावै। उण नै रोटी खुवाणै तांईं ठुकराणी पाड़ोसण सूं कणक रो आटो मांग'र ल्यावै। टाबर भी कणक री रोटी खाणो चावै पण ठुकराणी बां नै सुवाणदेवै दो रोटी बच ज्यावै तो दोन्यूं जीमणो सरु करै इण सूं पैली चौकीदार आय'र रोटी मांगै। ठुकराणी आप री रोटी उण नै दे देवै। दोन्यूं आधी–आधी रोटी खाय'र सो ज्यावै। चिमनी रै च्यानणै में ठाकर पुराणै ठाठ–बाट री फोटुआं भींतां पर लागेड़ी देख पुराणी यादां में गमजावै। ठुकराणी नै चिमनी बुझाणै रो कैवै। इणमें खतम होंवतै सामन्तवाद रो मार्मिक चित्रण है। बठैई ठाकर अर ठुकराणी री दरियादिली री भी सोवणी तसवीर है।

पीळा हाथ काळो मूंडो– गणेसै अर नाराणी रै दो छोरा है– फूसियो अर कोजियो। फसल आछी खड़ी देख'र सगळां रो जी सोरो हो ज्यावै पण मौसम रो कांई भरोसो? कद दगो दे जावै? भरेड़ी हांडी रै ठोकर मारद्यै। अेक करसै री जिनगाणी में तो कदे घी घणां कदे मुठ्ठी चिणा। कदे जमानो तो कदे काळ। बड़ै लाड–कोड सूं गणेसो फूसियै रो ब्याव करै। पण उण री बहू घणी कळहगारी हुवै। अेक दिन सासू–बहू लड़ पड़ै। बहू तकड़ी ही। सासू रो चुटलो पकड़ धक्को दियो तो बा राखुंडै में पड़ मूंडो काळो कर लेवै। फूसियै नै न्यारो कर दियो। अब नाराणी आप रै छोटै बेटै कोजियै रो ब्याव करणो चावै तो गणेसो हांस'र बोल्यो– इयां हाथ पीळा कर्यां तो मूंडो काळो होसी। गाँव अर करसै रै परिवार रो जथार्थ चितरांम है इण कहाणी में।

आपो– भोळा नाथ रिटायर होय'र रैवण तांईं गाँव में आवै। बो बाकी जिनगानी गाँव में खेती कर बिताणो चावै पण उण रो बड़ो भाई बीं नै हिस्सै री जमीन कोनी देवै। बो कैवै जमीन अडाणै धरेड़ी है। पईसो देवोगा तो छूटैगी। भोळा नाथ गाँव में अेकलो पड़ ज्यावै। दो–चार दिन गाँव में रैय'र बो आप रो घर बेच'र पाछो सहर जाणै री त्यारी कर लेवै। बो जैड़ै आपै री तलास में गाँव में आयो बो उण नै अठै कोनी मिल्यो। स्वार्थ अर आपसी राजनीति में कळीजेड़ै गाँव रै लोगां रो जथार्थ चित्रण है।

मौत री गोठ– जगरूप अेक दफ्तर में काम करै। उण री आमदणी कम अर खर्च घणो है। घराळी बड़ी मुस्किल सूं जोड़–तोड़ कर घर चलावै। जगरूप फिजूलखर्च है। घर तांईं कोई चीज ल्याणी हुवै तो बो बां पइसां सूं होटल में जा'र चा'पाणी पी लेवै। सिगरेट पी लेवै। इण कारण उण रै घराळी भी दुःखी रैवै। बो घरवाळी सूं दो रिपिया लेय'र बजार सूं सब्जी लेणै तांईं जावै। बजार में उण नै अेक दफ्तर रो भायलो मिल ज्यावै बो बतावै कै अेक मिनिस्टर री मौत रै कारण दफ्तर में छुट्टी है। बो जगरूप साथै होटल में जा'र चा'पाणी पी लेवै। सगळा पइसा खर्च कर दिया अब सब्जी क्यां सूं खरीदै। खाली हाथ घर कानी चाल पड़ै। उण नै लागै बो जियां मौत री गोठ में जीम'र आयो है। कहाणी मनोवैज्ञानिक है। अेक लापरवाह मिनख रो

जथार्थ चितरांम है।

आदमी रो सींग– मां जी बाल विधवा है। उण कनै भोत बड़ो मकान है। उण में अेक मास्टर जी किरायै पर रैवै। माजी जद–कद आप री जिन्दगी बाबत बतांवती रैवै। उण अेक छोरो भी गोद लियो। बो दिसावर रैंवतो। अब बो तो कोनी पण पोता–पोती है। माजी बठै कदे कोनी गई। आज माजी सत्तर बरसां री है। अेक दिन बा बीमार पड़'र मर ज्यावै। कथा नायक माजी सूं पूछणो चावै कै बां कदै किणी सूं प्रेम कर्‌यो है? पण माजी पैली ई मर ज्यावै। कथा नायक सोचै माजी रै सींगा में पति रै नांव रो जेवड़ो हो। उण पति रो सुख तो देख्यो ई कोनी। फेर लेखक कैवै माजी री भांत सगळां रै कोई ना कोई सींग अर किणी रो जेवड़ो जरूर हुवै कहाणी बाल विधवा री कथा कैवै। पुरुस प्रधान समाज में माजी सिरखी कितरी बाल विधवा सिर्फ पति रै नांव पर आखी जिन्दगी बिता देवै।

10.4.2 माटी री महक

'माटी री महक' पोथी रो प्रकासन सन् 1992 में हुयो। इण में कुल 22 कहाणियाँ संकलित है। 'माटी री महक' नांव सूं इण में कोई कहाणी कोनी पण सगळी कहाणियाँ में राजस्थान री मरुधरा री माटी री महक है। अठै रा रीति–रिवाज, रहन–सहन, संस्कृति सगळी कहाणियाँ में उभर'र सामी आवै जिण सूं इण नांव री सार्थकता सिद्ध हुवै। संक्षेप में अै कहाणियाँ इण भांत है–

अबै– ठाकर मेघसिंह आप री कोटड़ी में बैठ्‌यो घर वाळी नै चाय सारु हेला पाड़ै अर लारली यादां में खो ज्यावै। बो बै पुराणा ठाठ–बाट याद करै जद उण रै बाप री ठकुराई चालती। तेजो नाई, छोटू गूज्जर, पतियो चमार, रामलो मीणो सगळा उणां री चाकरी छोडग्या। आज बां रा टाबर मोटा अफसर बणग्या। सगळा मौज करै पण ठाकर री हालत दिनूं दिन गिरती जावै। समै साथै ठाकर बदळ्‌यो कोनी। काम–धाम कोई कर्‌यो कोनी तो पुराणो धन कितरां'क दिन चालतो। आज हालत आ है कै जिकै बाणियौ नै उण रै बाप गाँव में ल्या'र बसायो बो ई उधार कोनी देवै। सामन्तसाही रै पतन रो मार्मिक चित्रण है। आ कहाणी ओ सनेसो देवै कै जैड़ा लोग समै री गती पिछाण बदळै कोनी उणां साथै इण भांत ई हुवै।

धनवीरो– लेखक इण कहाणी में 'नैरेटर' री भूमिका निभावै। बो धनवीरै री कहाणी कैवै। धनवीरो खेतीखड़ अर मेहनती करसो है। बो चावै कै लेखक उण री भी कहाणी लिखै। धनवीरै रै लगोलग सात छोरियाँ हुवै। अेक छोरै री आस में परिवार बधतो जावै। कमावणियो अेक खाणियां इतरां लोग। लेखक उण नै सलाह देवै कै अबकाळै छोरो नीं हुवै तो नसबंदी रो 'आप्रेसन' करवा लेवै। धनवीरै रै छोरो हो ज्यावै। अेकर मसीन पर काम करती वेळा धनवीरै रा दोन्यूं हाथ मसीन में आय'र कुचळ्‌या जावै। बो लाचार तो हो ज्यावै पण हिम्मत कोनी हारै। जिनगाणी री गाडी ओजूं चाल पड़ै। लेखक इण बिचाळै और कठैई चल्यो जावै। दस–बारां बरसां पछै लेखक जद पाछो आवै। तो देखै धनवीरै रो छोरो जुवान होग्यो। बो उण रै साथै खूब काम करावै। धनवीरो बतावै कै च्यार छोरियां रो ब्याव तो कर दियो। लेखक अब सोचणै तांईं मजबूर हो ज्यावै कै धनवीरै रै बेटै री कहाणी भी उण सूं अळगी थोड़ी हुवैली। इण भांत इण कहाणी में अेक करसै री जिनगी री अबखायां, उण रो संघर्स अर जिजीविसा रो जथार्थ वर्णन है।

करड़ो झांझरको– भारतीय नारी रै विस्वास अर आस्था नै लेय'र लिखी गई आ एक मार्मिक

कहाणी है। मीरां रो पति फौजी हो। चीन री लड़ाई में पाँच बरस पैली मोर्चे पर गयो पण अबै तांई कोई खबर कोनी आई। अेक दिन खबर आई उण रै मरणै री। पण मीरां रो मन कोनी मान्यो। उण आप रो सिणगार कोनी उतार्‌यो। घराळां अर रिस्तेदारां सलाह कर उण रै नातै री तेवड़ी। घरां बटाऊ आग्या तो मीरां घणी रोई। पण संजोग सूं उण रात बीं रो पति भींवो पाछो आग्यो। नातो करणै आया बटाऊ करड़ै झांझर कै आप रै गाँव चुपचाप चल्या गया। इण कहाणी में ओ बतायो गयो है कै भारतीय नारी कितरी आस्थावान पण बेबस है। बा खुल'र आप रै भावां री अभिव्यक्ति भी कोनी कर सकै।

बीखो– सुगन रो बाप उण नै खूब भणायो। उण री घर आळी भी दस जमातां भणेड़ी। सुगन खूब भागदौड़ करी पण बीं नै कठैई नौकरी कोनी मिली। उण रै बाप रो सुरगवास होग्यो तो उण नै खेती–पाती रो काम सम्हाळणो पड़यो पण घोर काळ पड़ग्यो। सुगन, घराळी अर माँ नै रोटियाँ रा लाला पड़ग्या तो सुगन फैसलो कर्‌यो कै बो आपरै परिवार नै साथै ले'र मऊ जावैला। बै ऊँट पर आप रो समान लद'र चाल पड्‌या। मारग में सुगन रै घरवाळी नै याद आयो कै बा सुगन रा प्रमाण–पत्र तो घरां ई भूलियाई। सुगन हांस'र रैग्यो। उण बखत बै अेक गाँव रै कनै होय'र निकळै हा। स्कूल रा छोरा देस री आजादी री रजत जयन्ती रा नारा लगावै हा। इण भांत 'बीखो' कहाणी देस री आजादी अर विकास पर व्यग्य बण'र उभरै।

इयां ही– आ गाँव रै लोगां री आस्था अर अंध विस्वास री कहाणी है। अेक रात लेखक कनै उण रो पाड़ौसी काळू आय'र बतावै कै बीं रो छोटियो छोरो बीमार है। उण नै तेज बुखार है। अब लेखक उण रै साथै तो चाल पड़ै पण करै कांई। बो डागदर या वैद तो है कोनी। काळू री माँ बतावै कै उण छोरै रै सिर ऊपर सूं कांसी रो बरतण वार'र धर दियो। रामदेव बाबै रो ओट भी लेली। लेखक कांई कैवै? दिनुगै लेखक जद फळसै कानी गयो तो उण नै बेरो पड्‌यो कै कान्है री दो छोरियां खेलती–खेलती कुवै में पड़'र डूबगी। पुलिस आगी। ल्हासां नै सहर ले जाय'र डागदरी मुआयनो करवायो गयो। इण प्रक्रिया में कान्है नै पुलिस अर डागदरां नै पइसा देणा पड्‌या पण पिंड छूटग्यो। पाछी आंवती बारी लेखक काळू रै घरां गयो तो देख्यो छोटियो छोरो रोटी खावै हो। काळू री माँ बतायो कै अठै तो इयां ही चालै। इण कहाणी में गाँव रै लोगां री आस्था अर अंध विस्वास साथै पुलिस अर प्रसासन में व्याप्त भ्रस्टाचार रो चित्रण भी है। राजस्थानी भासा में आ कहाणी 'नई कहाणी' रो संकेत देवै।

दादी– इण कहाणी में दादी मुख पात्र है। उण री दो बहुआं, दो बेटा अर पोता–पोतियां है। बडोड़ै रो नांव बनियो है। पूरणियै री मां पाड़ोसण है। बा विधवा है। पूरणियों तो मरग्यो। अेक छोरी और ही। उण रो ब्याव कर घर जंवाई बणा लियो। दादी, पूरणियै री मां सामी बहुआं री चुगली करती रैवै। अेक दिन दोन्यूं बहुआं आपस में लड़ पड़ी। दोन्यूं न्यारी होगी। बनियो दूजै घर में चल्यो गयो। दादी छोटियै कनै रैवण लागगी। अेक दिन दादी बनियै रै घरां गई तो सगळा राजी हुया। दादी अठै आंवती–जांवती रैवै। अेक दिन दादी बीमार पड़ी तो बनियो आप रै घरां ले जावण तांईं आयो पण दादी कोनी गई। भारतीय संयुक्त परिवारां में लुगायां छोटी–छोटी बातां पर लड़ती रैवै। पारिवारिक चित्रण जथार्थ है।

आदमी री जात– इण दुनियां नै चोखी बणावणै तांईं घणा ई सुधारक आया अर चल्या गया। स्वामी जी अैड़ाई महापुरुस है। बाणां दुनियां में अविद्या रो खातमो करणै री कोसीस में अेक पाठसाला चलाई। लोगां सूं चंदो मांग'र इमारत खड़ी करी। लोगां खूब पइसो दियो अब बो महाविद्यालय बणग्यो। स्वामी जी री इच्छा ही कै अठै भणेड़ा विद्यार्थी आछा मिनख बणै पण

उणां देख्यो छात्रावास में विद्यार्थी दारु पीवै। जूओ भी खेलै। उणां छोरां नै धमकाया तो छोरा सामी होग्या। स्वामी जी प्रबन्ध समिति री बैठक बुलाई तो उण में राजनीति घुसगी। सदस्यां स्वामी जी नै पागल बतायो। संस्था री दुरगत देख स्वामी जी नै डाढ़ो दुख हुयो। बै संस्था अर नगर नै छोड'र गाडी में बैठ'र कठैई चल्या गया। अेक दिन उणां री ल्हास दिल्ली में अेक सड़क पर मिली। बै ई लोग जिकां स्वामी जी नै बे इज्जत कर्‌या। बिणां री ल्हास ल्याया अर अन्तिम संस्कार कर्‌यो। हजारूं लोग भेळा हुया। पछै संस्था में स्वामी जी री मूरती लगाई गई। कहाणी दुनियां पर व्यंग्य करै कै लोग आप रो स्वार्थ देखै। बै किणी सूं कोई लिहाज कोनी करै। महापुरुस रै मर्‌यां पछै स्वार्थी लोग उण री ल्हास सूं भी फायदो उठावै। इण कहाणी में सिक्षा संत केसवानंद री छब झळकै। उणां संगरिया में ग्रामोत्थान जैड़ी संस्था खड़ी करी।

बूढ़ळी– आ कहाणी आत्मकथा सैली में लिखीजी है। कहाणी रो नायक बूढ़ळी रो किराएदार है। बूढ़ळी उण रै हरेक काम में कोर–करै तो भी बूढ़ली टोकै। नायक इण नै आप री सुतंरता में दखलंदाजी मानै। बो मकान बदलणै री तेवड़ै पण इण बिचाळै बीमार हो ज्यावै। अब तो बूढ़ळी उण री सेवा में दिन–रात अेक कर देवै। उण री उळटी तक बुहार'र साफ करै। नायक नै उण में माँ रो रूप नजर आवै इण कारण बो बूढ़ळी नै माजी कैय'र सम्बोधित करै। केई लोग ऊपर सूं तो नारेळ सिरखा करड़ा हुवै पण भीतर सूं घणां कंवळा। अैड़ो ई चरित्र बूढ़ळी रो है।

कीड़ती– आ कहाणी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। घणो लाड लडायां टाबर बोछरड़ा हुय जावै। किणी रो कैयो नीं मानै। अैड़ै टाबरां नै डराणै तांईं कोई उपाय करणो पड़ै पण कदे–कदे ओ उपाय घणो घातक हो ज्यावै। कांता दादी री घणी लाडेसर ही। दादी उण री हरेक माँग पूरी करती। टाबर बिगड़गी। जद स्कूल जाणै री बात आई तो कांता साफ नटगी। अब दादी उण रै साथै स्कूल जांवती अर लेय'र भी आंवती। पाड़ोस में थोड़ी दूर कीड़ती रो घर हो कीड़ती बावळी छोरी ही। कोई टाबर छेड़तो तो बा उण रै लारै भाजती। टाबर उण सूं डरता। कांता भी डरण लागगी। अेक दिन दादी कांता नै लेणै तांईं स्कूल कोनी गई। संयोग सूं उण ई दिन कीड़ती कांता नै रास्तै में मिलगी। कांता डर'र हेठां पड़गी पण फेर खड़ी होयर जोर सूं भाजती–भाजती घरां आई अर 'कीड़ती' कैय'र बेहोस होगी। कहाणी रो प्रस्तुतीकरण मनोवैज्ञानिक अर सुभाविक ढंग सूं हुयो है। आपां टाबरां नै अेकर चुप कराणै तांईं ओ बिना जाण्याँ डरा देवां कै आगै चाल'र इण रो नजीतो कांई होसी ओ समझां कोनी।

मास्टर जी– आ भी अेक मनोवैज्ञानिक कहाणी है। बच्चै पर आप रै मास्टर रो सब सूं घणो प्रभाव हुवै। बचपन में बो जैड़ै मास्टरां सूं सिक्षा ग्रहण करै उणां नै कदै कोनी भूलै। आप रै मास्टर नै ई बो सबसूं बड़ो मानै। इण कहाणी रो नायक अैक्स.ई.अैन. रो बेटो है। उणरै साथै भणण आळो पप्पू अेस.पी. रो बेटो अर बंटू कलक्टर रो। अै बच्चा जद आप रो जन्म दिन मनावै तो मास्टर जी नै बुलाया जावै पण उणां रा मां–बाप नै कोनी बुलावै। कहाणी नायक आप रै जन्म दिन पर मास्टर जी नै नूंतो देय'र आवै। मास्टर जी आय'र उण नै आप रो आसीर्वाद देवै। नायक घणो राजी हुवै। कलक्टर सा'ब रिटायर हुया उण दिन घणा उदास हा। कथा नायक रो बाप तरक्की कर अेक्स.ई.अेन. बण ज्यावै। इण नै कथा नायक मास्टर जी रो आसीर्वाद मानै। कहाणी सीधी–सादी अर बाल मनोविज्ञान पर आधारित है।

लालटेण– घर–गिरस्ती में छोटी–छोटी बातां कद मिनख नै घर–परिवार सूं उदासीन कर देवै या उण में बैराग जगा देवै कै बींण नै चाणचक्क ओ मै'सूस हो ज्यावै कै अब अठै उण री जरूत कोनी। इण कहाणी में कथानायक रै घरां अेक पाड़ोसण लालटेण मांगण आवै। कथा नायक उण

नै बुरी तरां सूं डांट देवै। इण कारण बीं री घरवाळी भी उण सूं नाराज हो ज्यावै। कथा नायक नै मैं'सूस हुवै कै उण री जोड़ायत नै स्यात बेटां रो गुमान है इण कारण उण री उपेक्षा करै। कथा नायक पैली भी पाड़ोसियाँ नै इण भांत नट ज्यां तो पण आज बात दिल रै लागगी। बो दूजै दिन सुबै तावळो उठ'र घर सूं निकळ जावै। उण रास्तै में किणी गिरस्त घरां मांग'र रोटी खाई, चाय पी। इणीज भांत चालतो–चालतो चौथै दिन बो अेक ट्यूबैल पर पूग्यो। बठै चौधरी कनै कथानायक भी बैठग्यो। बातां–बातां में कथा नायक आप रै मन री गांठ चौधरी सामी खोल दी। चौधरी उण नै समझायो कै सुरग तो गिरस्त रै घर में ई हुवै अर राम भी मिनख रै भीतर है। कथानायक मुड़'र घरां आ ज्यावै। घर में उण रो चोखो सुआगत हुवै। इण भांत पारिवारिक रिस्तां नै चितरांम करण आळी आभी मनोवैज्ञानिक कहाणी है।

राधा– राधा अेक औरत रै दुःख–दर्द री कहाणी है। राधा पढ़ी लिखी अर नौकरी सुदा लुगाई है। बा आप रै मन री गाँठ किणी सामी कोनी खोलै। बा आप रै साथै लागेड़ी 'आशा' नांव री मास्टरणी रै घरां किरायै पर रैवै। अेक दिन बा आशा नै बताई दि्या कै उण रै घराळै उण नै दायजै रै लाळच में पैलै दिन ई छोड दी हालांकि उण रै पनवाड़ी बाप औकात सूं घणो धन दियो। उण रो घराळो दारुबाज हो। बो दारु पीय'र आयो। इण कारण उण नै पैली रात ई 'मर्द' नांव सूं नफरत होगी। अेक दिन राधा, आशा नै बतायो कै उण रो बाप उण रै दूजै ब्याव री कोसीस करै पण बा कोनी करवाणो चावै। आशा उण नै समझा–बुझा'र घरां मे'लै पण कैई दिनां पछै पाछी आ'र आप री बिथा आशा नैं सुणावै कै उण रो दूजो मर्द भी पैलै सिरखो निकळ्यो। इण भांत इण कहाणी में दायजै री समस्या, पुरुस प्रधान समाज में लुगाई रो नीचो दर्जो, बा सिर्फ भोग्या है आद बातां उभरै।

सेठ फूलो– सेठ फूलो, फूलियै सूं फूल चंद बण्यो है। उण रो लायक बेटो नत्थू बोपार में तेज है। सेठ फूलो तो छोटी सी परचूनी री दुकान करतो पण नत्थू बोपार नै खूब बधायो। बो गाँव सूं अनाज आद जिन्स भी खरीदै। दूजा काम भी करै। लिछमी च्यारूं कानी बरसै। नत्थू जद भी खर्च करणो चावै फूलो टांग अड़ावै। 'मसां दाळ रोटी बणी है।' उण रो तकिया कलाम है। पईसो लागतो देख'र बो तमासो खड्यो कर देवै पण नत्थू उण री रग पिछाण ली। मकान बणतां देख बूढ़ियै जद रोळो कर्यो तो नत्थू होळै सी समझायो कै ईंट्यां तो ब्याज में मिली है अर मजूर मुफ्त रा है। इणीज भांत मैटाडोर खरीदती तद नत्थू फूलै नै कैवै आ पाणी सूं चालसी। फूलो आप री निगै में नत्थू रै धन री रूखाळी करै। इण में अेक अैड़ै मिनख रो मनोवैज्ञानिक चितरांम है जको पैली गरीब हो। गरीबी उण रै अवचेतन में इतरीं गैरी बैठगी कै बो खर्च करतो डरै। कै कठैई दुबारा गरीबी नीं आ ज्यावै।

कच्चो कोठो– पुलिस री नौकरी सूं रिटायर हुयां पछै थाणेदार धूंकळ सिंह रो दायरो घर तक सीमित हो ज्यावै। दो बेटा, दो बहुआं, घरवाळी। इतरीं बड़ी कोठी उण आप री कमाई सूं बणवाई पण अब उण में आप खातर अब अेक कमरो तक कोनी। घराळा उण नै कदे चौबारै में, कदै बारै बैठक में, कदे भीतर कमरै में बदळता रैवै। बुढ़ापै में मिनख किण भांत घर–परिवार में उपेक्षित होय'रै ज्यावै, इण रो मार्मिक चित्रण है। उण रो बीड़ी पीणो, थूकणो, बोलणो, सगळो कीं अणखावणो लागै। अैड़ै बखत में मिनख आप रै भूतकाल नै याद कर बिसूरतो रैवै।

बाप रो बंटवारो– आ कहाणी भी बुढ़ापै रै आळै–दुआळै चक्कर काटै। तुळछो आप री जमीन अर समान रा बरोबर च्यार हिस्सा कर आप रै बेटां में बांटदेवै। अेक हिस्सो जमीन खुद राख'र छोटियै बेटै साथै रैवण लागज्यै। तुळछो अर उण री घराळी खूब कमावै। बै बेटै बहू नै घणां

चोखा लागै। बाकी तीन्यूं भाई उण सूं ईर्ष्या करै तो बो कैवै– माईत तो घरां बैठ्या तीर्थ हुवै। पण काळ पड़ज्यै अर लोग दाणै–दाणै रा मुहताज हो ज्यावै। काळ रा दिन तो कियां ई बीतग्या पण तुळछो टूटग्यो। छोटै बेटै कुरड़ै रा भी सागी दिन कोनी बा'वड़्या। तुळछो अब दूध–दही री मांग करै। नीं मिलै तो लोगां नै कैवै कै उण नै खाण नै कीं कोनी देवै। अखीर तुळछो बीमार पड़्ग्यो। अेक दिन च्यारूं भाई तुळछै कनै भेळा हुया तो अेक भाई कैयो– कुरड़ा तूं उदास क्यूं है? कुरड़ै बतायो कै बो दुःखी है तो भायां तानो मार्‌यो कै माइत तो घरां बैठ्या तीर्थ हुवै। तानो समझ'र कुरड़ो बोल्यो– ओ गळै पड़्यो तीर्थ है। अब आप मिल'र बाप रो भी बंटवारो करल्यो। इण भांत इण कहाणी में बुढ़ापै री अबखायां अर दुःख रो चितरांम है जिण रै चालतां मिनख आपरै घर परिवार में ई उपेक्षित हो ज्यावै।

दोजक– इण संग्रै में भी दोजक नाव सूं कहाणी है। गरीब मिनख आपरी नासमझी रै कारण आप री जिन्दगी नै दोजक बणा लेवै। दोलै रै पैली सात छोरो मोमनो समान मूं'गो देवै अर दो रिपिया सैंकड़ा ब्याज लेवै। उण रो बडोड़ो छोरो मोमनै रै सिरी हो। छोटो मिल में मजूरी करै पण इतरैं बड़ै परिवार रो पेट कोनी पळै। दालै मोतियै अर केई लोगां री उधार चुकाणी है। गाँव में नसबंदी रो कैंप लाग्यो तो दोलै नसबंदी करवाली। जिका तीन सौ रिपिया मिल्या, मोतियो झपट लेग्यो। इण भांत कहाणी सनेसो देवै कै घणी ओलाद घणा दुःख। परिवार इतरो ई बड़ो होणो चायजै जितरैं नै मिनख भली भांत पाळ सकै।

सोनै रो अंडो– 'सोनै रै अंडो' रां कथानायक आप रै ब्याव खातर लड़की देखण जावै। लड़की मास्टरणी लागेड़ी है। नायक लड़की नै पसंद कर बिना दायजै रै ब्याव करणै तांईं राजी हो ज्यावै। बो आप रै माँ–बाप नै कैवै कै लड़की तो सोनै रो अंडो देवणाळी मुर्गी है, दायजै री कांई जरूत है। ब्याव पछै कथा नायक खुद तो बी.अेड. करण चल्यो जावै अर उण री घराळी शीला माँ–बाप कनै गाँव में नौकरी करती रैवै। बी.अेड. कर्‌यां पछै नायक नै भी नौकरी मिल ज्यावै। अेक दिन नायक शीला सूं लारलै बरस री तिनखा रो हिसाब पूछै तो इण बात पर दोनुवां री तकरार हो ज्यावै। शीला आप रो तबादलो दुबारा आप रै मां–बाप कनै करवा'र बठै'ई रैवण लागज्यै। इण बीच नायक रै अेक लड़को भी हो ज्यावै। तीन साल तक दोनुवां री बोल चाल बंद रैवै पण अेक दिन शीला पाछी आप रै बेटै नै लेय'र नायक कनै आ ज्यावै क्यूं कै अब उण रा दोन्यूं भाई नौकरी लाग चुक्या हा। इण कहाणी में दिखायो गयो है कै बेटी भी बेटै री तरां माँ–बाप री मदद कर सकै पण इण में उण नै शीला री भांत कीं खारा घूंट पीणा पड़ै।

थै बारै जाओ– बेटै रै ब्याव पछै जद बहू घर में आ ज्यावै तो माँ–बाप नै घणो हरख हुवै। बहू घर में आयां पछै सुसरै रो घर में, आँगणै में, बैठणो अर आणो–जाणो कम हो ज्यावै। बो दो घड़ी बैठणो चावै तो घराळी कैय देवै, ''थै बारै जाओ।'' नूंईं बीनणी होळै–होळै घर पर आप रो इधकार कर लेवै। सासु सिर्फ पोतै–पोतियां नै खिलाणै अर घर रो काम करणै तांईं सीमित हो ज्यावै। सुसरै नै बैठक में ई रोटी, चायपाणी पूगता करदैवै। इण कहाणी रो नायक ज्यूं–ज्यूं बूढ़ो हों तो जावै बहूं उण नै बोझ समझण लागज्यै। अेक रात सगळा टाबर राम लीला देखण चल्या जावै। बूढ़ियै नै रोटी देणोई भूलग्या। बै देर रात जद पाछा आवै तो बूढ़ियो पोतै नै रोटी रो कैवै। टाबर जद आप री माँ नै दादै तांईं रोटियाँ रो कैवै तो बा रोटी घालती थकां बड़बड़ावै, ''गाँव रा सगळा बूढ़िया बूढ़ळी मरग्या, आपणला बूढ़ियां नै मौत ई कोनी आवै। पतो नीं अै गळै रा हाड कद निकळसी।''

इण भांत इण कहाणी में बूढ़ै मिनख री वस्तुस्थिति दिखा'र बतायो गये है कै आपणै अठै बुढ़ापो

कितरो असुरक्षित है। कहाणी आप री संवेदना पाठक तांईं पुगाणै में सफल है।

च्यानणो– मिनख पैली तो पून में उडै पण जद उण रै गैरी ठोकर लाग ज्यावै तो बो संभळणै री कोसीस भी करै। ओईज सनेसो कहाणी 'च्यानणो' देवै। मालती रै घराळो तहसील में रजिस्ट्री बाबू हो। ऊपर री कमाई खूब करतो। अेक ई बेटो हो जगदीस। उण नै भी खूब जेब खर्च देता। नतीजो ओ हुयो कै जगदीस बिगड़ग्यो। मालती रै घराळो अेक दिन रिस्वत लेंतो पकड़्यो गयो। सस्पेंड होग्यो। दुबारा बहाली तांई रिस्वत देणी पड़ी। जगदीस मालती रा गहणा लेय'र घर सूं भाजग्यो। घर में कीं कोनी बच्यो। मालती रै घरआळो बहाल होय'र पाछो आग्यो। जगदीस भी आग्यो। मालती रै हियै में च्यानणो होग्यो कै बेईमानी री कमाई कदे कोनी फळै। मालती, उण रै घराळै अर जगदीस आगै सूं बेईमानी री कमाई सूं तोबा करली। कहाणी आदर्सवाद रो सनेसो देवै।

सुखी कुण– इण कहाणी में लेखक आ बतावणै री कोसीस करी है कै घणो धन मिनख नै कोई घणो सुख कोनी देवै अर नां ई इण दुनियां में कोई पूरी तरां सुखी है। कथा नायक आप रै तबादळै तांईं जैपर जावै। बठै बो आप रै जाणकार नेतावां सूं मिल'र आप रो तबादलो करवा लेवै। हरेक नेता जिण सूं बो मिलै आप रै दुःख रो रोणो रोवै। आप रो काम करवा'र बो आप रै पुराणै सहपाठी राम नाथ सूं मिलणै तांईं घरां जावै। राम नाथ छोटो–सो दुकानदार हो। बो बठै पूग्यो तो राम नाथ रै पुराणै घर री जग्यां अेक आलीसान बंगलो हो। नायक बंगलै रै चौकीदार सूं रामनाथ रै घर बारै में पूछ्यो तो बतायो कै बो राम नाथ रो ई घर है। चौकीदार री खबर पर राम नाथ नायक नै भीतर लेजा'र उण री खूब आवभगत करी पण रामनाथ उण कनै बैठण रो समै नीं दे सक्यो। सगळै कामां सूं निपट'र रामनाथ घरां आय'र उण नै बतायो कै बीं रै गोदामां पर छापो पड़ग्यो। मिलावट रो माल पकड़ीजग्यो पण ले–देर मामलो रफा–दफा करवा दियो। नायक नै लागै जद नेता, मंत्री, बोपारी सगळा ई अैड़ा काम कर दुःखी है तो क्यूं करै? इण दुनिया में सुखी कुण है? ओ सवाल सामी खड़्यो रैवै।

मौत रो मोल– घड़सी पुलिस रै सिपाही री नौकरी सूं रिटायर हुयो। नौकरी में उण नै पोस्त रै नसे री लत भी लागगी। नौकरी सूं अळगो होंवता ईं पुराणा ठाठ छूटग्या। घरवाली टीबी सूं मरगी। थोड़ा दिन पछै बडोड़ै छोरै रै टीबी होगी। घड़सी कीं तंगी अर की अंध विस्वास रै कारण डागदर कनै कोनी गयो। रामदेजी री जात बोली। बैद सूं दवाई भी दिराई पण छोरो कोनी बच्यो। छोरै री विधवा रो कांई करै? राजपूतां में दूजो ब्याव भी कोनी हुवै। अेक दिन उण नै बेरो लाग्यो कै बीनणी आपं रै देवर साथै घर बसा लियो तो बो मन में राजी हुयो। लोग दो दिन रोळा मचा'र रैग्या। तीजो छोरो जिको सरकारी बेलदार हो, उण नै भी टी बी होगी। उण री टीबी ठीक होगी पण डागदर रै बरजणै रै बावजूद छोरै नै ब्याह दियो। टीबी ओजूं उभरगी अर छोरै नै भी साथै लेगी। अब अेक बेटो अर दो लुगायां रैगी। छोरो तो मरग्यो पण घड़सी आ सोच'र खुस हुयो कै बहू नै नौकरी मिल जावैली साथै ई दस हजार रिपिया नगद भी मिलैला। उण रो दाळद धुप ज्यासी। गरीब मिनख रै मनोविज्ञान नै चित्रित करती आ सांतरी कहाणी है।

खेतीखड़– फूसो आपरी लैलावती फसलां देख'र मन में घणो राजी हुवै। आप रै बेटै घीसियै सूं बंतळ करै कै कूंत कर बता कितरां दाणा हुवैला। बो बाजरी मोठ गुवार सगळां रो अन्दाज लगावै। सोचै सेठ रो कर्जो उतरण रै साथै खाण नै दाणा भी बच जावैला। पण करसै रा तो सौ दुस्मण हुवै। पक'र फसल घरां आज्यावै जद ई उण री मेहनत सफल हुवै। फूसै री आसौज रै मईनै तक फसलां घणी ई आछी ही पण नवरात्रां में अैड़ी पून चाली कै फसल आधी रैगी। फूसै

भगवान नै घणी गाळां काढ़ी। दाणा काढ्या जद सेठ खळै में आ'र आप रो हिसाब कर लियो। फूसो सिर्फ ब्याज ई चुकतो कर सक्यो। इण भांत 'खेतीखड़' कहाणी करसै री जिन्दगी रो जथार्थ प्रस्तुत करै।

इण तरां श्री करणीदान बारहठ रो कथा जगत बड़ो विस्तार लियां है जिण में भांत–भांत री भावभूमि अर जीवन रा रंग है। अै रंग कठैई फीका कोनी। मिनख री संवेदना नै झकझोरती अै कहाणियां आप रै समै री साख भरै।

10.5 श्री बारहठ री कहाणियाँ री प्रवृत्तियाँ

करणीदान बारहठ री कहाणियाँ रो विवेचन में नीचै लिखी प्रवृत्तियाँ उभर'र सामी आवै।

10.5.1 राजस्थानी गाँवा रा चितरांम

बारहठ जी री कहाणियाँ में प्रेमचन्दजी री भांत गाँवां रा सीधा–सादा चितराम मिलै। रैवण तांई माटी सूं बणेड़ा कच्चा मकान या फूस सूं बणेड़ा झूंपा। गाँवा रो सीधो–सादो वातावरण इणा कहाणियाँ री विसेसता है। सहरी वातावरण में जैड़ी भीड़, आपाधापी, भागमभाग देखणै में आवै बै बारहठ री कहाणियाँ में कोनी लाधै। अठै तो भूख अर गरीबी सूं लड़ता, कर्ज री दळदळ में कळीजेड़ा, काळ री कड़तु पर बैठ आप री जिनगाणी रा दिन ओछा करता मिनख मिलैला। प्रेमचन्द री कहाणियाँ में जठै पुरोहित वर्ग अर जमींदार वर्ग री प्रधानता है, अदोन्यूं करसै रो सोसण करै उण रै मुकाबलै बारहठ री कहाणियाँ में सिर्फ दो वर्ग है। अेक सूद खोर बाणियां अर दूजा करसा। राजस्थान रै गाँवा रा दरसण इण कहाणियाँ में कर्‌या जा सकै।

10.5.2 करसै रै परिवारां रा चितराम

बारहठ री कहाणियाँ में भारतीय करसै रा अनेक पारिवारिक चितराम है। करसै रो सब सूं घणो हेत जमीन सूं हुवै। किणी कारणां सूं अगर जमीन बिक ज्यावै या अडाणै धरणी पड़ ज्यावै तो करसै रै मुजब तो बस परलै आगी। दुनिया रो अन्नदाता हुवै करसो पण उण री खुद री हालत देखतां बीं पर घणो तरस आवै। बो इतरो भोळो हुवै कै आप सूं छळ करण वाळै री मनगत भी कोनी पिछाणै। 'पांड' कहाणी रो गोविन्दो सेठ री मीठी–मीठी बातां में आय'र बार–बार छळ्यो जावै। पति–पत्नी दोन्यूं लीर–लीर गाभा पैर'र ई आप री गिरस्ती में खुस है। सासु–बहु री नोक–झोंक तो चालती रैवै। इण कहाणियाँ में अैड़ा अणगिण चितरांम आपनै मिलैला। 'धनवीरो' में अेक छोरै री आस में ऊपरथळी री सात छोरियाँ पैदा कर धनवीरो आपरी आखी जिन्दगी भूख सूं लड़ै। 'इयां ही' कहाणी में भोळै–भाळै लोगां री आस्था रा दरसण हुवै। हारी–बीमारी में किणी देवी–देवता री ओट लेय'र बडै सूं बडो दुःख सहन करणै री कूव्वत दीसै। 'दादी' 'लालटेण' 'कच्चो कोठो' 'बाप रो बंटवारो' 'दोजक' 'सोनै रो अंडो', 'थे बारै जाओ', 'खतीखड़' आद कहाणियाँ में करसै रै परिवारां री अन्तरंग झांकियाँ देखण नै मिलै। करसो आखी उम्र जूझतो रैवै पण टूटै कोनी। उण मुजब खेतीखड़ कहाणी में कैयो है, ''खेती खड़ राम जाणै कुण सी स्टील सूं बणेड़ो होवै के बड़ै–बड़ै तूफान ने झेल लेवै, टूटै कोनी, बळै कोनी, मरै कोनी। बीं'रो काळज्यो तो करड़ो होवै कै बो बकत रै घण रा हर धमीड़ सहण कर लेवै पण फूटै कोनी।'' इण भांत करसै रै परिवारां रा जथार्थ चितरांम इण कहाणियाँ में देख्या जा सकै।

10.5.3 करसां री बिथा कथा

जिण भांत प्रेमचन्द रै कथा जगत में तत्कालीन उत्तर प्रदेस रै करसां री बिथा कथा अर रेणु री कहाणियाँ में बिहार बोलै उणीज भांत करणीदान बारहठ री कहाणियाँ में राजस्थान रै करसां रो दुःख–दर्द मुखर हुयो है। करसो तो सिर्फ आपरी मेहनत करणी जाणै। बो इण बिसास रै साथै कै जिकै चूंच दी है बो चून भी देवैलो, मेहनत करणै सूं लार कोनी सरकै। 'धनवीरो' रो नायक धनवीर, 'बीखो' रो सुगन 'बाप रो बंटवारो' रा च्यांरु भाई, 'दोजक' रो दोलो 'खेतीखड़' रो फूसो सगळा आप–आप री जूण सूं लड़ता जिन्दगी रा दिन पूरा करै। इण कहाणियाँ सूं गुजरतां मै'सूस हुवै कै करसै री भी कोई जिनगाणी हुवै। लागै उण नै तो जियां आभै पटक दियो अर धरती झाल्यो कोनी। इतरां कस्ट सहन करणै रै बावजूद उण नै किणी सूं कोई सिकायत कोनी। इण नै बो आप री तकदीर मानै, पूरबलै जन्मां रा खोटा करम मानै जिण रै कारण उणां नै अैड़ी जूण मिली। उण रै सामी ब्याज रै मिस सेठ बीं रै पूरै बरस री मेहनत करेड़ी फसल उठा ले ज्यावै। फेर भी बो सेठ रो अहसानमंद है कै सेठ मौकै पर उण री मदद करी। अै अणपढ़, भोळा, रोही रै जिनावर सिरखा करसा जिका सिर्फ मेहनत अर सिर्फ मेहनत ई करणो जाणै। हारी–बीमारी आवै तो परमात्मा रो नांव लेय'र ठीक हो ज्यावै। इण भांत इण कहाणियाँ में करसै रो दुःख–दर्द भरेड़ो है। लेखक उणां रै कस्ट नै बड़ी सिद्दत सूं मै'सूस कर्‌यो अर वाणी दी।

10.5.4 आर्थिक सोसण

देस में बेसक आजादी आगी पण भारतीय करसो आज भी आर्थिक सोसण रो सिकार है। महाजन, जमींदार आज भी उण नै पैली री भांत ई लूटै। करणीदान बारहठ री कहाणियाँ में जैड़ा पात्र संघर्स करता दिखाया गया है बै कर्जै सूं दबेड़ा है। बां नै ब्याव या औसर या लुगाई रै जापै आद रै बखत महाजन या जमींदार कनै जाय'र कर्जो मांगणो ई पड़ै। इण कर्जै रो ब्याज इतरों करड़ो है कै बो अेकर ले लियो तो फेर जिन्दगी भर कदे चुकतो कोनी हुवे। ब्याज, पड़ ब्याज कर मूळधन सूं दो गुणों, च्यार गुणों, छह गुणो हो ज्यावै। इण कर्जै नै चुकावणै तांईं करसो आप री जमीन या तो अडाणै धर देवै या बेच देवै। किणी भी हालत में अेकर गई जमीन करसै कनै दुबारा कोनी आ सकै। 'परलै' कहाणी रै कथानायक रै बाबै रै अवचेतन में आ बात घर कर चुकी है कै उण री जमीन अब कदे छूट कोनी सकै इण कारण 'पण परलै होसी परलै' उण रो तकिया कलाम बण चुक्यो है। मरुधरा में मेह बरसणो सब सूं बड़ो त्यूंहार है जिण नै देख'र करसै रो मन मोर नाच उठै पण बाबो तो उदास हो ज्यावै क्यूं कै उणां री जमीन तो अडाणै धरीजगी। 'धनबीरो' आखी उम्र मेहनत कर बा'वड़यो कोनी पण 'सेठ फूला' रो फूलियो सोसण कर–कर'र सेठ फूलचन्द बणग्यो। 'सूवटी री बेटी' में गुटू सिंह ठाकर रो कुंवर सुवटी री बेटी रो यौन सोसण भी करै। 'चूनकी री माँ' रो चौधरी रामधन चूनकी री माँ नै काळ में की खाणै–पीणै रो समान दे'र उण री अस्मत रो सौदो करै जिण सूं चूनकी रो जलम हुवै। 'पांड' रो सेठ जद गोविन्दै नै उधार देणै तांईं जाळ में फंसावै तो घणो मुधरो बोलै पण पछै करड़ो बोल'र गोविन्दै री घराळी रो सोने रौ बोरियो मंगालेवै। बोरियो ले'र सेठ आपणै आप नै पागल कैय'र ओजू गोविन्दै नै लूट लेवै।

इण भांत बारहठ री इण कहाणियाँ में आजादी पछै गाँवां रै करसां रो आर्थिक सोसण अर उणां री मजबूरी रो फायदो उठावणै रा दिल नै पिघळा देणाळा चितरांम है।

10.5.5 अंध विस्वास

इण विज्ञान रै जुग में आज भी करसो घणै अंध विस्वासां में कळीजेड़ो है। बो भाग्यवादी है। उण री सोच है कै अमीर री किस्मत रै कारण ई उण कनै लिछमी आवै। उण रै आ बात कतईं कोनी जचै कै अै लोग उण रो सोसण कर–कर ई धनवान हुया है। ओळा पड़णा या काळ पड़णो या फसल खराब हो जाण नै बो आप री तकदीर ई मानै। बीमार होणै पर डागदर कनै नीं जाय'र झाड़ फूंक, टोना–टोटका कर'र या किणी देवता री ओट लेणो ठीक मानै। 'इयां ही' कहाणी में जद काळू रो छोटियो छोरो बीमार हो ज्यावै तो कथा नायक नै घणी चिन्ता हुवै पण काळू री माँ बतावै कै अब रामदेवजी बाबै री ओट लेली, छोरो ठीक हो ज्यावैलो। छोरो ठीक हो ज्यावै इण नै बै बाबै री कृपा मानै। 'मौत रो मोल' रो घड़सी आप री घराळी अर दो बेटां नै आप रै मूंडै सामी टीबी सूं मरता देखै। बो उणां रो सहर रै सफाखानै में इलाज नीं करवाय'र कदे देवी–देवतावां री सरण जावै तो कदै बैदजी री। घड़सी रो ओ कथन देखण जोग है, ''हे रामदेव बाबा! तूं आँधा नै आँख्या देवै, लूलै–लंगड़ां नै टांगां देवै म्हांरै छोरैं नै ठीक करी बाबा, म्हूँ तेरी सवामणी करस्यूं। थं सूं ऊपर म्हांरै तो कीं कोनी।'' खेतीखड़ रो फूसो फसल खराब हुयां भगवान नै तो गाळां काढ़ै पण उण नै ओ बेरो कोनी कै उण रो असली दुस्मण तो सेठ है जैड़ो ब्याज री वसूली में बीं री सगळी फसल ई उठा ले ज्यावै।

इण भांत आं कहाणियाँ में गाँव रै लोगां रा अंध विस्वास बिणां री आस्था, भाग्यवाद आद अैड़ा कारक है जिण रै कारण उण री अैड़ी हालत हुई है पण साथै ई उण री अग्यानता उण नै आ बात कोनी जाणण देवै।

10.5.6 राजस्थान में पड़ण वाळा काळ

भारतीय खेती कुदरत पर निर्भर है। मेह हो ज्यावै अर कोई प्राकृतिक प्रकोप नीं हुवै अर फसलां बची रै ज्यावै तो करसै रै घरां कीं खाणै जोगा दाणा आ ज्यावै वरना बो भूख सूं बांथेड़ा करतो रैवै। विदेसी विद्वानां री मानता है– Indian Crops are gamble of Monsoon. पाणी री कमी रै कारण फसलां कद सूख ज्यावै की कोनी कैयो जा सकै। लारलै सौ बरसां रो इतिहास देख्यो जावै तो राजस्थान में सत्तर बरस काळ रा हुवैला। प्रकृति रो डरावणो रूप राजस्थान में काळ रै बखत देख्यो जा सकै। करणीदान बारहठ री कहाणियाँ भणतां थकां पाठक पर इण काळ री छियां बरोबर मंडरांवती रैवै। काळ रै कारण जैड़ा दुःख अठै री जिया–जंत नै भुगतणा पड़ै उणां नै लेखक सबद देणै री कोसीस करी है। तन री भूख सूं बड़ी पेट री भूख हुवै। 'सूवटी री बेटी' में सूवटी री मां आप री बेटी री अस्मत इणीज कारण कोनी बचा सकै। 'चूनकी री विधवा मां बेटै नै भूख सूं बचाणै रै बदळै आप री कूख में चौधरी सूं चूनकी नै लेवै। 'धनवीरो' 'बीखो' 'बाप रो बंटवारो' 'दोजक' 'खेतीखड़' आद कहाणियाँ में तो काळ रो तांडव है पण बाकी कहाणियाँ पर भी उण रीं छियां पड़ती मै'सूस हुवै। करसै री दुनियां में काळ रा चितरांम तो हुवैला ई हुवैला। भूख सूं बांथा करतो मिनख अठै काळ रो खाजो है। करसै री दुनियां जिण भांत काळ रै आळै–दुआळै चक्कर काटै उण भांत इण कहाणियाँ में भी काळ री धड़कण सुणी जा सकै। काळ पड़ै जद सो कीं सूक ज्यावै। 'बीखो' कहाणी में काळ रो अेक भयानक चितरांम देखण जोग है, ''बादळ ऊमट्या अर ऊपर कर निकळग्या। दूजै दिन आथुणी चाल पड़ी पवन अैड़ी चाली कै थमीं ही नीं। आभो उदास होग्यो, धरती विराण होयगी। ताळ अर जो'ड़ां रो पाणी सूकग्यो। खूडां में बाजरी अर मोठ अेक–अेक बिलांत आएड़ा बळग्या।''

10.5.7 सामन्तवादी प्रवृत्तियाँ रो विरोध

राजस्थान में आजादी सूं पैली घणां ई राजा, रजवाड़ा अर सामंत हा। उणां में जैड़ा सामंत बखत सिर संभळग्या बां तो तरक्की करली पण जैड़ा झूठा मान रै चिप्या रैया दाणै–दाणै नै मुहताज होग्या। झूठो मान अर दिखावो अबै भी उणां री रग–रग में हो इण कारण आंधो खर्च, काम नीं करणो उणां नै लगोलग अवनति कानी लेग्यो। उणां रै आगै काम कर करणियां आज कठै रा कठै पूगग्या। बारहठ री कहाणियाँ में ढै'र पड़ता सामन्ती गढ़ां रा मार्मिक चितराम है। 'ठिकाणो' रो ठाकर आप री बेटी रो ब्याव आप री घरवाळी अर बेटै रै कैवणै मुजब ईं कारण कोनी करै कै बो सामी आळै ठिकाणै नै आप रै बरोबर रो कोनी समझै। अतीत जीवी ठाकर अेक अधबूढ़ सूं आप री बेटी रो ब्याव नीं कर उण री जिनगी नस्ट कर देवै। 'चिमनी रो च्यानणो' रो ठाकर भैरूं सिंह अब भी दरिया दिल है। हालांकि उण रै खुद रै रोटियां रा लाला पड़ै पण झूठो मान राखणै तांईं उधार रो आटो ल्या'र पंडत नै रसोई जिमावै। 'अबै' रै ठाकर मेघ सिंह नै दो घूंट चाय' रो टोटो है पण लारलो वैभव याद कर झूरतो रैवै। इण कहाणियाँ रै माध्यम सूं लेखक सामन्तवादी प्रवृत्तियाँ पर करड़ो व्यंग्य कर्‌यो है। आजादी पछै नूवां–नूवां सामन्त भी उभर्‌या है। अै नूवां सामन्त सोसण करणै में पैली वाळां सूं दो पांवडा आगै है। मोमनो जद देखै कै दोलै रो कर्जो ज्यादा बधग्यो तो बो उण रै दूसरे छोरै नै और सिरी राखल्यै। इण भांत सामंतवाद में जैड़ी संवेदनहीनता अर सोसण री प्रवृत्तियाँ ही बै आज भी मौजूद है हालांकि उणां रो रूप बदळ चुक्यो है।

10.5.8 बीजी प्रवृत्तियाँ

प्रेमचन्द री कहाणियाँ में करसो खेती नै तज मजूर बणतो लखावै क्यूं कै हाड तोड़ मेहनत रै बावजूद उण नै दो बखत री रोटियाँ रा लाला पड़ै तो उण नै झख मार ओ फैसलो करणो पड़ै। 'पूस की रात' में आ विडम्बना उभर'र सामी आवै कै हलकू (कथा नायक) रो खेत जद नीलगायां उजाड़ देवै तो बो राहत री अेक सांस लेवै कै चलो पाळै मरणै सूं तो बंच्या। मजूरी कर'र आप रो पेट पाळ लेस्यां। बारहठ री इण कहाणियाँ में भी करसो खेती सूं पलायन कर मजूर बणण कानी जांवतो लखावै। आ बात घणी खतरनाक सिद्ध हो सकै। इणी भांत रिस्वतखोरी, लालफीतासाही, भ्रस्टाचार, टूटता संयुक्त परिवार, आद घणकरी'क प्रवृत्तियाँ आं कहाणियाँ में उभर'र सामी आईं है। इण कहाणियाँ में 'मौत रो मोल' मिनख री उण प्रवृत्ति नै उभारै जिण में मिनख सगळो कीं लुट्यां पछै थोड़ी खुसी मिलणै नै उभारै जिण में मिनख सगळो कीं लुट्यां पछै थोड़ी खुसी मिलणै री आस में राजी हो ज्यावै। 'कीड़ती' अेक नामी मनोवैज्ञानिक कहाणी है जिण में टाबर रै दिमाग में 'भय' री मनोग्रंथी नै विस्तार देय'र चित्रित करीजी है। आ कहाणी उण मायतां नै सावधान भी करै जैड़ा टाबरां नै काल्पनिक भय दिखा'र चुप करावै। इण भांत बारहठ री कहाणियाँ में, बीजी भारतीय भासावां में जैड़ी प्रवृत्तियाँ है, बै कमोबेस रूप में सगळी मिलै। सबसूं अळगी बात तो आ है कै आं कहाणियाँ में राजस्थान रो परिवेस जीवंत होय'र प्रस्तुत हुयो है। काळ जूझती मिनखाजूण, पेट पाळणै तांईं आखी उम्र संघर्स, कर्ज में कळीजेड़ा, आप रै अंधविस्वासां रै दायरै में घुट–घुट मरता पण आप री मस्ती में सुखी जन जीवण रा जथार्थ चितराम देखण नै मिलै।

10.6 भासा

बारहठ री कहाणियाँ री भासा बड़ी सरल अर सहज है। बा बोलचाल रै घणी नेड़ै है। बारहठ नै जैड़ी

बात कैवणी हुवै आम आदमी री भासा में सीधै–सादै सबदां में कैय देवै। लेखक आम बोलचाल सूं दूर अैड़ा भारी–भरकम सबदां रै प्रयोग सूं बचै जिण सूं पाठक आतंकित नीं हु ज्यावै। उणां रा पात्र गाँव–गुवाड़ री भासा बोलै। बठै कलात्मक बाजीगरी कोनी। भासा उणां रै भावां रै लारै–लारै चालै। बारहठ रै कथ्य अर भासा नै लेय'र डॉ. किरण नाहटा कैवै, ''श्री बारहठ नै बात कैवण रो सांतरो आंटो है। इण रै पाण बै आप री बात नै अैड़ी जुगत सूं जचावै कै पाठक सुरु सूं लेय'र अन्त तांई कहाणी में बिलम्यो रैवै।'' श्री बारहठ भासा नै साधन मानै साध्य नीं। इण कारण उणां री भासा में आम बोल चाल रै अंग्रेजी सबदां रो प्रयोग धड़ल्लै सूं हुयो है। अै अंग्रेजी सबद आपणै ग्रामीण जन जीवन में इतरा रच बसग्या है कै लोग अब इणां नै विदेसी नीं मान आपरी भासा रा अंग मानै। साधारण भासा में कितरीं तागत हो सकै अेक दो उदाहरण देय'र म्हूँ बात नै स्पस्ट करणै री कोसीस करूँगा–

नूवैं जमानै रै बदळाव नै प्रकट करणाळी भासा–

''जकां लोगां नै धरती नीं झेलती बै आसमान में उडण लागर्‌या है।''

पुराणै अर नूवैं वातावरण नै प्रस्तुत करतो अेक संवाद–

''हाँ चाय, भागवान चाय तो प्यादे। कदे इण घर में दारु रा ड्राम भर्‌या रैंवता, अमल री मनवारां होंवती। तम्बाखू रा गट रुड़ता फिरता, हमीरियो ढोली दारू रा गीत गांवतो, बीं री सारंगी बाजती ही रैंवती।''

''आपां पैली घोड़ा खाया, फेर ऊंट खाग्या, फेर गहणो गट्‌टो चाबग्या। अबै सामी पड़्या भाटा रह्‌या है, ओजूं कोटड़ी तो बणै कोनी।''

(अबैं–'माटी री महक')

आं दो उद्धरणां में भासा कितरीं सरल अर सहज है। कठैई दिखावटीपण कोनी पण सामन्ती वातावरण अर उण रै पतन रो सगळो इतिहास समझ्‌यो जा सकै। सरल अर सहज भासा में लिखणो सब सूं दोरो काम है। रचनाकार जद सगळै जीवनानुभवां नै आत्मसात कर जिन्दगी री पुनर्रचना सारु कलम उठावै, जद ई अैड़ी भासा हुवै।

सैली– बात नै कैवण रो ढंग ई लेखक री पिछाण बतावै। अेक अंग्रेज आलोचक तो सैली नै ई मिनख मानै। उणां Style is the man. कैय'र सैली रो महताऊपणो दरसायो है। आलोचक आ बात भी कैवै कै जिण भांत पाणी निवाण सारु आपी आप जांवतो रैवै, उणीज भांत कथ्य भी आप रो रास्तो आपी बणा लेवै। करणीदान बारहठ री कहाणियाँ भणती बगत इयां लागै ज्यूं आप अेक दरसाव मांय सूं निकळ रैया हुवो। सहज अर सरल भासा, वातावरण नै मूर्त्त करता सबद अैड़ो भाव संसार रचै कै पाठक उण में खो जावै। इण कहाणियाँ में लेखक कठैई संवाद–सैली, कठैई वर्णन सैली रो प्रयोग कर कथा नै आगै बधावै। डॉ. किरण नाहटा रो कैवणो है, ''श्री बारहठ कनै बात कैवण रो सांतरो आंटो है।'' ओ आंटो बिणां री सैली है। जादातर कहाणियाँ में आत्मकथात्मक अर संवाद सैली रो भरपूर प्रयोग हुयो है। मनोविज्ञान रै माध्यम सूं लेखक पात्रां रै मन रो उतार–चढ़ाव अर उण रै भीतरला दरसाव दिखावै। इण नजर सूं 'कीड़ती' अेक नामी कहाणी बण पड़ी है। माँ–बाप टाबरां नै चुप करवाणै तांई बांनै सामी डर री कोई मूरती खड़ी कर देवै। टाबर रै अवचेतन नै आ मूरती कितरीं प्रभावित करै 'कीड़ती' में देख्यो जा सकै। पागल छोरी टाबर कांता तांई सांच रो ई 'हाऊ' बण जावै। इणीज भांत बुढ़ापै में मिनख साथै किण भांत रो ब्योहार करै इणरो बड़ो खरो अर मनोवैज्ञानिक सैली में कोरेड़ो चितरांम है। भासा रै फालतू आडम्बर सूं मुगत अै कहाणियाँ पाठक रै दिल पर सीधो असर करै।

10.7 राजस्थानी कहाणी नै बारहठ रो योगदान

करणीदान बारहठ रै कथा संसार रो विवेचन कर्‌यां पछै ओ भी जाण लेवणो जरूरी है कै राजस्थानी कथा साहित्य में उणां रो कांई योगदान है? दरअसल बारहठ प्रेमचन्द अर रेणु री परम्परा रा गाँव रै परिवेस नै रचणवाळा रचनाकार है। जिण भांत प्रेमचन्द कर्ज अर सोसण री चाकी रै पाटां में पिसतै करसै री जिनगाणी रा चितरांम उकेर्‌या है। उणीज भांत बारहठ भी राजस्थान रै करसां रो दुःख–दर्द आप री कहाणियाँ में परोटणै री कोसीस करी है। इण दीठ सूं बारहठ रो रचनाकार प्रेमचन्द या रेणु सूं कठै ई लारै कोनी। बारहठ री कहाणियाँ में अेक बात और उभर'र आई है, बा है– ग्रामीण जीवन में मायतां री उपेक्षा। हिन्दी में उषा प्रियंवदा री 'वापसी' या भीष्म साहनी री 'चीफ की दावत' अैड़ी कहाणियाँ हैं जिण में बूढ़े मायतां री या तो उपेक्षा है या उणां नै फालतू सामान सिरखा समझ लिया है। इण दीठ सूं बारहठ री कहाणियाँ में 'कच्चो कोठो', 'बाप रो बंटवारो', 'थै बारै जाओ' आद अैड़ी है जिण में बूढ़ै लोगां री मनगत अर उणां री उपेक्षा दिखाई गई है। नूवीं पीढ़ी रो बुजरगां मुजब उपेक्षा रो ब्योहार पाठकां रै मन में गैरी संवेदना प्रकट करै। 'पाजेब' जैनेन्द्र री बाल मनोविज्ञान नै अभिव्यक्त करणाळी श्रेष्ठ कहाणी है। जिण में अेक बच्चो चोर कोनी पण उण नै बताणो कोनी आवै। इण कारण बो सक रो केन्द्र बण ज्यावै। बाल मनोविज्ञान पर आधारित बारहठ री 'कीड़ती; कहाणी नामी है। 'भय' रै मनोविज्ञान नै लेय'र रची गई अैड़ी कहाणियाँ राजस्थानी कांईं बीजी भारतीय भासावां में भी कम लिखीजी है। संस्कृत में अेक बड़ी प्रसिद्ध कैवत है–

'बुभुक्षित किं न करोति पापं, क्षीणा जना निष्करुणा भंवति' अर्थात भूखो मिनख कोई भी पाप कर सकै उण में करुणा खतम हो ज्यावै। 'बाप रो बंटवारो', 'सूवटी री बेटी', 'चूनकी री माँ', में लेखक रो ओ ई जथार्थवादी दीठ है। 'करड़ो झांझरको', 'मास्टरजी', 'लालटेण' आद कहाणियाँ आदर्सवादी है पण ओ आदर्सवाद थोपेड़ो कोनी। 'लालटेण' रै कथा नायक रै अहं पर जद चोट पड़ै तो बिण नै बैराग हो जावै अर घर छोड निकळ जावै पण जद दुनियां रै जथार्थ नै देख'र पाछो धरां आ जावै। इण नै अेक मनोवैज्ञानिक ट्रीटमेंट कैयो जा सकै। इण भांत बारहठ रो राजस्थानी कहाणी नै घणमोलो योगदान है। बिण में जिनगी रा सगळा रंग है।

10.8 सारांस

करणीदान बारहठ राजस्थानी रा अैड़ा लूंठा रचनाकार है जिका राजस्थानी कहाणी नै जिन्दगी रै जथार्थ सूं जोड़ उण नै जिन्दगी री पर्याय बणायी। बारहठ रै अठै ना तो ओढ़ेड़ो आदर्सवाद है अर ना ही नागो जथार्थ। जिनगाणी में जिण भांत खाटा–मीठा अनुभव होंवता रैवै बैईज चितरांम कहाणियाँ में है। बै गाँवां री दुनियां रा चितेरा है। घर, परिवार में होवणाळी छोटी–छोटी बातां, राजस्थान मं लगोलग पड़ता काळ, उणां सूं जूझती मिनखा जूण, ढैंवता सामन्ती दुर्ग, आद रा मार्मिक चितरांम है। बारहठ जी रो खुद रो कैवणो है, ''राजस्थान री धरती पर निरा उपन्यास कहाणियाँ, काव्य मंड्या पड्या है। फेर लेखक जूठ खावण नै क्यूं जावै? जे जावणो ई है तो राजस्थान रो जन जीवण कीं रै लागैलो?'' इण भांत बारहठ जी री कहाणियाँ रो कथ्य राजस्थानी जन जीवण सूं जुड़ेड़ो अर जथार्थवादी है। इण में जठै कठै आदर्सवाद रा दरसण है बै चितरांम भी समाज में हुवै ई है।

10.9 अभ्यास रा सवाल

1. ''करणीदान बारहठ री कहाणियाँ में ग्रामीण जीवन रो जथार्थ चित्रित हुयो है।'' आप इण कथन सूं कठै तक सै'मत हो तर्क साथै सिद्ध करो।

2. करणीदान बारहठ री कहाणियाँ में राजस्थानी वातावरण किण भांत चित्रित हुयो है?

3. ''करणीदान बारहठ री कहाणियाँ में जठै करसै री व्यथा रो चित्रण है बठै ई ढैंवतै सामन्तवाद री इमारत रा भी चितरांम है।'' उदाहरण साथै उत्तर द्यो।

4. करणीदान बारहठ री कहाणियाँ में कैड़ी प्रवृत्तियाँ उभरी हैं? विवेचन करो।

10.10 उपयोगी पोथियाँ

1. आदमी रो सींग– करणीदान बारहठ

2. माटी री महक– करणीदान बारहठ

3. राजस्थानी भाषा और साहित्य– डॉ. मोतीलाल मेनारिया

4. आधुनिक राजस्थानी साहित्य– डॉ. किरण नाहटा

5. राजस्थानी साहित्य कुछ प्रवृत्तियाँ– डॉ. नरेन्द्र भानावत

6. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य : डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

इकाई–11

राजस्थानी भासा रा प्रमुख कहाणीकार : बैजनाथ पँवार

इकाई री रूप रेखा

11.0 उद्देस्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 आवस्यकता

11.3 महत्त्व

11.4 बैजनाथ पँवार रौ कथा जगत

- 11.4.1 लाडेसर
- 11.4.2 नैणां खूट्यो नीर
- 11.4.3 ओळखाण

11.5 बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ री प्रवृत्तियाँ

- 11.5.1 राजस्थानी संस्कृति रा चितरांम
- 11.5.2 राजस्थान में पड़ण वाळै काळां रौ वर्णन
- 11.5.3 भ्रस्टाचार पर चोट
- 11.5.4 गाँवां री राजनीति
- 11.5.5 अंध–विस्वासां रौ चित्रण
- 11.5.6 आदर्सवादी अर जथारथ परक लेखन
- 11.5.7 समाज री कुरीतियाँ रौ वर्णन
- 11.5.8 सुधारवादी द्रिस्टीकोण
- 11.5.9 बीजी प्रवृत्तियाँ

11.6 भासा

11.7 सैली

11.8 राजस्थानी कहाणी नै पंवार रौ योगदान

11.9 सारांस

11.10 अभ्यास रा सवाल

11.11 उपयोगी पोथियाँ

11.0 उद्देस्य

राजस्थान रै अळगै–अळगै आंचलां में अनेक विधावां में साहित्य रचना होंवती रैयी है। इण में कहाणी अेक सजोरी विधा है। राजस्थानी कहाणी आज जैड़ै मुकाम पर खड़ी है उण में अनेक साहित्यकारां रो योगदान है। चुरू आँचल रा कथाकार बैजनाथ कहाणी कला में सिद्धहस्त है। वां री कहाणियाँ में ठेठ गाँव री माटी री खुसबू आवै साथै ई लोक कथा रो आणन्द भी देवै। साहित्य में कहाणी विधा आज सगळां सूं ज्यादा भणी जावै। राजस्थानी कहाणी बीजी भासावां रै जोड़ में कठै खड़ी है? उण रै कहाणीकारां रो कहाणी साहित्य में बिगसाव रो कितरोक योगदान है ओ जाणणै तांईं इण नामी गिरामी साहित्यकारां री कहाणियाँ रो अध्ययन जरूरी है। राजस्थान री मरू भोम में मिनख री संवेदना नै झकझोरणै वाळा अणगिण किसा–कहाणियाँ भर्‌या पड्‌या है। अठै पाणी बिना तरसता जीव–जंत अर मिनख, आभै कानी दो बूंद पाणी तांईं देखतां–देखतां जिन्दगी बितावणियाँ अठै रा बेबस रैवासी, पण साथै ई जिन्दगी री ऊर्जा सूं भर्‌या जीवट आळा लोग देखण नै मिलैला। अठै रै जन जीवन नै गैराई सूं जाणणै तांईं इण कहाणियाँ नै भणणै री दरकार है। बैजनाथ पंवार कहाणियाँ रै मिस अठै री जमीन नै वाणी दी है। अै कहाणियाँ भण्‌याँ पीछै आप जाण सकोला–

- बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ में बै बदळाव देख्या जा सकै जैड़ा समै–समै पर कहाणी कला में आया है।
- राजस्थानी कहाणी रै भंडारै नै भरणै में बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ रो कितरो योगदान है?
- पंवार री कहाणियाँ आम आदमी रो दुःख–दर्द परोटणै में कितरी सफल हुयी है?
- बैजनाथ पंवार रो कथा जगत कितरो विस्तार लियां है?
- बैजनाथ पंवार कहाणी कला में कितरां सफल हुया है?

11.1 प्रस्तावना

आप राजस्थानी रै उणा कथाकारां मुजब भणोला जिकां आधुनिक राजस्थानी रो साहित्य भंडार आप री अणमोल कहाणियाँ सूं भर्‌यो है। अैड़ै कहाणीकारां में बैजनाथ पंवार घणा महताऊ हस्ताक्षर है। हिन्दी कहाणी नै जैड़ो आधार प्रेमचन्द, जैनेन्द्र अर अज्ञेय सिरखै कहाणीकारां दियौ, बोइज आधार राजस्थानी कहाणी नै बैजनाथ पंवार दियो। उणां री कहाणियाँ में राजस्थानी परिवेस पणप्यो है। आजादी पछै गाँव रै लोगां री सोच अर रहन–सहन में जैड़ो बदळाव आयो है बो इण कहाणियाँ में मुखर है साथै ई सालूं–साल पड़णवाळा काळ अर बां रै माध्यम सूं फायदो उठांवता राजनेता, अफसर है तो दूजे कानी भूख सूं बिलबिलांवतो मानखो अर पसुधन है। देस रै गाँवां री असलियत जाणणै तांईं इण कहाणियाँ रो अध्ययन जरूरी है। राजस्थानी धोरांवाळै गाँवां में चाये राहत कोनी पूगी पण लेखक री दीठ पूगी है अर आप री कलम सूं बां री संवेदना नै उभारी है।

11.2 आवस्यकता

राजस्थानी में पैली बातां चालती। केई आलोचकां रो विच्चार है कै बातां सूं ई आगै चाल'र राजस्थानी कहाणी रो बिगसाव हुयो है जद कै दूजै आलोचकां रो कैवणो है कै कहाणी विधा पश्चिम सूं आई है। बात रो उद्देस्य सिर्फ मनोरंजण हो जद कै कहाणी तो जिन्दगी रै सरोकारां सूं जुड़ेड़ी है। जीवण रा बै कैड़ा सरोकार है जिणनै कहाणी अभिव्यक्ति देवै अर बा बात सूं अळगी हुय जावै, इण नै जाणणै तांईं कहाणी साहित्य नै भणणै री दरकार है। इण रै साथै ई साहित्य में सब सूं लोकप्रिय विधा कहाणी आज

बीजी भासावां रै कहाणी साथै कठै तांईं आप रा कदम–ताल मिला'र चालै ओ देखणै तांईं भी कहाणी साहित्य रो अध्ययन जरूरी है। आज राजस्थानी कहाणी में जैड़ी प्रवृत्तियाँ हैं उण री पृस्टभूमि में इणा आगीवाण कथाकारां री कहाणियाँ में बीज देख्या जा सकै। साथै ई साहित्य रै अध्येता तांईं ओ जाणणो भी जरूरी हुवै कै साहित्य आप रै समै रै सांच नै कितरो अर किण भांत परोटै, अर कहाणी इण दिसा में किण हद तक सफल हुई है। आजादी पछै राजस्थान रै सामन्ती वातावरण में जैड़ो बदळाव आयो अर अठै प्रजातंत्र रो परचम फहरायो उण सूं गाँवां रा हुलिया किण भांत रा होग्या इण बात रो परिचै भी इणा कहाणियाँ रै माध्यम सूं मिलैलो।

11.3 महत्त्व

देस में होवणाळी बड़ी–बड़ी घटनावां रो ब्यौरो तो इतिहास में मिल ज्यावै पण अगर देस री असली तस्वीर देखणी हुवै तो साहित्य भणणो जरूरी है। देस रो विचारात्मक अर संवेदनात्मक इतिहास साहित्य में ई लिख्यो जावै। देस आजाद हुयां पछै भी अनेक अैड़ी समस्यावां है जिण सूं अठै रा लोग जूझै। राजस्थान गाँवाळो प्रान्त है अर बैजनाथ पंवार गाँव री सोच, प्रगति अर अठै रै रहन–सहन नै वाणी देववाळा लेखक। लोग राजस्थान बाबत पोथियाँ में भणै पण असली राजस्थान गाँवां में रैवै जिको अजै तक उतरों विकास नीं कर सक्यो जितरा आँकड़ा बतावै। गाँवां में बधतो भ्रष्टाचार, अकाळ राहत रै नांव पर चालतै कैंपां में आप–आप री बाटी सेकता अधिकारी अर राजनेता, काळ री असलियत जाणणै तांईं इण कहाणियाँ रो घणो महत्त्व है। लेखक कहाणियाँ रै माध्यम सूं या आपरै साहित्य रै माध्यम सूं किणी आदर्स री थापना भी करै। इण तांई ओ जरूरी कोनी कै बो आदर्स सगळां रै गळै उतर ज्यावै। लेखक रो ओ दावो कोनी कै कलम सूं क्रान्ति कर देवै पण बो सोचणै तांईं मजबूर तो कर ई सकै कै आं हालातां रो अखीर जिम्मेदार कुण है?

11.4 बैजनाथ पंवार रो कथा जगत

11.4.1 लाडेसर

लाडेसर रो प्रकासन वर्ष 1970 में हुयो। इण पोथी में लाडेसर, सुरजी, कातिग महातम, दूजबर, भूरी, छाती कूटो, जापो, इनामी भाभी आद आठ कहाणियाँ हैं। आं कहाणियाँ में लेखक जिन्दगी अर दुनियां री बाहरी भीतरी घटनावां, मिनख री भावनावां, उण रो संघर्स आद रा जथार्थ चितरांम प्रस्तुत कर राजस्थानी साहित्य रो भंडार भर्‌यो है। इण कहाणियाँ रो संक्षिप्त परिचै इण भांत है–

लाडेसर– रूपासर गाँव रो रुघो चौधरी। च्यार बेटा जिणमें तीन परणीजेड़ा। छोटियो बेटो बी. अे.एल.एल.बी. अब तक कुंवारो अर बेरोजगार। चौधरी रै घर में खूब ठाठ बाट है पण छोटियो बेटै भुगानै नै इतरो पढ्यां पछै भी नौकरी कोनी मिली घर में कीं तनाव रो कारण है। भाई भी कीं खिंचया–खिंच्या रैवै कै भुगानियो काम कोनी करै। अेक दिन भुगानो जद रोटी जीमण तांईं बैठ्यो तो उण री बेकारी नै लेय'र मां बीं पर गुस्सो करण लागी। भाभी तानो मार दियो तो भुगानो रोटी छोड'र चुपचाप घर सूं निकळग्यो। घणी दूर चाल्यां पछै बो अेक खेत में पाणी पीणै तांईं अेक झूंपड़ी में गयो। बठै खेत मालक री बेटी धापी बैठी मिली। उण भुगानै नै खाणै तांईं मतीरियो दियो। धापी पेमै चौधरी री इकलौती बेटी ही। भुगानो पेमै रै खेत में मजूरी करण लागग्यो। उण खूब मेहनत करी। इण बिचाळै भुगानै अर धापी रो आपस में प्रेम होग्यो। भुगानो जद चालण लाग्यो तो पेमै बीं रो अतो–पतो पूछ्यो। पेमै नै घणो इचरज हुयो कै इतरै बड़ै चौधरी रै भणयै–लिख्यै बेटै उण रै खेत में मंजूरी करी। उण आप रै घर में सलाह कर बठै ही

आपरी बेटी धापी रो ब्याव उण सूं कर दियो। दायजो अर बहू लेय'र भुगानो घरां पूग्यो तो सगळां हरख मनायो। अब तो भगवानै रो नौकरी रो कागद भी आग्यो। उण नै तहसीलदार बणायो गयो हो। घर में रंग–चाव हुवै हा। गीत गाईज्यै हा।

सुरजी– छोटी, पण मार्मिक प्रेम कहाणी है। सुरजी कहाणी री नायिका रो नांव है। बा विधवा है। चन्दर अर सुरजी आपस में अेक–दूजै सूं प्रेम करै। कदे बै अेक–दूजै नै, हवाई जहाज देखणै रै बहानै, छात पर चढ़'र देखै। कदे मेह में छात पर चढ़'र न्हावै। अेकर चन्दर लुगायां री लड़ाई में सुणयो कै सुरजी काळियै सूं भी प्रेम करै। फेर बेरो लाग्यो कै उण नै कोई ठाकर कठै ई लेग्यो अर आगै कर दी। नायक चन्दर नै सुरजी री ओळयूं आंवती रैवै। उण रा हाव–भाव, बोल बीं री यादां में आय'र सतावै। गाँव में और छोरियां रा नांव भी सुरजी है। बांनै कोई जद हेलो पाड़ै तो चन्दर खिड़की खोल'र जरूर देखै कै कठैई उण री सुरजी तो कोनी।

कातिग महातम– पंडत खुमाणाराम रै जवान बेटै गणपत री मौत हो ज्यावै। घर पर दुखां रो पहाड़ टूट पड़ै। गणपति री जोड़ायत तो जाबक ई टूट ज्यावै। बीस बरस री उम्र में विधवा होगी। दूजै ब्याव नै समाज मानै कोनी। सरीर किण भांत आप री मांग पूरी करै। अेकर गाँव में मिन्दर रै पंडत कातिग मई में भागवत री कथा सुणावणी सरु करी। पंडत भी जवान अर सोवणो हो। गणपत री जोड़ायत चन्नणां नै देख'र उण रो मन डोल ज्यावै। दोन्यूं ओलै–छानै अेक दूजै सूं मिलण लागजावै अर अेक दिन दोन्यूं गाँव छोड'र भाज ज्यावै। खुमाणो सदमै सूं मर ज्यावै अर उण री घराळी पागल हो ज्यावै। लेखक कैवणो चावै कै लोग पड़दै री ओट में तो पाप करता रैवै पण विधवा रै ब्याव नै सामाजिक स्वीकृती कोनी देवै। कहाणी जथार्थवादी है।

दूजबर– अणमेळ ब्याव री कहाणी है। धनजी री जोड़ायत अणचारी लाम्बी बीमारी सूं मौत हो ज्यावै। तीन छोरियाँ अेक छोरी, च्यारुं टाबर धन जी रै गळे में आ पड़ै। लोग धनजी नै दूजौ ब्याव करणै री सलाह देवै पण धनजी नीं मानै। अखीर में अेक बिचौलियै री कोसीसू सूं अेक गरीब बाप री कठरूप बेटी सूं जिण री उम्र सोळा बरस री हुवै, धनजी ब्याव कर ल्यै। ओ अणमेल ब्याव ना तो धनजी अर ना वां रै टाबरां नै सुखी रैवणद्यै। धनजी री दूसरी लुगाई रो चरित्र भी खराब है। आखीर में बा घर छोड'र भाजजावै। राजस्थानी री सरुआती कहाणियाँ में कोई ना कोई सिक्षा या सनेसो जरूर होंवतो। आ कहाणी अेक सनेसो देवै।

भूरी– रामजस मास्टर रो तबादलो अैड़ै गाँव में हो ज्यावै जठै उण नै ना तो रैवण नै मकान मिलै अर ना ही दूध। बीं रा टाबर दूध बिना रंजै कोनी। उण रो तीन साल रो छोटो छोरो रामू दूध तांई हठ कर लेवौ। समझायां, भुळायां मानै कोनी तो रामजस री घराळी भूरी उण रै दो थप्पड़ मारद्यै। टाबर जोर–जोर सूं रोण लागै। मास्टर रामजस आप री हालत सूं बड़ो दुःखी है। बो ईमानदार अर मेहनती है इण कारण भ्रस्ट अफसर उण रो तबादलो जल्दी–जल्दी कर दैवै। उण री तरक्की भी कोनी करै। अेकर भूरी घणी बीमार पड़ ज्यावै। गाँवाळा सहर जाणै तांईं उण नै ना तो ऊँट देवै अर ना कोई मदद करै। बो उपाळो ई सहर जाय'र डागधर नै लेय'र आवै। भूरी ठीक तो हो ज्यावै पण रामजस रो मन इण नौकरी सूं उचट जावै। बो नौकरी छोड'र आप रै परिवार नै साथै लेय'र पाछो गाँव चल्यो जावै। गाँवाळा उण नै अैम.अैल.अे. रै चुणाव में खड्यो कर देवै। बो चुणाव जीत'र सिक्षा मन्त्री बण ज्यावै। अब सुख ई सुख हो। इण कहाणी में लेखक तो आ बताणै री कोसीस करी है कै जैड़ो मिनख मेहनत करै, उण नै अेक ना अेक दिन जरूर फळ मिलै। दूसरी आ बात कै मिनख री तरक्की में उण रै घरवाळी रो भी कितरो योगदान हो

सकै, बतायो गयो है। इणी'ज कारण लेखक कहाणी रो नांव 'भूरी' राख्यो है। कहाणी आदर्सवादी है।

छाती कूटो– पेमजी गाँव रो सिरैपंच अर बड़ो चौधरी है। लूण जी रै छोरै रै ब्याव रै महूर्त तांई पेमजी कनै मिलण आवै। बठै लूणजी री खूब आवभगत हुवै। पेमजी रा ठाठ–बाठ देख'र लूण जी मन में सोचै कै अठै खूब दायजो मिलैलो। बो जद पेम जी सूं मिल'र पाछो आप रै गाँव जावै तो रास्तै में अेक मिनख मिलै जको पैली तो लूण जी नै कीं कैयो चावै पण फेर बात दाबल्यै। फुलरिया दूज नै कुरड़ै रो ब्याव हो ज्यावै। पेम जी खूब धन–दायजो देवै। लूण जी राजी हू ज्यावै पण जद उण नै बेरो लागै कै छोरी तो (बहू) गूंगी अर बहरी है तो घर रा सगळा लोग माथो पीट'र रै ज्यावै। दर असल लेखक सनेसो देणो चावै कै ब्याव करणै सूं पै'ली दोन्यूं पखां नै आपस में भली–भांत परख लेणो चायजै। कठैई धोखो तो नीं हो ज्यावै। इण कहाणी में राजस्थानी संस्कृति रा सोवणा चितरांम उभ्रया है।

जापो– अेक अैड़ी लुगाई री कहाणी है जिण रै पैली तीन छोरियाँ पैदा हुई पण तावळी ई मरगी। अब काळै बा जद ओजूं गर्भवती हुई तो उण रो छोटो देवर, सासू, नणद सगळी कैवै, अबकाळै गीगलो हुवैलो। देवर तो उण रो नांव ई 'सुभाष' धर दियो। नणद सुगन देख'र बतायो कै गीगलो हुवैलो। गाँव री लुगायां सासु नै कैयो बहू रै लारै कोई ओपरी छियां लागेड़ी है। किणी स्याणै सूं टोटको करवावो। भांत–भांत री बातां चालती रैंवती। बहू रै गीगलो ई हुयो। खूब रंग–चाव हुयो। कूवो पूजीज्यो पण चाणचक बेरो नीं कांई हुयो कै गीगलो हड़क–फड़क'र मरग्यो। घर में कूकारोळो मचग्यो। बेओलाद लुगाई री मनोवृति रो चित्रण करती गाँव रै लोगां रै अंध विस्वासां नै उकेरती साथै ई राजस्थानी संस्कृति रा मंडाण मांडती, सोवणी कहाणी है।

इनामी भाभी– भाग्यवाद पर आधारित आ चोखी कहाणी है। चौथू विधवा री कूख सूं पैदा हुयो इण कारण उण री मां नै परिवाराळां घर सूं काढ़ दी। बा गाँव सूं बारै टापरी बणा'र रैंवती। चौथू बीस बरसां रो जवान है। अेक तो गरीब, दूजो उण रै बाप रोई बेरो कोनी। अैड़ै नै कुण आप री बेटी देवै। अेक दिन चौथू रै मन में उथळ–पुथळ मचगी जद उण नै बेरो लाग्यो कै पांच रिपियां रै इनामी बांड सूं साढ़े सात हजार रिपियां रो इनाम मिलैलो। चौथू सपनां देखणा सरु कर दिया। उण कनै अगर साढ़े सात हजार रिपिया होवै तो बीं रो घर बस ज्यावै पण आज तो बांड खरीदणै तांईं पाँच रिपिया ई कोनी। बो खूब भाग–दौड़ करै पण रिपिया कोनी बणै। अखीर में बो बी.डी.ओ. सा'ब रा पग पकड़ पाँच रिपिया उधार लेवै अर बांड खरीद लेवै। संयोग कैवो या तकदीर, साढ़े सात हजार रो पैलो इनाम चौथू रै ई निकळ्यो। कलक्टर सा'ब इनाम दियो। अब तो चौथू रा काका, ताऊ भी उण नै लेण तांईं आग्या। उण रो ब्याव भी होग्या। चौथू री बीनणी नै अब 'इनामी भाभी कैवै।

11.4.2 नैणां खूट्यो नीर

इण पोथी रो प्रकासन सन् 1977 में हुयो। अै कहाणियाँ, कहाणीकार पंवार रै विकास री आगली कड़ी कैयी जा सकै। इण संग्रै में कुल 14 कहाणियाँ संकलित है। आप रै पैलै कथा संग्रै में लेखक रो सुर जठै आदर्सवादी है इण कहाणियाँ में बो होळै–होळै जथारथ में बदळतो दीसै। डॉ. किरण नाहटा इण कहाणियाँ मुजब कैवै– पंवार री कथा जात्रा सूं गुजर्‌यां इत्तो तो साफ हुयग्यो कै श्री पंवार में ज्यूं–ज्यूं परिपक्वता अर प्रौढ़ता आंवती गई है त्यूं–त्यूं बां री भावुकता माथै अंकुस लागतो गयो है अर बां री रुझान लगोलग जथारथ कानी बधती गई है। 'नैणां खूट्यो नीर' रो संक्षिप्त परिचै इण भांत है–

लिछमां बाई– लिछमां टाबरपणै सूं ई निरभागण ही। दुःख अर अभावां में पळ'र बड़ी होई। ब्याव पछै कीं दिन सुख रा निकळया, फेर उण रै घरवाळै री मोटर दुर्घटना में मौत होगी। बा आप रै पाड़ौसी अर टाबरपणै रै भायलै विक्रम री प्रेरणां सूं पढ़ी लिखी। मनचलां अर गुण्डां सूं खुद री रक्षा करी। देस पर जद चीन रो हमलो हुयो तो बा लोगां नै फौज में भर्ती होणै तांईं प्रेरणा देण लागी। इण कारण बा विक्रम कनै गई अर फौज में भर्ती होणै रो कैयो पण विक्रम घर–परिवार री मजबूरियाँ बताय'र साफ नटग्यो। लिछमां नै उण पर घणी झाळ आई। उण विक्रम नै घणी लाणत दी पण बो नीं मान्यो। लिछमा खुद नर्सिंग री ट्रेनिंग लेयर लद्दाख चली गई। बठै दिन रात घायलां री सेवा में लागगी। साथैवाळी नरसां उण नै दूजी बर ब्याव करण तांई कैयो। उण नै अब भी विक्रम सूं नाराजगी ही। अेक दिन उण नै डागधर बतायो कै अेक कपतान सा'ब बुरी तरां घायल है। उण री सेवा में लिछमां नै रैवणो है। लिछमा उण री सेवा में जुटगी। अेकर कपतान कीं हाल्यो तो उण मूंडै सूं चादर हटा'र देख्यो तो बा हैरान रैगी। बो विक्रम ई हो पण बीं नै अबै तक होस कोनी आयो। बा रात–दिन सेवा में लागी रैयी। खुद रो रगत थी दियो। सात दिनां तक सोई भी कोनी। आखीर विक्रम नै होस आग्यो। उण लिछमां नै पिछाण ली। दोन्यूं घणा राजी हुया। इण भांत आ अेक आदर्सवादी कहाणी है।

नैणां खूट्यो नीर– पीणै रै पाणी तांईं काळ में जूझतै मिनखां री मार्मिक कहाणी है– नैणां खूट्यो नीर। राजस्थान में जद काळ पड़ै अनाज री कमी तो हुवै ई साथै ई लोग बूंद–बूंद पाणी नै तरसै। अणचां रै अेक गाय है उण रै दूध सूं परिवार रो काम चालै। गाय जद दूध नीं देवै तो अणचां क्रोध कर उण रै पैली तो लट्ठ मारै पछै आखती होय'र कूवै सूं पाणी लेण जावै। कूवै में पाणी कम है अर पाणी लेणियां जादा। बिचाळै–बिचाळै रुक'र बारियो (बारै सूं पाणी काढ़णाळो) पाणी भेळै होणै रो इन्तजार करै। लोग पाणी लेणै तांईं आपस में लड़ाई–झगड़ो कर लेवै। पाणी पीणै तांई पसु कूवै रै आळै–दुआळै चक्कर काटता फिरै। सिर्फ इण कूवै रो पाणी मीठो है जिण नै खारै पाणी में मिला'र लोग पीवै। अेकलो खारो पाणी पीणै सूं पसु या मिनख मर भी सकै। अणचां आप री बारी नै उडीकती रैवै। उण री पाणी भरणै री जद तक बारी आवै पैली तो कूवै में पाणी खूट ज्यावै। केई देर पछै पाणी भेळो हुवै तो दो–तीन बारा निकळतां ई लाव टूट ज्यावै। बारो कूवै में जा पड़ै। अणचां अेक ई घड़ो भर सकै। बा अेक घड़ो खाली अर अेक घड़ो भरेड़ो लेय'र घर कानी चाल पड़ै। रास्तै में अेक टोडियै रै चपेट में आणै सूं बिण रो भरेड़ो घड़ो फूट जावै। निरास होय'र बा घरां पूगै। टाबर उण नै खाली देख'र पूछै– पाणी कठै? बै तिसाया मरै। टाबरां री तिरसा समझ'र अणचां रो हियौ भरियावै। बा जोर सूं रोणो चावै पण नैणां में ई पाणी खूटग्यो।

हार्योड़ी जिनगानी– जात री मेघवाळ रामी घास बेच'र गुजारो करै। उण रै घराळो बीमार, मांची में पड्यो है। रामी रै छः टाबर है, सातवों पेट में। बा घास रो भारियो ले'र पांच कोस दूर स्हैर में बेचण जावै। बां पईसां सूं बाजरी ल्यावै अर परिवार पाळै। अेक दिन गोदी आळी छोरी अर खुद रामी तिरसा मरता मरै पण मेघवाळ होणै रै कारण पाणी खुद लेय'र नीं पी सकै। उण बखत बठै मघी नांव री अेक और लुगाई एक लुगाई साथै। बा इण मां–बेटी नै पाणी प्यावै। बातां–बातां में मघी, रामी नै बतावै कै आजकाल सरकार हरिजनां तांईं घणी योजनावां चला राखी है। आप रा टाबर बां में भणाओ। रामी बतायो कै उण रो आठ बरसां रो छोरो सरपंच री बकरियाँ चरावै। रामी रो घास अेक दिन बजार में बिक्यो कोनी। बा पिंजरपोळ में बेच'र, बजार सूं दाणा लेण जावै तो हड़ताल रै कारण बजार बंद हुवै। उण नै देर होगी। रास्तै में आँधी अर मेह आग्या। बा कियां ई भाज'र पाछी कुंड तांई पूगी तो बठै ई पड़गी। कुंड पर बणेड़ी झूंपड़ी

में रैवणियो मोडो देखण आयो तो रामी बेहोस पड़ी। उण रै टाबर हुयग्यो। गोदियाँ री छोरी भी दूर पड़ी रोवै ही। इण भांत हार्‌योड़ी जिनगाणी पेट भराई तांईं भाज–भाज मरतै लोगां री कहाणी है जैड़ी पाठक री संवेदना नै झकझोरै।

कागद रो पेटो– भ्रस्ट वैवस्था नै भींटती 'कागद रो पेटो' अेक सजोरी कहाणी है। राजस्थान में जद काळ पड़ै तो सरकार राहत रा कैम्प खोलै। इण कैम्पां में झूठा मस्ट्रोल बणा'र नीचै सूं ऊपर तांईं अधिकारी खूब लूट मचावै। मजूरां नै बखत पर 'पेमेंट' नीं देय'र लटकायां राखै। भीमो अर गणपत दो मजूर है जिकां नै पेमेंट नीं मिलणै रै कारण सिंझ्या बखत रोटियाँ री चिन्ता है। कठैई खोड़ में काम चालै। अठै ठेकेदार बिना पइसां सामान कोनी देवै। काम री देख–रेख दो मेट करै बै ओवरसियर नै रोटियाँ भी पका'र देवै। अेकर जोर सूं आँधी चालणै रै कारण रोटियाँ में किरकिर आ ज्यावै जद ओवरसियर मेट नै भलो–बुरो कैवै। मेट सगळां रै सामी उणां री पोल खोलण लाग ज्यावै। मेट बताबै कै बो बै सगळी बातां जाणै जिकां सूं बो 'कागद रो पेटो' पूरो करै। ओवरसियर अै सगळी बातां दूजै दिन अे.ई.अेन. नै बतावै। अे.ई.अेन. उलटो मेटां पर इल्जाम लगा'र जीप में लारै बिठा'र साथै ले जावै। इण भांत लेखक इण कहाणी में राहत रै कामां में होवणाळै भ्रष्टाचार री पोल खोलै।

भिंटेरो– भिंटेरो अेक छोटी पण असरदार कहाणी है। हरखै चौधरी रै रैवण तांई अेक ई साळ है। उण में ई घर–गिरस्ती अर खेती–पाती रो सगळो सामान पड़्यो रैवै। गवाड़ी रै चौभींतै रै बजाय च्यारूं मेर बाड़ है जठै बो घास भेळो कर राख्यो है। इण घास पर अवारा डांगर आंवता रैवै। चौधरण हटा–हटा'र थकगी। बा चौधरी नै गुवाड़ी रै नूंवों भिंटेरो लगावणै री ताकीद करै। चौधरी री हालत जाबक खस्ता है फेर भी बो अेक मिनख नै साथै लेय'र भिंटेरा ल्यावै अर दूजै दिन लगावणै रो विच्यार करै। दूजै दिन घणो पाळो पड़ै। टाबर आग तपता हुवै। कोई चिनगी उड़'र भिंटेरा में पड़ ज्यावै। भिंटेरा तो बळ जावै पण घास नै लोगां बचा लियो। करसै री जिन्दगी री अै छोटी–छोटी बातां है जैड़ी ऊपर सूं देखणै में जाबक मामूली है पण आं बातां रो उणां री जिन्दगी में घणो महत्त्व है। ग्रामीण परिवेस री आ कहाणी घणी मार्मिक है।

सोनां रो सुपनों– करसै री जिन्दगी में कितरी अबखायां हुवै अर उण नै किण भांत संघर्स करणो पड़ै आ कहाणी बतावै। हुकमै रो बेटो हरखो आज घणो बीमार है। उण नै छोरै खेत जावणै तांई बरज्यो भी, पण मेह बरस्यां पछै घरां बैठ्यां करसै नै सरै कोनी। बो तावळो पाछो आणै रो कैय'र खेत जावै। बीं री जोड़ायत सोनां उण रो भातो लेय'र जावै पण छोरै री बीमारी देखतां खेत में उण रो जी कोनी लागै। करसै री जोड़ायत नै भी खेत में करसै जितरी मेहनत करणी पड़ै। सोनां झाड़–बोझा खोद्या, हुकमै हळ चलायो। बा दिन ढळतै जद घरां पूगी तो लुगायां नै आप रै घर कानी जांता देख घबरागी। आँगणै में पूगी तो देख्यो हरखो आखरी सांसां लेवै हो उण आपरै बाप नै याद कर्‌यो तो सोनां आप रै जेठूतै नै टोडियो देर खेत में तेवड़्यो। जेठूतै खेत में जाय'र देख्यो कै हुकमै नै बांडी खागी। जहर रै कारण उण रो सरीर लीलो पड़्ग्यो। बो मर चुक्यो। इण भांत आ कहाणी घणी मर्म स्पर्सी है। करसो सुपनां कांई देखै अर हो कांई ज्यावै। उण रै पग–पग पर संकट अबखायां अर मौत हुवै।

गटकावड़ो– पूत रा पग पिछाणणै वाळा पालणै में ई पिछाण लेवै। नेमलो बिनां बाप रो बेटो। दो मईनां रो हो जद बाप मरग्यो। मां रै संरक्षण में रैय'र बिगड़ग्यो। गाँव में हर कीं रै साथ लड़ाई कर लेव। कीं नै ई मार कूट देवै। माँ जमना घणी परेसान। गाँवाळा ओळमा घणां ई देवै। जमना घणो ई समझायो। नेमलो नीं समझ्यो। अेक दिन मिन्दर रै पुजारी रै मंगरां में मुक्को

ठोक'र भाज्यो तो उण पंचायत में सिकायत कर दी। सरैपंच बीं नै सजा देणै तांई आदमी घाल'र बुलायो तो बेरो लाग्यो नेमलो घरां ई कोनी। इण बातां नै कैई बरस बीतग्या। सरैपंच गबन रै केस में फसग्यो। कांई करै? किणी उण नै बतायो कै सहर में अेक अफसर है उण कनै जाओ। उण हाँ कर दी तो काम बण जावैलो। सिरैपंच बतायेड़ै पतै पर गयो तो दरवाजै आगै खड्यौ चपड़ासी उण नै आस्वासन दियो कै आप रो काम मुफ्त में हो ज्यावैलो। सिरैपंच भीतरगयो तो सामी वाळो मिनख पिछाणेड़ो सो लाग्यो। सामी वाळै मिनख बतायो कै म्हूँ नेमलो ई हूँ। जैड़ो बाळपणैं में गटका करतो आज नेतावां, अफसरां री दलाली कर मौज मारै। अब मोटो गटकावड़ो बणग्यो। इणमें प्रजातंत्र पर गैरो व्यंग्य है।

चोटी रो रहस्य– गाँवां में छोटी सी बात लेय'र राजनीति करणै अर सरकारी भ्रष्टाचार री नीति पर ईं कहाणी रै माध्यम सूं व्यंग्य करीज्यो है। स्कूल में बड़ो अधिकारी आवणाळो है इण कारण मास्टर जी सगळै टाबरां नै न्हाय'र स्कूल आवणै रो कैवै पण नेमलो बिनां न्हायां अर नाखून काट्यां ई आ ज्यावै। गुरुजी उणनै पूछणै तांईं बीं री चोटी पकड़ै तो नेमलो जोर लगा'र छुटाणै री कोसीस करै। चोटी मास्टर जी रै हाथ में आ ज्यावै। छोरां रै कैयां मुजब मास्टर गूंद लगा'र चोटी चेप तो देवै पण बीं री मां उण नै नुहावै जद चोटी हाथ में आ ज्यावै। माँ बाळ भेळा कर पंच कनै लेगी फेर बै सिरैपंच कनै गया। बठै कालेज में भणणवाळो अेक छोरो जस्सु आग्यो। उण नेतागिरी दिखाणी सरु कर दी। दूजै दिन बो जलूस लेय'र सहर में बी.डी.ओ. दफ्तर सामी प्रदसरण करण गयो। बठै बी.डी.ओ. सा'ब चोटी लेय'र मास्टर जी री व्यक्तिगत फाइल में चिपका दी। मास्टर जी अब कीं बाबू नै दे लेय'र बठै सूं चोटी कढ़वाणै रै जुगाड़ में है।

हिरणी– आत्मकथा सैली में लिखयौड़ी इण कहाणी में अेक अैड़ैमिनख री व्यथा है जिण रो तबादलो दिल्ली में हो ज्यावै। नायक री घराळी हिरणी (रतनी) गाँव री रैवणाळी है। दिल्ली सिरखै बड़ै स्हैर अेक दड़बै जिस्यै मकान में नायक आप री पत्नी साथै रैवै। हिरणी अैड़ै सूगलै अर दमघोटू वातावरण में रैय'र जाबक कमजोर हुय ज्यावै। नायक उण नै गाँव भेजणो चावै पण बा कोनी मानै। आखीर बो मकान बदळणै री तेबड़ै। उण नै मकान मिल भी ज्यावै। बो दो तांगा लेय'र जद घरां पाछो बा'वड़ै तो आगै हिरणी मरी लाधै। उण नै दौरो पड्या करतो। इण भांत अेक सुछन्द वातावरण में रैवण वाळी हिरणी सिरखी भोळी लुगाई स्हैर रै वातावरण में कोनी रै सकै।

तीजी लुगाई– जात रो बामण हो बदरी। बिहार रै अेक कस्बै में सेठ रै नौकरी करतो। बो अेक दिन भाज'र पाछो आपरै घरां आय जावै । राधा उणसूं 'प्रणय निवेदन' कर्यो पण अेक सांचै मिनख ज्यूं उण राधा रो निवेदन ठुकरा'र घर री राह पकड़ ली। उण नै आयां नै कोई दसेक मईना हुया तो बीं नै सुपनों आयो जियां राधा मरगी। बा उण नै कैय'र गई कै बा उण सूं जरूर सादी रचावैला। बदरी सेठ नै खत गेर्यो। जवाब आयो कै राधा मरगी। थोड़ा दिन बीत्या बदरी री पैली घरवाळी मरगी तो उण दूसरो ब्याव कर लियो। जद बदरी पैंताळीस बरसां रो हुयो तो दूजी लुगाई भी मरगी। रिस्तेदारां रै दबाव में आय'र उण नै तीजो ब्याव करणो पड्यो। उण नै हैरानी हुई कै तीजी लुगाई री सकल हुबहू राधा सूं मिलै ही। इण भांत आ कहाणी पुनर्जन्म रै सिद्धान्त नै तो बतावै ई है साथै ही आ बात भी कै प्रेम कोई जात–पांत कोनी देखै अर साथै आ बात बी है कै सरीर री आप री जरूरत हुया करै।

पा'सो– इलाकै में काळ पड़ेड़ो है पण पोह रै मईनै में बादळां रा मंडाण मंडग्या। बीजळी चिमकै। पाळै रो रट्ठ पड़ै। काळ राहत तांईं सरकारी काम चलाया गया है। सिरैपंच ईमानदारी सूं काम

कर लोगां नै राहत पुगाणै री कोसीस करै। पाळै री रुत देखतां अेम.अेल.अे. गाँव–गाँव में रजाइयाँ पुगावै। अैड़ी बिरखा री रात में रजाइयाँ रो ट्रक आयो तो लोग अेक–अेक जणै पांती रजाइयाँ लेग्या ठाकर दान जी भी बारै आया। बां नै भी रजाई री सखत जरूरत ही लारली रातां–आग सूं तप–तप'र बिताई है पण अणखरा घणी दान री रजाई कोनी लेवै। घरां आवै तो उणां री जोड़ायत रजाइयाँ ल्यावणै रो कैवै तो बहू बरजै। बहू कैवै आपां रजाई मेहनत सूं बणास्यूं। आज तक सरम–सरम में काम नीं कर पसु, गहणा, जमीन आद बेच'र काम चलायो पण आ झूठी स्यान कितरां'क दिन रैवैली। सगळै घरांळा रै आ बात ठीक ढुक ज्यावै। दूजै दिन ठाकर रै परिवार रा सगळा लोग माटी खोदणै तांईं राहत रै कामां में जावण लागग्या। इण भांत 'पा'सो' अेक आदर्सवादी कहाणी है इणमें सामन्तवाद री झूठी स्यान नै त्याग'र मिनख नै मिनखपणै रै धरातल पर ल्यावणै री कोसीस है।

माईत– 'माईत' अेक जथार्थवादी कहाणी है। बाबो टेसण अर बाग रै दिखणादै पासै थोड़ी सी खाली जगां में रैवै। उण री उम्र अस्सी बरसां रै लगैटगै। बो कदे किणी सूं कीं कोनी मांगै। लोग आपीआप उण नै खाणै तांईं कीं न कीं दे देवै। उण री अेक आदत है कै लोगां री अधबळेड़ी बीड़ियाँ उठा'र पीवै। आप कनै अेक हांडी राखै जिण में बळेड़ी बीड़ियाँ रो टोटा भेळा कर लेवै। अेक दिन दो मिनख अेक पनवाड़ी सूं बाबै बाबत पूछताछ करण लाग्या। इतरै में बाबो बठै ई आग्यो। आं दोन्यूं मिनखां में अेक उण रो बेटो हो। उण बाबै रा पग पकड़ लिया अर घरां चालणै तांईं प्रार्थना करी। पैली लोगां कदे बाबै नै बोलतां कोनी सुण्यो। आज जद बाबो कुनण नांव रै मिनख सूं जैड़ो बेटो हो पूछण लाग्यो तो लोगां नै बेरो पड़्यो कै बाबै रै छैः बेटा है। बै सोनी है अर खूब मालदार है पण बाबै नै अेक–अेक बखत बांट'र रोटी देंवता। कदे कोई बहू बहानो बणा'र बारै चली ज्यांती तो बाबै नै भूखो इज रैणो पड़तो। कुनण वायदो करै कै आगै सूं अैड़ी बात नीं हुवैली पण बाबो भीड़ नै चीर'र न जाणै कठीनै जांवतो रैवै। माइतां खातर संवेदनहीनता अर गैर जिम्मेदारी नै प्रकट करण वाळी 'माइत' कहाणी मिनख री संवदेना नै झकझोरणै में सक्षम है।

धापी भूवा– धापी भूवा अेक सेवा परायण अर आदर्स लुगाई है। बाळ विधवा है भाई साथै रैंवती पण भाभी नै कोनी सुहाई तो न्यारी होगी। आप री पकावै, खावै। इलाकै में भयंकर काळ पड़ग्यो तो भूवा गायां नै बचाणै तांईं खूब भागदौड़ करी। फेर गाँव में बीमारी फैलगी। भूवा अेक–अेक रै घरां जाय'र बां री मदद करती। भूवा रो कैवणो हो कै नर सेवा ई नारायण सेवा है। अेक दिन गाँव री अेक लुगाई आदमी काम करता–करता तड़फ–तड़फ मरग्या तो बा उणां रै टाबरां नै आप रै साथै ले आई। इण भांत धापी भूवा अणगिणत काम करती। उण रो कैवणो हो कै अै दिन सदा कोनी रैवणा। भूवा रोंवतै–कळपतै लोगां नै सहारो देणै तांईं त्यार रैंवती। अेक दिन भूवा इणी'ज भांत कठै ई जावै ई चाणचक्क मूं डै सूं खून आयो अर मरगी।

इण कहाणी में काळ रा बड़ा डरावणा अर जथार्थवादी चितराम है। लेखक जियां काळ नै सामी देख'र भोग्यो हुवै। कहाणी मार्मिक है।

रूपाली लूपां– 'रूपाळी लूंपा' लेखक री अेक प्रयोगवादी कहाणी कैयी जा सकै। लेखक संवाद सैली में अेक रूप जीवा रो रोचक वर्णन कर्‌यो है। 'अरुण' रा एडिटर आप रै पत्र में अेक सांची कहाणी देणी चावै पण बां जैड़ी कहाणी चुणी है बा पूरी कोनी। पूरी करणै री चुनौती 'बाबू जी' लेवै अर एडिटर रै बताअेड़ै अैनाण–सैनाण रै हिसाब सूं उण 'हिरोइन' नै ढूंढ़ लेवै। बा कठै ई सरकारी दफ्तर में काम करै पण आप रै रूप जाळ में बड़ै–बड़ै मिनिस्टरां नै फंसा राख्या है।

बा किणी रै साथै कैई दिन रैय'र उण नै कैवै कै बीं रै गर्भ ठैरग्यो। 'गर्भ' रै नांव सूं सामी आहौ डर ज्यावै अर चोखी रकम उण नै सूंप'र लारो छुटावै। इण भांत उण कैई लोगां नै ठग लिया। 'बाबू जी' एडिटर नै बतावै कै अब बा किणी नै कोनी ठग सकै क्यूं कै म्हूँ उण री सगळी हरकतां उण रै पैलै प्रेमी नै दिखा दी। उण हिरोइन रै मूंडै पर तेजाब फेंक उणनै बदरूप कर दी। जठै तांई गर्भ रो सवाल है उण रै लूप लगवाएड़ो है। इण भांत अेक रूपजीवा रै चरित्र रो चित्रण लेखक कुसळता सूं कर्यो है। कहाणी अति जथार्थवादी लागै।

11.4.3 ओळखाण

'ओळखाण' बैजनाथ पंवार री 1999 में छप्योड़ी पोथी है। इण में कुल 13 कहाणियाँ संकलित है। आ लेखक रै बिगसाव रो अगलो पड़ाव है क्यूं कै अै कहाणियाँ आप रै कथ्य अर सिल्प री निजर सूं पैलड़ी कहाणियाँ सूं अळगी अर सांतरी लागै। इणा कहाणियाँ रो संक्षिप्त परिचै इण भांत है–

असूलां खातर– कॉलेज रै छोरां री राजनीति नै लेय'र लिख्योड़ी आ जथार्थवादी कहाणी है। सांवरो उर्फ सुदरसण बिनां आप रो बेटो है। उणरी माँ खुद रो पेट काट, मेहनत कर उण नै बड़ी दौरी होय'र कालेज में भणावै। सुदरसन हालांकि खुद चावै कोनी पण दबाव रै कारण उण नै अध्यक्ष पद तांईं चुणाव लड़णो पड़ै। राजनेता अर स्वार्थी तत्त्व आप–आप री बिसात बिछाल्यै। अखीर में सुदरसण चुनाव तो जीत ज्यावै पण चुणावी जुलूस में कोई उण री गोळी मार'र हत्या कर देवै। लेखक कॉलेज वातावरण रो सजोरो वर्णन कर्यो है।

अन्ध विस्वास– चतरु सरकारी नौकरी छोड़'र गाँव में आग्यो। उण मेहनत कर खेती बाड़ी करी अर साथै ई ग्राम विकास भी खूब करवायो। पिथो मास्टर, ग्राम सेवक, सिरैपंच अर पटवारी मिल'र गाँव विकास में कसर नीं छोडी पण अेक दिन बीमार होय'र चतरु चाणचक्क चलतो रैयो। अर्थी ले ज्यावणै री त्यारी करण लाग्या तो भावुकता रै वसीभूत उण री जोड़ायत कै दियो' कै बा सती हुवैली। फेर तो कांई बात ही। गाँव रा दो दळ बणग्या। अेक सती करवाणै रै पख में हो दूजो रोकणै रै। पंडत जी वेद सास्तरां रो नांव लेय'र कमला नै सती कराणो चावै हा। ल्हासा मुसाणा में पूगगी साथै ई कमला भी पण बठै चाणचक्क पुलस आगी। लोग–बाग भाजग्या। पंडत रो तो बेरो ई कोनी कठै गयो। इण भांत आ कहाणी बां लोगां रो कच्चो चिट्ठो खोलै जिका धर्म रै नांव पर अंध विस्वास फैलावै।

राजनीति– आत्मकथा सैली में लिखेड़ी 'राजनीति' कहाणी आज री राजनीति पर करारो व्यंग्य है। कथानायक दो बर पैली मंत्री रै चुक्यो है पण अबकी बार हाईकमान बीं नै टिगस नीं देय'र दूजै नै दे दी तो कथा नायक विरोधी पार्टी री टिगस लेय'र चुणाव जीतग्यो। सरकार बणाणवाळी पार्टी रा विधायक कम रैग्या तो रात रै अंधारै में आप रो आदमी भेज'र हाई कमान कथा नायक नै घरां सूं बुलायो अर कैबिनेट मंत्री रो पद दियो। आज री अवसरवादी अर दळ बदळू राजनीति पर आ जथार्थवादी कहाणी है।

बदळाव– गाँवां में आंवतै बदळाव री सूचना देबावाळी है 'बदळाव' कहाणी। पैल्यां लोग गाँव साथै राम (गाम–राम) रो नांव लिया करता। कोई बुजुर्ग या मुखिया कै देंवतो तो बात मान लेंवता, पंचायत री बात कोनी मोड़ता। टीकू जद लुगायां नै कूवै सूं खाली घड़ा लेय'र आंवती देखी तो पूछणैं सूं बेरो लाग्यो कै लाधू सुथार आप री बारी पर कूवै सूं पाणी कोनी काढ़ै। अगली बारी वाळै नै बुलायो तो बो भी नटग्यो। पंचायत री बात किणी कोनीं मानी। सगळा आप–आप

रा धड़ा बणाय'र अेक दूजै रै खिलाफ नारा लगावण लागग्या। पैली गाँव में अैड़ी बातां कोनी होंवती। अै बातां बदळाव री सूचना देवै।

ओळखाण– ओळखाण मूलतः अेक प्रेम कहाणी है जिण नै लेखक बड़ै आछै ढंग सूं प्रस्तुत करी है। मरुथल में चालतै–चालतै अेक साधु नै दिन छिप ज्यावै पण दिनुगै सूं अबै तक पाणी री घूंट नीं मिली। उण नै रात रै अंधारै में च्यानणो दीस्यो तो कीं आस बंधी। बठै पूग्यो तो उजाड़ में अेक प्याऊ पर अेक डोकरी बैठी ही। उण पाणी प्यायो अर रोटी भी खुवाई। साधु बठै ई सोग्यो। साधु रै खर्ड़ाटा सूं डोकरी नै जद नींद कोनी आई तो आपरी लारली जिन्दगी याद आगी। बा आपरी जवानी में जेठै नांव रै आप रै गाँव रै ई अेक छोरै साथै भाज'र कलकत्ता आगी। बठै जेठो तो पुलस नै देखतां ई कठै ई भाजग्यो अर बा कठै धक्का खांवती रैयी। अेक सेठाणी दया कर आ प्याऊ बणाई अर उण नै अठै बिठा दी। इण बातां नै साठ बरस होग्या। दिन उग्यो तो उण साधु कानी ध्यान सूं देख्यो। बो जेठो ई हो। दोन्यूं मिल'र रोया। इण कहाणी में ओ सनेसो लुकेड़ो है कै जवानी रै जोस में छोरा–छोरी घर सूं भाज तो ज्यावै पण बां री आखी जिन्दगी बर्बाद हुय जावै।

तेल रो सेंपल– राजनीति अर नौकरसाही में भ्रस्टाचार आज आम बात हुयगी। व्यापारी लोग खाद्य पदारथां में मिलावट कर जन स्वास्थ्य सूं खिलवाड़ करै पण उणां रै सिर पर राजनेतावां रो हाथ होणै रै कारण कीं कोनी बीगड़ै। गाँव में पतो नीं कैड़ी बीमारी फैली जिणसूं टाबरां रा हाथ–पग अर मूंडा सूज जावै। सगळा गाँवाळा भेळा होय'र बात करी तो बेरो पड्यो कै बाणियै सूं तेल लेय'र बड़ा बणाया। बै बड़ा जिकां भी खाया बीमार होग्या। धन जी मास्टर री अगवाई में पुलिस अर स्वास्थ्य विभाग में सिकायत करीजी पण नतीजों कीं कोनी निकळयो। अेक दिन बाणियै री दूकान सूं तेल रो सेंपल लेग्या पण कोई कार्यवाही कोनी हुई। हाँ! धन जी रो ट्रांसफर बाड़मेर करवा दियो। धन जी रै घर में बड़ी विपता आ पड़ी पण फेर भी धन जी चुप नीं बैठ्या। अेम.अेल.अे. रै विरोधी धड़ै सूं मिल'र कार्यवाही करीजी तो बाणियै नै हिरासत में ले लियो अर धनजी रो ट्रांसफर कैंसिल होग्यो। अफसरसाही, पुलिस अर राजनीति में भ्रस्टाचार रो पड़दो फास करण वाळी सांतरी कहाणी है।

खुलो चरै–बंध्यो मरै– राजस्थान में पड़णाळा काळां नै लेय'र आ सांतरी रचना है। लोगां रै मन में अेक विचार ले ज्यावैला तो लोग कांई कैवैला। इण कारण अेक जग्यां बंध्या–बंध्या बै भूख मरता रैवै। सारो देस ई जद आपां रो है तो अेक जग्यां छोड़'र दूसरी जग्यां जावणै में कांई तानो है। काळ पड़ै जद गाँवां में किण भांत पाणी, चारै री मारामारी हुवै। पसुधन तिरसो–भूखो किण भांत मरै अर लोगां रो इण सूं कितरो हेत हुवै आ कहाणी बतावै। अळगै–अळगै पात्रां रै माध्यम सूं काळ री विभीसिका रो जथार्थवादी अर आँख्यां देख्यो वर्णन लागै। संवेदना रै स्तर पर कहाणी घणी प्रभावित करै। साथै ई इण कहाणी में ओ सनेसो भी है कै काळ पड़णै पर जका लोग घर छोड'र निकळ जावै बै समझदार है अर बै बच भी ज्यावै।

भूख– बाबू बनारसी दास रै सात छोरियाँ है। मोबी राजू बाई बरसां री बी.अे. पास फूटरी छोरी है पण कोई रिस्तो कोनी जच्यो। कारण ओई'ज है कै सगळां नै खूब दायजो चायजै। अेक दिन राजू री मां दफ्तर जाणै सूं पैली रोटी खांवती आप रै पति नै राजू रै ब्याव तांई कैवै। बो रिसाणो होय'र रोटी छोडद्यै तो राजू दोनुवां नै समझावै। उणदिन बाबू बनारसी दास घरां कोनी आवै तो माँ बेटी घणी चिन्ता करै। बनारसी दास जोधपुर वाळां रै दायजै री मांग मुजब रिस्तो तै कर देवै। फेरा हो ज्यावै जद छोरै रो बाप दायजै री मांग करै तो राजू आपरै सुसेरे नै फटकारै। राजू

रो पति भी बनारसी दास नै भविस में बाकी छोरियाँ रै ब्याव में सैयोग देणै रो वायदो करै। इण भांत आ कहाणी दायजै रै भूखै लाळची माँ–बाप री मनगत नै अभिव्यक्त करणवाळी आदर्सवादी कहाणी है।

तिखेणी– सेठ मुरलीधर जद फूड इंस्पैक्टर साथै गुत्थमगुत्था हो ज्यावै तो आप–आप रो बदळो चुकावणै तांईं दूसरा दुकानदार भी इण लड़ाई में भेळा हो ज्यावै। इणां री लड़ाई होव तां देख भीड़ बधती जावै। पुलिस आ ज्यावै। लोग मांग करै कै मिलावटखोर सेठ अर भ्रस्ट इंस्पैक्टर नै गिरफ्तार करो। तनावपूर्ण स्थिति में पुलिस लाठी चार्ज करै। सहर में हड़ताल री घोसणा हो ज्यावै। इंस्पैक्टर रै समर्थन में कर्मचारी संघ हड़ताल कर देवै। दस दिनां पछै फैसलो हुवै कै सेठ रा सगळा कोटा रद्द अर इंस्पैक्टर रो तबादलो दूजी जग्यां। किणी नै कीं सजा कोनी मिलै। थोड़ै दिनां पछै ओ इंस्पैक्टर ओजूं अठै आ ज्यावैलो अर सेठ भी खोटा धंधा करण लाग ज्यावैलो। इण कहाणी में भ्रस्ट अफसरां अर मिलावटी बोपारियां रै विरोध में जनता रो आक्रोस देखण लायक है पण जनता कर कांई सकै। भ्रस्ट अफसर, अवसर वादी नेता अर खोटा धंधा करणियां बोपारियां री आ तिरवेणी इणी भांत रैवैली। कहाणी जथार्थवादी है अर सोचणै पर मजबूर करै कै इयां कितराक दिन चालसी?

अपणायत– 'अपणायत' अेक आदर्सवादी कहाणी है जिण में जात–पांत सूं ऊपर उठ'र मिनखपणै री बात करी गई है। तीजां जात री मेघवाळ है अर आप रै पी'रै में ई रैवै। उण रो घरवाळो तो मोटर हादसै में मरग्यो। बो भी पंच हो। चोखै ब्यौहार रै कारण गाँव रो सिरैपंच अर दूजा लोग बीमार अर बेहोस तीजां नै बीकानेर अेक प्राइवेट अस्पताल में भरती करवा देवै। अस्पताल में तीजां कनै उण री बड़ी बेटी रैवै। बड़ी बेटी सोनू अस्पताल में दूजै बीमारां अर आपरै ब्यौहार सूं दिल जीत लेवै। डागधर अर दूजा लोग बिणु नै चा'वण लाग जावै। उणां कनै पइसा खतम हो ज्यावै तो पाड़ौस रै मांचै पर पड़ी बीमार अर रिटायर्ड मास्टरणी बीं री सहायता करै। बा आपरै छोटियै बेटै रो बामण होंवतां थकां भी सोनू सूं ब्याव करवा देवै। डागधर कन्यादान करै। ब्याव होंवतां ई तीजां री मौत हो ज्यावै। इण कहाणी में गाँव सूं सहर पूगणै री अबखायां, यातायात रै साधनां रो अभाव, मूं'गो इलाज आद रो वर्णन है। कहाणी चोखी बण पड़ी है।

बांझड़ी– माणको उगाही करणै तांईं दूजै गाँवां कानी गयोड़ो है। उण री घराळी रतनी घर में अेकली ई है। आज उण नै आखी रात नींद कोनी आई क्यूं कै सामलै घरआळी आज बीं नै देखतां ईं मूंडो मचकोड़'र घर में बड़गी। लोग दिनुगै–दिनुगै बांझड़ी रतनी रा दरसण करणां अपसगुन समझै। झांझर कैसी'क माणक घरां आयो तो उण नै देखतां ई रतनी रोवण लागगी। माणक उण नै समझाई कै सगळा उपाय कर्यां पछै भी ओलाद नीं हुई तो कांईं जोर ई। सब्र करणी चायजै पण रतनी कैयो जद तांईं लुगाई रै टाबर नीं हुवै, आंचळ सूं दूध नीं फूटै तो बा क्यां री लुगाई? रतनी, माणक नै बात मानणै री सोगन दिरा'र कैवै अेक टाबर री बलि दियां उणां रै ओलाद हुय सकै। दस हजार रिपिया लैय'र ओ काम अेक तांत्रिक कर देवैलो। उण री बातां में आय'र माणक नै साथै जाणो पड़ै। रात नै तांत्रिक अर चेलो अेक सोवणो सो छोरो लेय'र आवै अर जियां ई उण नै मारणै तांईं छुरो उठावै, रतनी छोरै पर पड़'र रोळो मचाद्यै। उण री ममता जाग जावै। बा कैवै म्हूँ किणी दूजी माँ री गोदी खाली कर आप री गोदी कोनी भरूं। डरतो तांत्रिक भाज ज्यावै। इण भांत इण कहाणी में औरत री सांची ममता दिखाई गई है। कहाणी जथार्थ अर आदर्स रो मेळ है।

सगो सगै री जड़– गाँव हरदेसर रै चौधरी ग्यानजी रो जी आप रै सगै कुनणजी सूं मिलणै तांईं करै। अेक दिन बै आप रै बड़ै बेटै नै साथै लेय'र कुनण जी कनै जा ढुकै। बातां–बातां में ग्यान जी नै बेरो लागै कै बीस बरसां पैली आळो जमीन रो मुकदमो आज तांईं चालै। दोन्यूं पार्टियाँ रा इण पर हजारूं रिपिया लागग्या। ग्यान जी कीं सोच'र विरोधी कूंभ जी कनै अेकलाई जांवता रैया। कूंभजी बातां–बातां में ग्यान जी नै समझौतै री बात कैयी। गाँव में पंचायत बिठा'र फैसलो हुग्यो। बरसां री बात अेक दिन में सुळटगी। इण कहाणी रै माध्यम सूं लेखक अदालतां में लागणवाळी देर अर भ्रस्टाचार रो पड़दोफास तो कर्‌यो ई है साथै ओ भी बतायो है कै अेक समझदार रिस्तेदार कितरो काम रो हुवै। कहाणी आदर्सवाद साथै जथार्थ रो चितराम भी करै।

होम करतां हाथ– सुखजी ऊँट गाडो लेय'र सहर में लकड़ियाँ बेचण जावै। रास्तै में लुगाई री पुकार सुण'र मदद तांईं जावैं। सहर रा दो गुंडा अेक छोरी साथै बलात्कार करै हा। सुखजी उणां साथै भिड़ग्या। अेक रै डांग लाग्यां बेचेत हुग्यो। दूजै नै खेजड़ी रै बांध'र पुलिस नै खबर करी। डांग खाणियो बदमास मरग्यो। बलात्कार री सिकार तीजकी नै अस्पताळ में भरती करवा'र पुलिस सुखजी नै पकड़ अन्दर कर दियौ। उणां री जमानत नीं हुयी पण गुंडै मूंगलै री जमानत होगी। तीजकी नै घर अर सासरै वाळां, दोनूआं छोड़ दी। सुखजी रै समझावणै सूं तीजकी नै उणां रो बेटो अर घरवाळी आप रै घर में सरण दे देवै। सुखजी खुस है के बां चोखो काम कर्‌यो है। इण भांत आ कहाणी भी जथार्थ अर आदर्स रै धरातल पर खड़ी सनेसो देवै कै बापड़ी अबला रो इण में कांई कसूर है? फेर भी समाज समझै कोनी। लोग सुखजी नै कैवै इणां तो होम करतां आप रा हाथ बाळ लिया।

11.5 बैजनाथ पंवार री कहाणी री प्रवृत्तियाँ

बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ में मुख्य रूप सूं गाँवां रो संसार है। बै गाँवाळै भीतरी अर बाहरी दोन्यूं बदळाव आप री मर्मभेदी निजर सूं परखै। छोटी सूं छोटी घटना अर बदळाव बां री पैनी दीठ सूं कोनी बचै। अध्ययन कर्‌यां उणां री कहाणियां में नीचै लिखेड़ी प्रवृत्तियाँ दरसावै–

11.5.1 राजस्थानी संस्कृति रा चितरांम

आंमै राजस्थान रा अणगिण रीत–रिवाज, रहन–सहन आद रो बड़ो सोवणो वर्णन मिलै। 'छाती कूटो' कहाणी में बतायो गयो है कै गाँव में सगां नै पैली किण भांत जिमांवता। ब्याव सूं पैली बनड़ै–बनड़ी रै बनोरां रो रिवाज, राती–जोगा जान, पड़जान ढुकाव, बरात जिमावणै रा सोवणा चितरांम है। इणीज भांत छोरो हुयां, पीळो ओढ़णो, कूवो पूजणो, भूवा रा संथिया पूरणा आद अैड़ा चितरांम है जैड़ा आज जन जीवन सूं लगोलग गायब होंवता जावै पण कहाणियाँ में भण'र बेरो लागै कै अभाव ग्रस्त जिन्दगी नै अे कितरो सोवणो बणादेवै। इण रै साथै ई टोणा–टोटका, अंध–विस्वास, व्रत, त्यूंहारां रो भी जरूरत मुजब वर्णन कर्‌यो गयो है। इण कहाणियाँ नै भण'र राजस्थानी ग्रामीण जिवनरी झाँकी सामी आ ज्यावै।

11.5.2 राजस्थान में पड़णआळै काळां रो बरणाव

आं कहाणियाँ में काळ रा जथारथ चितरांम उकेरणै में लेखक नै बड़ी सफलता मिली है। अै चितरांम इतरां मार्मिक है कै भणण वाळै री रूह कांप ज्यावै। पाणी अर चारै रै अभाव में पसुधन रो जैड़ो बुरो हाल हुवै उण नै भण'र तो दिल दहल ज्यावै। काळ रै सताएड़ै लोगां रो अेक चितरांम प्रस्तुत है– 'काळ रा सतायोड़ा जाबक थाकेड़ा। कीं रै डील पर साबत पूर नीं– किण रै मन में कीं कोड नीं। चालती–फिरती लासां, आखो दिन–रात पाणी–पाणी करतां बीतै। सोवै

तो पाणी री चिन्ता–जागै तो पाणी री फिकर। मिनखां री सारी सगती समै अर सारो जोस पाणी खातर ठंडो हु ज्यावै। काफी कोसां सूं पाणी ला'र डांगरां नै पालणा अर कड़ूंबै नै पोखणो भोत जीवट रो काम है। पाणी रै सिवाय किण नै दूजी बात सूझै नीं, बीजो काम आवड़ै नीं। ...कुत्ता अर गिरज ज्यूं मूरदै डांगर पर लड़ै, उण तरियां लोग पाणी री अेक–अेक घूंट खातर भचभेड़ी लेवै।' (नैणां खूट्यो नीर) इण भांत काळ रा जथार्थ चितरांम केई कहाणियाँ में है।

11.5.3 भ्रस्टाचार पर चोट

बैंजनाथ पंवार री कहाणियाँ में राजनीतिक अर नौकरसाही में पणपेड़ै भ्रस्टाचार पर गैरी चोट करी गई है। 'राजनीति' कहाणी रो नायक आप री पार्टी छोड'र चुनाव लड़ल्यै अर जीत्यां पछै ओजूं पुराणी पार्टी में जाय'र मंत्री पद प्राप्त कर लेवै। 'तेल रो सेंपल' में भी राजनीतिक भ्रष्टाचार रो बखाण है। 'तिरवेणी' में मिलावटी माल बेचण वाळा बोपारी, उणां सूं मइनो वसूल करण वाळा अधिकारी अर दोन्यूं तबकां रो बचाव करण वाळै राजनैतावां री तिरवेणी रो जथार्थ वर्णन है। 'सगो सगै री जड़' में न्याव में होवण वाळी देरी अर अदालतां में भ्रस्टाचार रो मुद्दो उठायो है। आजादी पछै जैड़ो भ्रस्टाचार सहरा सूं लेय'र ग्राम पंचायतां तक आयो है उण रो लेखक चित्रित कर्‌यो है। जिण भांत आज भ्रस्टाचार आपणै देस में है उण रो चित्रण देस री हेरक भासा रै साहित्य में हुयो है। इण प्रवृत्ति सूं राजस्थानी भासा भी अछूती नीं है। भ्रस्टाचार पर चोट आज रै साहित्य अर साहित्यकार रो पैलो उद्देस्य है।

11.5.4 गाँवां री राजनीति

आजादी पछै गाँवाँ में चुणाव, राजनीति, पार्टी बाजी खरपतवार री भांत पणप्या है। चुणाव चाये विधानसभा रा हुवै या पंचायत रा, गाँव रा लोग पार्टियाँ में बंट ज्यावै। 'तेल रो सेंपल' में तेल में मिलावट करणाळै बौपारी रो बचाव भी पार्टी बाजी में पड़ेड़ा गाँव रो लोग करै। 'बदळाव' में गाँव रै कूवै में पाणी होंतां थकां भी लोग इण कारण तिरसाया मरै, क्यूं कै कोई भी कूवो कोनी बावणो चावै। लोग सिरैपंच रै खिलाफ जुलूस काढ'र प्रदरसण कर'र झुकाणै री कोसीस करै। कोई भी गाँव रै भलै री कोनी सोचै। 'अंध विस्वास' में गाँव रा लोग 'सती' होवणै जैड़ै गळत काम पर भी पार्टियाँ में बंट जावै। 'गटकावड़ी' रो नेमलो गाँव री राजनीति सीख'र सहर में जाय'र बड़ै लोगां री दलाली करै। 'चोटी रो रहस्य' में आप री राजनीति चमकावणै तांईं कालेज में भणणियो छोरो जस्सू जलूस लेय'र बी.डी.ओ. दफ्तर तांईं जावै इण भांत राजस्थानी कहाणियाँ में बीजी भासावां री भांत बै सगळी प्रवृत्तियाँ उभरी है।

11.5.5 अंध विस्वासां रो चित्रण

आज रै वैज्ञानिक जुग में फैलेड़ै अंध विस्वासां अर कुरीतियाँ नै भी बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ चित्रित करै। मध्य युग री मनगत रा लोग आज भी लुगाई नै पगरी जूती मान'र उण नै पति री ल्हास साथै बळणै नै जायज बतावै। बेद अर सास्तरां रो नांव लेय'र भोळै–भाळै लोगां सूं छळ करै। बच्चां री बीमारी रो इलाज नीं करवाय'र (जापो) उण पर टोटका आजमावै। गाँवां में हारी–बीमारी, काळ आद रै बखत आज भी लोग देवी–देवतावां री ओट लेवै। सवामणी बोलै। गाँवा में फैलेड़ै अंध विस्वासां रा चितरांम इण कहाणियाँ में खूब मिलै।

11.5.6 आदर्सवादी अर जथार्थपरक लेखन

प्रेमचन्द आप री सरू री कहाणियाँ में आदर्सवादी है। उणां रो सोच हो कै मिनख सदां आछो ई हुवै। परिस्थितियाँ उण नै भलो या बुरा बणावै पण आगै चाल'र बां री कहाणियाँ यथार्थवाद

रो चित्रण हुयो है। बैजनाथ पंवार भी गाँव री जिन्दगी रा चितेरा है। बै भी आपरी सरू आळी कहाणियाँ में आदर्सवाद रै गेलै चालता दीसै। 'लाडेसर' अर 'भूरी' अैड़ी कहाणियाँ है पण आगै चाल'र बै जथार्थवाद रो मारग अपणांवता दीखै। 'हार्योड़ी जिनगाणी', 'कागद रो पेटो', 'नैणां खूट्यो नीर', 'राजनीति', 'तिरवेणी' आद अनेक अैड़ी कहाणियाँ हैं जैड़ी आज रै खुरदरै जथार्थ रो चित्रण करै। बैजनाथ पंवार मुजब डॉ. किरण नाहटा रो कैवणो है, ''श्री पंवार मूलतः आदर्सवादी विचारां रा लेखक रैया है, पण जथार्थ री करड़ी मार बां रै आदर्सवादी चिन्तन नै बरोबर झकझोरती रैयी है। बै आप री लेखकीय जिनगानी रै सरुआत आळा दिनां में तो खासा भावुक हुवै नै लिखता रैया अर बां री भावुकता ही बांरी बीं बखत री कहाणियाँ री सीमा बणगी है, पण ज्यूं–ज्यूं बांनै जिनगाणी नै घणो नेड़ै सूं आपरै असली रूप में देखण रो मौको मिलतो गयो अर बां रो दुनियां दारी री तजरबो बधतो गयो है, त्यूं–ज्यूं त्वां रै आदर्स रै अणूतै मोह माथै अंकुस लगातो गयो अर भावुकता री मात्रा भी बीं ही अनुपात में घटती गई है।'

(नैणां खूट्यो नीर– भूमिका)

11.5.7 समाज री कुरीतियाँ रो वर्णन

लेखक समाज री कुरीतियाँ, कमजोरियाँ आद नै सिर्फ देखै ई कोनी बो उणां पर चोट भी करै अर केई बार रास्तो दिखाणै री भी कोसीस करै। इण मामलै में बैजनाथ पंवार भी अपवाद कोनी। दूजबर कहाणी में बै बेमेळ ब्याव रा खतरा दिखावै। इणीज भांत 'कातिग म्हातम' में चनणां (विधवा) नै पंडत साथै भगा'र विधवा ब्याव रो समर्थन करै। 'छाती कूटो' इण बात कानी इसारो करै कै ब्याव सूं पैली अगर लड़को लड़की पैली अेक दूजै सूं थोड़ी बात चीत करल्यै तो पछे 'छाती कूटो' कोनी रैवै। 'अंध विस्वास' में सती प्रथा रो विरोध करता दीसै अर 'खुलो चरै– बंध्यौ मरै' में कैवणो चावे कै काळ में घर छोड'र जाणो कोई बुरी बात कोनी। 'अपणायत' में बै जात–पांत छुआछूत नै हटा'र ब्राह्मण लड़कै अर हरिजन लड़की रो ब्याव करावै। इण भांत बैजनाथ पंवार आपरी हरेक कहाणी में समाज री किणी कमजोरी या कुरीति नै रेखांकित करता उण रो सुझाव भी पेस करै।

11.5.8 सुधारवादी दीठ

लेखक समाज रो पहरेदार हुवै। बो समाज री कमियाँ या जथार्थ रा दरसण करवा'र ई आप रो फर्ज पूरो नीं समझै। बो समाज री अबखायां अर जरूरतां नै संवेदना रै स्तर पर मै'सूस कर उणां समाधान बी सुझावै। 'कातिग म्हातम' में बो कैवणो चावै कै सरीर अर मन री आप री भूख हुवै। उण री त्रिप्ती भी जरूरी है वरनां चनणां री भांत घर छोड़ भाजणो पड़ै। तथाकथित बड़ा लोग ऊपर सूं तो आप रै 'अहं' रै कारण खुद नै बड़ा दिखावै पण भीतर सूं बेहद टूटेड़ा हुवै। इण में सड़क पर काम करणै री प्रेरणा देवणाळी 'बहू–सा' रै रूप में लेखक ई बोलै। 'दूज बर' कहाणी तो कैवै ई है कै अैड़ा अणमेल ब्याव अगर हुवैला तो सगळै परिवार री जिन्दगी नरक हो ज्यावैली। 'लिछमांबाई' में भी लेखक कैवणो सचावै कै लुगायां पढ़–लिख'र सो कीं कर सकै। समाज में व्याप्त छुआछूत, ऊँच नीच हुवै या विधवा ब्याव, अणमेळ ब्याव हुवै या दायजै री समस्या सगळी कहाणियाँ में लेखक कठैई सीधो तो कठै ई ब्याज सूं सुधारवादी द्रिस्टीकोण प्रस्तुत करै। इण कहाणियाँ नै भण'र बेहिचक कैयो जा सकै कै लेखक सोद्देस्य लेखन रो पक्षधर है।

11.5.9 बीजी प्रवृत्तियाँ

लेखक री नजर समाज रै हरेक तबकै तांईं जावै। बो जठै बी विकृति देखे आप री कलम चला देवै। 'लाडेसर' (कथासंग्रै) री 'इनामी भाभी' में भाग्यवाद री प्रवृत्ति उभरी है तो 'नैणा खूट्यो नीर' (कथा संग्रै) 'माइत' में गैर जिम्मेदार ओलाद, 'रूपाळी लूपां' में अेक आधुनिका सुन्दरी जैड़ी आप रै रूप रै आकरसण सूं लोगां नै ठगै। 'असूलां खातर' (बदळाव') कहाणी में कॉलेज अर विश्वविद्यालयां में भणाई री ठौड़ पणपती हिंसा अर राजनीति रा चितरांम है। 'बांझड़ी' में नारी री ममता तो 'होम करतां हाथ' में परोपकार री प्रवृत्ति रो चितरांम है। इण भांत अै कहाणियाँ मिनख री जिन्दगी नै समूचै रूप सूं परोटणै री कोसीस है।

11.6 भासा

इण कहाणियाँ में सबसूं खास बात इण री भासा भी है। आप री बात कैवण तांईं लेखक मुहावरा अर लोकोक्तियाँ (कैवतां) रो अैड़ो सोवणो प्रयोग करै कै, देखतां ई बणै। कावतां अर मुहावरा लोगां री जुबान पर चढ़ेड़ा हुवै। बै भासा री असल तागत हुवै। इणा कहाणियाँ मुहावरा अर कावतां रो सांतरो प्रयोग देख'र ओ अन्दाजो सहजै ई लगायो जा सकै कै लेखकीय पैठ लोक जीवन में कितरीं गै'री है। अै राजस्थानी कावतां अर मुहावरा आपरी अलग मठोठ सूं राजस्थानी भासा री तागत बखाणै। कीं मुहावरा अर कावतां नमूनै रूप में प्रस्तुत है–

छाज तो बोलै जिको बोलै, चालणी भी बोलै, कानां तळै मारणो, आभै पटक दियो, धरती झाल्यो कोनी, सहजां चुड़लो फूटग्यो हळका हुग्या हाथ, तिरभंड करणो, धाबळियै वाळी कारी, ढकणी में नाक डबो'र मरणो, कुठोड़ लागी अर सुसरो बैद, टूटी रै बूंटी कोनी लागै, नातै री रांड, गोद रो छोरो कांई निहाल करै, करमठोक नै भागठोक आ मिलै, रोंवतै नै गरळांवतो बतळालेवै, इन्दर री मां भी कांई तिसाई, ऊकळ्यो पाणी पीणो ठाली बैठ्यो बाणियो घर में घाल्यो घोड़ो, तूरळ मचाणो, आप कमाया कामड़ा कीं नैदीजै दोस, लाठी अर भींत बिचाळै आणो, सिंघ पकड्यो सियाळियो नै छोडै तो खाय, बिंधग्या सो मोती, पाणी पी'र जात पूछणो, थाळी फूट्यां ठीकरो, घड़ो फूट्यां गळबो हाथ में रैवै, नगद न्याणा अर बींद परणीजै काणा, औसर चूकी डूमणी गावै आळ पताळ, मांग्या घी किस्यो चूरमो, आँधै री गफी अर बोळै रो बटको राम छुडावै तो छूटै, मां नी मां रो जायो आखो देस परायो, डूबतो सिंवाळा नै हाथ घालै, म्हां सूं घणी गोरी उण रै पीळीयै रो रोग, पुळ का बाया मोती निपजै, जेठी बाजरी अर मोबी पूत कोई सुभागियाँ रै ई हाथ लागै, डाकण ही अर जरख चढ़ बैठी काग, ठाडै रो डोको डांग नै फाड़ै, म्हांरी ई मिनकी अर म्हा नै ई म्यांऊ, ऊँट सूं पैली बोरा कूदणो, धोळां में धूड़ पड़णो, भाई मरयै रो धोखो कोनी भाभी री रड़क निकळणी चायजै, दोन्यूं गमाई रै बूमना जटा नै आदेस, कूतड़ी भूंस–भूंस मरगी, धणी नै दाय ई कोनी आई, इयां ई रांडां रोंवती रैसी इयां ई पावणा जीमता रैसी, सोनो सो बीज'र स्यावड़ रा निहोरा काढ़ै, बाबो आवै तो ताळी बाजै, घाणी रै बळद नै सांडाई सूं कांई काम, पोठो पड़ै तो धूड़ लेय'र उठै,

आं कहाणियाँ रै परिवेस नै ओर गैरो अर जथार्थ परक बणावणै में इणा कावतां अर मुहावरां रो घणो योगदान है। इणा कावतां रो प्रयोग ओ दरसावै कै लेखक लोक जीवन में गैरो पैठ'र बठै सूं आप री संवेदना ग्रहण करै।

अंग्रेजी सबदां रो प्रयोग– विज्ञान अर संचार साधनां रै कारण दुनियां आज अेक 'ग्लोबल विलेज' बण'र रैगी है। अैड़ै में कोई अेक भासा रो प्रयोग संभव कोनी। जियां–जियां लोग अेक–दूजै सूं मिलै उण री भासा, संस्कृति, खान–पान नै भी प्रभावित करै। 'कहाणी री भासा सदीव सहज होणी चायजै' इण बात नै मानतां थकां बैजनाथ आप री कहाणियाँ री भासा में आम बोलचाल रो प्रयोग कर्यौ है। उणां री भासा में बै अंग्रेजी सबद जैड़ा जका राजस्थानी में आम बोल्या जावै अर धड़ल्लै सूं प्रयोग करीज्या है। बै सबद

इण भांत है– अेम.अेल.अे., मिनिस्टर, लेपस, टारजेट, एरियर, बजट, बी.डी.ओ., कलक्टर, प्राइज बॉंड, स्टार्ट, मीटिंग, प्लेटफार्म, नर्सिंग, मिलट्री, ट्रेनिंग, टेम, गार्ड, ओवरसीयर, स्टॉक रजिस्टर, केस, बाईकॉट, फेमिन वरक, टेलिफोन, कॉल, रोमांस, पिक्चर, इंसपैक्टर, टी.ए.डी.ए. आद मोकळा अैड़ा सबद जैड़ा आपां री जबान पर रच बस चुक्या है। आं रै प्रयोग सूं भासा में सहजता बणी रैयी है।

11.7 सैली

आप री बात कैवण में लेखक जैड़ो तरीको अपणावै उण नै सैली कैवै। सैली लेखक री निजी पिछाण हुवै। आप रै कथ्य नै सरल, सुबोध अर साथै ई असरदार बणाणै तांईं बो अळगा–अळगा तरीका अपणाय'र आप रा विचार अर भावनांवां नै संप्रेसित करै। इण कहाणियाँ में लेखक कठैई आत्मकथात्मक कठैई वर्णनात्मक कठैई स्मरण सैली (फ्लैस बैक) अपणाय'र आप रै कथ्य नै धारदार बणायो है। संवाद सैली रै माध्यम सूं कठैई लेखक कहाणी नै आगै बधांवतो लखावै तो कठै ई बो विवरण पेस कर विवरणात्मक सैली नै अपणावै। राजस्थान में पड़ण वाळा काळ अर अठै री संस्कृति रै बखाण करणै रो जद बी लेखक नै मौको मिल्यो है उण पूरा विवरण प्रस्तुत कर्‌या है। कठै–कठै ई लेखक मनोवैज्ञानिक सैली रो प्रयोग कर पात्रां री मनगत नै पकड़णै री कोसीस करै। संवाद सैली तो लेखक री सरावण जोग है क्यूं कै जद बो कावतां अर मुहावरां रो प्रयोग करै तो राजस्थानी भासा रा सांतरा नमूना पेस करै। आप री भासा अर सैली रै कारण बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ पाठक री संवेदना नै सीधी प्रभावित करै।

11.8 राजस्थानी कहाणी नै योगदान

बैजनाथ पंवार राजस्थानी कहाणी रा आधार स्तम्भ है जिण पर राजस्थानी कहाणी रो भवन खड्‌यो है। इणां सूं अनेक नूवैं लेखकां प्रेरणा ली है। आप री निरवाळ भासा–सैली अर कथ्य रै कारण इण कहाणियाँ रो साहित्य जगत में घणो सुवागत हुयो। ग्रामीण पृस्ठ भूमि नै लेय'र रचेड़ी इणां री 'नैणां खूट्‌यो नीर', 'हार्‌योड़ी जिनगानी', कागद रो पेटो, भिंटेरो, माइत, असूलां खातर, बदळाव, तिरवेणी अैड़ी कहाणियाँ है जिणनै पाठक भूल नीं सकै। 'माइत' कहाणी रो बाप संवेदनहीन बेटां रै कारण सड़कां पर बीड़ी चुगतो फिरै। बुजरगां साथै अन्याव री सगळी भासावां में कहाणियाँ लिखीजी है पण 'माइत' आप रै तेवर कारण नीं भुलावणै जोग कहाणी है। बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ रै कथ्य में विविधता है। प्रेमचन्द री भांत पंवार भी पैली तो आदर्सवाद नै अपणावै पछै जथार्थ नैं राजस्थानी रा घण करा'क लेखकां इण रै जथार्थवाद नै आगै चाल'र अपणायो है। डॉ. किरण नाहटा श्री बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ रो मूल्यांकन करतां थकां कैवै:

''आथूणै राजस्थान रै लोगां री अर खास कर नै गाँव आळां री दोरप सूं भर्‌योड़ी जिनगानी रो अंकन करणियां कहाणीकारां में श्री बैजनाथ पंवार रो नांव पैली पांत में आवै। ईं दीठ सूं हिन्दी में जकी ठौड़ श्री प्रेमचन्द री है, राजस्थानी में लगभग बा ही जागां बैजनाथ पंवार री है। गाँव आळां रो नित हमेस री जिनगानी रो घणो फूटरो अर बिस्वासू अँकण आं री कहाणियाँ में हुयो है।''

इण भाँत राजस्थानी कथा जगत नै बैजनाथ पंवार रो योगदान अद्वितीय है।

11.9 सारांस

राजस्थानी रा सिरैनांव रचनाकार बैजनाथ पंवार अैड़ा रचनाकार है जिका राजस्थानी गद्य नै अेक रूप दियो। उणां री कहाणियाँ गाँवाळै लोगां रै दु:ख–दर्द री कहाणी है। हालांकि बै गाँवाळा रचनाकार है फेर भी सहरी जीवन भी बां सूं छानो कोनी। 'हिरणी' कहाणी में गाँव सूं आय'र सहरी जिन्दगी में घुट'र मरगी अेक लुगाई है जिणनै सहरी जिनगी रास नीं आई। स्थिति वर्णन चाये काळ रो हुवै या घर रो,

सवांमें श्री पंवार सिद्धहस्त है। कथ्य री नजर सूं भी उणां री कहाणियाँ में विविधता है। मुहावरां अर कावतां रै प्रयोग सूं उणां भासा नै रवानगी देय'र लोकप्रिय बणावणै रो प्रयास कर्‌यो है। इण भांत राजस्थानी कहाणी में आप रै अणमोल योगदान रै कारण श्री बैजनाथ पंवार रो स्थान सदां बण्‌यो रैवैलो।

11.10 अभ्यास रा सवाल

1. ''हिन्दी में जिकी ठौड़ श्री प्रेमचन्दरी है, राजस्थानी में लगभग बा ही जागां बैजनाथ पंवार री है।'' इण कथन सूं आप कठै तक सहमत हो। सिद्ध करो।
2. ''बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ में ग्रामीण संस्कृति अर जिनगाणी रा जथार्थ चितरांम है।'' उदाहरणां साथै इण कथन नै सिद्ध करो।
3. बैजनाथ पंवार री कहाणियाँ रै देसकाल अर वातावरण पर अेक निबंध लिखो।
4. बैजनाथ पंवार री कहाणियां में कैड़ी प्रवृत्तियाँ उभरी हैं?

11.11 उपयोगी पोथियाँ

1. लाडेसर– बैजनाथ पंवार
2. नैणां खूट्‌यो नीर– बैजनाथ पंवार
3. ओळखाण– बैजनाथ पंवार
4. आधुनिक राजस्थानी साहित्य– भूपतिराम साकरिया
5. राजस्थानी भाषा और साहित्य– डॉ. मोतीलाल मेनारिया
6. आधुनिक राजस्थानी साहित्य– डॉ. किरण नाहटा
7. राजस्थानी साहित्य कुछ प्रवृत्तियाँ– डॉ. नरेन्द्र भानावत
8. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

इकाई–12

राजस्थानी भासा रा प्रमुख कहाणीकार–नृसिंह राजपुरोहित

इकाई रौ मंडाण

12.0 उद्देस्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 परिचय

12.3 कहाणी 'विदाई' रौ सार

12.4 'विदाई' कहाणी रौ यथार्थ

12.5 नृसिंह राजपुरोहित री कहाणी कला

12.6 विदाई कहाणी री समीक्षा

12.7 प्रो. प्रवीण रौ चरित्र–चित्रण

12.8 महताऊ प्रसंग

12.9 सवाल

12.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

12.0 उद्देस्य

12.1 प्रस्तावना

आधुनिक राजस्थानी कहाणी रौ विकास सुधारवादी द्रस्टिकोण रै साथै सुरू हुयो। कहाणी राजस्थानी में आजादी सूं पैलां लिखी जावण लागी ही। सामन्ती व्यवस्था रै समाप्त हुवतां ई राजस्थान में संक्रमण री स्थिति ही। राजस्थान रै मिनख सामै केई समस्यावां अर जटिलतावां ही। आर्थिक स्थिति कमजोर हुवण सूं केई लोग गांव छोड'र बारै प्रवास में चल्या गया। गांव खाली सा हुवण लाग्या। गांवां में आजादी रै पछै अेसो बदळाव आयो कै गांवां री रौनक ई उठगीं जमीदारी प्रथा खतम हुयगी आमजन में आजादी नै लेय'र अेक नुवीं चेतना आईं। जागीरदारां रो विरोध हुयो तो च्यारूमेर नुवै परिवर्तन री आवाज उठण लागी। सामन्ती युग में तो आमजन का सरोकार सीमित हा पण आजादी मिलतां ई लोगां रै सामनै केई सवाल ऊभा हुयग्या। लोकतंत्र रो आवणो, नौकरी री समस्या, सैरा कानी भागतो मिनख अर बेरोजगारी री मार। अेक तरफ सामाजिक कुप्रथावां सूं घिरयोड़ा गांव अर दूजै कानी पेट पालण री समस्या। आजादी रै पछै लोग आजाद तो हुया, पण घणा जणां रा गांव छूटग्या। पढया लिख्या मिनख सैरां कानी दौड़या तौ बांरां मां–बाप गांव में रैय'र पीड़ा झेली। नी गांव में आवड़ै तौ नी सैर में। की अैड़ा मनगत आजादी रै पछै ही। इण परिवार अर समाज री स्थिति नै लेय'र राजस्थानी कहाणी में जका नुवां कथाकार आया, उणां में नृसिंह राजपुरोहित सिरै है। वां रौ सोच राजस्थानी री नुवीं कहाणी नै कथ्य अर सिल्प री दीठ सूं नुवीं दिसा दी।

12.2 परिचय

नृसिंह राजपुरोहित राजस्थानी रा चावा–ठावा कहाणीकार है आपरो जलम सन् 1924 में बाड़मेर जिले

रै खांडप गांव में हुयो। अेक कहाणीकार रै रूप में 1950 में आपनै सनमान (पुरस्कार) मिल्यो। आप सन् 1948 सूं राजस्थानी में कहाण्या लिखणो सुरू करयो। आपरी कहाण्या गांव रै लोक जीवन सूं जुड़योड़ो है। 'अमर चूनड़ी', 'रात बासो', 'प्रभातियो तारो', 'अधूरा सपना' इत्याद आपरा प्रमुख कहाणी सग्रै हैं। राजपुरोहित री सुरूआती कहाण्यां में आदर्सवादी यथार्थ री अभिव्यक्ति हुई है। बां रौ रचनासंसार गांव अर कस्बा सूं जुडयोड़ो है। राजपुरोहित अेक रचनाधरमी कहाणीकार रै अनुभव वाळा रचनाकार हा। आं री कहाण्या में लोक जीवन री अच्छाई अर बुराई दोन्यू दीसै। केई जगां इयां भी लागै कै वे लोक संस्क्रति रै संस्कारां रै सारू आग्रह भी राखै अर पावै कै अै संस्कार मिनख नै सुख देय सकै है। नृसिंहजी राजपुरोहित री कहाण्या बाबत कहयो गयो है कै– 'गांवाऊ जीवण अर मिनख री पीड़ रा मरम बींधै जिसा गैरा अर डीगा चितराम नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्या में है।'

नृसिंह राजपुरोहित री सुरूआती कहाण्या में सामन्ती व्यवस्था रै सोसण सूं पीड़ित समाज रा यथार्थ चित्रण हैं। ठाकुर तौ ठाकुर उणरौ हाजरियो ई इण सोसणमूलक व्यवस्था में खुद नै सामंत सूं कम नहीं मानतो हा। 'हाजरियो अछेबां री बस्ती में बिना नाथ रौ सांड हौ। रावळी डांग हाथ में अर धणियां रौ मेट, पछै पूछणो काई? नृसिंह राजपुरोहित आं स्थितियां रो आपरी कहाण्यां में सांचो चित्रण करयौ है। नृसिंह राजपुरोहित कहाणी 'उत्तर भीखा म्हारी बारी' में औ दिखायो है कै आजादी रै पछै समाज व्यवस्था में बदळाव आयग्यो है अर जका सामन्त क्येर जावता बां री हालत अबै खस्ता हुयगी है। नृसिंह राजपुरोहित री आ कहाणी व्यवस्था बदळाव नै सांतरै ढंग सूं आज रै लोगां रै सामी राख्यो है। कहाणी रै माय सटीक प्रतीकां रो प्रयोग करयो है। इण कहाणी में सामन्ती व्यवस्था री गरीबी रौ भी चित्रण है।

नृसिंह राजपुरोहित री उत्तरकाल री कहाण्यां प्रमुख रूप सूं पारिवारिक अर सामाजिक जीवन सूं जुड़योड़ी है। आं कहाण्या में राजपुरोहित टूटता मूल्यां रौ अर आज री पीढ़ी री मानसीकता रौ सही चित्रण करयो है। अै कहाण्या आज री संवेदनावां सूं जुड़योड़ी है अर राजस्थानी कहाण्या रै मांय आपरी ठावी ठौड़ राखै। नृसिंह राजपुरोहित रो कहाण्या रौ रचना–संसार घणो महताऊ अर आज रौ संवेदनावां नै प्रगट करण वाळा है। सिल्प री दीठ सूं राजपुरोहित री कहाण्या सरल है। आपरी कहाण्यां 'उतर भीखा म्हारी बारी' 'भारत भाग्य बिधाता' घणी चरचित रैयी है। आं कहाण्यां में गांव रै बदळाव अर सहरी सभ्यता सूं गांव रै मांय आवण वाळै तणाव रो चित्रण है।

12.3 कहाणी 'विदाई' रो सारांस

नृसिंह राजपुरोहित री कहाणी 'विदाई' अेक पुराणी पीढ़ी री संवेदना नै यथार्थ रूप में आपणै सामै राखैं। अेक तरफ उण रो बेटो प्रो. प्रवीणकुमार है तो दूजै कानी उण री मां डोकरी। पढ–लिख'र प्रवीण रो सहर में जावणो जरूरी हो। गांव में कांई करै। प्रवीण लारला बीस बरस सूं सहर में ई रैवै अर गांव अकेली उण री मां रैवै। डोकरी आपरी पूरी उमर गांव में बिता दी। इण वास्तै उणनै आपरै बेटै कनै सहर री जिदंगी रास नी आई। बेटा–सूं घणा ई कोड करै कै माजी थोड़ा दिन सहर में आय रैय जावो पण डोकरी दो च्यार दिन तो रैवै पछै सेवट उणनै गांव में आयां ई सरै। डोकरी नै फ्लेट री जिंदगी कैद रै उनमान लखावै। उण बाबत डोकरी कैवती– 'प्रवीण म्हनै तो तू गांव पूगाय दे।'

पण जद डोकरी रा हाण थाकण लाग्या तो प्रवीण नै चिंता हुई के अब मां अकेली गांव में किया रैयसी। इण वास्तै बो आपरी मां नै आपरै साथै ले जावण री घणी कोसीस करी पण सहर रै नांव सूं डोकरी रा मन उदास हुय ज्यावै। बा सोचती के जका अेकर गांव छोड़'र सहर में चल्या गया, बै पाछा गांव में नी आया। बै गांव सारू ..... हो रैया। डोकरी गांव रा अैड़ा कई लोगां ने जाणै ही। इण वास्तै अै बातां सोच उदास हुय ज्यावती। अठीनै डोकरी रो निजर कीं कमजोर हुवण लागी। प्रवीण मां नै सहर में लेजावण सारू गैरो दबाव नाखतो। क्यूकै उण रो कैवणो हो के अब मां नै गांव में छोड़णो ठीक नीं जे कदै कीं हुय ज्यावै तो गांव वाळा कैयीसी के भणियो–गुणियो बेटो हो पण मां सारू की नी कर

सक्यो।

मां री हालत देख'र प्रवीण सोचतो जमानो बदळग्यो। गांव में कदै पूरो परिवार अेक साथ रैवतो, पण अर्थतंत्र रा चक्कर में अब परिवार बिखरग्या। पैलां सगळा खेती रो धंधो करता, इण वास्तै अेक साथ परिवार में केई पीढ़ियां रा लोग रैवता। पण अब धंधैवाड़ी अर नौकरियां रै कारणौ अेक जगां रैवणो मुस्किल हुयग्यो है। अब कुटुम्ब में नी अपणायत है अर नी किणी री बखत माथै अेक दूजै री मदद। अब कोई भी अेक दूजै रै सुख–दुःख में काम नी आवै।

डोकरी प्रवीण नै बतावती के आपणै गांव में तीन सौ घर हा। पण जद सूं लोग बठै कमावण जावण लाग्या तद सूं आधा घरां रै ताळा जड़ग्या। केई घर साव सूना हुयग्या तो केई घरां में बूढा–ठेरा मिनख बैठया आपरा दिनां नै ओछा कर रैया है। आज स्थिति आ आयगी के जको टाबर पढ लियो बो मोटो होय'र गांव छोड़ देवै। लागै गांव धीरै–धीरै उजड़ जासी अर लोग सहरा में कीड़ी–मकोड़ी री तांई भरीज जासी। गांव में रैवणियां टाबरां में जे थोड़ी भोत खिमता है तो बो गांव में करै–सहर में जाय'र वो पीसा कमावै अर आपरै परिवार री सेवा करै।

प्रवीण गांव री आ स्थिति देख'र सोचतो वास्तव में गांव आज उजड़ रहया है। आ अेक विस्वव्यापी समस्या है। इण रै साथै मोटै दुःख री बात आ है के आज गांव उजड़रैया है, सहर बस रहया है। इयां लागै के गांव री संस्क्रति रा मूल तत्व थोड़ा ई दिनां में बिखर जासी। परिवारां में आपसी मेळ मिळाप फगत अतीत री वस्तु बण जासी। आगै आवण वाळा लोगां नै इचरज हुयसी के कदै सगळा लोग अेक ठौड़ रैवतां अर अेक चूल्है खाणो पकतो। टाबर परिवार री परिभासा भूल ज्यासी। कुटुम्ब–कडूलो काई हुवै आ बात कल्पना री रैय जासी। आज गांव नै छोड'र आपां जका सहरा में बसरैया हां, इण सूं लागै के आपां आपणी संस्क्रति सूं कटरैया हां। आं सगळी बातां रो आवण आळी पीढ़ी माथै घणो असर पड़सी। इयां लागै है अर्थतन्त्र रै कारण हर परिवार आपरी निजता नै खतम कर रैया है। आज व्यक्तिवादी भावनावां रै कारण परिवार रो परम्परागत ढांचो बिगड़ रैयो है। इयां मां–बेटा दोन्यू जणा आज री स्थिति माथै विचार करता।

ई पछै प्रवीण कैयो के मां थारै अेक आंख रो मोतिया बिंद अब आपरेसन रै लायक हुयग्यो। इण वास्तै तनै सहर में चाल'र आपरै आंख'र रो आपरेसन करवाणो चाइजै। डोकरी तैयार हुयगी पण बा कैयो के प्रवासी जावण सूं पैलां तूं म्हनै विमला मास्टरणी सूं मिलाय दे वा पैलां आपणै मकान में किरायादार ही अर आपणै घर री सगळी बात जाणै है। मैं उणनै केई बातां री भुलावणी दे जावूं जिण सूं बा घर नै चोखी तरिया संभाळै अर म्हारै किणी बात री चिंता नी रैवै। डोकरी बतावै के विमला घणी ई चोखी मास्टरणी है पण उण रो धणी उणने छोड राखी है। प्रवीण बतावै के– मां आज आ बात तो घणी ई हो रैयी है। मोकळी नौकरी पेसा महिलावां का तो विधवां है अर का छोडयोड़ी है। डोकरी बोली– जमाना रै लाय लागगी जे धणी लुगाई में ई आपस में बणे कोनी तो पछै घर किंया चालसी, टाबर किंया पढसी। ओ तो चोखो है के जकी लुगायां थोड़ी भोत पढयोड़ी है बै बेचारी आपरो पेट तो भर सके हैं नी तो गरीब बाप रै गळै पड़ती। प्रवीण इण बात रो समर्थन करै के भणी–गुणी लुगायां आपरै पगां पर खड़ी हैं अर आपरी जिदंगी बिताय रैयी है।

इत्तै में विमला आ जावै अर डोकरी विमला नै आपरै घर री साफ–सफाई अर दूजी चीज्यां री संभाल रै बारै में भोळावणी देवै। डोकरी कैवै लोग म्हनै किरायो देवण वास्तै त्यार बैठया है पण विमला म्हैं थनै मकान छोड़'र जावूं हूं। म्हारै किराये रो लोभ लालच नीं। कांई करूं म्हारी बांई आंख रो आपरेसण करवाणो हो। हालांकि म्हारो मन तो इण कुटियां में ई रैसी पण थारै अठै रैवण सूं म्हनै संतोस हुयसी। म्हनै थारो विसवास है बेटी, पण थूं दो–तीन बातां रो ध्यान राखजे– अेक तो ठाकुरजी री रोज पूजा–सेवा, दूजी बात जिनावरां नै दाणो चुगाज्यो, म्हारो तो ओई कुटुम्ब परिवार रैयो है। इणी तरै आं

पंखेरूआं तांई रोज कुंडी में पाणी घालजे जका अै अठै हर कर आवै अर पाणी पीवै। इण ढंग सूं डोकरी आपरै घर री संभाळ सारू अेक लाम्बी सूची बताय'र विमला नै कैवण लागी के मास्टरजी तूं समझदार है इण वास्तै म्हारै आं कामां में कोई तरै री गड़बड़ नी हुवै।

प्रवीण जद गांव आवतो तो गांव में हथाई करणै जावतो। मोड़ो हुयग्यो। डोकरी उडीकै ही के प्रवीण आयो नी। काल संवारै तो सहर जावणो है पछै गांव में अेक ई बस आवै अर उण में सगळा भेड़–बकरी आळी तांई घुस'र सहर जावैं। डोकरी आपरै घरै खटोळड़ी माथै पसवाड़ा फेरै ही अर उण रै सामै अतीत रा चितराम चालै हा। अेक दिन बा भी इण गांव में ब्यावली आई ही। पछै घर परिवार रा सगळा याद आया। प्रवीण तद चौदह बरस रो हो उण वास्ते प्रवीण रा पापा निठग्या। आज डोकरी चौसठ साल री हुयगी। सामै नुवीं पीढ़ी आयगी। डोकरी सोचबा लागी। प्रवीण बड़ो हुयो– पढायो–लिखायो अर नौकरी लागतां ई सहर में चल्यो गयो। बिया तो कांई सहर अर कांई संसार– अेक दिन सगळा नै छोड़णो पड़सी। सगळा अठै ई धरया रैय जासी। इण वास्तै रामजी राखै बिया ई रैवणो पड़सी। आ बात जरूर है मिनख जठै उमर काढ देवै, उण रै हेवा होय जावै। आक रो आक में राजी अर नीम रो नीम में राजी। माटी रो मोह जबरो है वो आसानी सूं छूटे कोनी।

अतै में हथाई कर'र प्रवीण आवै। खाणो खावै अर वो डोकरी नै कैवै– आ गांव में बस बेगी आवै इण वास्तै आपां नै बेगोई समळणो है नीतर फेर अेक दिन रो मोड़ो हुय जासी। दूजै दिन डोकरी बेगी उठी अर आपरो सगळो सामान जचाय'र व्हीर हुई। पड़ौस री लुगाइयां इकट्ठी हुयगी। वां री आंख्यां जळजळी हुयगी। केई लुगायां रोवण लागी। अेक अजीब नजारो पैदा हुयगो। प्रवीण नै भी आ उम्मीद नी ही के अैड़ा दरसाव हुवैलो। बो हिम्मत राख'र डोकरी नै नीठ बोली राखी।

इत्तै में विमला मास्टरणी आयगी। बा उणनै फेरूं भोळावणी दी अर अतै में बस आयगी। प्रवीण कहयो– मां बस आयगी फुरती करजे। डोकरी घर री चाबी विमला नै देय'र बस में चढगी।

12.4 'विदाई' कहाणी रो यथार्थ

'विदाई' कहाणी आज रै यथार्थ री वास्तविक झांकी आपणै सामै राखै। अेक बख्त हो जद सगळा लोग गांवां में रैवतां। गांव आबाद हो, खुसहाली ही, आपस में प्रेमभाव अर अेक अजब दुनिया ही– साव छोटी सी। सगळां रा सुख–दुःख सगळां रो सुख–दुःख हा। बार–तिवार, हंसी खुसी, ब्याव–सावा, जलम–मरण सगळा में सगळा साथ हा। साथ रैवण रो अेक कोड हो। उण वखत सहर कम हा अर सहर में भोत कम लोग आपरी नौकरी वास्तै जावता। पछै स्थिति बदळी अर गांव अर सहरी संस्क्रति में अेक संघर्स पैदा हुवण लाग्यो। आं सगली स्थितियां नै अेक छोटी सी घटना रै माध्यम सूं कहाणीकार विदाई कहाणी में दरसाई है।

1. गांव रो यथार्थ– गांव कदै आपरी संस्क्रति या आपरै परम्परागत ढाचै रै कारण अपणै में अेक इकाई ही। लोग गांव में रैवता। सहर में जावणो उण रै वास्तै अेक सिरदर्द हो पण स्थिति बदळी। प्रवीण गांव में जलम्यो पण पढ़ लिख'र उणनै सहर में जावणो पड़यो क्यू के गांव में नौकरी कठी आज री इण मैगांई में अेक आदमी कियां आपरै परिवार रो पालन–पोसण करै, कियां घर चलावे, कियां आपरै टाबरां नै पढ़ावै। इण वास्तै उण रो सहर जावणो जरूरी हुयग्यो। पण जकी बुजुरग पीढी है उणनै सहर में आवड़ै नीं क्यू के बठै बात–बतलावण, उठक–बैठक तांई कोई मिलै नीं। अेकर डोकरी जद सहर में गई तो कैवण लागी– 'प्रवीण म्हनै तो बेगो गांव पुगायदे। म्हारो अठै मन नी लागै। डोकरी बतावै– आपणे गांव में पैला तीन सौ घरां री बस्ती ही। पैली सगळाई खेती करता। घर–घर गायां–भैस्यां रो धपटमों–धीणौ रैवतो सोरा सुखी परिवार हा। पछै लोग जद परिवार सहर बारै जावण लागग्या तो घर सूना हुयग्या। घरां रै ताळा लागण लाग्या जिण में कबूतर गररगूं करण लाग्या आ स्थिति गांव रै वास्तै

माड़ी हुयगी। आज गांव में जावणो लोगां नै चौखा नी लागै।

2. अपणायत सूं भरयोड़ो कुटुम्ब– गांवां रै जीवन री सबसूं बड़ी खासियत आ ही के सगळा लोग अेक कुटुम्ब में रैवता। राजस्थानी लोक जीवन में कुटुम्ब रो घणो महत्त्व हो। घर रा सगळा नेगचार कुटुम्ब कै मांय सगळा लोगां री उपस्थिति में हौवता, इण वास्तै आपस में घणो प्रेम हो अर लोग अेक दूजै नै चावता भी। 'विदाई' कहाणी में डोकरी कैवै– आ ई तो म्हें कैवूं रै बेटा के कुटुम्ब री अपणायत सै खतम हुयगी। नणद–भोजाई रौ मूंडो देखण सारू तरस जावै अर पोता–पोती, दादा–दादी सूं अणजाण रैय जावै। कोई अेक दूजै रै काम नी आवै। पैला गांव में अेक परिवार रो सुख हो– अेक रो दुःख सगळा रो दुःख हुवतो, साथ बैठ'र हथायां हुवती। गांव री हथायां सारू मन तड़फीजतो। प्रवीण जकै दिन डोकरी नै लेवण आयो तो गांव में हथायां वास्तै निकळग्यो, उण नै अबेळो हुयग्यो। मां उडीक करती रैयी। प्रवीण सोच्यो फेरूं कांई ठा गांव में आवणो हुवै या नीं। इयां ई डोकरी भी सोचणै लागी के कांई ठा सहर में जावण रै पछै आवणो हुयसी या नी।

3. उजड़ता गांव–फैलता सहर– प्रवीण अर डोकरी दोन्यू जणा बतळावता थकां आ कैवै के आज नौकरी रै अभाव में गांव में रैवणो मुस्किल है। खेती बंटगी परिवार टूट गया–बिखरग्या। ई वास्तै गांव री स्थिति थोड़ी विचित्र हुयगी। आज गांव में आय रा कोई साधन कोनी। सिक्षा, चिकित्सा, पाणी अर बिजली वगैरा री कोई सुविधा कोनी। इण वास्तै कोई गांव में रैवणो नी चावै। जुग रै मुताबिक पढया–लिख्या लड़का लड़की आपरी जीवन सैली ई दूजे भांत री करली। बां री सुविधावां गांव में कठै? ई वास्तै आज गांव सूना अर सहरां में चहल पहल है। कहाणी में प्रवीण कुमार कैवै– 'वास्तव में गांव आज उजड़ रहया है अर सहर बस रहया है। आ अेक विस्वव्यापी समस्या है। इण रै सागै मोटै दुःख री बात आ है के गांवां रो आदू अर जम्यो–जमायौ मूल ढाचौ बिखर रैयो है अर इणरी ठौड़ नुवै अर सुधार रै नाव जिको आय रैयो है वो उधार लियोड़ो अर अपरोखो सो लखावै। इण हिसाब सूं गांव बदल रैयो है।

4. गांव री संस्क्रति रो बदळतो रूप– आज गांवां में जका लोग रैवै उणमें कीं तो पुराणी पीढ़ी रा है अर वां रो जीवण दूजै भांत रो है– बै गांव में बैठ'र हथायां करै, पंचायत करै अर नुवीं पीढ़ी नै नसीहत देवै। आंरो खाण–पाण सीधो अर सरल। अै गांव रै बार–तिंवार अर मेळे–खेळै में भाग लेवै। पण दूजे कानी जकी नुवीं पीढ़ी है उणरो सोच दूजै भांत रो है। बां री सुविधावां खाण–पाण, दूजै ढंग रो है बै आपरै मायतां सूं जकी चीज पढ़ै– बा मंगावै– चाये मिठाई हुवो या पढणै लिखणै री चीजां। ई नुवीं पीढ़ी में गांव रो संस्क्रति सूं लगाव धीरे–धीरे कम हो रैयो है, बै खुद रै मांय सिमट रैया है। गांव में रेडिया–टेलीविजन वगैरा आयग्या। इण वास्तै मनोरंजन रा साधन भी बदळग्या। इण तरै जकी मेळमिलाप अर भाईचारै री संस्क्रति ही बा साव बदळ री है। गांव में मोटर–गाडी ई आयगी इण सूं भी आपसी सम्बन्धां में फरक पड्यो है। कहाणी में प्रवीण कुमार कैवै– 'इण हिसाब सूं तो गांवाई संस्क्रत रा मूळ तत्त्व ई थोड़ा बरसां में खतम हुय जासी।' परिवारां रो आपसी मेळ मिळाप अर रूप भूतकाळ री चीज बण ज्यासी। फगत मियां–बीबी अर आपरा टाबर ई परिवार री परिभासा में आसी। इण रो भावी पीढ़ी माथै फरक पड़सी अर बै आपरी परम्परा अर संस्क्रति सूं सफा अजाण रैयनै आपरी जड़ा सूं कट जासी।'

5. पिछाण खोवता मिनख– कहाणीकार ई कहाणी रै प्रसंग में आज री जोरदार संकटवाळी समस्या री तरफ भी संकेत करयो है। गांव आज बदल रैया है। गांव में आज सहरी संस्क्रति रो प्रभाव साफ लखावै। ओ गांव वाला नै चोखो भी लागै पण जका पिछाण गांव री गांव रै रूप में ही, बा खतम हुय रैयी है। आज गांव रा आदमी नै पिछाण बो मुस्किल है। उण रै चाल–ढाल, खाण–पाण, पैहराण अर जीवन सैली सूं बो साव सहरी लागै। गांव रो सगळो ढांचो सहर री नकल माथै हुय रैयो। मकान

सुविधावां, आवागमन रा साधन, सड़क, स्कूल इत्याद। गांव री छोटी–छोटी दुकानां में सहर री चीज्या मिलबा लागी। तीज–त्यौहार, वार–तिवार मेळै इत्याद में सहर री झलक दीसै। लोगां रो मिलबो–जुलबो बंद। आपरै घर में रैवणो अर हथायां बंद– कूवू जळती बंद जगां–जगां चार–पाँच मिनखां री आपसी हथाई कंद। अब तो लड़ाई–झगड़ो, मारकाट अर अपराध। दारू रो प्रभाव, नेतागिरी रा झूठ–सांच, तीन तेरा–लड़ाई झगड़ा, केस मुकदमा–पार्टी बाजी। इण तरै गांव आपरी मूळ पिछाण नै खो रैया है। पैलां कदै गांव में रैवणो लोगां नै चोखो लागतो क्यूंके बठै सान्ति ही, संप ही। अब लोग गांव री जिंदगी सूं नफरत करै सहरा में जमीन लेय'र रैवण लागग्या। जका गांव में रैयग्या बै गांव में रैय'र सहरां री नकल माथै चाल पड़या। ओई कारण है के गांव अब न तो गांव रैया अर नी सहर।

प्रवीण कुमार गांव री स्थितियां माथै विचार करतो कैवै– 'वा आपरी निजू 'आइडेनडिटी' अंगाई खतम हुय जासी। मायत अठै बसै है तो बेटो न जाणै कठै बसै अर कठै डेरा करसी। मां कैवै ज्यूं गांव अर परिवार दोनूं बरबाद हुय जासी।'

6. राजनीति रो दुःखदायी संकट– गांवां नै आज राजनीति बर्बाद कर दिया। कदै गांवां में प्रेम, भाईचारो अर बडोड़ा लोगां रो आव–आदर हो। पण जद सूं पंचायत राज आयो, गांवां में पार्टीबाजी बणगी। लड़ाई–झगड़ो सुरू हुयग्यो। लोगां री पीढयां रा सम्बन्ध खतम हुयग्या। नेता बणण री हूंक हरेक में जागगी। गांव रा पंच–सरपंच गांव नै खतम करण लागग्या। गांव में रिस्वतखोरी, घूंस, पक्षपात अर लड़ाई सुरू होयगी। आज राजनीति रै ओछै हथकंडां सूं गांव री आत्मा मरगी। गांव–गांव नी रैयो अर गांव में रैवा वाळा कैवै– अब जावां तो जावां कठै। कहाणी में प्रवीण कैवै– 'ओछी राजनीति अर तथाकथित सुधार गांवड़ां रै परम्परागत ढांचै नै अंगाई बिगाड़ नाखसी तो बिखराव अर व्यक्तिवादी भावना परिवार नाम री चीज नै बरबाद कर देसी। आज परिस्थिति आ बणगी है के जिकौ थोड़ा घणा भावनासील मिनख है बै गांव में रैवणो चावै, बारे रैवणो हाथ कोनी अर जिणानै अठै सूं कोई भावनात्मक लगाव कोनी वै अठै मजबूरन बैठा हैं। वांरै वास्तै 'जीवो क्यूं के मौत कोनी आवै' वाळी हालत है। राजनीति गांवां रा प्रेम भाव नै खायगी। घर–घर में लड़ाई। इण वास्तै व्यक्तिवादी भावना बढगी। आज हालत आ है के लोग गांव में आपरा घर छोड़'र बारै निसरै कोनी बै आपरै घर में घुटै पण बारै जाय'र असान्ति में भी नी पड़बो चावै।

7. लुगाई–मोटयार में झगड़ो– कहाणी रै मांय आज रै यथार्थ रो भी सांचो चित्रण दीसै। गांव बदळया, पछै परिवार रो ढांचो बदळयो अर आज परिवार में धणी–लुगाई रै भी आपस में बणै कोनी। गांवां रै मांय पैला आ स्थिति कोनी ही। मायतां रो लड़का–लड़की माथै पूरो जोर हो। बे जियां कैवता बियां ही उणा नै मानणो पड़तो पण आज तो परिवार री मरजादा टूटगी–सगळा सुतंतर हुयग्या। आज नी गांव में कैवणो तो नी घर में रैवणो। पढाई लिखाई रै कारणौ व्यक्तिवादी भावना घणी फैली है। सगळा आपरा निजू जीवन रा हिमायती है। उणां नै आपरै मायतां सूं ई कोई मतलब नी। प्रवीण री मां बतावै के सीधी–सैणी छोरी है बापड़ी। च्यार साल सूं गांव में रैवै पण कोई रै आंख में घाली ई नी खटकै। इसी सुसील अर भणी गुणी छोरी नै सुण्यो के उणरै धणी छोड़ दी है।'

'आजकल इस्या किस्सा घणा ई हुवै मां। मोकळी नौकरी–पैसा महिलावां का तो विधवा लाधसी अर का छोड़योड़ी।

'जमानै रै कांई लाय लागगी रे बेटा। धणी–लुगाई रै ई आपसरी में कोनी बणै? आ कोई बात है। आ तो बांपड़ी फेर, च्यार आखर सीख्योड़ी है तो मास्टरणी बणगी। नीं तो गरीब बाप रै गळै पड़ती।'

इण सूं लागै के कहाणी में एकल परिवारां री टूटन रो भी सांतरो चित्रण है। ओ प्रभाव सहरी जीवन सूं गांव में गयो है अर आज घणा जणां आपरी लुगाइयां नै छोडै। कोई तलाक देवै, कोई विधवा नै घरां सूं निकाळ देवै। अैड़ी स्थिति में औरत रो जमारो घणो मुस्किल है। बां कियां आपरा दिन ओछा

करै आ बा खुद ही जाणै। आज गांवां रो जीवण आज री जीवन सैली सूं प्रभावित है अर गांवां में भी तलाक अर छोड़ देवण जैड़ी स्थितियां पैदा हुयगी है।

8. घुटन भरयोड़ी जिंदगी– कदै गांव में रैवणियां लोगां नै आपरी मायड़भोम सूं भावनात्मक लगाव हो, बै बठै हर हालत में रैवता बांनै बठै रा ....., ... अर बठै रा पांख–पखेरू चोखा लागता पण आज स्थिति पलटगी। गांवां में सूनोपणो आयग्यो पढया–लिख्या या आगै बधबाळा परिवार तो सहर कानी चल्या गया और जका नै कीं नी करणो बै गांव में अठीनै–बठीनै बैठ'र आपरो बगत पूरा करै। आज रैणियां लोगां रो भी गांव सूं कोई भावनात्मक लगाव नी। जे बां नै गांव बाबत पूछां तो बै बठै रैवता थकां भी जाणकारी नी देय सकै। इण सूं लागै के गांव में घुटन भरयोड़ो वातावरण है अर बठै रैवणो बां री मजबूरी है। जे कोई लड़को सहर में रेवण लाग्यो तो बो आपरा माइतां नै ल्यावै तो बै बठै रैवणो नीं चावै क्यूंके बठै रो वातावरण उणां नै रास नी आवै।

9. नारी सिक्षा माथे जोर– प्रवीण खुद पढयो–लिख्यो है अर बो इण बात नै समझै के आज घणी–लुगाई रा सम्बन्ध टूट रैया है कोई तलाक दे देवै तो कोई दायजा नै लेय'र छोड देवै। अैड़ी हालत में लड़की रो जीवन काटणो घणो दोरो। बा बापड़ी मां–बापां कनै कद तांईं बैठी रैसी कदै तो बै भी ईं दुनियां सूं बिदा हुयसी। पछै अेकलो बाप कताक रा पेट भरै। प्रवीण आपरी मां नै कैवै– इण वास्तै इज तो आज छोरां रै ज्यूं छोरियां नै ई पढ़ावणी जरूरी हुयगी मां। भावै संजोग जे कोई रा करम फोरा होवै अर कोई कुपात्र सूं पल्लो भेट जावै तो भणी–गुणी हुयां लुगाई आपरै माथै तो ऊभी हुय सकै।' प्रवीण चावै कै आज जकी महिलावां तकलीफ में है अर जकां रै सामै अैड़ी समस्यावां हैं, वै जे पढ़ी लिखी हुवैतो आपरी जिंदगी रा चोखा दिन काट सकै हैं। आज गांव री लुगायां सारू भी पढ़णो घणो जरूरी है।

पारम्परिक घर– प्रवीण रो घर अेक दीठ सूं भारतीय संस्क्रति रो प्रतीक है। उण रै घर में संस्क्रति रो चित्र दिसै। इण वास्तै वा कैवै के– 'विमला नै कैया के म्हें तो म्हारै लड़का रै साथै आंख रो आपरेसन करवाणै जाय रैयी हूं। म्हनै थोड़ो वखत लागसी, पण म्हारै घर रो कामकाज अर सेवा पूजा जियां म्हैं करती आई हूं बियां थानै करणो पड़सी। ई वास्तै घर में ठाकुरजी महाराज, तुलसी रो थाळो, पाणी रो कुंडियो, जिनावरां वास्तै दाणा इत्याद राख्योड़ा हैं आं रो भलीभांत थानै टेमसर उपयोग करणो है।' भारतीय परिवारां रो ओ सरूप फगत गावांई संस्क्रति सूं जुड़योड़ो रैयग्यो अर गांव आज खाली हुयग्या। गांवां में सगळा नै झाड़–बोझा लगावण रो सौक हो। प्रवीण रा पापा भी आपरै घरां रै सामी पेड़ लगाया।

10. माटी रो मोह– गांव सूं विदाई लेवती वखत प्रवीण री मां विमला नै कहयो– 'ओ संसार तो असार है। एक दिन तो सगळा नै छोड'र अठै सूं जाणो पड़सी। सगळो अठैई धरयो रैसी। भलाईं अठै रैवो या बेटा कनै सहर में रेवो। कांई फरक पड़ै है। फेर आपणो तो जीवण रूपी सूरज आथमण नै आयो। अबै तो लकड़ा पूगगा मसाणै। इण वास्तै रामजी राखै ज्यूं रैवणौ है अर राखै जठै ई रैवणौ है। मां कैवती आ बात जरूर है के मिनख जठै उमर काढ़ दे, उण रै हेवा होय जावै। आक रो आक में राजी अर नीम रो नीम में। माटी रो मोह ही जबरो हुवै। वो सहज छूटै कोनी।' जको आपरी आखी उमर गांव में बिताय दी उणनै जे सहर में बसणै री बात कैवां तो आ उण सारू अेक पीड़ादायक स्थिति है।

आ रै कहाणी आज रै बदलतै जुग में गांवां री स्थिति रै माध्यम सूं आज रै सामाजिक, राजनीतिक अर आर्थिक प्रभावां नै दरसावै। आ कहाणी आपणी बदळती अर परम्परागत संस्क्रति सामी केई सवाल अर केई समस्यावां बतावै करै जिकां नै आज रो अर आवणवळो जमानो भुगतसी। कहाणी रो यथार्थ साव सांचौ अर हकीकत नै साम्है ल्याण वाळो है।

12.5 नृसिंह राजपुरोहित री कहाणी कला

आधुनिक राजस्थानी कहाणीकारां में नृसिंह राजपुरोहित रो अेक महताऊ नाम है। बै सरू सूं ईं आपरी कहाण्या में बदळतै जुग रै यथार्थ नै प्रगट करणै री कोसिस करी। आपरी कहाण्या में आज री संवेदनावां रो सांचो रूप दीसै। राजस्थानी भासा में सुरू में जकी कहाण्या लिखी, वै आदर्सवादी अर आदर्सोन्मुख यथार्थवादी कहाण्या है। नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्या सामाजिक यथार्थ नै लेय'र चालै। 'उतर भीखा म्हारी बारी, रातबासो, भारत भाग्य विधाता' इत्याद वां री चरचित कहाण्या रैयी है। नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्या रो कथा–संसार अेकानी गांवां रै यथार्थ नै प्रगटे तो दूजै कानी सहर रै जीवन री विसंगति नै उजागर करै। राजपुरोहित आजादी पछै री जिंदगी रा सांचा चितराम आपरी कहाण्या में सामी राख्या है।

नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्या रो ढांचो परम्परागत कहाण्या रो है। कहाणी कला री दीठ सूं कथानक घटना प्रधान है अर कथानक रो विकास भी 'प्रारम्भ, विकास अर चरमसीमा रै' ..... सूं हुयो है। राजस्थानी में सुरू में जकी कहाण्या लिखी जी वै धटना प्रधान अर वर्णनात्मक घणी ही। नृसिंह राजपुरोहित री कहाणी कला री विसेसतावां निम्न रूप में देखी जा सकै हैं–

1. सरल कथानक– नृसिंह राजपुरोहित री कहाणियां गांव अर सैहर री जिंदगी सूं जुड़योड़ी है पण उणां रा कथानक, सीधा सरल अर घटनाप्रधान है। आजादी रै पछै गांवां में जको बदळाव आयो, उण नै अै कहाण्या प्रभावी ढंग सूं आपणै सामी राखै। गांवां में परिवार री छोटी–छोटी घटनावां नै लेय–र अै कहाण्या चालै। कथानक रोचक अर जिज्ञासा बढावाणवाळा है। अंत में आरम्भ, विकास, चरमसीमा अर अंत रो संयोजन ढंग सूं हुयो है। आं री कहाण्यां में गांवाई जीवन सूं जुड़योड़ा कथानक है इण वास्तै उणा में गांव री संस्क्रति अर बदलाव री स्थितियां रो सांगोपाग चित्रण है। कथानक घणा लाम्बा नी। कथानक रो विकास कहाणी में तेजी सूं हुवै अर कहाणी आपरी चरम सीमा माथै खतम हुय ज्यावै।

2. सामाजिक कथानक– नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्या रा कथानक परिवार अर समाज सूं जुडयोड़ो है। सामाजिक कहाण्या में 'उतर भीखा म्हारी बारी' 'कलम री मार' अर 'भारत भाग्य विधाता' प्रमुख है। नृसिंह राजपुरोहित री अै अैड़ी कहाण्या हैं जिण सूं राजस्थानी री आधुनिक कहाणी रो विकास हुयो। ओ वखत बो हो जद राजस्थानी समाज सामन्ती सोसण सूं दब्योड़ो हो अर लोग घणा–दुःख पावा हा। 'उतर भीखा म्हारी बारी' अैड़ा ही बदलाव रो संकेत करै। आं कहाण्या में निम्न अर मध्य वर्ग री समस्यावां नै चित्रित करी है। नृसिंह राजपुरोहित रचनाधर्मी अर अनुभवी कथाकार हैं, वे लोक जीवन रै यथार्थ नै गैराई सूं जाणै अर बती गैराई सूं ई आपरी कहाण्यां में उणनै प्रगट करैं। लोक जीवन री सच्चाई रो चित्रण वां री कहाण्या में गहराई रै साथ हुयो है। उणां री कहाण्या बाबत लिख्यो गयो है के– गांवाऊ जीवण अर मिनख री पीड़ रा मरम बींधै जिसा गैरा अर डीघा चितराम नृसिंह रा कहाण्यां में है। 'कलम री मार' कहाणी निम्न वर्ग रै सोसण माथै सांतरौ व्यंग्य है।

3. संवेदना– नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्या संवेदनावां री दीठ सूं भी घणी सांतरी अर मौलिकता लियोड़ी है। राजपुरोहित री कहाण्यां समाज रै सोसण, अर वर्ग भेद री मांयली स्थिति रो यथार्थ चित्रण करै। 'रातबासो' कहाणी रो टोकम साफ दिलआळा मिनख है, वो मनोयोग रै साथै हवेली रो निर्माण करै अर अेक दिन जद वो आपरै निजू काम सूं सहर रै मांय आवै अर उणनै गांव जाणै में मोड़ो हुय ज्यावै तो वो अधिकार रै साथ उण हवेली में घुस ज्यावै तो हवेली रो मालिक उणनै चोरी रै इलजाम में जेळ भिजवा देवै। इण तरै नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्या में वर्गभेद, विसमता अर पूंजीवादी समाज रो सोसण दिखायो है। कहाणीकार ओ बतावणो चावै के आज समाज में सोसण अर पूंजीवादी व्यवस्था किण तरै निम्न वर्ग अर मजदूर वर्ग रो सोसण करै। नृसिंह राजपुरोहित री 'ओळमो' भी अैड़ी ई कहाणी हैं। राजस्थानी कहाण्यां में नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्यां संवेदना री दीठ सूं टालवी कही जासी।

इणी भांत नृसिंह राजपुरोहित री कहाणी 'प्रभातियो तारो' में भी अेक नारी रो आर्थिक दीठ सूं हुया

सोसण रो चित्रण करयो गयो है। पारस अरोड़ा रो ओ कथन कहाणीकार री कहाण्यां माथै साव सटीक लागै। 'नृसिंहजी वां लेखकां में है जिका निरन्तर सिरजणाऊ जिम्मेवारी सूं जुड़'र कलम री धार नै पांण देवता रैवै। ...प्रगतिसील लेखन रो सुवर अर तेवर आपरी केई कथावां में देख्यो जा सकै। आपरी निजू खासियत दरसा'र कथा नै क्लाइमेक्स तांई पुगावता चरित व्हौ अथवा सोसण रा हथियारां सूं कटता बढता अनपढ़ भोळा जीव, लिखारै री सफळता आ है के पाठक नै वै पात्र आपरो बणायलै।' इण तरै संवेदनावां री दीठ सूं अै सगळी कहाण्या प्रभावसाली है।

4. सिल्प– कहाणी रो सिल्प कहाणी री संवेदना नै प्रस्तुत करणै रो प्रभावसाली हथियार हुवै। कहाणी कई बार सिल्प रै चक्कर में फंस जावै तो कहाणीकार आपरी बात नै पूरै दम सूं आपणै सामै नी राख सकै। नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्यां रो सिल्प सीधो अर सरल है। कहाणीकार आपरी बात नै वर्णनात्मक ढंग सूं ही कथावस्तु रै माध्यम सूं कैवै। सिल्प में कई जगां कहाणी में प्रतीक अर संकेतां रो प्रयोग भी हुयो जिण सूं कहाणी रै सिल्प में प्रभाव री क्षमता बढी। 'रात बासो' कहाणी में टाबर 'उतर भीखा म्हारी बारी' रोको खेल खेलै, उण रै माध्यम सूं ओ संकेत करयो गयो है के अबै बारी बदळगी अर अबै दूजा री बारी आयगी। कदै सामन्त दूजा माथै राज करता पण अबै लोकतन्त्र आयगो अर लोकतंत्र आळा मिनख अब सगळा माथै राज करैला। इण प्रतीक रो कहाणी में सातरो चित्रण हुयो है।

1.5 भासा–सैली– कहाणी में भासा जती व्यंजक हुवैली, कहाणी आपरी संवेदना नै बतै ई प्रभाव सूं पाठकां रै सामी राखसी। भासा ही कहाणीकार रै विचारां नै पाठकां तांई पुगाणै रो माध्यम है। कहाणी रै वास्तै कयो गयो है के उण री भासा नै व्यंजक हुवणो घणो जरूरी है। इण सूं कहाणी रै मांय प्रभाव उत्पन्न हो सकै। कहाणी री भासा कथानक अर पात्रां रै अनुकूल होवणी चाइजै। भासा सीधी सरल अर सपाट हो, इण रै साथै ई साथ वातावरण रै अनुकूल भी भासा रो होवणो जरूरी है जिणसूं वातावरण नै साकार रूप दियो जा सकै। भासा रौ पात्रां रै अनुकूल भी होवणो चाइजै। 'विदाई' कहाणी में प्रवीण री मां री भासा गांव री औरत जैड़ी है। विमला मास्टरणी रै बारे में कैवै– 'सीधी सैंणी छोरी है बापड़ी। च्यार साल सूं गांव में रैवै पण कोई रै आंख में थाली ई कोनी खटकी। इसी सुसील अर भणी–गुणी छोरी नै सुण्यौ के उण रै धणी छोड़ दी है।'

इण तरै ओ कहयो जा सकै है के भासा कहाणी रो मूल आधार है। नृसिंह राजपुरोहित नै जकी कहायण लिखी है बां री भासा सांतरी है। कहाणी री सैली तीन प्रकार री मानी गई है– साधारण मुहावरेदार भासा सैली 2. अलंकृत सैली 3. संस्क्रत रै सबदां रो प्रभाव। नृसिंह राजपुरोहित री कहाणी विदाई में जीवो क्यूं कें मौत कोनी आवै। 'आकरो आक में राजी अर नीम रो नीम में राजी' इत्याद कहावतां रो चोखो प्रयोग हुयौ है।

इण सूं लागै के नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्या रो रचना–विधान आजरी कहाण्या मुजब प्रभावी है।

12.6 विदाई कहाणी री समीक्षा

नृसिंह राजपुरोहित री कहाणी बदळतै गांवां रै वातावरण सूं जुडयोड़ी है। आजादी रै पछै बेरोजगारी री समस्या इण भांत फैली के गांवां में फगत खेती रै अलावा जीविका रो कोई साधन नी हो। इण वास्तै भण्या–गुण्या लोग नौकरी खातर सैरां कानी भाग्या। गांव खाली हुयग्या अर सूनापन छायग्यो। धीरे–धीरे गांव रो मोह मिटण लाग्यो अर आंथूणै प्रभाव रो रूप भी गांवां में आवण लाग्यो। 'विदाई' अेक पुराणी पीढ़ी री महिला रो गांव छोड़'र सैर में जावण रै दरसाव रो सांतरो चित्रण है। कहाणी रै तत्त्वां माथै 'विदाई' कहाणी इण भांत समझी जा सकै।

1. कथावस्तु– आ कहाणी गांव सूं जुडयोड़ी है। प्रवीण पढ़ लिख'र सैर में प्रोफेसर बण'र रैवण लाग जावैं जद गांव आवै तो उण नै दूजै दिन गांव सूं बस पकड़ण वास्तै बेगो उठणो अर सगळी त्यारी

करणी पड़ै। प्रवीण आपरो मां नै भी कैय देवै के दिनूगै ..... नै चुग्गो–पाणी, तुलसी नै पाणी, ठाकुर जी री सेवा पूजा सगळा काम टैमसर फुरती सूं निवेड़ लीजै। जे बस चुकग्या तो बस पाछी दूजै दिन मिळसी अर म्हारै छुट्टी फगत अेक दिन री बाकी है। प्रवीण लारला बीस बरस सूं सैर रै मांय रैवै, उणनै तो फगत मां सूं मिलणै गांव में आवणो पड़ै। डोकरी आखी उमर गांव में बितायादी इण वास्तै वा सहर री जिंदगी में जम नी सकै।

अेकर प्रवीण आयो तो दोन्यू गांव में आयोड़ो बदलाव माथै विचार करणो सुरू करयो। मां बोली, आज गांव में अपणायत कोनी। आज सगळा अेक दूजा अणजान रैय'र गांव में रैवै। न प्रेम अर आपणे स। गांव रा मकान भी धीरे–धीरे सूना हुवण लागग्या। लोग मकान छोड़'र सहर में बसग्या अर मकानां के ताळा जड़ग्या जिणां में कबूतर बोलै है। प्रवीण भी इण बात रो समर्थन करै अर कैवै– 'मां म्हनै तो इयां लागै के गांव धीरै–धीरै उजड़ जासी अर मानखो सहरां में जायर बस ज्यासी। आज गांव री संस्क्रति रा जका तत्त्व दीसता, वै धीरै–धीरै लोप हुय जासी। आं सगळी स्थितियां रो भावी पीढ़ी घणौ असर हुयसी।

पछै मां कैवै के म्हारी आंख्या रै इलाज में कतोक बखत लागसी। प्रवीण समझावै अर घर संभालण वास्तै मां विमला मास्टरणी नै बात कैवै। जद विमला नै बुलाय'र प्रवीण री मां सगळी बात बताई तो वा त्यार हुय ज्यावैं मां उण नै घर री लाम्बी सम्हाल भोकावण रै पेटे बता देवै। दूजै दिन बेगी उठ'र आपरा नेम–टेम सूं पूजा–पाठ कर लेवै। दिनूगै डोकरी रो बस माथै जावण आळै दरसाव सारू प्रवीण कैवै– 'मां री आंख्यां जळजळी अर कंठ गळगळौ होयग्यो हो। गळै में डूचो आय जावण सूं मूंडै सूं बोल नी फूटै हो। पैलड़ी वार सासरै जावण वाळी कन्या जिसी हालत डोकरी री होय री है।' प्रवीण कैवै 'वो अेक अजब नजारो हो।' प्रवीण नै उम्मीद नी ही के अैड़ो अपणेस रो दरसाव सामै आय जावैलो। वो तो हाक–बाक होयग्यो, पण हिम्मत राख'र डोकरी नै नीठ बोली राखी अर बस आई अर रवाना हुयगी।

'विदाई' कहाणी रो कथानक सांतरो अर गांव री बदळती स्थिति सूं जुडयोड़ी है। कथावस्तु कहाणी रो खास ढांचो है इण रै मांय एक या अेक सूं अधिक घटनावां रा तंतुजाळ आपस में मिल्योड़ा हुवै। विदाई कहाणी में मुख्य तो प्रवीण अर उण री मां री घटना है। पण दूजी अेक और घटना विमला मास्टरणी री जुडयोड़ी है जकी पढ़ी–लिखी अर आपरै पैरां माथै खड़ी है। पण बा आपरै पति सूं छोडयोड़ी है। कहाणी रो कथानक सामाजिक अर सांस्क्रतिक स्थिति सूं जुडयोड़ो है जिण रै मांय ऊपरी तौर पर बड़ी घटना कोई नी। प्रवीण सहर में बसग्यो मां रो मन सहर में लागै कोनी, इण वास्तै वा गांव में रैवै पण जद उण नै अेक आंख रो आपरेसन करवाणो पड़ै तद वा आपरै बेटा रै साथ गांव सूं विदा हुवै घणै लाडकोड रै साथै। कहाणी भावनात्मक स्तर पर गांव अर सहर सूं जुडयोड़ी संस्क्रति रै बदळाव री पीड़ा नै उजागर करै।

कहाणी रा घटना में सुभाविकता है। प्रवीण रो सहर में बसणो उण री मजबूरी है तो मां रो गांव में रैवणो मजबूरी। बस, इण कसमकस रो चित्रण यथार्थ परिवेस रै साथै कहाणी में हुयो है। कहाणी रै कथानक में विकास रा दीठ सूं च्यार स्थितियां मानी जावै– 1. आरम्भ 2. घटना रो विकास 3. चरम सीमा 4. अंत। 'विदाई' कहाणी में आं च्यारूं स्थितियां रो सांतरो रूप हुवण सूं कहाणी प्रभावी है। घटनावां में रोचकता अर पाठक नै बांधणै री ताकत है।

2. पात्र अर चरित्र–चित्रण– कहाणी रै मांय पात्र योजना रो विसेस महत्त्व है। कथा रो विकास भी चरित्र–चित्रण रै माध्यम सूं हुवै अर लेखक कीं पात्रां रै चरित्र रो उद्घाटण करनै अेक प्रभाव पाठकां माथै छोड़ै। 'विदाई' कहाणी में दो पात्र प्रवीण अर उण री मां महताऊ है। प्रवीण नुवीं पीढ़ी रो प्रतीक है। वो पढलिख'र नौकरी री तलास करै अर प्रोफेसर बण ज्यावै। प्रवीण पढयो–लिख्यो समझदार अर

आपरी मां सारू घणो मान–सम्मान राखणै वाळो है। वो आपरी मां नै सहर में ल्यावण री घणी कोसीस करी, पण मां सहर आ नी सकी। अंत में मां री आंख रो आपरेसन वास्ते मां रो आवणो मजबूरी हुयग्यो।

मां पुराणै विचारां री है। गांव रै घर में उण री आपरी दुनिया है। मां रो मन धर्म–कर्म पूजा–पाठ सेवा भाव सूं जुडयोड़ो है। जको सुंततरता वा आपरै गांव में महसूस करै, वां उणनै सहर में नीं मिलै। इण वास्तै मां रा संस्कार आपणी संस्क्रति सूं जुडयोड़ा है। जद मां आंख रै आपरेसण वास्तै जावै तो विमला मास्टरणी नै वा ठाकुरजी री पूजा, तुलसी रै थालौ, जिनावरां नै चुगो–पाणी इत्याद सेवा–पूजा रा केई काम भोळावै। जीव जिनावर, पंखेरू अै मां रै परिवार रा सदस्य हैं अर वा आं री सेवा में आपरो सगळो बखत बिताय दे। प्रवीण गांव में नीं रैय सकै तो मां सहर में नी रैय सकै। दोन्यू पात्रां री मजबूरी सुभाविक अर वास्तविक है। अै दोन्यूं पात्र आपणी गंवाई अर सहरी संस्क्रति रा प्रतीक है अर अै आज आपणै सूं छूट रैया हैं। प्रो. प्रवीण आपरी मां कनै बैठयो उण रै कुटुम्ब परिवार री बात सुणी तो उणरौ हिवड़ौ भरीजग्यो। वो कीं कैवणो चावो हो पण कंठावरोध होय जावण सूं बोल नी सक्यो।

3. संवाद– कथानक रो विकास संवादां रै जरिए आगै बढै। संवाद पात्रां रै चरित्र री विसेसतावां भी प्रगटै तो कहाणी नै रोचक भी बणावै। संवादां सारू कहयो गयो है के बै छोटा, प्रभावी अर रोचक होवणां चाइजै। 'विदाई' कहाणी में कथानक रो अत्तो लाम्बा–चवड़ौ तंतुजाळ नी है पण संवादां रो सांतरो रूप है जिण सूं कहाणी आगै भी बधे अर पात्रां रै चरित्र रो विकास भी हुवै। विदाई कहाणी रै संवादां रो अेक नमूनो देखीजै–

'कुण होसी? डोकरी कयौ

'आ तो म्है विमला हूं माजी'

'आव बेटी आव। उमर तो थारी लाम्बी है। अबार म्है थारी इज बात करै हा।

'उमर लांबी होसी तो खुरड़ा बेसी खोतरणा पड़सी माजी।'

आपरै कनै आवण रो विचार तो सिझयां रा रात सूं हो पण अबार फुरसत में ही सो आयगी।'

इणी भांत अेक और नमूनो इण भांत है–

'आप निस्चिंत होय नै पधारो। घर बाबत आप कोई प्रकार री चिंता मत कराईजौ।'

थनै सूंपनै जावूं पछै चिंता किण बात री?

माजी म्है आपरो मकान काच रै समान साफ सुथरौ राखसूं। आप नेहचो राखजो।

म्हनै थारौ पर विस्वास है बेटा। पण थूं दो तीन बातां रो पूरो ध्यान राखजै।

आप सगळी बातां म्हनै खुलासै वार समझाय दो माजी। म्हैं पूरो ध्यान राखसूं।

इण तरै पात्रां री बातां सूं कथानक भी आगै बधै अर मां रै चरित्र री विसेसतावां भी आपणै सामी आवै 'विदाई' कहाणी रा संवाद विचारां रा तंतुजाळ सूं जुडयोड़ा हैं। माजी रा संवाद सटीक अर आपरी पीढ़ी रा सोच नै प्रगट करण आळा है।

4 वातावरण– कहाणी रै मांय वातावरण रो आपरो महत्त्व है। वातावरण सूं कहाणी सजीव अर यथार्थवादी बणै। जद आपां कोई कथानक लेवा तो वो कथानक किणी नै किणी परिवेस सूं जुडयोड़ो है। ओ परिवेस मिनख रो बणायोड़ो है। इण वास्तै कहाणी में मिनख अर उण रा परिवेस रो जोरदार चित्रण जरूरी है। 'विदाई' कहाणी गांवां रै बदळतै सरूप अर संस्क्रति रो सांगोपांग चित्रण करै। मां जद सहर में नीं रैय सकै अर पाछी गांव में आजावै उण बखत रै वातावरण रो कहाणी में जींवत चित्रण हुयौ है– 'बेटा–बहू घणा इज लारै पड़ै तो च्यार दिन टाबरां कनै रैय आवूं पण छेवट गांव आयां ई नेहचो होवै। सहर में फ्लैट री जिंदगी उणनै कैद रै उनमान लखावै। हर बखत दरवाजौ बंद करनै

दड़बै में बैठा रैवौ। आ कियां हुय सकै? आखी उमर खुलै आभै रै नीचै आजादी सूं विचरण कियोड़ै प्राणी रौ इण वातावरण में जीव अमूंझण सो लागै। उठै कठै वा गांव वाळी बात–बंतलण, उठक–बैठक, कथा–वारता, भजन भाव अर भाई–सैण सूं मेल–मुलाकात। थोड़ाक दिन होवै के' इण कैदखानै में डोकरी रो जीव तो जाणै अमूंझण लागै अर छेवट बेटै नै कैवणो पड़ै– 'प्रवीण, म्हनै तो अबै गांव पुगाय दे रे डीकरा। म्हारो अठै मन नीं लागै।' इण तरै कहाणी में अेक सजीव वातावरण रो चित्रण हुयोड़ो है।

5. भासा–सैली– कहाणी सारू सीधी–सरल भासा होवणी जरूरी है। जिण सूं कहाणी आपरै कथ्य नै पाठकां रै सामी प्रभावी ढंग सूं प्रगट कर सकै। 'विदाई' कहाणी री भासा सीधी–सरल है अर वा पात्रां रै चरित्र अर वातावरण नै सजीव रूप सूं प्रस्तुत करै। जियां– 'पण ज्यूं–ज्यूं घर छोडण रा दिन नैड़ा आवण लाग्या डोकरी रो मन उदास रैवण लाग्यो। उण नै मन में पक्की जचगी कै अेकर घर छोडयां पछै वा इण घर री पेड़ी पाछी नी चढ़ैली। इण गांव रा झाड़का पाछा नीं देखैला। उण रै निजरां सामी गांव रा केई डोकरा मिनख आपरा बेटा–बहूवां सागै देस–दिसावर गया तो पाछा गांव आवण सारू तरसता रैयग्या। कई तो उठै प्राण त्याग नै असैंधा भूतां में मिळग्या। डोकरी नै पक्की जचगी के उणरी पण सागण आ ई हालत होवणी है।'

6. कहाणी री सैली भी केई भांत री हुवै– वरणात्मक, संवादात्मक, डायरी इत्याद। 'विदाई' कहाणी में वरणात्मक अर कठै–कठै संवादात्मक सैली रो सांतरो प्रयोग हुयो है। जरूरत मुताबिक कठै–कठै अंग्रेजी सबदां रो प्रयोग भी हुयो है। जियां– 'आइडेनटिटी'। कहाणी में कहावत अर मुहावरां रो प्रयोग भी भाव–व्यंजक है जियां– 'जीणो क्यूं के मौत कोनी आवै, नरजाणै दिन जात है अर दिन जाणै नर जात', आक रो आक में राजी अर नीम रौ नीम में राजी इत्याद।

7. उद्देस्य– 'विदाई' कहाणी बदळतै गांव री सांची तस्वीर आपणै सामै राखैं आजादी रै पछै गांव में खेतीबाड़ी रो धंधो मंदो पड़ग्यो। पढया–लिख्या आदमी सहरां रै मांय नौकरी करण बसग्या। गांव खाली अर सूना हुयग्या पण बुजुर्ग लोग गांव नीं छोड़ सक्या। आ बांरी मजबूरी ही। 'विदाई' इणी पीड़ा नै मां रै माध्यम सूं ई गांव नै दिखायो है। कहाणी आज रै हालात माथै सांतरो वर्णन करै।

12.7 प्रो. प्रवीण रो चरित्र–चित्रण

विदाई कहाणी रो प्रमुख पात्र प्रवीण कुमार है। उणरो जलम गांव में हुयो पण पढ़–लिख'र बो जद प्रोफेसर बणग्यो तो उणरो सहर में रैवणो जरूरी हो। प्रवीण आपरै रोजगार री द्रस्टि सूं सहर माय फ्लैट लेय'र रैवण लाग ज्यावै। उण री मां सदा सूं गांव में रैयी, इण वास्तै उण नै सहर री जिंदगी रास नी आवै अर बा गांव में ई रैयी। प्रवीण रो चरित्र सांचोड़ै रूप में कहाणीकार अठै प्रस्तुत करयो है।

1. सिक्षित व्यक्ति– प्रवीण गांव में जलम्यो। पढणै–लिखणै में होंसियार हो इण वास्तै प्रोफेसर रो पद भी उण नै मिल्यो अर बो लारला बीस बरस सूं सहर रै मांय मकान लेय'र रेवै। उणरी मां नै सहर रास नी आयो इण वास्तै बा गांव में रैयी अर मां रै कारण प्रवीण रो भी गांव सूं सम्पर्क बण्यो रैयो। प्रवीण आपरा टाबरां नै भी सहर में पढावै इण वास्तै प्रवीण री लुगाई अर टाबर सगळा सहर में रैवै। अेक दो बार मां आपरै टाबरां सूं मिलणै वास्तै सहर में गई पण उण रो मन बठै लाग्यो नी। बा बेगी ई गांव पाछी आवण री बात प्रवीण नै कैवती। प्रवीण नै गांव री अेक तकलीफ रैवती के गांव में फगत अेक ई बस दिनूगै सहर में जावती अर बा इज पाछी आवती।

2. मां रै प्रति सम्मान– पढया लिख्या अर सहर में रैवणै रै पछै भी प्रवीण में आपरी मां सारू घणी श्रद्धा ही। उण रो मन बरोबर मां सारू कसकसातो पण मां सहर आवती नी। जद मां री आंख्यां री रोसनी कम हुई तो प्रवीण सोच लियो के अब मां नै ले आवणी चाइजै– 'अबै इण नै अठै किणरै भरोसे छोड़णी?

कालै कोई ओछी–बती होयगी तो दुनिया माजनै में धूड़ घालसी के लो सा अै कमाऊ अर भणिया गुणिया बेटा। छेहली उमर में खुद री मां नै ई कोनी संभाल सक्या।' इण सूं लागै के प्रवीण आपरी मां सारू पूरो सनमान राखतो।

3. अर्थतंत्र रै चक्कर में परिवार रो टूटणो– प्रवीण इण बात नै मंजूर करै के पैलां गांव रा सगळा लोग अेक कुटुम्ब रै माय रैवता। खास धंधो खेती रो हो अर केई पीढ़ियां सूं सगळा लोग ई में लाग्योड़ा हा। पण आजादी रै पछै पढाई–लिखाई रै कारणै नौकरयां कानी लोग जावण लाग्या अर कुटुम्ब टूट गया, गांव सूना हुवण लाग्या। प्रवीण रै मन में ई बात री कसक है के आज बो कठै अर उण री मां कठै। अेक भाई अेक सहर में तो दूजो भाई दूजी ठौड़। इण बिखराव रै कारण परिवार टूटग्यो अर आपसी मेळजोळ भी खतम हुयग्यो। प्रवीण इण बात नै खुद मैसूस करी के अर्थतन्त्र रै कारण गांव अर अठै री संस्क्रति साव चौपट हुयगी।

4. गांव सूं प्रेम– प्रवीण कुमार पढ़ लिख'र सहर में रैवण लागग्यो पण फेरू भी उण रो आपरा गांव सूं घणो प्रेम हो। जद वो आपरै गांव आवतो तो सगळा सूं हथाई करतो, मिलतो अर आपरो अपणेस उणां नै दरसावतो। कहाणी में बतायो गयो– पण आज प्रवीण ब्यालू करनै हथाई माथै गयो हो। कालै उणनै आपरा मां रै सागै सहर जावणो है। पछै न जाणै पाछो गांव कद आइजै। गांव रा केई डोकरा–डोकरा मिनख अदरींगबा, मूळौबा अर मुक नो बा सफा खड़क माथै आयोड़ा बैठा हा। कांईठा अब कालै पाछो गांव आयां इणारो मेळो होवै के नीं? इण वास्तै प्रवीण किरत्यां ढळी जितरै हथाई माथै बैठो सगळा सूं गपसप करतो रैयो।' इयां ई जद प्रवीण अर उणरी मां घरां सूं बस स्टैण्ड कानी रवाना हुया तो बठै अेक अजब नजारो पैदा हुयग्यो। प्रवीण नै उम्मीद नीं ही। वो हाक–बाक होयग्यो। पण हिम्मत राख–र डोकरी नै नीठ बोली राखी।

5. धीजौ राखण वाळो– प्रवीण भण्यो–गुण्यो होवण रै साथै ई धीजौ राखण वाळो प्रोफेसर हो। आगै–पाछै री सगळी बातां नै सोचतो अर आपरै परिवार माफिक आपरै गृहस्थी रो धरम निभावतो। प्रवीण ई बात नै जाणतो के मां बरसां तांई गांव रैयी इण वास्तै उण सूं सहर में रैवणो दोरो होवै। पण जद देख्यो के मां री आंख में मोतियाबिंद बणग्यो तो उण रो इलाज कराणो जरूरी हो अर वो इण वास्तै ई मां नै सहर ल्यावण गयो हो। डोकरी सहर रै नांव सूं उदास रैवण लागी। उण रै मन में पक्की जचगी के अेकर घर छोडया पछै वा फेरू इण घर री पैड़यां नी चढैली। उण रै सामी आपरै गांव रा घण जणां रो चेरो सामी आयग्यो जका गांव छोड'र सहर में गयां पछै बै पाछा नी आय सक्या। आजादी रै पछै तो घणां परिवार बारै जावण लागग्या अर गांव रै घरां में ताळा लागण लाग्या। प्रवीण इण बात नै मानतो के अब मां नै गांव में छोड़णो उचित नी है आ उण री समझदारी ही क्यूंके अैड़ी स्थिति में गांव कांई कहसी। प्रवीण रो ओ विचार उण री मां सारू सरधा भाव नै प्रगटै। वो भी चावतो के मां नै किणी बात रा तकलीफ नी हुवै अर गांव नै बिना बात ई चरचा रो अेक विसै मिलै।

इण तरै प्रवीण रै माध्यम सूं आज री पीढ़ी रो सोच आपणै सामै आवै। वो प्रगतिसील विचारां रो है अर आ चावै के आज परिवार रो जको संकट स्त्री–पुरूस रै सागै है उण रो अेक ई उपाय है के बै पढ़ै अर आपरै पगां माथै खड़ा हुवै। विमला मास्टरणी री बो इण वास्तै ई तारीफ करै के बा छोड़योड़ी है पण थोड़ी भणी–गुणी होवण सूं उणनै नौकरी मिलगी अर आज बा आपरो जीवन चला सकै है।

12.8 महताऊ प्रसंग

विदाई कहाणी रै मांय कीं महताऊ प्रसंग भी राखीज्या है। आं प्रसंगां री विवेचना भी घणी लाजमी है जियां–

वास्तव में आज गांव उजड़ रैया है। अर सहर बस रया है। आ अेक विस्वव्यापी समस्या है। इण रै सागै

मोटे दुख री बात आ है के गांवां री आदू अर जम्यो–जमायौ मूळ ढाचौ बिखर रयो है अर इण री ठौड़ नुंवै अर सुधार रै नांव जिको कीं आय रयो है वो सै उधार लियोड़ो अर अपरोखौ सो लखावै। इण हिसाब सूं गांवाई संस्क्रति रा मूळ तत्त्व ई थोड़ा बरसां में खतम हुय जासी।

व्याख्या– प्रवीण आपरी मां रै बारै में विचार करतो कैवै के मां अणपढ़ है– पढ़ी लिखी कोनी। गांव में ई रैयी पण पछै भी आज रै हालात माथै उण रा विचार साव सांचा अर गैरा है। आजादी रै पछै गांवां रो जच्या–जचाया ढांचा में घणो बदळाव आयो। लोकतंत्र री नुंवी हवा चाली तो सामन्ती ढांचो टूटयो। पैलां लोग गांव में खेती करता। पण पछै परिवार बढयो–लोग भण्या गुण्या हुवण लाग्या तो नौकरी री जुगत सारू सहरां कानी भाग्या। ई बात रो असर गांवां री जिंदगी माथै घणो हुयो। सहर रो आकर्सण बढयो– कीं जरूरत अर मजबूरी भी बणी। इण रै कारण गांव खाली हुवण लाग्या। जका पढया–लिख्या सहर में नौकरी ढूंढी, वां नौकरी लागणै रै पछै आपरा परिवार नै भी सहर में ले आया– टाबरां नै पढावण सारू। ई स्थिति रै कारण गांव उजड़ण लाग्या। आ स्थिति फगत आपणै प्रांत री हुवै, अैड़ी बात नी। आखी दुनियां में सहर रो आकर्सण पैदा हुयो जिणसूं गांव उजड़णा सुरू हुया। आज गांव उजड़ता जा रया है अर सहर रात–दिन फैलता जा रया है। आ गांव–परिवार अर संस्क्रति रै बदळाव री मोटी समस्या है।

इण बदलाव रो मोटो असर ओ हुयो के गांव री हालत बदळ री है। गांव जकै रै कारण गांव कहयो जावतो– उण सरूप में बड़ो अन्तर आयगो। गांव री आबोहवा, रहन–सहन अर ऊठ–बैठ बदळगी है। गांवां रै सुधार रूप में जकी चीजां गांव में आय रैयी है बे सगळी उधार लियोड़ी, गांव रै ढांचै सूं अपरोगी अर इचरज पैदा करबाळी हैं इण सूं लागै के गांव नी गांव रहयो अर नी सहर। गांव रा मूल तत्त्व आज बिखर रहया है। गांवां में पैलां मेळ मिलाप अर अेक दूजै री मदद करणै रो भाव हो पण अब सगळा आप–आपरी सोचै अर आप–आपरी करैं, इण सूं लागै के आज गांव–गांव नी रहया हैं। गांव री संस्क्रति सहरी संस्क्रति सूं प्रभावित हुय रैयी है अर बा गांव रै हित में कतई नी है।

टिप्पण– अठै लेखक गांव रै बदळतै ढांचै अर संस्क्रति रै संकट कानी संकेत करै।

प्रसंग –2

'वा आपरी परम्परा अर संस्क्रति सूं सफा अजाण रैयनै आपरी जड़ा सूं कट जासी। उण री आपरी निजू 'आहडेनटिटी' अंगांई खतम हुय जासी। मायत अठै बसै है तो बेटो जाणै कठै जाय नै डेरा करसी। मां कैवै ज्यूं गांव अर परिवार दोनूं बरबाद हुय जासी। ओछी राजनीति अर तथाकथित सुधार गांवड़ां रै परम्परागत ढांचै नै अंगांई बिगाड़ नाखसी तो बिखराव अर व्यक्तिवादी भावना परिवार नाम री चीज नै बरबाद करसी।'

अठै प्रवीण फेरूं आपरी मां री कयोड़ी बात माथै विचार करतो हुयो कैवै के जद मिनख आपरी परम्परा अर संस्क्रति सूं साव अजाण हुय जासी तो बो आपरी जड़ा सूं कट जासी। गांव री संस्क्रति तो मिनख री जड़ है। अठै सूं उणनै संस्कार, परम्परा अर गरिमा मिलै। इण गांव रै कारण उण री पिछाण है, अस्तित्व है अर उण सूं ई उण रै साथै घणी बातां जुड़ी है जकी उण री है, गांव री हैं अर गांव री संस्क्रति री है। जकै दिन आ पिछाण खतम हुय जासी, उण दिन माइत कठै ई रैवो तो बो खुद कठै ई रैवो। ओ घालमेल किणी भी मिनख रै अस्तित्व सारू अेक मोटो संकट पैदा करण आळो है। इण सूं गांव अर परिवार दोनूं बरबाद हुय जासी अर गांव अर परिवार रा आपरी संस्क्रति अर परम्परा नी रही तो पछै बो किस्यो गांव अर किसी संस्क्रति। संस्क्रति तो मिनख री जड़ है अठै सूं ई उण नै जिंदा रैवण रा संस्कार मिलै, परम्परा अर नुवीं अरजा मिळै। संस्क्रति सूं ई गर्व–गुमान अर स्वाभिमान री भावना उपजै। गांव बदळ रैया है पण इण सूं जकी संस्क्रति पनप रैयी है वा मिनख मिनख री पिछाण

नीं बण सकै।

12.9 सवाल

1. 'विदाई' कहाणी रो कथासार आपरै सबदां में लिखो।
2. 'विदाई कहाणी यथार्थवादी है' इण कथन री समीक्षा करो।
3. इण कहाणी रै मांय गांवाई संस्क्रति री टूटती स्थिति नै प्रकट करी है, इण री समीक्षा करो।
4. प्रवीण रै चरित्र री विसेसतावां बतावो?

12.10 सन्दर्भ

1. राजस्थानी कहाणी अर लोकजीवन : डॉ. चेतन स्वामी
2. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य : डॉ. कल्याण सिंह शेखावत

इकाई – 13

आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य – प्रमुख राजस्थानी निबंधकार डॉ. मनोहर शर्मा

इकाई रो मंडाण

13.0 उद्देस्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 निबंध विधा री परिभासा तत्व अर बंटवारो

13.3 राजस्थानी भासा रो निबंध साहित्य

13.4 डॉ. मनोहर शर्मा रो परिचै अर साहित्य लेखन

13.5 डॉ. मनोहर शर्मा री निबंधां री भासा, सेली, विसयवस्तु अर सिल्प

13.6 महताऊ निबंध रा गद्यांस– दो व्याख्या अर सबदां रा अरथ टिप्पण

13.7 डॉ. मनोहर शर्मा रो योगदान

13.8 इकाई रो सार

13.9 अभ्यास रा सवाल

13.10 पढ़णजोग पोथ्यां

13.0 उद्देस्य

इण इकाई रो उद्देस्य है–

(1) राजस्थानी निबंध साहित्य रै उद्‌भव अर विकास री जाणकारी करावणौ।

(2) राजस्थानी भासा रा निबन्ध साहित्य अर निबंधां री विगत सामी ल्यावणौ।

(3) राजस्थानी भासा रा निबंधकार डॉ. मनोहर शर्मा रो परिचय करावणौ।

(4) डॉ. मनोहर शर्मा रा निबंध साहित्य रो मूल्यांकन करणो।

(5) डॉ. मनोहर शर्मा रो राजस्थानी निबंध साहित्य नै कांई योगदान है ? इण बाबत चर्चा करणी।

13.1 प्रस्तावना

(1) डॉ. मनोहर शर्मा रो जलम भारत री आजादी रै पैली हुयौ। इण कारण उणां गुलाम भारत री दुरदसा अर रियासती राज रो जुग निजरां देख्यौ है। आजादी खातर जूझंता अर प्राणां री आहुती देवण वाळा क्रांतिकारियां री देसभगती नै देखी है– मोहनदास करमचंद गांधी रा अहिंसकजन आंदोलना नै भी परतख देख्यौ है।

(2) इण जुग रो असर राजस्थानी भासा रा आधुनिक साहित्य रै साथै–साथै डॉ. मनोहर शर्मा रा सिरजण पर भी पड्‌यौ है। जुग रै वातावरण रै सामी राख'र इण इकाई रो लेखन करयौ गयौ है।

(3) आधुनिक राजस्थानी साहित्य लेखन में भी नई–नई गद्य विधावां रो जलम हुयो अर भांत–भांत रो उत्तम सिरजण हुयौ है।

(4) निबंध भी इण जुग री सबळी अर नई विद्या है। निबंध साहित्य री कूंत करणी इण इकाई री प्रस्तावना है।

13.2 'निबंध' रो उतपत अरथ, परिभासा अर तत्व

'निबंध' सबद री उतपत भारत में संस्कृत, हिन्दी अर राजस्थानी भासावां में अलग–अलग दियौड़ी है। इणी भांत फ्रैंच अर अंग्रेजी भासावां में अलग ही दीठ है।

संस्कृत भासा में– संस्कृत में निबंध सबद रौ अरथ अर परिभासा नीचै मुजब दियौड़ी है– 'निबंध' अर्थात् नि+बन्ध (बांधना)+धत्र (संग्रह) रोकना (वाचस्पत्यम)। इणरो अरथ है :निःशेष बंध' अथवा 'कसयौड़ो बन्ध'। इणसूं आ बात साफ व्है कै निबंध गद्य री बा विद्या है जिणमें भावां अर विचारां नै आछै ढंग सूं बांध'र कम सूं कम सबदां में आखरां ढाळीजै।

हिन्दी भासा में– 'हिन्दी साहित्य कोश' में निबंध सूं मतलब है भली भांत बंध्यौड़ी, गठीजयौड़ी या गुंथीजयौड़ी रचना।''

विद्वानां री आ मान्यता है कै पुराणा समै में रिसी–मुनि खुद रा विचारां नै भोजपतरां पर लिखता हा, जका बिखरयौड़ा रैवता। बां सब भोज पतरां नै बांध'र अेकठा करणै री क्रिया नै 'निबंध' कयौ जावतौ। घणा बरसां पछै निबंध रो रूढ़ार्थ गद्य रचना या साहित्य रचना रै रूप में जग चावो हुयौ। इण तरै निबंध सबद रा दो तरै रा अरथ है– पेलो सबदार्थ अर दूजो गुढार्थ।

आप्टे 'रा हिन्दी शब्द कोश में निबंध रा बारह अरथ दियौड़ा है जिणा में 'गढा हुआ', 'कसा हुआ', 'बंधन युक्त' खास है।

यूरोप री दीठ में– यूरोप रा विद्वान निबंध री न्यारी–न्यारी परिभासावां दी है। सबसू पैली निबंध फ्रांस री फ्रैंच भासा में लिखीज्यौ। फ्रांस रो विद्वान रचनाकार माइकल दी मौन्तेन सोळवी सदी रो निबंध गद्यविधा रो जनक मानीजै अर अंग्रेजी भासा में निबंध री सरुआत करणवाळो अब्राहम काडल (16वीं सदी) मानीजै। इणी समै अंग्रेजी भासा रा निबंधकार रिचर्ड स्टील अर जोजेक एडीसन री पोथ्यां सूं भी निबंध विधा रा दरसाव सामी आवै।

भारतीय भासावां में आपां जिणनै निबंध कैवां बो मूळरूप सूं लेटिन भासा रा एग्ज़ीजिर (Exegere) सबद सूं आयौड़ौ है। लेटिन रा इणी 'इग्ज़ीजिर' सबद सूं फ्रैंच भासा रो ऐसाई (Essai) बण्यौ अर अंग्रेजी रो एस्से (Essay)। आं तीनूं भासावां रा सबदां रा अरथ में थोड़ो फरक है। लेटिन भासा में 'एग्ज़ीजिर' (Exagere) रो मतलब है ''पूरी तरै निस्चित हूयर निरख–परख करणी। अंग्रेजी भासा में एस्से (Essay) रो अरथ है कोसीस, प्रयोग या परीक्षण करणौ, पण साहित्य री दीठ सूं निबंधलेखक किणी विसय (subject) या उणरा किणी भाग या प्रसंग पर निज भासा–सैली में, आत्मीय अथवा बिना आत्मीय भाव रै निजता या निजता रै बगेर, जका भाव अर विचार लिखै उणनै निबंध कयौ जावै। निबंध लेखन में विस्तार री जागां लघुता रो आधार लैयर क्रमबद्ध अर बार–बार आवणवाळा भाव, विचार अर सबदां री आवृति नहीं करी जावै। इण तरै निबंध क्रमबद्ध, गंभीर अर प्रौढ़ रचना मानीजै।

अंग्रेजी भासा रा निबंधकार **बेकन** रो मत है कै– ''निबंध कीं गिणिया–चुणिया पाना में थोड़ा फैलाव में हूवणौ चाइजै, जिणमें सार सूं भरिया ठोस विचारां रो निर्देस व्है।''

अंग्रेजी विद्वान **हडसन** रै मुजब– ''निबंध किणी विसय या विसयां रा किणी खास बिन्दु पर लिखयौड़ी

बा रचना है, जकी आकार में बंधयौड़ी व्है। मूळ रूप में इणमें पूरणता री कमी लखावै पण अब थोड़ी भोत उदात सैली सूं मंजयौड़ी पण फैलाव री सींव में बंध्यौड़ी रचना निबंध कहीजै।''

हिन्दी भासा रा विद्वाना री मान्यता है के – ''निबंध उस साहित्यिक रचना की संज्ञा है जिसमें किसी निश्चित विषय अथवा उसके किसी अंग विशेष का व्यवस्थित क्रम सीमित विस्तार में प्रतिपादित हो।''

''निबंध मानवीय मस्तिष्क के मनन, चिंतन तथा सांस्कृतिक विकास का द्योतक है।''

आचार्य रामचंद्र शुक्ल दी दीठ में– ''निबंध गंभीर विचारों की अभिव्यक्ति की शक्तिशाली विधा है।''

निबंधां रो वर्गीकरण

निबंधां नै लेख, आलेख, आद कई नामां सूं बखाणीजै। इणांरो बंटवारो नीचै मुजब कर्‌यौ जा सकै है–

(1) विचार प्रधान निबंध

(2) भाव प्रधान निबंध

(3) गल्प परम्परा रा कथा प्रधान निबंध

(4) बरणात्मक निबंध

(5) संस्मरण भरिया निबंध– संस्मरणात्मक

(6) वारता प्रधान निबंध

(7) रेखाचितराम भरिया निबंध

13.3 राजस्थानी भासा रो निबंध साहित्य

आधुनिक निबंध साहित्य दो कालखण्डां में बांट्‌यौ जा सकै है–

(1) आजादी रै पैली रो निबंध साहित्य अर (2) आजादी रै पछै रो निबंध साहित्य/साहित्य जुग रै राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अर भणाई–गुणाई रा वातावरण रो असर लियौड़ौ हुया करै। जद ही तो कहीज्यौ है– साहित्य समाज री आरसी (दरपण) है। जुग री हकीकत नै साहित्यकार सबदरूप देवै अर इण तरै सांच अर इतिहास नै संभाळ'र आगै री पीढ़ी लग पुगावै। साहित्य इतिहास री निरसता नै अतिस्योक्ति अर सरसता सूं दूर करै। किणी बात नै कैवण अर लिखण रो ढंग अथवा भासा–सैली ही हुया करै जिणसूं साहित्य लोककण्ठां रो हार बणै। जूनी भासावां री ज्यूं राजस्थानी भासा रो जूनो साहित्य कविता रूप में हो– पछै काव्य रै साथै गद्य भी जुड्‌यौ अर गद्य–पद्य रो मिल्यौ–जुल्यौ रूप 'वचनिका' अर 'दवावैत' रै रूप में सामी आयौ। इण सैली में लिख्यौड़ी सैकड़ूं रचनावां अजै मिळै। आधुनिक समै लग आवतां–आवतां गद्य रो जोर बढ्‌यौ अर उणरी नई–नई विधावां रो जलम हुयौ– जिणांमें उपन्यास, कहाणी, नाटक, निबंध, एकांकी, रेखाचितराम, संस्मरण, डायरी लेखन, रिपोरताज, रूपक आद गिणावण जोग है।

राजस्थानी गद्य री जूनी परम्परा घणी समृद्ध है। राजस्थानी भासा रो उद्‌भव विक्रम री नोवीं सदी सूं मानीजै। विक्रमी 12वीं सदी सूं राजस्थानी काव्य अर चौदहवीं सदी सूं राजस्थानी गद्य को विकास हुयौ। तद सूं लैयर आधुनिक कालखण्ड लग राजस्थानी भासा में ऐतिहासिक गद्य जैन रचनाकारां रौ धरम प्रधान गद्य, टीकावां, टब्बा, अनुवाद अर कथात्मक गद्य घणो मिळै। ऐतिहासिक गद्य रै रूप में वातं, ख्यात् विगत, वंसवालियां पीढ़ियावलियां, दवावैत, वचनिकावां, पट्‌टावलियां, पट्‌टा, परवाना, सीलालेख, तांबापतर, कागद, हकीकत, प्रसंग, बालावबोध, चूर्णिकावां आद घणी तरै रो गद्य राजस्थानी भासा में लिख्यौड़ो मिळै। राजस्थानी भासा रो सबसूं जूनो गद्य विक्रमी संवत् 1330 में गुजरात रा आसापल्ली नगर में

ताड़तपत्तर पर लिखी– 'आराधना' नामक रचना है। इणरै पछै बालावबोध रै रूप में गद्य मिळै। कथात्मक गद्य रै रूप में 'पृथ्वीचंद चरित' अर वाग्विलास भासा अर कलात्मक गद्य री दीठ सूं गिणावण जोग पोथ्या है। इणीभांत 'खींची गंगेव नींबावत रो 'दोहपहरो', राजनराउत रो 'बात बणाव', रामदेव वैरावत री 'आखड़ी री वात' राजस्थानी भासा रा कलात्मक गद्य रा नामी उदाहरण है। इणी भांत वर्णानामक गद्य रा भी मोकळा ग्रंथ है, जिणा में समा शृंगार, जैन रचनाकार महिमा विजय री लिखी संवत 1760 री हस्त प्रति, 'कौतूहल' नाम बरणाव प्रधान गद्य पोथी अर जैसलमेर जैन भण्डार सूं 16वीं सदी में मिल्यां पत्रां में राजस्थानी भासा में लिख्या बरणाव जूनै राजस्थानी गद्य रा ही नमूना है।

जूनो राजस्थानी गद्य वातां, वारतावां रूप में भी घणो मिलै ज्यूं काव्यरूप में 'शिखरवंशोत्पति काव्य' अर गद्य रूप में 'कहर प्रकास' 'वचनिका' रूप में 'राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका', 'अचळदास खींची री वचनिका', 'माताजी री वचनिका'। दवावैत रूप में– 'जिनलाभ सूरि री दवावैत' अर 'नरसिंहदास गौड़ री दवावैत'।

पुराणी समृद्ध गद्य परम्परा सूं ही आज रा राजस्थानी भासा रा निबंधां रो जलम हुयौ है। जूनी राजस्थानी वाता में जकी भासा, सैली अर बरणाव री कळा रा भांत–भांत रा प्रयोग हुया उणरो असर आज रा निबंध में देख्यौ जा सकै है। वैदिक काल सूं वातां (कथावां) री आ अजरस धार संस्कृत भासा सूं सरू हूयर राजस्थानी लग पूगी है। भाव, भासा, विचार, अर सैली रो जको तानो–बानो जूनी बातां में गुंथीजयौड़ी है बो आज री निबंध विधा रै साव नेड़ो है।

इणी बात री साख भरता 'राजस्थानी निबंध संग्रह' रा सम्पादक श्री चंद्रसिंह लिख्यौ है– ''राजस्थानी रै उण प्राचीन गद्य में निबंध सैली रा बीज जठै–कठै बिखर्‌या मिलै। पण नया निबंध लिखण वास्तै तो अंग्रेजी सैली पर नवां रूप सूं नया प्रयास ही करणा पड़सी।''

आधुनिक राजस्थानी निबंध साहित्य अर प्रमुख निबन्धकार

राजस्थानी भासा में काव्य अर गद्य री न्यारी–न्यारी विधावां में, भांत–भांत रा भाव, विचार अर विसय लैयर निज सैली में घणो लेखन हूय रियौ है। आज री सबळी विधा निबंध री सिरजणा में मोकळा सिरजक लाग्यौड़ा है। अजै ताईं जको निबंध साहित्य पोथ्यां अर छापां में छप'र सामी आयौ है उणरी विगत नीचे मुजब है। ओ हू सकै है कै निबंध कम अर लेख ज्यादा छप्या व्है।

क्रमांक	पोथी रो नाम	लेखक	छापणवाला
1.	राजस्थानी निबंध संग्रह	चंद्रसिंह	राज. साहि. अकादमी, उदयपुर
2.	संस्कृति री सौरम	शक्तिदान कविया	थळवट प्रकाशन, जोधपुर
3.	रोहिड़ा रा फूल	डॉ. मनोहर शर्मा	राज. भाषा, सा. संस्कृति अकादमी, बीकानेर
4.	राजस्थानी निबंधमाळा	डॉ. मनोहर शर्मा	
5.	बलिहारी उण देसड़ै	मूळदान देपावत	
6.	माणक मोती	सुमेरसिंह शेखावत	
7.	राजस्थानी निबंध	डॉ. कल्याणसिंह शेखावत	
8.	मणिमाल	डॉ. कल्याणसिंह शेखावत	
9.	रसकळस	डॉ. कल्याणसिंह शेखावत	
10.	राज. साहित्य, संस्कृति और	सौभाग्यसिंह शेखावत	

	इतिहास	
11.	राज. विकास अर प्रकाश	डॉ. नरेद्र भानावत डॉ. लक्ष्मी कमल
12.	गळपट	अमोलक चंद जांगीड़
13.	रंग रूड़ो राजस्थान	डॉ. महेन्द्र भानावत
14.	धर मजलां धर कोसा	जहूरखां मेहर
15.	राज–संस्कृति रा चितराम	जहूरखां मेहर
16.	मुळकता मिनख : मोवणी धरती	अमरनाथ कश्यप

13.4 डॉ. मनोहर शर्मा रो परिचै अर साहित्य लेखन

डॉ. मनोहर शर्मा रौ जलम विक्रमी संवत् 1972 री आसोज वदी दूज रै दिन सेखावाटी रा बिसाऊ गांव में हुयौ। आपरै पिताजी रो नाम पं. जगनाथ शर्मा अर माताजी रो नाम धन्यदेवी हो। आपरी सरूआत री पढ़ाई बिसाऊ में ही हुई। आप सन् 1934 में दसवीं पास कर आगै री पढ़ाई चालू राखी। आप हिन्दी में एम.ए. करी अर पछै पी–एच.डी. उपाधि राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर सूं करी। आपरै सोध रो विसय हो 'राजस्थानी वात साहित्य– एक अध्ययन;।'

डॉ. मनोहर शर्मा हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं भासावां में खूब लिख्यौ है। राजस्थानी आपरी मायड़ भासा है। इण कारण आपरो मन अर कलम इणरा लेखन में घणी रमी है। गद्य अर पद्य री घणखरी विधावां में आप सिरजण कर्‌यौ है। जिणरी विगत नीचै मुजब है–

काव्य–

(1) अरावली की आत्मा (राजस्थानी कविता)
(2) गीत कथा (राजस्थानी शौर्य कथाएं)
(3) गांधी गाथा (राजस्थानी काव्य)
(4) कवि का गांव (हिन्दी काव्य)

गद्य लेखन–

(1) कन्यादान– (राजस्थानी कहानी संग्रह)
(2) नैणसी रो साकौ (राजस्थानी एकांकी संग्रह)
(3) रोहीड़ै रा फूल (राजस्थानी निबंध संग्रह)
(4) सोनल भींग (राजस्थानी लघुकथा संग्रह)
(5) धोरां रो संगीत (राजस्थानी गीति काव्य)

हिन्दी भासा रा लेख

(1) लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा
(2) राजस्थान लेख संग्रह
(3) राजस्थानी हरजस
(4) रससिद्ध रामनाथ कविया
(5) चंद्रसखी की पदावली– एक पर्यालोचन
(6) राजस्थानी लोक संस्कृति की रूपरेखा

(7) राजस्थानी साहित्य की– एक झांकी

सोध प्रबन्ध

(1) राजस्थानी वात साहित्य– एक अध्ययन

सम्पादन–

(1) बातां रो झूमको (तीन भाग)

(2) रणमल खाबड़िये री बात

(3) कुंवरसी सांखले

(4) बहलीमा री बात

(5) राहब–साहब

(6) राजस्थानी साहित्य संग्रह (प्रथम भाग)

(7) राजस्थानी कहावतों की कहानियां (दो भाग)

(8) गोपीचंद (लोक काव्य)

(9) चंद्रसखी भज बालकृष्ण छवि (पद संग्रह)

(10) आध्यात्मिक आलोक

(11) आध्यात्मिक वैभव

(12) सुदर्शन– कुसुमांजलि

अनुवाद–

(1) राजस्थानी रवीद्रवाणी

(2) राजस्थानी मेघदूत

(3) राजस्थानी उमर खैयाम

(4) वीतराम री वाणी

(5) राजस्थानी गीता सार

(6) 'वरदा' का सम्पादन

13.5 डॉ. मनोहर शर्मा री निबंधां री भासा, सैली, विसयवस्तु अर सिल्प

डॉ. मनोहरशर्मा रै निबंधां री विसयवस्तु, भासा अर सैली दो तरै री है (1) पोथी रूप में (2) छापां में छप्या निबंध

पोथी (1) रोहीड़ा रा फूल (2) राजस्थानी निबंधमाळा (सम्पादन)

रोहीड़ा रा फूल

डॉ. मनोहर शर्मा मूळरूप में राजस्थानी लोकसाहित्य रा विद्वान है। राजस्थानी लोक साहित्य बाबत आपरा घणाई लेख/आलेख छप्या है। आप रै सोध–प्रबन्ध रो विसय भी राजस्थानी वात साहित्य : एक अध्ययन ही हो। आपरै लेखां रो अेक संग्रह भी ''राजस्थान लेख संग्रह'' नाम सूं ही छप्यौ है।

रावत सारस्वत रै सबदां में, ''लोक कथावां रा मोटा पारखी है अर बे (डॉ. मनोहर शर्मा) लोक कथावां रा चालता फिरता कोस है। डॉ. कन्हैयालाल सहल अर अगरचंद नाहटा डॉ. मनोहर शर्मा नै लोक साहित्य रा बेजोड़ महारथी मानै।

लोक साहित्य रै साथ–साथ आप मोकळा निबंध भी राजस्थानी भासा में लिख्या है। आपरा निबंध री अेक पोथी– 'रोहीड़ै रा फूल' नाम सूं छप चुकी है जिण में 23 निबंध है। अे सगळा निबन्ध व्यंग्य सैली में लिख्यौड़ा है अर जुग री हकीकत नै उजागर करै। आज मिनखं में मिनखपणो खतम हूयग्यौ, ईमानदारी, सत् चरित, विस्वास, अपणास, भाई चारो, देस भगती सो कीं खतम हूवण लागरियो है। पुराणा मानवी गुण आज दुरगण बणग्या है। लूट माच री है। भस्टाचार जीवण रो आचरण बणग्यौ है। बेईमानी करतां अर झूठ बोलता न पछतावो है अर न ही जिझक। लोगां कनै काम कौनी– बेकारी बढ़ती जाय री है।

आं माड़ा हालात नै देख डॉ. मनोहर शर्मा 'रोहीड़ा' पेड़ रो प्रतीक बांध'र आज रा मिनखां री सच्चाई आखरां ढाळी है जकी थोड़ी कड़वी लागै। नाजोगा मजामें है पण विद्वानां रो मान–सनमान कोनी। इण सत नै दरसावतो 'लाख पासाव' निबंध लिखीज्यौ है। 'गादड़ पट्टो', 'अल्ला री माँ रो चाळीसो', 'गळतो', 'रोहीड़ा रा फूल', 'नोकरां रो कारखानो', 'आज रा सरपंच' आदि निबन्ध व्यंग्यात्मक है। 'रोहीड़ो' राजस्थान रौ चावो दरखत है। लाल फूलां सूं लदयौड़ो ओ बिरख दूर सूं लागै भी सोवणो– पण आं फूलां में सुगन्ध कोनी। आज रा नेता भी धोळा धप्प गाभा पैरयौड़ा दिखै तो सज्यौड़ा सा पण गुण बायरा है। उणां खातर रोहीड़ा रो प्रतीक सटीक है।

राजस्थानी निबंध–माळा– सम्पादक– डॉ. मनोहर शर्मा

सन् 1977 में राजस्थानी भाषा, साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर री पत्रिका 'जागती जोत' रै निबन्ध अंक रै रूप में आखरा ढ़ळयो ओ विसेसांक 20 निबंधकारां रा 20 निबंधा रो संकलन है जिणरै साथै दो अनुवाद भी दियौड़ा है। डॉ. किरण नाहटा रो– 'भल लूआं बाजो कितीं', डॉ. उदयवीर शर्मा रो 'अभिनंदन ग्रंथ री वेदना', सौभाग्यसिंह शेखावत रो 'चाटू', डॉ. राजकृष्ण दूगड़ रो 'अड़वड़ पंच', भूरसिंह राठौड़ रो 'रंगरेलो', डॉ. मनोहर शर्मा रो 'लाख पसाव', डॉ. नरेन्द्र भानावत रो 'बिरखा–बीनणी', डॉ. जयचंद्र रो 'गिन्दड़', अगरचंद नाहटा रो 'राजस्थान रो एक प्राचीन नगर– वीकमपुर', रामेश्वर दयाल श्रीमाली रो 'मंगळ अजै अळघो है', डॉ. भूपतिराम साकरिया रो 'बळि–, श्रीलाल नथमल जोशी रो 'ऊमर', नृसिंह राजपुरोहित रो 'बुढापो', डॉ. गोरधनसिंह शेखावत रो 'गांठां रा गठजोड़ा, कृष्णगोपाल शर्मा रो 'साफी', ब्रजनारायण पुरोहित रो 'सुख–दुख', मूळचंद प्राणेश रो 'जमीड़ली', मोहनलाल पुरोहित रो 'तकिया' कलाम भी घणा अजूबा', 'दामोदर शर्मा रो 'गूंगोलेखक', सूर्यशंकर पारीक रो 'मिनखपणो– अे बीस निबंध सम्पादित है।

सम्पादक इण संकलन बाबत बतावै है' क ''प्रस्तुत संग्रह में बाईस राजस्थानी निबंध प्रकासित कर्‌या गया है। ये निबंध न्यारी–न्यारी सैलियां में है अर अनेक प्रकार रा है। लेखक रो निजूं अनुभव अर उणरै प्रस्तुतीकरण री सैली निबंध री खास विसेसतावां हुवै। सुंकलन रै प्रायः सगळै ई निबंधां में अे खूबियां मिळसी। फेर भी संग्रह रा कुछेक निबंध इसा भी हुय सकै है जिका लेख रूप सा प्रतीत हुवै। ये निबंध विसय री विविधता रै विचार सूं ईं संग्रह में सामिल कर्‌या गया है। लारला दो निबंध अंग्रेजी (Ep Dorado) तथा गुजराती (युगधर्म–मैत्री साधना) रा अनुवाद है।''

सम्पादक री आं ओळ्यां सूं आ बात साफ हुवै है' के इण संग्रह रा सगळा निबंधां नै 'निबंध' नी मान्या जा सकै। आंमै कई लेख भी है। आछो तो ओ हुतो'क सम्पादक डॉ. मनोहर शर्मा सम्पादकीय में निबंध, लेख, आलेख अर प्रबन्ध रो खुलासा खुद कर दैवता अर वांनै छांट भी दैवता। इण अंक में वार्तावां भी है। यूं लागै जाणै 'जागती जोत' में पैली छप्या निबन्धां या लेखां नै इण संग्रह में ले लिया गया है। ठीक तो ओ रैंवतो'क ओपता विसय देयर निबंध लिखवाया जावता।

राजस्थानी भासा में लिख्यौड़ा आपरा निबंधां में 'लोकयात्रा' निबंध गिणावण जोग है। ओ कथा सैली में लिखयौड़ौ मार्मिक निबंध है। इणरो बरणाव सत्य कथा सो असरदार है। आ घर–घर री कहाणी है–

जथारथ है। निबंध रो अंत देखीजै–

''परदेसी कै घरां काळी चिट्ठी पूंचै। घर कै लाय सी लाग ज्यावै। बै लकड़ा लाय में बळै पण भसम कोनी हौवै अर सिलगता ही जावै। कोई या बात सोचकर राजी न होवै कै या लाय म्हारे घर में तो कोनी। या पाड़ोस में होगी अथवा बास में होगी, नहीं तो गांव में होगी। पण या बड़ी बिकट लाय है। जद ताणी या नहीं बुझैगी, न तो मिनख ही सुखी हो सकै है, न समाज ही फळ–फूळ सकै है, अर न मुलक में ही चैन बापर सकै है।''

सैली– डॉ. मनोहर शर्मा री भासा–सैली बाबत डॉ. नागरमल सहल ठीक ही लिख्यौ है– ''शर्मा जी भाषा के धनी है। यह उनकी वंशवदा है, निजी धरोहर है। फिर भी कहीं–कहीं संस्कृत निष्ठ हिन्दी उन पर जैसे हावी हो गई है अथवा हो सकता है उन्होंने जानबूझ कर राजस्थानी की सीमा का विस्तार करना चाहा है। ये सब लेख राजस्थानी की पाचक–शक्ति को बढ़ाने वाले हैं।''

डॉ. सहल रा मत सूं डॉ. मनोहर शर्मा री पोथी 'रोहीड़ा रा फूल' री लेखन सामग्री निबंध री जागां लेख है।

डॉ. मनोहर शर्मा री इण रचणा री कूंत करती वेळा डॉ. कल्याणसिंह सेखावत लिख्यौ है– ''अे व्यंग्य सूं भरयौड़ा लेख है पण कथ रौ फैलाव अर बरणाव रो ढंग लोक साहित्य रै ढंग–ढाळै सो है। अे निबंध कम पण लेख ज्यादा कैया जा सकै है।''

डॉ. मनोहर शर्मा री भासा सरल, लोक सबदावली अर ओखाणा सूं भरी–पूरी है। आपरी भासा पर सेखावाटी बोली री ग्रामीण सबदावली, कहावतां–मुहावरा भरी रोचक अर सहज सैली रो प्रभाव साफ निगै आवै। संस्कृत भासा रै प्रभाव रै कारण डॉ. मनोहर शर्मा रा लेखन में संस्क्रत री तत्सम सबदावली रो असर देख्यौ जा सकै है।

13.6 महताऊ निबंध रा गद्यांस– दो व्याख्या, सबदां रा अरथ अर टिप्पण

गद्यांस

''ज्ञान री साधना करड़ी घणी है या साधना थोड़ा सा मिनख ई कर पावै। जिण देस मांय कवि–कोविदां रो सनमान हुवै, उणी देस मांय ज्ञान री तपस्या फळै अर ई 'साख' रो लाभ समाज नै सुलभ हुवै। कवि वाणी रो रस देस री 'धरती रो धीणो' है। ईं धीणै सूं जात रो हिरदो सरस हुवै, मन निरमळ बणै अर आतमा में बळ आवै। समाज री दूजी–दूजी भांत री उन्नति तो पाछै री चीज है। निबळै मन नै लैयर सबळ तन कांई कर सकै? चारित्रिक उत्थान बिना मिनखां री भीड़ किण काम री? यो ई कारण है कै कवि–कोविंदा नै 'राष्ट्र रा निर्माता' बताया गया है। वे 'राष्ट्र' रै भवन रा खरा अर सुदृढ़ खंभा है। अे खंभा खड़्या रैवै जितरै यो 'दिव्यभवन डिग नीं पावै। 'लाखपसाव' री भावना आई है जिणमें राजस्थान भली भांत समझी अर पूरी तरां निभाई।'

व्याख्या – अे ओळयां राजस्थानी भासा रा मानीता निबंधकार डॉ. मनोहरशर्मा रा निबंध 'लाख पसाव' सूं लियौड़ी है। इण निबंध में निबंधकार राजस्थान में रियासती राज में साहित्यकारां अर गुणीजनां नै दिया जावणवाळा मान–सम्मान अर ईनाम 'लाखपसाव' री मूळ धारणा, ध्येय अर राज रा समै में उणरी जरूरत बाबत बतायौ है।

डॉ. मनोहर शर्मा बतावै कै 'ज्ञान साधना मांगै– अर आ साधना, आ तपस्या सरल कोनी घणी दोरी है। ओ कारण है के इणनै घणा लोग नीं कर सकै फगत थोड़ा सा मिनख ही कर सकै। ज्ञान री आ तपस्या बठै ही फळे जठै या जिण देस में कवि अर कलाकारां रो मान व्है। इणरो फळ सगळै समाज नै मिळै। कवेसर री वाणी तो रस री अमीय धार व्है जकी आखी धरती रो धन है– धीणो है। कवि री वाणी री रसधार सूं जन–जन रो हियौ सरस हुवै, मन में गंदगी या विकार मिटै जिण सूं मन निरमळ बणै अर

आतमा में ताकत आवै। समाज दूजो विकास करै, बो ज्ञान रै तप रै बाद री चीज है। मनुज रो मन बळी बणै तद ही उणरा सरीर में भी ताकत आवै। मिनखां में चरित री बढ़ोतरी जरूरी है नीं तो फगत जन री भीड़ किणी काम री नीं।

मिनखा नै चरित्रवान बणावण रो काम कवि अर कलाकर ही कर सकै है। इणी खातिर उणां नै देस नै बणावणवाळा मान्या गया है। जे किणी देस नै भवन री संज्ञा दी जावै तो 'कवि–कोविंद' उणरा मजबूत खम्भा है। जद तक ओ खम्भा खरा अर मजबूत है बो देस रूपी भवन डिग नहीं सकै। 'लाखपलास' दैवण रै लारै आ ही भावना ही के कवि या गुणीजन रो सम्मान व्है जिणसूं ज्ञान री कठिन साधना बणी रैवै अर देस रो जन बळ अर उणरो मन बळ बण्यौ रैवे।

सबदां रा अरथ – करड़ी= कठिन। कोविद= कलाकार, साख= प्रतिष्ठा या पेठ। निबळ= निरबळ या बळहीन। दिव्य= पवितर अथवा रूपाळो।

गद्यांस

''राजस्थानी लाख पसाव' री धरती है पण ईं धरती रो साहित्य लाखपसाव रो साहित्य नीं है। राजस्थान रै कवि लक्ष्मी रै लोभ सूं कविता नीं करी। उणनै राजदरबार में ऊंचो सम्मान मिल्यो पण फेर भी बो 'दरबारी कवि' नीं बण्यो। वो तो स्वाभाविक रूप सूं आपरै मन री मौज में काव्य रचना करी। बो विलासी राजावां री कल्पित कीरथ कथा रा दिन में तारा चिमकायर बकसीस नीं लीनी। बो अकरम करणिये राजावां पर इसा 'विसहर' कैया कै वै आपरो काळजो पकड़ लियो अर कई बर कविराजा पर नाराज भी हुया। पण कवेसर इसी नाराजी री कद परवाह करी अर कद आपरो सुभाव छोड़्यो? राजाजी आपरो 'लाख पसाव' काठो राखो। कवीसर आपरै कवि–धरम री मरजाद सूं नीं डिग्या।''

व्याख्या– ओ गद्य रो अंस राजस्थानी भासा रा लूंठा निबंधकार डॉ. मनोहर शर्मा रा निबंध 'लाखपसाव' रो है। इणसूं लेखक आ जाणकारी करावणी चावै कै 'लाखपसाव' कवियां, कलाकारां अर गुणीजन नै राजा कानी सूं दियौ जावणवळो सम्मान अर ईनाम हो। ओ लाखपसाव दैवण री जूनी परम्परा रियासती राजस्थान में ही। इण कारण– लेखन राजस्थान नै लाख पसाव री धरती बताई है, पण अठां रो साहित्य 'लाखपसाव' रो कोनी बो तो अमोलो है। अठां रा कवि धन खातर काव्य नहीं लिख्यौ– वो कदैई 'दरबारी कवि' नहीं बण्यौ। हालांकै राजदरबार सूं उणरा उत्तम काव्य रै कारण उणनै 'लाखपसाव' मिल्यौ।

अठां रो कवि नायक–नायिका गुण, देस भगती, त्याग अर बहादुरी देखर काव्य रच्यौ–किणी दबाब या झूंठी बढ़ाई करण खातर कल्पना सूं कथा रचण सारू लेखनी नहीं चलाई। दुस्करम करणवाळा राजावां खातर झूंड रो काव्य लिख्यौ, जिणसूं बे घणा दुखी हुया। दुस्ट राजावां रै कोप रो कहर भी साचा कवि सहन करियौ पण बे झुक्या कोनी। उणां आपरै कवि धरम री सदा पालना करी अर लेखनी री मरजाद बणाई राखी।

सबदां रा अरथ– 'लाख पसाव= सम्मान अर ईनाम, दरबारी कवि= राजा रै दरबार में रैवण वाळो कवि। विलासी= एसआराम करणवाळा। कीरतकथ= बढ़ाई री बातां या कहाणियां। कवि धरम= रचनाकार रो कर्तव्य।

13.7 डॉ. मनोहर शर्मा रो योगदान

डॉ. मनोहर शर्मा रो राजस्थानी निबंध साहित्य नै योगदान

डॉ. मनोहर शर्मा राजस्थानी भासा रा मान्यौड़ा गद्यकार है। आप राजस्थानी भासा में कहाणियां, एकांकी, लघुकथावां, लेख अर निबंध लेखन कर्‌यौ है। इण सगळा गद्य लेखन में निबंध साहित्य नै आपरो खास योगदान है–

(1) विसय वस्तु री दीठ सूं लेखक रो लेखन महताऊ है। न्यारी–न्यारी विसय सामग्री सूं भर्‌या पूरा निबंध एकानी आज रा जथारथ नै आखरां ढाळ्‌यौ है तो दूजै कानी इतिहास अर संस्कृति री गौरव गाथावां अर चरित नायक–नायिकावां रा योगदान नै निबंधां रो आधार बणायौ है।

(2) भासा री दीठ सूं राजस्थानी भासा री लोक सबदावली रा प्रयोग, सरल पण भावां अर विचारां रै मुजब भासा लेखन डॉ. मनोहर शर्मा रै लेखन री विसेसता व्है कही जा सकै।

(3) निबंध लेखन में सबसूं महताऊ लेखक री सैली हुया करै क्यूंके अभिव्यंजना रो खास ढंग ही सैली कहीजै। विसय प्रतिपादन, पाठकां सामी रखण रो ढंग पद रो विन्यास अर भासा रो सौष्ठव–सैली रा ही रूप है। सैली नै आलोचक भी प्रसाद, समास, व्यास, विवेचनाभरी व्यंग्य प्रधान, धारा, तरंग अर प्रलाप सैली आद रूपां में बांटी है।

डॉ. मनोहर शर्मा री खुद री लेखन सैली है। विसय प्रतिपादन री उणांरी खुद री कला है। उणां रै पद रो विन्यास अर भासा सैली न्यारी ही है जिणसूं वां री अलग पिछाण बणी।

13.8 इकाई रो सार

इकाई रो सार नीचै मुजब है–

(1) आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा उद्‌भव अर विकास री जाणकारी करावणी

(2) निबंध री परिभासा, तत्व अर निबंधां रै वरगीकरण री विगत मांडणी।

(3) राजस्थानी भासा रा निबंध साहित्य बाबत् बताणो।

(4) डॉ. मनोहर शर्मा रा साहित्य लेखन री जाणकारी देवणी।

(5) आधुनिक राजस्थानी निबंध साहित्य नै डॉ. मनोहर शर्मा री कांई देन है? इणरो खुलासौ करणौ।

13.9 अभ्यास रा सवाल

(1) आधुनिक राजस्थानी साहित्य री सार रूप में जाणकारी देवो।

(2) निबंध किणनै कैवै? सोदाहरण दैय'र बतावो।

(3) 'निबंध गद्य री कसौटी है' – इण कथन नै समझावौ।

(4) डॉ. मनोहर शर्मा रा निबंध साहित्य री जाणकारी करावो।

(5) डॉ. मनोहर शर्मा रै निबंधां री सिल्प अर सैली री दीठ सूं निरख–परख करो।

13.10 संदर्भ पोथ्यां

(1) राजस्थानी भाषा और साहित्य– डॉ. मोतीलाल मेनारिया

(2) राजस्थानी भाषा एवं साहित्य– डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

(3) डॉ. मनोहर शर्मा अभिनंदन ग्रंथ–

(4) राजस्थानी निबंधमालां – डॉ. मनोहर शर्मा

(5) रोहिड़ा रा फूल– डॉ. मनोहर शर्मा

(6) राजस्थानी गद्य साहित्य – शिवस्वरुप शर्मा 'अचल'

इकाई – 14

आधुनिक राजस्थानी निबन्ध साहित्य
प्रमुख निबंधकार– डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

इकाई रो मंडाण

14.0 उद्देस्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 निबंध–उद्भव अर विकास

14.3 निबंध री परिभासा, तत्व अर वर्गीकरण

14.4 राजस्थानी भासा री जूनी गद्य परम्परा अर आधुनिक निबंध साहित्य

14.5 प्रो. कल्याणसिंह शेखावत रो निबंध साहित्य अर वां रा निबंध–निरख–परख विसयवस्तु, सिल्प अर सैली निबंध रा गद्यांस– दो व्याख्या, सब्दार्थ अर टिप्पण

14.6 राजस्थानी निबंध साहित्य नै डॉ. शेखावत रो योगदान

14.7 इकाई रो सार

14.8 अभ्यास रा सवाल

14.9 संदर्भ पोथ्यां

14.0 उद्देस्य

(1) राजस्थानी भासा गद्य री महताऊ विद्या–निबन्ध री जाणकारी करावणी

(2) निबंध रा उद्भव अर विकास री विगत सामी ल्यावणी।

(3) निबंध री परिभासा अर तत्वां बाबत बतावणो।

(4) डॉ. कल्याणसिंह सेखावत रै निबंधां री विसय वस्तु, सिल्प अर सैली नै समझावणो।

(5) प्रो. कल्याणसिंह सेखावत रा निबंधां री विसेसतावां दरसावणी।

(6) प्रो. कल्याणसिंह सेखावत रो आधुनिक राजस्थानी निबंध साहित्य नै योगदान सिद्ध करणौ।

14.1 प्रस्तावना

(1) इण इकाई री प्रस्तावना सूं पाठक राजस्थानी भासा री जूनी, भांत–भांत री अर सम्रद्ध गद्य परमारा समझ सकसी। साहित्य री दो सिजरण धारावां हुया करै– एक काव्य री अर दूजी गद्य री। आं दोनूं धारावां में भी घणखरी विधावां व्है।

(2) इण इकाई में राजस्थानी गद्य री आधुनिक विधावां री जाणकारी रै साथै ही निबन्ध विधा री विस्तार सूं विगत मांडीजी है क्यूं कै आज रो जुग गद्य री मानीजै अर गद्य में निबंध महताऊ गिणीजै। निबंध नै गद्य री कसौटी मानीज्यौ है।

14.2 निबंध–उद्भव अर विकास

राजस्थानी भासा रो आधुनिक जुग गद्य प्रधान है जिणमें गद्य री घणकरी विधा वां रो जलम हुयौ ज्यूं– उपन्यास, काहणी, नाटक, निबंध, एकांकी, रेखाचितराम, संस्मरण, डायरी लेखन, रिपोरताज, रूपक आद।

इणां सबमें निबंध गद्य री कसौटी मानीजै क्यूंकै इणरो लेखन घणो दोरो अर महताऊ मानीजै।

14.3 निबंध री परिभासा, तत्व अर वर्गीकरण

हिन्दी, अंगरेजी अर राजस्थानी भासा रा विद्वान निबंध री न्यारी–न्यारी परिभासा करी है अर उणरा तत्वां री जाणकारी कराई है। आज रा सामै में निबंध देस–विदेस री सगळी भासावां में लिखीज रिया है। निबंध रै साथै ही लेख, आलेख, प्रबन्ध, एसे (Essay) जैड़ा सबद भी काम में लिरीजै। इणां सबदा में काईं फरक है? इण बात नै समझण खातर 'निबंध' री परिभासा जाणबो जरूरी है।

संस्कृत भासा में निबंध–

संस्कृत भासा में निबंध सबद रो निकास– 'नि+बंध' (बंधणो)+धज (संग्रह) रोकणो (बाचस्पत्यम) दियौड़ौ है। जिणरो अरथ है– 'निःशेष बंध' अथवा कसयौड़ौ बंध। इणसू ओ भाव लियौ गयौ है कै निबंध गद्य री बा विद्या है जिणमें भावां अर विचारां नै आछै ढंग सूं बांध'र कम सू कम सबदां में आखरां ढ़ाळ्या जावै।

हिन्दी भासा में–

हिन्दी साहित्य कोष' में निबंध नै– ''भलीभांत बंध्यौड़ी, गठयौड़ी या गुंथीजयौड़ी रचना'' मानी गई है।''

आप्टे रा 'हिन्दी शब्दकोष' में निबंध रा बारह अरथ दियौड़ा है जिणामें 'गठा हुआ;, 'कसा हुआ', 'बंधन युक्त' आद कीं खास है।

इण तरै हिन्दी भासा में निबंध रो अरथ है– बांधणो। 'बंध' सबद रै आगै 'नि' उपसर्ग जुड़ण सूं बण्यौ है, जिणरो अरथ है 'विसेस रूप सूं बांधणो।' निबंध बा रचना है जिणमें विचारां नै बिखराव सूं रोकण खातर निबंधकार व्यवस्था या एक ढंग सूं बांध'र लिखै।

हिन्दी रा विद्वान बाबू गुलाबराय रै मुजब– ''निबंध उस गद्य रचना को कहा जाता है, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और संबद्धता के साथ किया गया हो।''

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी रा सबदां में– ''भावों और विचारों की प्रधानता और शैली की रमणीयता के मेल से जिस नवीन साहित्य का प्रचलन हुआ है, वहीं निबंध साहित्य है।''

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मतानुसार– ''यदि गद्य कवियो की कसौटी है तो निबंध स्वयं गद्य की कसौटी है।''

आचार्य शुक्ल रो ओ मत है कै ''निबंध गम्भीर विचारां री अभिव्यक्ति री ताकतवर विधा है।''

अंग्रेजी भासा में निबंध खातर 'एसे' (Essay) सबद काम में लिरीजै, जिणरो अरथ है कोसीस, प्रयत्न या प्रयोग अर्थात् किणी विसय रो कोसीस कर अर परीक्षण कर निजु विचारां नै एक क्रमबद्धता अर व्यवस्थित रूप सूं लिखणो ही 'एसे' कहीजै। अंग्रेजी भासा रो एस्से मूळरूप सूं लैटिन भासा रा एग्ज़ीजिर (Exagere) सबद सूं बण्यौ है अर फ्रैंच भासा में ऐसाई (Essai) सबद बण्यौ अर उणसूं अंग्रेजी में 'एस्से' (Essay) बण्यौ। लेटिन भासा रा सबद 'एग्जीजिर' रो अरथ है– 'निश्चितता पूर्वक परीक्षा अथवा परीक्षण करना।'' अंग्रेजी भासा रा एस्से (Essay) सबद रो मतलब है– कोसीस, प्रयोग या प्रयत्न या परीक्षण।

'कानियर्स विश्वकोश' में निबंध री परिभासा नीचै मुजब दी गई है– ''निबन्ध अपने आप में पूर्ण, एक बैठक में पढ़ी जाने वाली ऐसी गद्य रचना है जो गैर तकनीकी पद्धति पर वैयक्तिक दृष्टि बिन्दु को प्रधानता देते हुए निर्मित की गई हो।''

अंग्रेजी भासा रा 'आक्सफोर्ड डिक्सनरी' (Oxford Dictionary) में निबंध बाबत लिख्यौ है– The Essay,

as a rule, is a short narrative in prose. The Oxford and other English dictionary define it as an 'attempt'. A.C. Benson describes it as "a reverie, a self-talk, a frame of mind". However, the most popular and widely accepted definition of Essay is given by Doctor Johnson who defines it as "a loose sally of mind."

अंग्रेजी भासा रा नामी लेखक डॉ. सैमुअल जान्सन लिखी है– "A loose sally of mind an irregular, undigested piece, not a regular and orderly performance"- Johnson

''मुगत मन री मौत, अनियमित, अणपकी री रचना, न कै नियमां बंधी अर सावळ व्यवस्थित कृति।''

दूजा विदेसी विद्वाना री परिभासावां– फ्रांसीसी निबंधकार मॉन्तेन (Montaigne) रै मत सूं ''निबंध (Essay) विचारां, उद्धरणां अर कथा रो मिश्रण है।

"Essay is a medley of reflections and aneedoles"- Montaigne

फ्रांस रा मिशेल मॉन्तेन ही आधुनिक निबंध रा जनक मान्या जावै। जका साहित्य रा अनुरागी न्यायाधिपति हा। मान्तेन जन सूं घणा दूर जागां जाय'र किणी रा असर सूं मुगत रैय मोकळा निबंध लिख्या जका सन् 1850 में 'एडेइस' नाम सूं पोथी रूप में छप्या। अे 'एसेइस' अंगरेजी रै 'एसे' (Essay) सबद रा पर्याय बणग्या।

डेविड ग्रीन रा सबदां में– "An essay is a piece of prose composition] generally short, on any chosen subject. The word essay literally means an attempt. The essay is, properly speaking, an attempt at expressing your thoughts on a given topic and differs in this respect from a treatise is an elaborate and thorough study to a subject"- David Green

एडीसन निबंध बाबत लिखै– ''निबंध में विचारधारा तरल अर मिलयौड़ी व्है। इणरो वेग कदैई साधारण उपदेस सूं भरयौड़ौ व्है तो कदैई मिनख री आत्मा री अभिव्यंजना कानी व्है।

अंग्रेज निबंधकार बेकन रो मत है कै– ''निबंध थोड़ा गिणिया–चुणिया पाना में, थोड़ा फैलाव में हूवणौ चाइजै, जिणमें सार भरिया ठोस विचारां रौ निरदेस व्है।''

हडसन री मान्यता है कै– ''निबंध किणी विसय या विसय रा किणी खास बिन्दु पर लिखयौड़ी बा रचना है, जकी आकार में छोटी पण बंधयौड़ी व्है। मूळ रूप में इणमें पूरणता री कमी लखावै पण थोड़ी भोत उदात सैली सूं मंजयौड़ी पण फैलाव री सींव में बंधयौड़ी रचना ही निबंध कहीजै।''

अंग्रेजी भासा रा घणखरा विद्वान जिणमें जानसन, क्रेबल, हड़सन, मेरे आद खास गिणावण जोग है। एकानी निबंध रा आकार, विवेचन, कम सूं कम सबदां में ज्यादा सूं ज्यादा कैवणो, निबंधकार रा व्यक्तित्व री छाप, विसय वस्तु रो विस्तार री दीठ सूं निबंध विद्या री निरख–परख करी है। पण विदेसी विद्वान लाक्स ब्रेकन अर भारतीय आचार्य रामचंद्र शुक्ल निबंध नै गम्भीर विचार प्रकासण रो साधन मानै।

श्री जसनाथ 'नलिन' री मान्यता है कै– ''निबंध स्वाधीन चिंतन और निश्छल अनुभूतियों का सरल, सजीव और मर्यादित गद्यात्मक प्रकाशन है।''

तत्त्व–

इण भांत निबंध री परिभासावां सूं उणरा कीं तत्व निकळ'र सामी आवै, बे है– (1) निबंध में विचार तत्व (2) लेखक रो व्यक्तित्व अर उणरी खुद री भासा सैली।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल भी निबंध लेखन में निबंधकार रा विचारां रा निबंधन या एकसूत्रता अर लेखक रा व्यक्तित्व री नीजु छाप नै जरूरी मानै। सार रूप सूं कयौ जा सकै है कै निबंध दूजी गद्य विधावां री तुलना में छोटो आकार लियौड़ौ व्है, उणमें निबंधकार री निज री छाप लियौड़ा बंधनहीण (मुगत अर

सुछंद) पण क्रमबद्ध नुवां, रोचक भाव अर विचार प्रधान अभिव्यक्ति लेखन नै निबंध कयौ जावै जिणमें भासा सैली निबंध लेखक री खुद री व्है। उक्ति– चमत्कार सैली रो प्राणतत्व है।

निबंध लेखन भावां री प्रधानता अर भासा प्रयोग रै कारण काव्य सो लागै तो कठैई बरणाव सैली रै कारण कहाणी, रेखाचित्र संस्करण रै साव नैड़ै दीसै। निबंध लिखण में भासा रो भांत–भांत सूं प्रयोग उणमें अलंकारां री छटा बिखेर देवै तो कठैई लाक्षणिक अर चितराम कळा रो आसरो लैयर 'ब्रह्मानंद सहोदर' बण जावै। निबंधां में विचार, भाव, हास परिहास अर व्यंग्य एक साथ समायौड़ा रैवै।

अंग–

निबंध रा तीन अंग मानीज्या है–

(1) भूमिका या प्रस्तावना

(2) मूळ विसय सामग्री रो लेखन प्रसार

(3) उपसंहार

भूमिका या प्रस्तावना सूं निबंध री विसय सामग्री नै प्रभावी ढंग सूं निबंधकार आखरां ढाळै पण लेखक री प्रतिभा, ज्ञान अर योग्यता री जाणकारी तो विसय विस्तार या प्रसार खण्ड सूं ही सामी आवै। तर्क री कसौटी, भासा री खिमता अर सैली रो प्रभाव ही निबंध नै नामी बणावै।

उपसंहार निबंध रो आखरी पड़ाव व्है, इण खातर उणमें निबंध रो सार अर मूळ ध्येय साफ हू जावणौ चाइजै।

14.4 राजस्थानी भासा री जूनी गद्य परम्परा अर आधुनिक निबंध साहित्य

राजस्थानी भासा रो साहित्य सैकड़ां बरसां लग लोक रा कंठा में जींवतो रयौ। गांठ री पूंजी अर कंठ री विद्या री कहावतां घर–घर चावी हुई। 'बातपोस', 'घणी बातां' अर कवेसर मोकळो 'काव्य' कठस्थ करयौड़ौ राखता। राजस्थानी भासा रो सबसू जूनो साहित्य काव्यमय ही मिळै। घणा बरसा कविता साहित्य जगत में छायौड़ी रैयी। नाना भाव, विचार, छंद, अलंकारअर सिल्प अनै सैली रा प्रयोगां पगी राजस्थानी कविता गढ़–कोटां में रमी, महला में रमझोळ मचाई अर सैवट जन रै नेड़ै आवण खातर जनपथ रो आसरो लियौ।

इणी भांत जूनी गद्य विधावां रै रूप में 'वातां', 'विगतां', ख्यातां पट्टावलियां, वंसावलिया, तहकीकात, वचनिका, दवावैत, सिलोका, वात वणाव वरणक रै रूप में कलात्मक अर वरणात्मक गद्य रो सिरजण हुयौ तो नुंवी गद्य विधावां रौ दरसाव आज री कहाणी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखचित्र डायरियां, जात्रा बरतांत निबंधा रै रूप में साफ निगै आवण लाग्या। आज री बीजी गद्य विधावां री भांत निबंध भी यूरोप सूं आपणी भासा राजस्थानी में आयौ है।

आधुनिक राजस्थानी निबंध री सरूआत आजादी रै पैली हुई, पण आं निबंधां रो प्रकासण छापां लग ही सीमित रियौ। सन् 1966 में राजस्थानी रा जगचावा कवि चंद्रसिंहजी रै सम्पादन में 'राजस्थानी निबंध संग्रह' नाम सूं पोथी राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) उदयपुर कानी सूं छपी। इणनै आधुनिक राजस्थानी निबंधा री पैली कृति कही जा सकै है। इण रचणा में 16 निबंध छप्या। अे निबंध सम्पादक लिखवाया। इणमें दामोदर शर्मा रो 'मारवाड़ी समाज', श्रीलाल नथमल जोसी रो– 'सच बोल्यां कियां पार पड़ै', डॉ. मनोहर शर्मा रो 'लोक यात्रा' गंगाराम 'पथिक रो देस दिसावर रा लोगज़', शक्तिदान कविया रो 'मातभासा में शिक्षा अर राजस्थानी', डॉ. मदनगोपाल शर्मा रो 'मिनख जमारो', सुमेरसिंघ सेखावत रो 'राजस्थान अर उणरो जीवण दरसण', गिरराज 'भंवर' रो 'पणघट री सांझ', मिश्रीलल जैन 'तरंगित' रो 'आपां कांई खावां हां', 'लक्ष्मी कुमारी चूंडावत रो 'मेवाड़ी फागण', रावत सारस्वत रो 'थोथी बातां',

'रामनाथ व्यास' परिकर रो 'भारतीय एकता रा सूत्र', कुंवर कृष्णकल्ला रो 'काव्य री परख', रामचंद्र बोड़ा रो 'रै मानखा!', ओंकार पारीक रो 'नई कविता रा गौखै सूं', डॉ. गोवर्द्धनशर्मा रो 'साहित अर उणरा भेद'' जैड़ा निबंध भेळा है।

इण पोथी में लेख घणा अर निबंध थोड़ा है। आ निबंधा में डॉ. मदन गोपाल शर्मा रो 'मिनख जमारो', सुमेरसिंघ सेखावत रो 'राजस्थान अर उणरो जीवण दरसण', कुंवर कृष्ण कल्ला रो 'काव्य री परख', रामनाथ व्यास परिवार रो 'भारतीय एकता रा सूत्र' जैड़ा निबंध बेजोड़ है। भाव, विचार कथ अर सैली री दीठ सूं अे निबंध राजस्थानी भासा रा उत्तम कोटि रा निबंध है। इणी पांत में सत्यप्रकास जोसी रो 'जुग पुरुष कृष्ण', अन्नाराम सुदामा रो 'सह–अस्तित्व', नरोत्तमदास स्वामी रो 'अणोर् अणीयान् महतो महीयान', रामेश्वरदयाल श्रीमाळी रो 'मंगळ अजै अळघो है'', डॉ. गोरधनसिंह सेखावत रो 'गांठां रा गठजोड़ा', मूळचंद 'प्राणेश' रो 'जीभड़ली', सूर्यशंकर पारीक रो 'मिनखपणो', डॉ. गोरर्धन शर्मा रो 'साहित्य', सौभाग्यसिंह सेखावत रो 'चाटू', मूळदान देपावत रो 'सुरंगी संस्कृति रा सैनाणा', डॉ. कल्याणसिंह सेखावत रा 'माया' अर 'जगत' जैड़ा निबंध नामी है। आधुनिक राजस्थानी रा सर्व श्री चंद्रसिंह, नरोत्तमदास स्वामी, मूळचंद 'प्राणेश', अन्नाराम सुदामा, श्रीलाल मिश्र, सत्यप्रकास जोसी, रामनाथ व्यास 'परिकर', लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, कृष्णगोपाल कल्ला, डॉ. मनोहर शर्मा, डॉ. गोवर्द्धन शर्मा, सौभाग्यसिंह सेखावत, दामोदर शर्मा, मूळदान देपावत, सूर्यशंकर पारीक, सुमेरसिंह सेखावत, डॉ. मदन गोपाल शर्मा, रावत सास्वत, बैजनाथ पंवार, डॉ. भंवरलाल जोसी, डॉ. नृसिंह राजपुरोहित, डॉ. कल्याणसिंह सेखावत, डॉ. शक्तिदान कविया, सत्यनारायण स्वामी, डॉ. भगवतीलाल शर्मा, डॉ. उदयवीर शर्मा, डॉ. गोरधनसिंह सेखावत, नंदभारद्वाज, डॉ. मदन सैनी, डॉ. मंगत बादल, डॉ. नरेन्द्र भानावत, डॉ. महेन्द्र भानावत आद राजस्थान भासा रा प्रमुख निबंधकार है।

निबंधां रो वर्गीकरण

निबंध भाव, विचार, विसयवस्तु, भासा–सैली रौ आधार लैय लिखीजै। इण कारण उणांरो अध्ययन–मनन करण सारू वर्गीकरण रा आधार भी अे ही बणै। विद्वानां निबंधां रो वर्गीकरण खुद री मान्यतावां अर चिंतन मुजब करियौ है, जिणरी बानगी नीचै मुजब समझी जा सकै।

1. विसयवस्तु रै आधार सूं–
   (क) भाव प्रधान
   (ख) विचार प्रधान
2. निबंधकार री निजुदीठ सूं–
   (क) स्व परक
   (ख) विसय परक
3. भासा–सैली रै आधार सूं–
   (क) बरणाव सैली रा निबंध
   (ख) विवेचन–विस्लेसण सैली रा निबंध
   (ग) ललित निबंध
   (घ) हास–परिहास अर व्यंग्य सैली रा निबंध
4. रचाव री दीठ सूं–
   (क) कथा/वात प्रधान निबंध

(ख) किणी बंधण सूं मुगत निबंध

डॉ. कल्याणसिंह सेखावत रै मुजब आज राजस्थानी भासा में भी निबंध खूब लिखीज रिया है। भाव अर भासा ही नीं वांरा विसय भी भांत–भांत रा है। इण खातर उणारै बंटवारै रा कीं मापदण्ड (आधार) बण्या ज्यूं

(1) भाव, विचार अर कैवण या लिखण री सैली– अेक माप।

(2) निज अर पराया निबंध– दूजो आधार।

(3) विसै अर विसयनिस्ट– तीजो आधार। इण भांत प्रवृत्तिमूलक अर सैली परक– अे दो मोटा भेद कर्‌या जा सकै। इणी तरै हिन्दी भासा रा आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(1) विचारात्मक

(2) भावात्मक

(3) आत्म व्यंजक

(4) वर्णनात्मक

(5) कथात्मक

निबंध री अे पांच सैलियां मानैं। आज रा विद्वान नीचै लिख्या ढ़ंग सूं निबन्धां रो बंटवारो करै–

(1) सांस्कृतिक

(2) समीक्षात्मक

(3) विचारात्मक

(4) भावात्मक

(5) वर्णनात्मक

(6) आत्म चरितात्मक

(7) स्वप्न कथात्मक

(8) गद्य गीतात्मक

(9) प्रतीकात्मक

(10) कथात्मक

(11) संस्मरणात्मक

(12) हास्य–व्यंग्य

(13) रेखा चित्रात्मक

14.5 प्रो. कल्याणसिंह सेखावत रा निबंध साहित्य

प्रो. कल्याणसिंह सेखावत राजस्थानी भासा रा मान्यौड़ा निबंधकार है। आपरी अजै ताई तीन निबंध पोथ्यां छप चुक है– (1) राजस्थानी निबंध (2) मणिमाळ अर (3) रसकळस

(1) राजस्थानी निबंध

प्रो. सेखावत रा निबंध री पैली पोथी 'राजस्थानी निबंध नाम सूं सन् 1981 में छपी है जिणमें 15 निबंध है। साहित्य, लोक संस्कृति अर इतिहासू सामग्री सूं भरी–पूरी आ पोथी सोध–खोज री दीठ नै सामी राख'र लिखीजी है। इण पोथी में 'मन' भावां अर 'कानोजोगी' संस्मरण या रेखाचितराम रो आधार लियौड़ा निबंध है। इणांरै साथै ही (1) मीराँबाई (2) राजस्थानी प्रेमगाथा–

मूमळ महेन्द्र (3) लोक देवता– तेजाजी (4) विद्रोहणी मीराँ (5) राजस्थानी काव्य, अेक निरख–एक परख (6) राजस्थानी साहित्य में जन चेतना रा सुर (7) राजस्थानी साहित्य में दसरावो (8) भगत कवेसर ईसरदास अर वांरो 'हरिरस' (9) हालां–झालां रा कुण्डळिया (10) साहित्य अर समाज (11) लोक देवता बाबा रामदेव (12) वीरवर दुरगादास (13) राजस्थानी भासा रो गौरवग्रंथ– बीसलदेव रासो जैड़ा निबंध इण पोथी री अमोली थाती है।

इण पौथी रै सिरजण रै लारै जको सोच रियौ है उणनै समझावत लेखक लिखै–

'इण कृति में सै भांत रा निबंधां री बानगी दैवण री म्हैं कोसीस करी है। इणांनै भाव, विचार अर कैवण री अेक खास गत रा निबंध कया जा सकै है। अे निबंध राजस्थानी भासा, साहित्य, इतिहास अर संस्कृति रा रूपाळा चितराम है। वीर वसुंधरा राजस्थान रा रणधीरां, संता, भगतां, सापुरसा अर साहित्यकारां रै साथै–साथै अठां रा चावा प्रेमाख्यानां री बानगी भी इण पोथी री अमोली सम्पदा है। चेते रा चितराम ज्यूं 'काना जोगी' री विगत म्हारे अंतस री उकळाट है। भगत आत्मा मीराँबाई, परमेसरसम ईसरदास, लोकवीर तेजाजी, रामदेवजी, वीरवर दुरगादासजी इण धराधाम रा पुजनीक नर सूं बण्या नारायण है। मूमळ–महेन्द्रा रै हेत–प्रीत री व़ात अठै भोत मीठी नै व्हाली है। 'हरिरस', हालां–झालां रा कुण्डळिया, बीसलदेव रासौ राजस्थानी साहित्य री घणमूंगी माया है। इण संग्रै में आं माणक मोत्यां रौ हार बणावण री कोसीस करीजी है।''

''राजस्थानी निबंध– पोथी सन् 1981 में छपी ही– इणसूं पैली पोथी रूप में कम ही निबंध छप्या हा। अे सगळा ही निबंध– भाव, विचार अर कथ री दीठ सूं महताऊ है। डॉ. कल्याणसिंह सेखावत री प्रभावी भासा–सैली, विचारां नै ओपता सबदां में ढाळ'र पाठक लग पुगावण री खिमता अर भावां मुजब टकसाळी सबद सम्पदा सूं भरी–पूरी भासा इण कृति नै अमोली बणाई है।

(2) मणिमाळ–

ललित निबंधा री पोथी 'मणिमाळ' डॉ. कल्याणसिंह सेखावत री दूजी पोथी है जकी सन् 1995 में छपी ही। इण में सतरह भाव अर विचार प्रधान निबंध है, जिणांरा विसय है– जीव, जगत, मोह, माया, सोच, सपनो, रीस, हरख, हैत, सुख–दुःख ईसको डर, भूख, ईस, आतमा, मौत अर धरम। मन रा भावां अर विचारां नै आखरा ढाळबो आसान कोनी। रूखा अर निरस कया जावणवाळा आं विसयां नै सरस बणार राग अर संवेदना साथै जोड़'र सुधी पाठकां सामी राखण रो काम डॉ. सेखावत बड़ी खूबी सूं करि्यौ है। आं निबंधां में भासा भावां नै सबद रूप दैवण में खिमतावाण साफ निगै आवै। लेखन री सैली डॉ. सेखावत री खुद री है, जिण बाबत बतावता डॉ. रामप्रसाद दाधीच लिख्यौ है–

विषयसामग्री– सिल्प अर कथ– 'इस कृति के विषय तो अपने आप में महत्त्वपूर्ण हैं ही, इनकी प्रस्तुति में जो संवेदनशीलता और मानवीय ऊष्मा है, वह निश्चिंततः डॉ. शेखावत की अपनी कला है। उन्होंने कुछ विषयों की रूक्षता और शुष्कता के पार उनमें मानवीय राग और संवेदना का अन्वेषण किया है। यह उनकी रचना दृष्टि है। भाषा प्रयोग और शब्द की अर्थ की अर्थ गरिमा और उसकी अन्तर–लय की एक अद्‌भुत पकड़ डॉ. शेखावत की कलम में है और यही वजह है कि राजस्थानी की वचनिका एवं दवावैत गद्य शैली का रचाव वे अपने इन निबंधों में कई स्थलों पर निरायाम कर सके। छोटे छोटे कवितामय वाक्य, आत्मा की अंतरंग भूमि से निकले सहल रसमय लोक शब्द और आत्मानुभूतियों का निर्वेग सहल प्रवाह उनके इन निबंधों को विचित्र साहित्यिक सौष्ठव और उत्कर्ष देते हैं।''

इण भांत विद्वान समालोचक डॉ. रामप्रसाद दाधीच 'मणिमाळ' पोथी रा आं निबंधा नै 'मनोवैज्ञानिक अर आध्यात्मिक विसयां पर लिखयौड़ा 'विश्लेष्णात्मक' अर 'विवेचनात्मक' विरल लेखन सिद्ध करै। तद ही बे लिख्यौ है– ''यह कृति राजस्थानी भाषा के आधुनिक निबंध विधा की एक उल्लेख्य कृति कही जायेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।'8

लेखनसैली– डॉ. कल्याणसिंह सेखावत री लेखन सैली बाबत समालोचक ठीक ही लिख्यौ है– ''इन सभी निबंधों की प्रतिपाद्य वस्तु की विवेचना की एक ओर विशिष्टता है– वह है लोक मानस एवं लोक जीवन के स्रोत से उत्पन्न अभिव्यक्ति।'' इण तरै डॉ. सेखावत रा अे निबंध सरल, सहज, प्रभावी अर सूत्ररूप में कहीजयौड़ी भासा–सैली सूं भर्‌या–पूरा है। आं निबंधां री सबद योजना अर वाक्यां रो रचाव आपणै आप में अनूठो हैं। भासा सैली में अरथ री गंभीरता अर गहराई है। लाक्षणिकता अलकारां अर भावां री गहराई आं निबंधा नै ऊंचाई दी है। कहावतां, मुहावरां अर लोकोक्तियां रा प्रसंग रै मुजब करयौड़ा प्रयोगां सूं मणिमाळ रा निबंधां नै पाठक रै अंतस लग पुगाय दिया है। क्रमबद्ध चिंतन रै बंधणा बंध्या भाव अर विचार आं निबंधां नै नई पिछाण दी है।

गद्यांस– ''हिन्दू संस्कृति में मानवी देह रा दो हिस्सा मानीज्या है, अेक सरीर अर दूजी आतमा। आतमा ही परमातमा कथीजी है। गुणीजण सूं लैयर महात्मा तक इण आतमा रै उजास रौ बखाण कर्‌यौ है। धरम री अमोली पोथ्यां में आतमा निराकार मानीजी है पण देह साकार। अेक परतख दीखै पण दूजै रो अनमान लगाइजै। जिण भांत सरीर में मनरी मानता है उणीज तरै आतमा री मानता भी है, आं दोनुवां में घणो फरक है। मन नै चंचळ अर चोर मानीज्यौ है पण आतमा नै ईस रो रूप। मन रै कयै नीं चालण री सीख लोगां नै दीरीजी है पण 'आतमा कहै सौ कर' री कैणावत जगचावी हुई। आतमा देव अर मन राकस रूप मानीज्यौ है। आतमा सत अर मन असत रो प्रतीक बाजै। आतमा अजर अमर कहीजी है पण मन देह रै साथै नासवान।

व्याख्या– ओ गद्यांस प्रो. कल्याणसिंह सेखावत री पोथी 'मणिमाळ' रा 'आतमा' निबंध सूं है। इणमें लेखक मानवी 'आतमा' अर 'मानवी देह' बाबत बतावतो कैवै। हिन्दू संस्कृति में मिनख री देह रा दो हिस्सा मान्या गया है। अेक नै सरीर अर दूजा हिस्सा नै 'आतमा' रो नाम दियौ गयौ है। आ दोनुवां में आतमा नै भगवान रो रूप कहीज्यौ है। आतमा रो उजास ही मनुज नै सत मारग कानी ले जावै। मानवी सरीर तो परतख दीखै पण आतमा रो आकार अथवा रूप कोनी। उणनै कोई देखी कोनी–फगत उणरो अंदाजो लगाइज्यौ है।

जिण भांत आ मानीजै कै आदमी री देह में मन भी है, उणी भांत आतमा रा बखाण भी हुआ है। पण ओ बताणो मुस्किल है कै आतमा किण तरै री है, उणरो रूप, रंग या आकार किण भांत रो है? मन अर आतमा भाव है। भावां नै समझ तो सकां पण देख नीं सकां। सरीस नासवान है पण आतमा अजर–अमर है। मन चंचळ है, चोर है, पण आतमा देव रूप है, बा सत रो मारग बतावै। मन रै मुजब नहीं चालण री सलाह दिरीजै पण आतम रै बताया मारग पर चालणो मानवी सारू हित कारक कहीज्यौ है।

सबदार्थ– उजास= उजाळो। अमोली= अणमोल। परतख= सामी। राकस= राक्षस। सत= सत्य या सांच।

(3) रसकळस

प्रो. कल्याणसिंह सेखावत री आ तीजी निबंध पोथी है जिणमें 31 निबंध न्यारा–न्यारा विसय लैय लिखीज्या है। इण सूं पैली 'मणिकाळ' भाव प्रधान पोथी ही तो 'रसकळस' विचार प्रधान रचणा

है। ईं पोथी रा लेखन रा रचाव अर रसाव री निरख–परख कीं आ सबदां में हुई है–

''.....प्रो. सेखावत री दीठ, अनुभव, अध्ययन अर संवेदना रौ व्यापक विस्तार आं निबंधां माय पढ़ण नै मिलै। इणनै यूं ई कैय सकां कै राजस्थान प्रदेस री आ सांस्कृतिक अर मनमोवक छिब रो दरसण इण कृति मायं हुवै।''

अभिव्यक्ति सौष्ठव– आं निबंध री विसय सामग्री, सिल्प अर अभिव्यक्ति सौष्ठव खातर समीक्षक डॉ. प्रसाद री अे ओळयां मननजोग है–

''लेखक रौ जठै आं निबंधा रै विसयां माथै इधकार है, वैड़ौ ई उणा'रो भासा, निबंध, सिल्प अर अभिव्यक्ति–सौष्ठव माथै ई उणांरो इधकार है। उणारां निबंधां री भासा मांय अेक मांयली तरलता अर लालित्य है। यूं लागै ज्यूं भासा निराखर री तरै अंतस सूं बैय री हुवै अर आपरा विचार दरसण नै पढ़णियां रै हिरदै मांय अपणै आपई बिना किणी विक्षेप–अवरोध रै समाविष्ट कर रैयी हुवै। लेखन मांय हर जगै अेक सैजता है अर आ इज इण निबंध–कृति री खासयत है।''

लेखक री सैली (Style) सहज, सरल अर प्रभावी हूवणी चाइजै। इण कारण ही निबंध नामी गिणीजै। किणी निबंध री सैली ही उणरो प्राण तत्व व्है। डॉ. सेखावत रा निबंधां री सैली इण दीठ सूं महताऊ है। अजै ताईं नीचे लिखी सैलियां में राजस्थानी भासा में निबन्ध लिखयौड़ा मिळै–

(1) प्रतिकां भरी सैली

(2) लोककथात्मक सैली (लौकिक सैली)

(3) बरणाव भरी सैली

(4) भाव अर विचार प्रधान सैली (विवेचनात्मक सैली)

(5) चितराम भरी सैली

(6) आंचळिकता भरी सैली

(7) कलात्मक सैली (अलंकारां जड़ी)

(8) व्यंग्यात्मक सैली

(9) संवादात्मक सैली

(10) लाक्षणिक सैली

'रसकळस' पोथी में डॉ. सेखावत निज री सैळी अपणाई है। टंकसाळी भासा री मठोठ, चिंतण री गहराई, ऊंडी दीठ, न्यारी–निरवाळी विसय सामग्री अर खुद रै अंतस री बात नै प्रभावी ढंग सूं पाठक लग पूगावण री खिमता इण पोथी री ताकत है। राजस्थानी संस्कृति अर प्रकृति रा रूपाळा रूप, समाजू बदळाव रा रंसभीना दरसाव, मरूधरा रै मानवी री आस अर विस्वास, काण–कायदा, रीत–रीवाज, वार–त्यूंहार, संस्कार, देस भगती, ईस भगती, नीति अर हैत–प्रीत री रसभीनी बातां इण पोथी नै सिणगार दियौ है।

देस भगतां री कीरत–गाथावां, वीरां अर वीरांगनावां रा जसगीत, आन, मान अर मरजाद रा धणियां, मायड़भोम खातर अमोला प्राण अरपण करणवाळा क्रांतिकारियां अर सुरसत रा पुजारी साहित्यकारां रै मान में श्रद्धा री अंजळी रूप रचयौड़ी ओळयां इण पोथी री सम्पदा है। आज रा करसा, मजूर अर नारी री सांची गत अर विगत, मिनख रा नित बदळता चरित री बानगी इण पोथी रो सत है।

लेखक री भासा–सैली मनहरणी अर असरदार है।

गद्यांस–

''गांधीजी री धारण ही कै गांवां री समृद्धि बिना भारत सम्पन्न बण नहीं सकै। महात्मा गांधी देस रै गांवां रा हालात देख घणा दुखी हा। इण खातर वांरो नारो हो– 'गांवां कानी पाछा चालो' अर गांवां ने स्वालम्बी बणावौ। गांवां में जका पुस्तैनी लघु उद्योगधंधा है, उणांनै पाछा पनपाया जावै अर धन री मदद सरकार उणांनै देवै, कच्चो माल गांवां लग पुगायौ जावै अर बणयौड़ा सामान री बिक्री रा जुगाड़ सरकार करै। गांधी जी चावता हा कै भारत री 'अर्थव्यवस्था' रौ आधार ढांचों ग्रामीण भारत में तैयार कर्‌यौ जावै। जे भारत रा गांव उजड़ग्या तो नगर महानगर बण जावैला अर किसान मजदूर बण जावैला। महानगरां में नरक रा दरसाव गांधीजी निजरां देख्या हा।''

व्याख्या– प्रो. कल्याणसिंह सेखावत री लिखयौड़ी महताऊ पोथी 'रसकळस' रा अेक निबंध 'ग्रामीण भारत अर महात्मा गांधी रा विचार' रो ओ गद्यांस है। भारत रा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी री आ धारण ही कै जे भारत ने खुसहाल बणावणो, उणनै समृद्ध करणौ है तो भारत नै स्वावलम्बी बणावणा पड़ैला। भारत रा गांवां में मोकळा छोटा–छोटा उद्योग है, बठां री जनता रा बे रोटी–रोजी रा आधार है। जद गांवां रा लोगां कन्नै धन अर साधन व्हैला तो सगळै भारत री 'अर्थव्यवस्था' सुधरैला। सरकार नै चाइजै कै बा गांवां रा छोटा कळ–कारखाना नै पनपावै, उणानै कच्चौ माल पुगावै अर त्यार माल नै बेचण रा जतन करै।

जे गांवां री गरीब जनता री गरीबी बढ़ी अर साधन घट्‌या तो बे गांव छोड़ सहरां कानी भागैला, जठै नरक री जिनगानी जीवैला। जे गांवां नै आबाद करण अर उजड़ण सूं बचावणा है तो बठै छोटा उद्योगां नै पनपावण चाहीजै। भारत री आधी सूं ज्यादा आबादी तो गांवां में बसै।

महात्मा गांधी रो सपनो हो स्वालम्बी गांव, जठै सगळी सहूलियत अर साधन व्है।

सबदां रा अरथ– पुस्तैनी= पुराणा, जुगाड़= व्यवस्था, दरसाव= द्रस्य, निजरां देख्या = आंख्या देख्या।

14.6 राजस्थानी निबंध साहित्य नै डॉ. सेखावत रो योगदान

प्रो. कल्याणसिंह सेखावत आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य रा विद्‌वान अर मान्यौड़ा निबंधकार है। लेखनी रा धनी प्रो. सेखावत अजै ताई सैकड़ूं निबंध राजस्थानी भासा में लिख्या जका मांय सूं 61 निबंध तो उणांरी तीन निबंध–पोथ्यां (1) राजस्थानी निबंध (2) मणिमाळ (3) रसकळस में छप चुक्या है। बाकी निबंध पत्र–पत्रिकावां में छपयौड़ा है। अे सगळा निबंध भाव, भासा, सिल्प अर सैली री दीठ सूं बेजोड़ गिणीजै। डॉ. सेखावत अछूता विसय लैयर निबंध लिख्या। जका निबंध लेखन री कसौटी पर खरा उतर्‌या है। राजस्थानी भासा, साहित्य, इतिहास अर संस्कृति रा भांत–भांत रा विसय डॉ. सेखावत रै निबंधां रा आधार बण्या है।

डॉ. सेखावत राजस्थानी भासा में सोध निबंध लिखण री सरूआत करी। आप सोध–खोज भर्‌या निबंधां में 'सोधमाळ' पत्रिका में लगोलग छाप–निबंध लेखन ने प्रौढ़ता दी है। भासा री मठोठ, ठेठ राजस्थान सबदां री ठाठ अर सरल पण प्रभावी लेखन सैली, प्रो. कल्याणसिंह सेखावत रा निबंधां री खासयत है।

प्रो. कल्याणसिंह सेखावत री जीवन अर रचनासंसार

राजस्थानी भासा रा निबंधकार प्रो. कल्याणसिंह सेखावत रो जलम 7 जुलाई 1942 को सेखावाटी रा झुंझणू जिला रा गांव खिरोड़ में हुयौ। स्व. शिवदयालसिंह जी आपरा पिता हा। आपरी पढ़ाई–लिखाई जोधपुर, गंगानगर अर जयपुर में हुई। आप एम.ए. कर्‌यां पछै राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर रा हिन्दी

विभाग सूं सगुण वैष्णव भक्त शिरोमणि 'मीराँ रा जीवनवृत्त अर भक्ति काव्य', पर सोध खोज कर पी–एच. डी. री उपाधि प्राप्त करी।

आप जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर रा राजस्थानी विभाग रा संस्थापक विभागाध्यक्ष अर प्रथम आचार्य है। आप जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर री कला, शिक्षा अर समाज विज्ञान संकान का अधिष्ठाता रिया।

आप हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं भासावां रा अधिकारी विद्वान है। आपरी अजैतांई 23 ग्रंथ अर सैकडूं निबंध/सोध पत्र/आलेख छप चुक्या है। आपरै लेखन री विगत नीचे मुजब है–

राजस्थानी भासा री पोथ्यां (मौलिक सिरजण)–

(1) राजस्थानी निबंध– 1981

(2) राजस्थानी साहित्य– 1992

(3) मणिमाळ (भाव प्रधान मौलिक निबंध)– 1995

(4) डॉ. नारायणसिंह भाटी (मोनोग्राफ)– 2005

(5) गढ री साख – 2004

(6) रसकळस (चिंतन प्रधान निबंध)' 2006

सम्पादन–

(1) रामकथा (प्राचीन गद्य ग्रंथ रो सम्पादन)– 1982

(2) तेजा लोककाव्य (लोकदेवता री लौकिक काव्य कथा)– 1982

(3) राजस्थानी गद्य संकलन– 1977

(4) राजस्थानी काव्य संकलन– 1977

(5) राजस्थानी री प्रतिनिधि कहाणियां– 1984

(6) कूंपळ (राजस्थान रा शिक्षक रचनाकारां री रचनावां रो सम्पादन)– 1982

राजस्थानी भासा री पत्र–पत्रिकावां रो सम्पादन अर प्रकासण–

(1) जागती जोत (राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर)

(2) ओळखाण– मासिक पत्रिका (सम्पादन अर प्रकासण)

(3) सोधमाळ– सोध पत्रिका

हिन्दी भासा मे लिखी पोथ्यां–

(1) मीराँबाई का जीवनवृत्त एवं काव्य– 1978

(2) राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति– 1994

(3) मीराँबाई की प्रामाणिक जीवनी– 2001

(4) वीरवर राव जयमल– 2003

(5) राजस्थानी संस्कृति– 2003

(6) राजस्थानी भाषा एवं साहित्य– 2003

प्रो. सेखावत रा निबंधां सारू विद्वानां अर सिरजणधरमी साहित्यकारां री ओळ्या मनजोग है–

''आपरी पोथी' मणिमाळ मिळी। भावां नै लै'र सांतरो विवेचन करणवाळा निबंध राजस्थानी भासा में अजै

तक को लिखीज्या नीं। यूं जिणनै निबंध कैवां, बै ई विरला ई लिखीजिया है। सांगोपांग विवेचन सूं अर वितर्क सूं गूंथ आप राजस्थानी भासा री एक जबरी कमी पूरी करी है। गहरे सोच अर सादै सिल्प–विधान सूं सिरज्यौड़ा अे निबंध द्रिस्टांता अर सूक्तियाँ रै प्रभाव सूं मन नै बांध्यां राखै इसै उत्तम सिरजण सारू आपनै लाख–लाख रंग।''

–रामेश्वरदयाल श्रीमाली

''राजस्थानी रा चावा विद्वान डॉ. कल्याणसिंह जी सेखावत री पोथी 'मणिमाळ' भाव–प्रधन निबंधां री एक घणमूंघी रचना है। जीव, जगत, मोह, माया, सोच, सपनो इत्यादि मोकळां विसयां माथै मायड़भासा में लिखीज्योड़ी आपरै ढंग री आ पैली पोथी है। इण रूपाळी रचना सारू डॉ. सेखावत नै घणी–घणी बधाई अर अंतस री सुभकामनावां।''

–डॉ. शक्तिदान कविया

'''मणिमाळ बांची। यूं तो 'अंतस रा आखर' पढ़तां ही ठा लाग ज्यावै कै लेखक कवि–हृदय होणै रै साथै–साथै जिज्ञासु भी है।

पं. रामचन्द्र शुक्ल री 'चिंतामणि' भाग पैले में भावां अर मनोविकारां पर कई निबंध है। मैं बरसां ताईं ऐ निबंध विद्यार्थियां नै पढ़ाया है। उणां में खाली मनोविज्ञान है। पण आपरा लेखां में मनोविज्ञान रै साथै आपरी आस्था, आध्यात्मिकता अर जीवण–दृष्टि भी है। आपरा लेखां में वेद, उपनिषद, गीता अर दूजा संस्कृत ग्रंथां रै अलावा राजस्थानी संतां–भगतां अर कवियां रा उद्धरण है उणांसूं अै निबंध समझण में भोत सोरा अर प्रभावकारी बणग्या है। म्हारी निजर में राजस्थानी भासा में ओजू तांई आं विसयां पर इये तरीकै सूं बिचार ही कोनी होयो।

एक साधारण पाठक भी आपरी भावना नै आछी तरै समझ सकै है। इणां लेखां सूं पाठक रो खाली ज्ञान ही कोनी बधै, उणनै नई जीवण–दृष्टि मिलै अर नई प्रेरणा प्राप्त होवै।''

–चंद्रदान चारण

प्रासिद्ध विद्वान/समीक्षक

'मणिमाळ' मिली, अंजस आयौ। ...हाल री घड़ी राजस्थानी भासा में अध्यात्म अर 'दरसण' में अखरती कमी री पूरती में आपरौ औ उपकार मानीजसी।

जूनै राजस्थानी साहित्य में तो इणा विसयां माथै मोकळौ पढ़ण नै मिळै। पण हणैरी घड़ी में आप गद्य विद्या में 'मणिमाळ' सांतरै ढंग सूं रूड़ी राजस्थानी में ज्ञानगंगा रौ जको बाहळौ रळकायौ है, बो बेजोड़ है।... भावां री भूख मेटण में 'मणिमाळ' रै इमीरस अरपण सारू आपरो अैसाण।''

–मूळदान देपावत

14.7 इकाई रो सार

(1) आ इकाई राजस्थानी भासा रा निबंध साहित्य री सार रूप में जाणकारी करावै।

(2) प्रमुख निबंधकार डॉ. कल्याणसिंह सेखावत रा निबंधां री विगत मांडै।

14.8 अभ्यास रा सवाळ

(1) आधुनिक राजस्थानी गद्य विधावां री जाणकारी देवो।

(2) निबंध री परिभासा अर तत्वां री जाणकारी लिखो।

(3) डॉ. कल्याणसिंह सेखावत रै निबंधा री विसेसतावां सोदाहरण समझावो।

(4) आधुनिक राजस्थानी भासा री प्रमुख रचनावां अर निबंधकारां री सार रूप में विगत मांडो।

(5) आधुनिक राजस्थानी निबंध साहित्य नै डॉ. कल्याणसिंह सेखावत री कांई देन है? उदाहरणां सूं समझावौ।

14.9 संदर्भ पोथ्यां

(1) राजस्थानी भासा और साहित्य डॉ. हीरालाल माहेश्वरी

(2) राजस्थानी भाषा और साहित्य– डॉ. मोतीलाल मेनारिया

(3) राजस्थानी भाषा एवं साहित्य– डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

(4) राजस्थानी सबद कोस (पैलो भाग)– सीताराम लालस

(5) साहित्य का स्वरूप– बाबू गुलाबराय

(6) चिंतामणि– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(7) राजस्थानी निबंध संग्रह (सम्पा.)– चंद्रसिंह

(8) राजस्थानी निबंधमाळा– डॉ. मनोहर शर्मा

(9) राजस्थानी गद्य : विकास और प्रकाश– डॉ. नरेन्द्र भानावत

इकाई – 15

राजस्थानी भासा रा नाटक अर अेकांकी : उद्‌भव अर विकास

इकाई रो मंडांण

15.0 उद्देस्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 नाटकां री उतपत अर विकास

15.3 राजस्थानी साहित्य में नाटक

15.3.1 नाटक री परिभासा

15.4 राजस्थानी नाटक– सांगोपांग जांणकारी

15.5 राजस्थानी अेकांकी

15.6 नाटक अर अेकांकी मांय फरक

15.7 इकाई रो सार

15.8 अभ्यास सारू सवाल

15.9 पढणजोग महताऊ पोथियां

15.0 उद्देस्य

इण इकाई नै पढियां पछै आ ठा पड़सी कै नाटक विधा किती जूंनी अर लूंठी विधा रैयी है। नाटक अर अेकांकी मांय खास कांई फरक है? इणनै पढियां पछै पाठकां नै जांणकारी हुय सकैला–

1. आज रै समै मांय नाटकां री कांई भूमिका रैयी है?
2. नाटकां सूं कांई सीख मिळै जिणसूं पाठक आपरौ ग्यांन बढा सकै?
3. नाटक अर अेकांकी मांय कांई फरक है?
4. समाज सुधार अर तत्कालीन परिवेस री जाणकारी करावणी।

15.1 प्रस्तावना

मिनखाजूंण अपणै आप में अेक नाटक है अर औ पूरौ जगत इणरौ रंगमंच। जियाजूंण रो औ नाटक इत्तौ प्राकृतिक, सुभाविक अर पूरण है कै आंपां बिना अभिनय री कला सीखियां ही ऊंचै दरजै रो अभिनय कर रियां हां। न्यारी–न्यारी स्थितियां सरूप आंपांरी प्रतिक्रिया रूपी रोजीना री क्रियावां अर भाव भंगिमावां इण मानव जीवन रूपी नाटक रा न्यारा–न्यारा अंक अर दरसाव है।

संसार री सरूआत में जद मिनख में बोलचाल री सगती रो विगसाव नीं हुयोड़ौ हौ उण बगत आदिम मिनख रै जीवण में खारी–मीटी अनुभूतियां नै प्रकट करण रा अैड़ा छिण आया व्हैला, जिकानै दबावण में समरथ नीं हुवण रै कारण बो वांनै भांत–भांत री मुद्रावां, भाव–भंगिमावां, चेस्टावां अर क्रियाकलापां सूं प्रगट करण री कोसीस करी हुवैला या 'जिण दिन कोई टाबर रमता–रमता अपणै आप नै किणी दूजा रै रूप में कल्पित करियौ, उणी दिन नाट्य कला री उत्पत्ति हुई।''

नाटक रै विकास री दूजी स्थिति जद आई हुवैला जद मिनख किणी नै किणी खुसी या देवतावां री प्रसन्नता सारू सामूहिक नाच री परिपार्टी चाली हुवैला अर होळै–होळै उणमें गीत भी जुड्या हुवैला अर वाद्यां रो भी प्रयोग हुयौ हुवैला। जीवन घटनावां रै समावेस रै पछै नाटकीय संवादां रो श्रीगणेस हुयौ हुवैला। इण भांत अभिनय, नाच, गान, वाद्य, कथानक, चरित्र अर संवाद रै भेळप रै पछै जा'र कठैई नाटक अस्तित्व में आयौ हुवैला। पछै इणनै व्यवस्थित रूप सूं खेलण री या नियमां री जरूरत पड़ी हुवैला उण बगत सायद नाट्यसास्त्र री रचना हुई हुवैला। क्यूं कै नाट्य भरतमुनि सूं पैला भी जगत में हा इणी बात रो खुलासौ करता डॉ. पारसनाथ द्विवेदी नाट्यसास्त्र री भूमिका में लिखै– ''यदि हम वेदों को अपौरूसेय मानते हैं तो भले ही समस्त विधाओं का स्रोत वेदों को मान लिया जाये किन्तु नाट्यकला का जन्म उसके बहुत पहले हो चुका था जो लोक अभिनय या लोकनृत्य के रूप में समाज में प्रचलित रहा है।''

इणी बात नै और सुभट करता पुरोवाक् में वे लिखै– ''रामायण, महाभारत एवं पातंजल महाभाष्य में प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत में ईसा के कई सौ सदियों पूर्व यह नाट्यकला पूर्णतया विकसित हो चुकी थी।''

उण बगत वेदां री भी रचना हुय चुकी ही, रिग्वेद रा संवाद सूक्त, महाव्रत स्तोप रा मौका माथै हुया नाच गाणा, यजुर्वेद में आयौ 'शैलूष' सबद, अर सामवेद रो संगीत प्रधान होवणौ इण बात री जूंनी परम्परा री साख भरै। पछै वाल्मीकि रामायण, महाभारत, बौद्ध अर जैन ग्रंथ, महर्षि पतंजलि, अर पाणिनी रो व्याकरण, ग्रंथ नाटक, रंगमंच अर कलाकारां संबंधी सगळी जांणकारी भी भरत रै नाट्यसास्त्र सूं पैला नाट्य रा अहलांण होवण री पुखता साख भरै इणनै आपा विगतवार आगै समझांला।

15.2 नाटकां री उतपत अर विकास

नाट्योत्पति रै इतिहास रै संबंध में विचार करता थकां चारूं वेद, बामणग्रंथ, सूत्र साहित्य, वीर काव्य, जूंना सिलालेख, जातक कथावां, जगत री न्यारी–न्यारी जातियां अर संप्रदायां री भांतभांतीली संस्कृतियां, सभ्यतावां, पूजा अर उछब आद री न्यारी–न्यारी परम्परावां, प्राचीन भवनां, रंग मंडपां अर मूरतियां आद माथै अपांरी दीठ जावै। 'नाट्यशास्त्र' में आयोड़ौ नाट्योत्पति रो इतिहास आखै जगत में मिळण वाळै नाट्य रै उद्भव रो सैं सूं जूंनौ विवरण है। ईसा पैली पांचवीं सदी सूं दूजी सदी रै बीचाळै जातीय कला अर साहित्य रै उद्भव रो इतौ सुभट इतिहास सायद ही किणी दूजा 'राष्ट्र' रा जातीय साहित्य में प्रस्तुत करीजियौ हुवै।

नाट्य रा न्यारा–न्यारा अंगां– संवाद, अभिनय, गीत अर रसादि री उत्पत्ति च्यारूं वेदां सूं हुई, इणरौ उल्लेख भी सुभट लखावै। ज्यूं त्रेता जुग में मनु, वैवस्वत जुग में इंद्र आद देवतावां रै अनुरोध नै स्वीकार कर ब्रह्मा रिग्वेद सूं पाठ्य यजुर्वेद सूं अभिनय, सामवेद सूं गीत अर अथर्ववेद सूं रस ग्रहण कर वेदोपवेद सूं संबंधित 'नाट्यवेद' री सिरजणा करी अर भरतमुनि नै नाट्यवेद री सिक्षा देय औ हुकम दियौ गयौ के आपरा सौ बेटां रा सहयोग सूं नाट्यवेद रो प्रयोग करौ। इण कड़ी में नाट्य री मातृरूपां भारती, आरभटी अर सात्वकी आद वृतियां रो प्रयोग तौ वे कर सक्या पण स्त्री प्रधान कैसिकी वृति रो प्रयोग वे नीं कर सक्या, क्यूं कै नाट्य प्रयोग सारू उण बगत लुगायां उपलब्ध नीं ही।

भरतमुनि भगवान सिव रा नृत्य सुकुमार सिणगार रस सूं पूरण नृत्य अर अंगहार संपन्न कैसिकी रो रूप देख्यौ। पछै भरत रै अरज करण सूं ब्रह्मा जी आपरै मन सूं अप्सरावां रो सिरजण कर्‌यौ अर भरत नै नाट्य प्रयोग सारू सूंप दी। वे नाट्यालंकार में अणूती–निपुण ही। वृतियां री पूर्णता रै पछै स्वाति जैड़ा भांड वादक, नारदादि जैड़ा गायकां रो सहयोग मिळियौ। इण तरै च्यारूं वेदां सूं नाट्य रा प्रधान चार अंग, चार वृतियां अर गान, वाद्य आद री सहायता सूं नाट्य प्रयोग री सरूआत हुई।

15.3 राजस्थानी साहित्य में नाटक

राजस्थानी साहित्य रो लूंठौ इतिहास है। आ भासा घणी जूंनी अर सबळ है। इतौ ही सबळ है इणरौ साहित्य। लगैटगै 1200 बरसां सूं राजस्थानी में साहित्य सिरजण रो काम हुय रैयौ है।

नाटक कांई है? नाटक री दूजी साहित्य विधावां में कांई ठौड़ है अर नाटक लेखण री सरूवात राजस्थान में कींकर हुई अर उणरी बुणगट किंयां हुवै इण बाबत इण इकाई रा अलग–अलग बिंदुवां में विगतवार समझण री पूरी कोसिस करांला।

15.3.1 नाटक री परिभासा

संस्कृत साहित्य रा इतिहास सूं औ तौ पतौ लागै कै नाटक सिद्धांतां माथै खासी चरचा हुई पण जका कीं सास्त्रीय ग्रंथ इण विसय माथै मिळै वां में प्रधानता भरत रै 'नाट्य–शास्त्र' अर धनंजय रै 'दसरूपक' री ही है। शिवनाथ रो 'साहित्यदर्पण' नाटक रा महताऊ सिद्धांतां माथै प्रकास नांखै पण घणकरा ग्रंथ ज्यूं रूपगोस्वामी री 'नाट्यचन्द्रिका', सुन्दर मिश्र रो 'नाट्य–प्रदीप' अर 'अग्निपुराण' जैड़ी पोथ्यां नाट्यसास्त्र रा विसय री उत्कृस्टता पावण में समरथ नीं हुय सकी।

हिन्दी में तौ इण तरै रा ग्रंथां रो टोटौ ही रैयौ हालांकि भारतेन्दु इण खेतर में थोड़ी कोसीस जरूर करी पण वे पूरण रूप सूं सफळ नीं हुय सक्या अर राजस्थानी में तौ औ काम बिल्कुल भी नीं हुयौ। जका इका–दुका ग्रंथ मिळै वै संस्कृत अर अंग्रेजी ग्रंथां री नकल मात्र है। उणां में मौलिक चिंतण नीं रै बरोबर है। अैड़ी अवस्था में नाटक कांई है? या नाटक नै कीं भांत परिभासित कर्‌यौ जा सकै इण सवाल रो पड़ूतर देवणौ भोत ही अबखौ काम है।

फेरूं भी आंपां अठै संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी अर राजस्थानी रा कीं ग्रंथां रै आधार माथै नाटक री परिभासा नै समझण री पूरी कोसीस करांला–

भरत रै मत मुजब नाटक तीनूं लोकां रै भावां रो अनुकीर्तन है–

''त्रैलोक्यस्य हि सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तन्।''

भारतीय नाटक रै प्रयोजन नै अणूतौ गंभीर, व्यापक अर भांत–भांत री रूचि रा लोगां नै सन्तुष्ट करण रो अेक मात्र साहित्य प्रकार मानता कालिदास लिखै–

''नाट्यम् भिन्नरूचेर्जनस्य बहुधारयेकं समाराधनं।''

नाटक अेक व्यापक खेतर है। अैड़ौ कोई ग्यांन, सिल्प, विद्या, कला, योग अर करम कोनी जकौ नाटक में नी दिखायौ जा सकै। इणी बात नै भरत मुनि इण भांत कैवै–

''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।

न स योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन्यन्न दृश्यते।।''

भारतेन्दु नाटक नै परिभासित करता थका अर नाटककार रै संबंध में कीं नियमां रो बंधण मानता लिखै– ''नाटक शब्द का अर्थ है नट लोगों की क्रिया, नट कहते हैं विद्या के प्रभाव से अपने या किसी वस्तु के स्वरूप के फेर कर देने वाले को, व स्वयं दृष्टि–रोचन के फिरने को। नाटक में पात्रगण अपना स्वरूप परिवर्तन करके राजादिक का स्वरूप धारण करते हैं व वेश–विन्यास के पश्चात् रंगभूमि में स्वीकार्य कार्य साधन के हेतु फिरते हैं।''

राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' नाटक नै आम जनता रै मन बिलमाव रो सै सूं लूंठौ साधन मानता लिखै– ''नाटक सांसारिक व्यवहारों और विविध प्रकार की घटनाओं का आदर्श स्वरूप होने के कारण मनोरंजन का एक उत्तम हेतु होता है।''

'काव्येषु नाटकं रम्यं' नै ही आधार मानता थका तथा नाटक नै अेक सम्पूरण कला मानता थका जयशंकर प्रसाद लिखै– 'काव्य एक कला है और ललित कलाओं में सुकुमार कला है, तब यह

मानना होगा कि नाटक का कला से सम्बन्ध ही नहीं परन्तु वह कला का विकसित रूप है। हृदय को अनुभूति कराने के लिए कला कै दो द्वार है, कान और आंख। इधर काव्य की अनुभूति भी दृश्य और श्रव्य दोनों प्रकार से होती है।''

नाटक नै समाज रो प्रतिबिम्ब मानता थका बद्रीनाथ भट्ट लिखै– ''नाटक मनुष्य समाज के कार्य–क्षेत्र का प्रतिबिम्ब है। वह एक दर्पण है। उसमें आप जिस समय का नाटक है उस समय के मनुष्य–समाज की दशा साफ–साफ देख सकते हैं।''

विष्णु प्रभाकर नाटक नै घणा ही मोवणा सबदां में परिभासित करता लिखै– 'नाटक है भी क्या? मानव के बाह्य तथा आंतरिक संघर्स की कहानी है, जो मंच पर से प्रस्तुत की जाती है। इसीलिए वह इतनी सशक्त है और इसीलिए वह समस्त मानव समाज को प्रभावित करती है।''

भरतमुनि ही नाटक नै सुख–दुख रो आधार अर रस सूं पूरण मानता थकां 'नाट्यशास्त्र' में लिखै– ''नाटक सुख दुखात्मक है रसमय है तथा पुरावृत एवं अनेकविध चरित का पुनरुद्भावन भी है।''

नाटक रा खेतर में आथूणा कीं विद्वानां रा विचार भी महताऊ लागै अर वे लोग भी भरतमुनि री भांत अनुकरण नै ही जादा महता देवै। अरस्तु भी 'अनुकृति–सिद्धान्त' रो प्रतिपादन क्रिया रै खेतर तांई ही सीमित राख्यौ है अर इणी अरथ नै आगे भी मान्यता मिळी है। इणी आधार माथै चावा विद्वान सिसरौ (Cicero) लिखै– ''नाटक जीवण री प्रतिलिपि है, आ रीतियां अर रिवाजां रो दर्पण है, सांच रो पड़बिंब है।''

पण सिसरो अठै आपरै मन्तव्य री पुष्टि में औ भूलगो कै जे नाटक जगत में होवण वाळी सगळी घटनावां रो अेक साचौ चितरांम है तौ आंपांरी दीठ सूं उणरी मारफत उत्पन्न आणंद रो वास्तविकता रै साथै गैरौ संबंध हुवणौ चाहिजै। पण औ संभव नी हो सकै। नीं तौ रंगमंच माथै वास्तविक पात्र आ सकै अर न ही वांरी बोली या वांरी भावदसा रो ग्यान ही हुय सकै। इण वास्तै वास्तविकता या यथारथता फगत अेक भरम है, मायाजाळ है।

जथारथ री अनुकृति नै सुभट करता थकां हूगौ, (Hugo) जकी बात कही है वा खासी महताऊ लागै, वांरौ कैवणौ है– ''नाटक वो दरपण है जिणमें प्रकृति परावरतित होवै। यदि औ दरपण साधारण दरपण है अर उणरी सतह समतल या पालिस कर्योड़ी है तौ उणमें चीजां रो पड़बिम्ब सही–सही अंकित नीं हुवैला अर उणमें किणी तरै रो आणंद नीं हुवैला। वो प्रतिबिम्ब सांच तो हुवैला पण उणमें रंग नीं हुवैला क्यूंक भलीभांत विदित है क साधारण परावरतन में रंग अर रोसनी दोनूं विलीन हुय जाया करै। इण वास्तै नाटक नै संगमकारी दरपण हुवणौ चाहिजै जिणमें रगीन किरणां, बळहीण होवण री अपेक्षा, अेकठी अर संघटित हुय'र सिखा नै प्रकास में अर प्रकास नै आग में बदळ सकै। तद ही नाटक नै कला केवण री सारथकता हुय सकै।''

सारसे इणी बात नै ओरूं सही ढंग सूं समझावता लिखे– ''यदि सांच रंगमंच माथै खड़ौ कर्यौ जावै तो देखण वाळा नै बोहत ही भयंकर लागेला। ...नाट्य कला वो साधन है जिणरी मारफत रंगमंच माथै आंपां जीवण नै अभिव्यक्त करां अर भेळा हुयोड़ा दरसकां सारू सत्य री छिंयां प्रदरसित करां।''

नाटककार रो प्रधान धरम है जीवण नै उण स्तर तांई उठाय'र दिखावणौ जिण माथै पूग'र वो आंपारै वास्तै कोतूहळ अर संवेदना रो अंस बण जावै अर हरेक दरसाव आंपांरी आत्मा नै आणंद अर उत्सुकता सूं विभोर कर दै। नाटक में बारला अर अन्तरद्वंद्व में अैड़ा रहस्य होवणा चाहिजै कै आत्मा आपरै ऊपरै पड़ण वाळा सगळा बारला प्रभावां सूं जांणकार हुवै अर सगळी अबखायां

नै रौदंती थकी सफळता कांनी पूग जावै वो ही सफळ नाटक कैयौ जा सकै।

इणी भांत राजस्थानी भासा में भी नाटक नै परिभासित करण री सफल कोसिस करी, चावा अर पैला नाटककार शिवचन्द्र भरतिया। वे लिखै–

नाना रूपमय चित्र है, नाटक जग में जाण।

दृश्य काज सब को रूचे, मंगल रस को प्राण।।

नाटक– खेलतमासौ नीं, संसार को चित्र छै, जिण तरह चितारो अथवा फोटू (तसवीर) उतारबाळौ मिनख जिनावर विगेरा की तस्वीर हूबोहूब खींच लेवै तिका मुजब संसार को खींच्यौ हुवौ चित्र नाटक छै।''

भरतियाजी री परिभासा नाटक नै परिभासित करण में खासी महताऊ लागै। नाटक नै जीवण रो जथारथ मानता थकां चावा नाटककार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' लिखै– ''मेरी दृष्टि में नाटक की परिभाषा जीवन के यथारथ को अपनी कलात्मक दृष्टिकोण की प्रस्तुति ही है।''

नाटक नै मंच री दीठ सूं देखता निर्मोहीजी लिखै– ''नाटक जिकौ रंगमंच माथै सुभीतै सूं मंचित कर्‌यौ जा सकै, असली नाटक बो हीज है।''

15.4 राजस्थानी नाटक सांगोपांग जांणकारी

नाट्य सास्तर रा प्रणेता भरत मुनि नाटक री परिभासा देता हुवा बीं नै लोकवृत रो अनुकरण बतायौ है– 'लोकवृत्तानुकरण नाट्यम्'। ईं में नाटक रै वास्तै दो बातां जरूरी मानी है– (1) लोकवृत्त या कोई कथा, का'णी या जीवण में हुयोड़ी वै घटनावां जिकी अेक का'णी रै रूप में हुवै अर (2) अनुकरण–मतळब वीं री नकल उतारणी। ईं तरै अभिनय नाटक रो जरूरी अंग सिद्ध हुवै अर अभिनय जिण जगा कियौ जावै वौ बाजे–रंगमंच। मुद्दै री बात आ के बिना रंगमंच रै अभिनय रै नाटक री कल्पना नीं की जा सकै। आपां किणी ई भासा रो साहित्य उठाय'र देखां तौ आ' बात साफ दिखै के उणमें नाटकां री सुरूआत रंगमंच माथै खेलीजण सूं ई हुई। नाटक रै इतियास रा खोजी विद्वानां रो मत है के सारा देसां में नाटक रो आदिम रूप धार्मिक गीतां नै नाच रै साथै गावण री रम्मत में मिळै। राजस्थानी साहित्य में ई नाटकां रो सुरुवात रो रूप 'रासक', 'रास', 'फाग', 'चर्चरी' काव्यां में मिळै। आगै चाल'र अै 'नाच–गाणा वाळा रास' ख्याल तमासां रो रूप ले लियौ। जो नाटकां रै जादा नजदीक हौ। अै ख्याल–तमासा आज ई जीवता है अर गांवां में अर कदै कदास सैरां में भी होळी जैड़ा तिवारां माथै हुवता निजर आवै। आं में गोपीचंद, भरथरी, हीर–रांजा आद घणा लोक चावता है। यूं अगरचंदजी नाहटा 'लोक–कला' में ख्यालां री अेक लांबी सूची प्रकासित कराई है।

आं ख्याल तमासां रो रंगमंच सीधौ–सादौ खुलौ रंगमंच मंच हौ। बस्ती रै मझ में जठै कठैई थोड़ो खुलौ चौक हुवतौ, उण रै बीच में जरूरत माफक दो चार लकड़ी रा पाट बरोबर री ऊंचाई माथै जमा देवता नै ऊपर बिछा देता एक जाजम। आं माथै एक कानीं बैठ जावता गवैया नै साजिंद नै नीचै चोक में चौफेर बैठ जावता तमासौ देखणिया। घरां रा झरोखां, डैलांण नै डगळा भी दरसकां सूं भरिया रै'ता। नीं कोई पड़दां रो कांम नै नीं कोई 'एअरकंडीशंड हॉल' री जरूरत। आपणी संस्क्रती री आ' विसेसता है कि चाहे नाटक हुवौ, चाहे खेल–कूद, माप–तोल, नाप–जोख नै खास तरै रै साज सामान रो झगड़ो ईज नीं राख्यो।

किणी भी साहित्य में सारां सूं सिरैकार नाटक वै लोग ई दे सकिया है, जका खुद मंजियोड़ा अभिनेता हा अर खुदई नाटकां रो दिग्दरसण करता। पण धीमै–धीमै साहित्य रै विकास रै साथै अैड़ा विद्वान भी नाटक लिखण लागा ज्यांरौ अभिनय सूं अर नाटक रै दिग्दरसण सूं कीं तल्लो–बल्लो ई नीं हौ। आं

नाटकां नै रंगमंच माथै पेस करण नै अबखाई आवण लागी तौ लेखकां आप रा नाटकां नै साहित्यिक नाटक कै'णौ सुरू कियौ अर औ सवाल पैदा हुवो कै कईं नाटक रै वास्तै रंगमंच माथै खेलीजणौ जरूरीज है? नाटक खाली पढण सारू क्यूं नीं लिखीज सकै? या पछै कै'ण लागा के थांरै रंगमंच नै म्हारै नाटकां रै जोगौ बणावण सारू बीं में जरूरी फेर बदळ करौ। नाटक काव्य रो वो रूप है जिणरौ आणन्द आंख्यां सूं देख नै अर कानां सूं सुण नै लिरीजै। 'काव्येषु नाटकम् रम्यम्' इसा नाटकां रै वास्तै ई कैयौ गयौ है। इण सब रै बावजूद विकसित भासावां रै साहित्य में इसा नाटकां री कमी कोनी जिकां नै जे मंच माथै खेलां तौ दरसकां रै अधबीच सूं ई ऊठ नै भाग जावण रो अंदेसौ रै'वै पण फेर भी विचारां री गै'राई अर विद्वत्ता री दीठ सूं वै मानीजियोड़ा नाटक गिणीजै। अनोखी बात आ' है कै आं नाटकां री संरचना नै गठण तौ सारौ दृस्य–काव्य री तरै रो व्है पण फेर ई वां रो आणन्द पढनै ई लिरीज सकै, देख नै नीं, अर वौ भी मूठी भरिया विद्वानां द्वारा ई लिरीजै, आम आदमी रै वै काम रा नीं हुवै। हिन्दी में नाटकां री भरमार होता थकां भी घणकरा नाटक विसेस तौर सूं आजादी रै पैली लिखिजियौड़ा नाटक इणी तरै रा है ज्यां में मंचीय गुणां रो घणौ अभाव है। ईं दीठ सूं मराठी अर गुजराती रो नाटक साहित्य घणौ जीवंत है अर वीं में एक सूं अेक बदका नाटक है जिका मंच माथै घणी सफळता सूं खेलीजै।

राजस्थानी गद्य साहित्य रै विकास नै जे आंपां तीन कालां में बांटां–आदि, मध्य अर आधुनिक काल–अर काल–विभाजन रै मुद्दै माथै विद्वानां में घणौ मतभेद देखतां मोटै रूप में आदि काल 13वीं सूं 14वीं सदी रै अंत तक, मध्य 15वीं सदी सूं 19वीं सदी रै अंत तक, नै 1900 वि. रै बाद सूं आधुनिक काल मान'र चालां, तौ केयौ जा सकै है के आदि काल में नाटक लोक–नाट्य रै दो–चार रूपां में ई मिळै। पूरै रूप सूं जिण नै 'नाटक' कयौ जा सकै, इसी रचना न तो आदि काल में हुई मिळै अर नीं मध्यकाळ में। आंपां रा देस में नाटकां री परम्परा घणी पुराणी है। ईसा सूं भी तीन सदी पैलां रा कवि भाष रा नाटक संस्क्रत भासा में मिळै अर काळिदास रा नाटकां रो तो 18वीं सदी में यूरोप री भासावां में भी उल्थौ व्हेणौ सुरू हुय चुको हौ। बाणभट्ट री तौ खुद री नाटक–मंडळी ही अर हर्षवर्धन रै राज में अेक–अेक नाटक केई रातां तक खेलीज नै पूरौ व्हेतौ। राजस्थानी रो आदि काल रो साहित्य तौ फेर भी वींरै झांझरकै री बेळा रो साहित्य मानीज सकै है जद कै वो अपभ्रंस रै प्रभाव सूं पूरी तरै छुटकारौ नीं पा सकियो हो पण मध्यकाल तो राजस्थानी साहित्य री भरपूर जवानी रो जुग है जीं में गद्य–पद्य दोनां में मोकळी रचनावां हुई अर साहित्यिक गुणां सूं भरपूर रचनावां भी हुई पण आ' बड़े इचरज री बात है कै राजस्थानी लेखकां रो ध्यान नाटकां री रचना कांनी क्यूं नीं गयौ जद कै देस में नाटकां री इत्ती जोरदार परम्परा मौजूद ही। पण आ दुर्घटना कोरी राजस्थानी साहित्य रै साथै ई हुई व्है इसी बात नीं है, सारी आधुनिक आर्य भासावां रै साहित रो औ'ई हाल है। हिन्दी में तो गद्य–साहित्य री सुरुवात ई आधुनिक काल या विक्रम री बीसवीं सदी सूं ई मानीजै है पण राजस्थानी में तो गद्य री काफी जूनी परम्परा ही, फेर भी नाटक रचना नीं हुई। आ क्यूं? इण रा किताक कारण तो सांमा ई दीसै है। मध्य–जुग जुद्धां रो नै उथळ–पुथळ रो जुग हौ जिण रा हालत नाटकां रै अर रंगमंच रै अनुकूल नीं पड़ता। लूट–खसोट अर भाग–दौड़ रै बीचै नाटक खेलणौ किण नै सूझतौ। 8वीं सदी रै बाद सूं मुसलमानां रा लगातार हमलां रै कारण नाटकां री परम्परा कम सूं कम उत्तर भारत में तो टूटती ही निजर आवै है। दूजी बात आ'कै राजस्थानी रो वीं काल रो साहित्य तीन तरै रो हौ' (1) जैनां अर बांमणां रो लिख्योड़ौ धार्मिक साहित्य (2) चारणा रो लिखियोड़ौ डिंगळ साहित्य अर (3) लोक साहित्य। ईं में सूं धरम रा प्रचार रै वास्तै नाटक तो जैनां रै अनुकूळ नीं पड़ता हा क्यूंकै तीर्थांकरां नै मंच माथै दिखावणौ वै आज भी ठीक नीं मानै–साधुवां रो सांग भरणौ भी जैन लोग असाधना मानै। अर जैनां री कोई भी कथा सायद ही अै'ड़ी हुवै जीं रै अंत में नायक या नायका दीक्षा लेय'र साधु–साध्वी नीं बणै। बामणां रै धरम प्रचार री भावना रामलीला, रासलीला अर गोपीचंद भरथरी जिसा ख्याल–तमासा सूं ई तिरपत हू जाती जिण सूं सायद वै भी नाटका रचना कानी ध्यान नीं दियौ। आंरौ साहित्य भी राजस्थानी में घणौ नीं है क्यूं कै इण काल में ब्रजभासा रै जोरदार

प्रचार सूं वै घणकरौ साहित्य पिंगळ में ई लिखियौ। चारणी साहित्य या डिंगळ साहित्य मध्यकाल रो सारां सूं सम्पन्न साहित्य है जिण में गद्य–पद्य री मिली–जुली सैली री वचनिकावां भी है पण आं कवियां रो सारौ ध्यान आश्रयदाता राजावां नै बिड़दावण में अर वांरा वंस नै ऊंचौ दिखावण में ई अटकियोड़ो रय्यौ। राजावां नै नाटक दिखाणौ इतरौ सोरौ काम नीं हो जित्तौ काव्य सुणावणौ। सायद इणी कारण वै काव्य रचना सूं आगै नीं बदिया। जुद्धां रो जिसौ सजीव चित्रण काव्य में हुय सकै विसौ नाटक में दिखावणौ संभव नीं हुवै क्यूं कै जुद्ध रा दरसाव रंगमंच माथै प्रभावसाली ढंग सूं नीं दिखाइजै। उठी लोकनाट्य भी ज्यां लोगां रै हाथ में जीवतौ रयौ, वै समाज में नीचा गिणीजण वाळा लोग हा। नतीजौ औ हुवौ कै नाच गाणा अर अभिनय ढोलियां अर भांडां रो काम गिणीजण लागौ अर राजस्थान में आ' भावना सन् 1825–30 तक भी मौजूद ही।

कारण कीं भी हुवौ, आ बात साफ है कै आधुनिक काळ रै पै'ला नाटकां री रचना घणकरी भासावां दांई राजस्थानी में भी हुई। सही अरथां में राजस्थानी रा पै'ला नाटककार वि.सं. 1910 में जनमियोड़ा शिवचंदजी भरतिया ई ठै'रै। वे संस्क्रत रा तो ऊंचे दरजै रा पिंडत हा ई, मराठी, हिन्दी अर राजस्थानी में भी घणी सफळता सूं लिख सकता हा। ईं वास्तै वां रा नाटकां में आं चारूं भासावां रो प्रभाव भी है अर भेळ भी। वां रै पै'लां 19वीं सदी रै अंत में हुयोड़ा किरपारामजी रै भी अेक नाटक री चरचा तो मिळै पण वां रो नाटक हाल हाथै नीं आयौ है। ईं वास्तै भरतियाजी नै ई पै'ला नाटककार मानिया जावै। हिन्दी में भी नाटकां रै उदै रो लगभग औ'ई काल है। भरतियाजी रो पै'लो नाटक 'केसर विलास' छपियौ पण वौ घणौ चावौ नीं हुवौ। वि.सं. 1963 में लिखियोड़ौ नाटक 'बुढ़ापा री सगाई' सूं भरतियाजी नै नाटककार रै रूप में घणौ जस मिळियौ। ईं नाटक रो विसै नाम सूं ई साफ है। ईं में महाराष्ट्र में बसियोड़ा मारवाड़ियां रै जीवण री सजीव अर साची झांकी है। नाटक तीन अंकां रो है पण ईं री संरचना में संस्क्रति री नाटक सैली रो भी प्रभाव साफ झळकै। औ नाटक मंगळाचरण सूं सुरू व्है नै भरत वाक्य में खतम हुवौ है। ईं रा दो संस्करण छपिया। ईं रै पछै वां रो तीजौ नाटक 'फाटका जंजाळ' प्रकासित हुवौ जीं में मारवाड़ी समाज री बुराई रो व्यापक चित्रण है, ज्यूं कै सट्टौ, दलाली, रंडीबाजी वगैरा, पण ईं रै साथै पतिव्रत धरम अर स्वदेसी वस्तुवां रै प्रेम रा उपदेस भी है। नाटक पांच अंका रो है अर ईं में मराठी अर खड़ी बोली रो भी जगै–जगै प्रयोग हुवौ है। ईं में उपदेसां री भरमार है, अठै तक कै एक पात्र एक जगा इग्यारह पाना रो भासण तक झाड़तौ मिळै। नाटक रै अंत में भरतियाजी आप रै परवार रो परिचै भी दियौ है।

आं नाटकां रै देखणै सूं आ बात साफ हुय जावै कै भरतियाजी नै राजस्थानी भासा में रचना री प्रेरणा समाज–सुधार री गैहरी भावना सूं मिळी। वै खुद ईं बात रो उल्लेख कियौ है के समाज–सुधार री जड़ है लुगायां अर वै है अणपढ सो वां तक खुद री बात राजस्थानी सूं ई पोंचाई जाय सकै है। आ बात खाली नाटकां रै विसै में साच नीं है, आजादी रै पै'ली लिखिजियोड़ै पूरे राजस्थानी साहित्य माथै भी घणा अंसां में लागू हुवै है।

आजादी रै पै'लां राजस्थानी में साहित्य रचना री प्रेरक सगती 'समाज–सुधार' री भावना ई रैई, भासा री चेतना नीं। आ बात घणी महत्ता री है क्यूंकै साहित्य–रचना री दिसा, विसयां रो चुणाव नै रचना रो स्तर अै सगळी बातां लेखक रै उद्देस सूं ई संबंधित हुवै। इणी कारण आजादी रै पै'ला रो राजस्थानी साहित्य–कईं तौ कविता नै कईं नाटक–सगळां रो मूळ स्वर विचार–प्रसार नै प्रचारात्मक हौ। लेखक वै बातां अैड़ा सबदां में ई केतौ जो आम जनता अर अणपढ़ लुगायां तक री समझ में आ जावै। नीं तौ प्रचार रो उद्देस इज विफळ हुय जातौ। ईं वास्तै ईं जुग रा नाटकां में साहित्यिकता कम अर उपदेसात्मकता ज्यादा है।

1922 रै बाद 'मारवाड़ी भासा प्रचार मंडळ', धमणगांव (महाराष्ट्र) सूं नारायणदासजी अगरवाळ रा

लिखियोड़ा आठ नाटक प्रकासित हुवा। मंडळ रै नांम में भासाई चेतना स्पस्ट झळकै। नारायणदासजी समाज सुधार रै अलावा दूजा विसै भी लिया–थोड़ौ विसय–विस्तार हुऔ। इतियास अर पुराण संबंधी नाटक सुरू करण रो सेवरौ नारायणदासजी रै माथा माथै बांध्यौ जा सकै है। आं में हास्य–प्रधान नाटक ई हा ज्यांनै लेखक खुद **'फार्म'** नाम दियौ है। आं री रचनावां है– 1. बाळ–ब्याव को **फार्स** 2. अकल बड़ी कै भैंस 3. विद्या उदय 4. भाग्योद्दयं 5. महाराणा प्रताप 6. दान–धर्म नाटक 7. सरस्वती–विजय 8. महाभारत को श्रीगणेस। विसयां री विविधता आं नाटकां में स्पष्ट है अै नाटक घणकरा छोटा है ज्यां में दो या तीन अंक है। दरसाव 10–15 तक है। यां रै अलावा इण काळ में नीचै लिख्या नाटकां रो भी उल्लेख डॉ. आज्ञाचंद भंडारी आप रा प्रबंध में कियौ है– गुलाबचंदजी नागोरी रा दोय नाटक– (1) 'मारवाड़ी मौसर' अर 'सगाई–जंजाळ'। यां री भासा पर भी मराठी रो काफी प्रभाव है। बालमित्रजी लिखित 'कळजुगी कृष्ण रुक्मण' नाम सूं ई समसामयिक जीवन माथै व्यंग्य लागै। मदनमोहनजी सिद्ध रो 'अंध–परम्परा' अर ओसवाळ हितकारणी सभा लाडनूं रो प्रकासित 'समाज–सुधार' नाटक रो उल्लेख मिळै।

इण काल रा नाटककारां में भरतियाजी रै पछै सारां सूं जादा लोकप्रियता मिळी मदनमोहनजी सिद्ध रा नाटक– 'जैपुर री ज्योंणार' नै। जिण रा तीन संस्करण छपण री तौ जाणकारी मिळी है। औ नाटक चार–चार दरसावां रा दो खंडां में है। पै'लौ खंड 1985 वि. (1928 ई.) अर दूजौ संवत 1994 (1939 ई?) में निकळियोड़ौ है।

ईं काल में ई पै'ली गूंगी फिल्मां नै सन 31 रै पछै बोलती फिल्मां रो भी प्रचार राजस्थान में हुवौ। ईं सूं प्रभावित हु'र ठाकुरदत्तजी दाधीच आप रै नाटक रो नाम राखियौ, 'माहेश्वरी पंचायत रो बायस्कोप' अर नाटक रा दरसावां नै 'री' रो नाम दियौ। औ नाटक कळकत्ता सूं सन् 1929 (संवत 1986) में प्रकासित हुवौ। इण री बोली जैसळमेरी है। घणकरी आ' बात देखण में आवै कै साहित्य री नवी विधा रै काळ में अनुवादां रो जोर रै'वै पण राजस्थानी रा नाटकां रै इण उदै काल में भी अनुवादां रो अभाव है।

समाज सुधार समाज री काळ विसेस में जो परिस्थिति हुवै बीं नै ई आधार बणा'र चालै अर पुराणा या सम्पन्न भासावां रै नाटकां में वै परिस्थितियां कठां सूं मिळै जिण सूं सारा ई नाटक मौलिक रचनावां रै रूप में ई सांमी आया। अेक आ बात भी ध्यान देवण जोगी है के ईं काल रा दो अेक नै छौड'र लगभग सारा ई लेखक प्रवासी राजस्थानी हा। अंग्रेजी सिक्षा रो प्रचार राजस्थान में महाराष्ट्र अर बंगाल बिचै घणौ मोड़ौ हुवौ जीं सूं राजस्थान में साहित्यिक अर सामाजिक चेतना भी अेक पीढ़ी सूं पिछड़ियोड़ी रैयी। कीं घर बिचै बारै जाय नै बसणियां में आप रा देस रै लोगां रो प्रेम विसेस हुवै अर वै लोग अेक सक्रिय सामाजिक संगठन बणाय'र रै'वै। ईं कारण ई वां में समाज सुधार री भावना जादा प्रबळ रही। वै खुद रै चौफेर जिण जाग्रत समाज नै देखियौ, उण सूं खुद रा समाज री तुलना करणै पर वां में समाज नै सुधारण री बेचैनी पैदा व्हेणौ स्वाभाविक ई ही।

जठै तक मंच रो सवाल है, ईं समय में देस भर में पारसी रंगमंच रो बोलबालौ हौ अर सिनेमा चालू हुवण रै पै'ला 'पारसी थियेट्रिकल कम्पनियां' रा नाटक ई जन–मनोरंजन रा प्रमुख साधन हा। 'आं में जादातर तीन अंक व्हैता अर 20–25 दरसाव। गद्य रै' बीच में उड़दू रा जोसीला कै प्रेमप्रधान सेर रै'ता जांनै प्रभावसाली ढंग सूं बोलणौ ई चोखौ अभिनय गिणीजतौ। लोग भाग लेवण रै पै'ला आ' देखता कै ईं में जोरदार सेर किताक है। दरसावां रै बीच में गाणा री भरमार रै'ती अर अेक दो नाच भी रै'ता। पूरै नाटक में चार पांच दरसाव कॉमिक या नकल रा रै'ता जकां रो कथानक न्यारौ ई चालतौ। चितरांम मंडियोड़ा पड़दां रै ऊपर चढ़ण उतरण सूं दरसाव बदळतौ। अेक नाटक रै वास्तै अै पड़दा जरूरी व्हेता–सारां सूं आगै 'ड्राप सीन' व्हेतो जिण माथै भगवान रो भव्य चित्र रै'तौ। वीं रै लारै रस्तै रो पड़दौ जो 'कॉमिक' रै काम आवतौ। उण रै लारै मै'ल रो पड़दौ अेक या दो तरै रा मै'ल जां सूं अलग अलग जगै बताईजती।

बीं रै लारै जंगळ रो पड़दौ। आं पड़दां री मदद सूं घणकरां नाटक खेलीज जावता। मानीजियोड़ी कम्पनियां तीन चार तरै रा मैहल व कट जंगळ अर कट मै'ल रा पड़दा भी राखती ही। कपड़ा माथै कोरियोड़ा चितरामां रा दो–चार सजावटी फ्रेम औरूं रैता जकां सूं भाखर, बगीचौ वगैरा दिखाया जाता। रंगमंच घणकरौ 25–30 फुट लंबौ अर 20 फुट चौड़ो व्हैतौ अर उणरै सामने दरसकां रै बैठण रो बडौ 'हॉल' जो आज भी उणी तरै रो है। नाटक रात रा नो बजियां सुरू व्हेता अर दो तीन बजियां खत्म व्हैता। राजस्थानी रा नाटक भी इणी रंगमंच नै ध्यान में राख'र लिखिजियोड़ा है।

स्वतंत्रता रै बाद रो नाटक साहित्य– सिनेमां रै आविस्कार सूं नाटकां रो प्रचार अेकदम कम हुवण लागौ अर 5–7 बरसां में ई केई प्रसिद्ध नाटक कम्पनियां या तौ खतम व्हेगी या फिल्मां बणावण लागगी ज्यूं कै कलकत्तै रा मदन थियेटर अर न्यू थिएटर्स। ईं सूं इण काल में नाटक रचना कांनी लेखक कम प्रेरित व्हिया। घणकरा अेकांकी ई लिखीजण लागा। राजस्थानी में ई आ' ई स्थिति रैई। साहितिक नाटकां में डॉ. आज्ञाचंद भंडारी रो अेक छोटौ नाटक 'पन्नाधाय' सन् 1963 ई. में छपियौ जो विसै री नवीनता अर रचना कौसळ री दीठ सूं सरावण जोगौ है। तीन अंकां रो दूजौ कोई नाटक ईं काळ में लिखिजियोड़ौ निंगै नीं आयौ। गोविन्दलालजी माथुर भी एक 'दहेज' नांव रो तीन अंकां रो नाटक लिखियौ। गोविन्दलालजी री भासा जोधपुरी–मारवाड़ी है अर मुहावरै री व्यंग्यात्मक नै चुस्ती बींनै सजीव बणाई राखै। बंबई में अेक नाटक खेलीजियौ–'सुपातर बींनणी' नै 'कुपातर बींद'।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' मूल रूप सूं तौ हिन्दी रा लेखक है, पण पछै जावता वां राजस्थानीं मांय कहाणियां अर उपन्यास ई लिख्या। श्री यादवेन्द्र री अंक पाठाकृति ''तास रो घर'' घणी चावी हुई। अन्नाराम सुदामा उपन्यासकार रै रूप में तौ सिरै है ई, पण वांरौ नाटक 'बधती अंवळाई' घणो महताऊ है, इण जमानै री अबखायां रो असरदार खुलासौ इण नाटक में मिळै। इण रै अलावा उल्लेख जोग राजस्थानी पाठकां में बीकानेर निवासी निर्मोही व्यास रा 'ओळमों', 'भीखो ढोली', 'सांवतो', 'बाबोसा' अर अेक गांवरी गोमती समाजू दीठवाळा घण महताऊ नाटक है इणरै अलावा निर्मोही व्यास रो कंक फेरूं अेतिहासिक विसय वस्तु वाळो नाटक 'प्रणवीर पाबूजी' भी उल्लेख जोग है। आ केवां तो कोई अतिस्योक्ति कोनी'क निर्मोही व्यास आज रा सिरै राजस्थानी रा नाटक लेखक है। श्री दलपत परिहार मंचित भी किया पण हाल तांई छपियौ एक ई नाटक है, 'तोतै री कहांणी' जिकौ रविन्द्रनाथ टैगोर री कहांणी माथै आधारित है। इणरै अलावा अर्जुन देव चारण री नाटयकृतियां– 'धरमजुद्ध' अर 'मुगती गाथा' अर बद्री प्रसाद पंचोली रो 'पाणी आडी पाल' उल्लेख जोग है।

राजस्थानी भासा में स्वतंत्रता रै बाद रा समय में भरत व्यास कीं नाटक इसा भी लिखिया जकां की फिल्मां बणी– (1) 1947 में 'रंगीलौ मारवाड़' अर 1949 में 'ढोला मरवण'। पण राजस्थानी फिल्मां में 'बाबोसा री लाडली' अर 'बाबा रामदेव' विसेस लोक चावती बणी। आं सूं देस भर में राजस्थानी भासा रो प्रचार हुयौ अर उणरी सामरथ भी उजागर व्ही।

ईं समय में गीत–नाट्यां रो प्रचळण भी हुवौ अर राजस्थानी लेखकां रो ध्यान बीं कांनी भी गयौ। जन–कवि गणेसीलाल उस्ताद जिका खुद आजादी रै जंग रा अेक जोरदार सिपाही हा, जन–जागरण रै उद्देस सूं राजस्थानी में गीत–काव्य लिखिया जयांमें 'बधाउड़ौ' घणौ चावौ है। थोड़ा बरसां पै'ला मुकुलजी री चावी कवितां सैनाणी नै श्रीमती शीला झुनझुनवाला प्रभावसाली निरत नाटिका रो रूप दियौ। आ नृत्य नाटिका नारयणदत्त रा निदेसण में कई जगै घणी सफलता रै साथै अभिनीत व्ही है। मीरां पर भी तीन निरत नाटिकायां बणीं है (अेक श्री गजानन वर्मा री, दूजी देवीलालजी सामर री अर तीजी नारायणदत्त री) नारायणदत्त में निरत नाटिका री संरचना री सरावण जोगी प्रतिभा है। वे का'णी सूं दरसाव जोग थळ छांटण में अर वांनै गीत, नाच अर समवादां रै रूप मं प्रभावसाली ढंग सूं प्रस्तुत करण में बेजोड़ है।

15.5 राजस्थानी अेकांकी

अेकांकी नाटकां री विधा घणी पुराणी है क्यूं कै संस्क्रत में ई 'भाण' व्यायोग, वीथि, अंक अर प्रहसन नांव रा रूपक अेक–अेक अंक रा ई व्हैता। पण आं री संरचना अैड़ी कठोर नियमां में बंधियोड़ी ही के वै आजकल रा अेकांकियां सूं घणा अळगा पड़ जावै। रूप अेक सौ व्हैता थकां भी वां री आत्मा भिन्न है। आधुनिक अेकांकी जुग री मांग सूं पैदा हुयौड़ा है। लोगां रो जीवण इतरौ व्यस्त व्हेगौ के लांबां नाटक देखण री फुरसत ई नीं रई अर सिनेमां रो आविस्कार तौ तीन अंकी नाटकां रो सफायौ इज कर दियौ क्यूंकै अढाई घंटां में फिल्मां किणी भी कथा नै जिसा सजीव अर मनोरंजक रूप में प्रस्तुत करे वा बात 5–5 घण्टा रा नाटकां में भी आणी संभव नीं व्है। रंगमंच रा रूप में ई भारी बदळाव आयौ। चित्रकारी आळा नै उतरण–चढण आळा पड़दा अर वां रै जोड़ री विंगां गायब व्हेगी। चितरांमां वाळा 'सैट रा टुकड़ा भी सिनेमा रै आगै रमेकड़ा व्है ज्यूं लागण लागा– वै ई गया। डावै–जीवणै सिरकीजण आळा सादा इकरंगा पड़दां रो मंच आयौ अर सादी विंगां आयगी। अेक रै लारै दूजौ दरसाव लगातार दिखावण री परंपरा भी टूटी, लोग दो दरसावां रै बिचै जरूरत माफक टैम लेवण लागा अैड़ा रंगमंच सादा अर किफायती होणै सूं स्कूलां अर कालेजां में भी वणाईजिया अर सिक्षण संस्थावां अेकांकी विधा नै घणौ पोसण दियौ।

राजस्थानी रा नाटकां रै उदैकाल मैं थोड़ा घणा अेकांकी लिखिजिया पण घणकरा सन् 1930 रै पछै ई लिखिजिया। यूं तौ 1825 में भगवतीप्रसादजी दारूका रो लिखियोड़ौ 'सीठणा सुधार' अेकांकी वां रा 'पंचनाटक' में प्रकासित हुयौ पण वीं रा संवादां में खड़ी बोली रो घणौ प्रयोग है अर ज्यादातर मारवाड़ी अर खड़ी बोली रो भेळ है। सन् 1930 में सरदारसैर निवासी शोभाचंदजी जम्मड़ रो अेकांकी प्रहसण 'वृद्ध विवाह विदूषण' सामनै आयौ। सरदारसैर में अेक मनोरंजन परिसद ई कायम हुई जिणमें जम्मड़जी रा घणकरा अेकांकी अभिनीत हुवा। खुसी री बात है के सरदारसैर में जम्मड़जीरा प्रयासां सूं अेक रंगमंच अर नाटक मंडळी घणा वरस पै'ला ई बणगी ही। इण भांत जम्मड़जी ई राजस्थानी रा पै'ला अेकांकीकार अर रंगमंच कायम करणिया मानीजणा चाइजै। वां रो सुरगवास 1964 में हुयौ अर बै आप रो पूरौ जीवण राजस्थानी नाटक अर रंगमंच री सेवा में अरपण कियौ।

1931 ई. में जोधपुर निवासी श्रीनाथजी मोदी रो 'गोमा जाट' या 'ग्राम सुधार' नांव रो अेक नाटक छपियौ जिणमें 10 दरसावां रो अेक अंक है। सरु में प्रस्तावना अर आखिर में उपसंहार रो अेक दरसाव है जिण रो नाटक री मूळकथा सूं सीधौ संबंध कोनीं। मोदीजी ईं रचना में पूरै ग्रामीण समाज नै अेक इकाई रै रूप में देखियौ है अर अंधविस्वास मेटण रो नै सिक्षा प्रचार रो संदेस दियौ है। टेकनीक री निजर सूं देखां तो उद्देस री अेकता अर अेक अंक होणा सूं ईंनै अेकांकी भी कैय सकां हां पण कथा री जगां अेकांकी में कठै? किणी विधा री बंधी बंधाई लीक माथै ई चालणो लेखकां रै वास्तै जरूरी नीं व्है–ईं वास्तै मोदीजी आप रै संदेस री जरूरत मुजब दरसावां रो हिसाब राखियौ है। 1930 रै आखती–पाखती रो काल साहित्य में भी परम्परावां सूं हट नै रचना करण रो नै आजादी सूं लिखण रो समै हौ सौ औ भी वां रा अेक नुंवौ प्रयोग मानियौ जा सकै है।

1933 ई. में स्व. सूर्यकरणजी पारीक रो 'बोळावण' अेकांकी छपियौ। इण में छै दरसावां रो अेक अंक है अर ईं री तकनीक आजकल रा अेकांकियां रै ज्यादा नैड़ी है। ईं रो विसै भी समाज–सुधार सूं भिन्न राजपूतां रो जातीय चरित्र है। बीच–बीच में पद्यां रो ई प्रयोग हुयौ है जो पारसी थिएटरां रो प्रभाव है।

स्वतंत्रता रै बाद रो अेकांकी साहित्य– ईं समै में सारां सूं बत्तौ सिरजण हुयौ अेकांकियां रो जका राजस्थानी री पत्रिकावां में छपता रैया। 1954 ई. में जोधपुर निवासी श्री गोविंदलाल माथुर रो सात अेकांकियां रो अेक संग्रै जोधपुर सूं 'सतरंगणी' रै नाम सूं प्रकासित हुयौ, जिण मांयलौ 'लालची मां–बाप'

नांव रो अेकांकी सारां सूं सिरै है। ईं में सगाई ब्याव रा मामला में बेटी रा बाप सूं अड़ परा नै रुपिया पटकाणिया लालची लोगां पर व्यंग्य है। चित्रण बड़ौ स्वाभाविक अर जथारथ है। भासा पर मारवाड़ी बोली रो वौ रूप है जिकौ पढ़िया–लिखिया अर सिस्ट समाज में प्रयुक्त हुवै। आं रै सामाजिक अेकांकियां में सहर में रैवणिया कायस्थ परिवारां रै जीवन री छाप है। इणरै अलावा न्यारी न्यारी किताबां रै रूप में वे 5–6 अेकांकी ओर लिखिया ज्यां में सामाजिक जीवन मं आयोड़ा दोसां रो चित्रण है। मूळ प्रेरणा समाज सुधार अर ग्रामोत्थान व सिक्षा प्रचार री है। आं रा प्रमुख अेकांकी है– लालची मां बाप, रिश्वत, ठाकुरशाही री झलक, अंधविस्वास, कर्जे का अभिसाप, आदर्स गांव, सौ कमाऊ अर एक खाऊ, सफाखाना, सूदखोर, सिक्षा का सवाल अर बाल विधवा। 'लालची मां बाप' केई बार मंच माथै सफळता सूं खेलीज चुकौ है। पण बाकी रा अेकांकियां में नाटकीय परिस्थिति या नाटकीय मोड़ रो अभाव होवण सूं वै इत्ता ससक्त नीं बण सकिया। फेर ई अेकांकी रै विकास में माथुर सा'ब रै जोगदांन नै आदर सूं याद कियौ जासी। माथुर सा'ब रो अेक अेकांकी 'पंचायत राज' सन् 1963 में स्टूडेंट बुक कम्पनी, जैपुर सूं निकळियौ।

आं रै अलावा मरुवाणी, ओळमो, राजस्थानी वीर अर हरावळ में भी अेकांकी प्रकासित व्हैता। कीं खास अेकांकीकार अर वांरी कृतियां इण माफक है– श्रीमंतकुमार व्यास– (1) चानणौ (2) लिछमी (3) अर घुग्घू; गणपतलाल डांगी–'कुबदी चाकर', जगदीश माथुर–'पितरां रो आगमण', लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत–हार सट्टे पीव आणियो, डॉ. मनोहर शर्मा– 'सोढी राणी' इत्यादि। श्रीमंत कुमार व्यास रा मरुवाणी अर राजस्थानी वीर में 5 अेकांकी प्रकासित हुया। राजस्थान साहित्य अकादमी की तरफ सूं लेखक द्वारा संपादित 15 अेकांकी 1966 में निकळिया जिणमें आं लेखकां रा अेकांकी लिया गया है– पारीकजी रो 'बोळावण', लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रो 'सामधरमी माजी', डॉ. शक्तिदानजी कविया रौ– 'वीरमती', डॉ. आग्याचंदजी भंडारी रौ– 'देस भगत भामासा', दामोदरप्रसाद 'रो कामरान री आंखड़ल्यां', बैजनाथजी पंवार रौ–'आंपणौ खास आदमी', अम्बालाल जोशी रौ– 'मिनखपणौ', गोविंदलालजी माथुर रौ– 'डाक्टर रो ब्याव', मुनी पूनमचन्दजी रौ– 'हाथै कीजै कामड़ा', किणनै दीजै दोस', डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली रौ– 'बींनणी, शोभाचंदजी जम्मड़ रौ– 'बदळो, रावतजी सारस्वत रौ– 'सम्पादक री मोत' अर यादवेन्द्र चन्द्रजी रौ– 'देवता'। आं अेकांकियां रै चुणाव अर सम्पादन में कोसीस आ रयी कै विसयां री विविधता भी आवै अर तकनीक री दीठ सूं अेकांकी में थोड़ा घणा नाटकीय मोड़ जरूर व्है। आं सारा अेकांकियां में नाटकीय मोड़ जरूर मिळै पछै भलेई वा सबळी हुवौ या निबळी। नाटकीय मोड़ अर रंगमंच री दीठ सूं गोविंदलालजी रो 'डाक्टर रो ब्याव' घणौ सफळ बण पड़ियो है अर वौ केई जगा अभिनीत भी हो चुकौ है। बींनणी रो नाटकीय मोड़ भी आछौ बण पड़ियौ है। भासा री सबळता नै मुहावरां री चुस्ती में बैजनाथजी रो 'आपणौ खास आदमी' सारां सूं सिरै है। जम्मड़जी रो 'टींगर टोळी' भी परिवार नियोजन सम्बन्धी आछो प्रहसण है।

आं नै टाळ 'हरावळ' पत्रिका रा अंकां में अेकांकी अर नाटकां रै वास्तै अळूंजियोड़ौ है अर वीं में अेक पूरौ मौलिक नाटक 'गुवाड़ री जायोड़ी' छपियौ जिण रा लेखक है सत्यनारायण प्रभाकर 'अमन'। नाटक री भासा राजस्थानी है अर ईं रो कथानक काल्पनिक है जीं में अेक गांव री जायोड़ी लुगाई आप रै अपमान रो बदळौ आप री मरदानगी सूं लेवै अर सासरा वाळां रो अहंकार तोड़ै। 'हरावळ' में सत्यप्रकासजी जोसी अेक अनूदित अेकांकी 'मस्सौ' अर मदनमोहन माथुर रो अनुदित अेकांकी 'नकल' छपियौ। 'मस्सौ' अेकांकी में जोसी जी अनुवाद रै साथै ईं पर राजस्थानी रंग भी चढायौ है– नांव सारा राजस्थानी कर दिया है पण वीं रो मनोवैज्ञानिक नै सैक्स प्रधान कथानक हाल राजस्थानी रा पाठक दोरौ ई पचा सकै, मंच माथै खेलण रो तौ सवाल ई नीं ऊठै।

15.6 नाटक अर अेकांकी मांय फरक

नाटक अर अेकांकी रो सरूप अेक जेड़ौ इज रैयौ है। फरक सिरफ इतरौ है कै नाटक री विसै वस्तु विस्तृत हुवै अर अेकांकी री छोटी। नाटक मांय कथा विस्तार रै वास्तै पात्रां री संख्या घणी हुवै अर उद्देस्य री दीठ सूं ई व्यापक हुवै है जद के अेकांकी नाटक रै हरेक पख सूं छोटे हुवै। इण मांय पात्रां री संख्या सीमित हुवै अर उद्देस्य रो सरूप ई व्यापक नीं हुवै। इण मांय ई समै कमती रैवै, इण वास्तै इणनै अेकांकी कैवै।

नाटकां री अवधि लांबी हुवणै रै कारण अेक अंक रै पूरै हुवण पछै दूजै अंक रै सरू हुवण रै समै मांय दरसकां नै बांधियां राखण सारू अेकांकी रो सिरजण हुयौ।

15.7 इकाई रो सार

20वीं सदी रै सरू में ई आधुनिक सैली रा नाटक लिखीजण लागग्या हा। राजस्थान रा अैड़ा पैला नाटकां में श्री भगवतीप्रसाद दारूका रै 'वृद्ध विवाह', 'ढलती–फिरती छाया' अर राजस्थानी रा जोगोड़ा सेवक श्री शिवचन्द भरतिया रा तीन नाटकां 'केसर विलास', 'फाटका जंजाळ' अर 'बुढापा की सगाई' रो नांव सामी आवै। श्री नारायण अग्रवाल, श्री ब्रिजलाल बियाणी, श्री गुलाबचन्द नागौरी, पं. ठाकुरदत्त शर्मा, श्री मथुरादास भट्टड़ रो 'रम्भारमण', श्री नारायण अग्रवाल रो 'महाभारत को श्रीगणेश', 'अक्कल बड़ी'क भैंस', 'दानधर्म', 'समाजसेवक', 'मंडळ', 'भाग्योदय', 'महाभारत' नाटक, श्री ब्रिजलाल बियाणी रा 'विजयदसमी' अर 'बालरामायण' नाटक, श्री गुलाबचन्द नागौरी रो 'मारवाड़ी मोसर' नाटक, श्री भट्टड़ रो 'कर्जे का अभिसाप' नाटक उल्लेखजोग है। पंडित मदनमोहन सिद्ध रो 'जयपुर की ज्योणार' अेक सामाजिक नाटक है। श्री शोभाचन्द्र जम्भड़ रो 'वृद्ध विवाह विदूषण' भी अेक रूड़ौ प्रहसन है। राजस्थानी रै नुंवा गद्य में सरू में उपन्यास लेखण में लोगां रो मन कमती ई लाग्यौ, पण उण बगत रा उपन्यासां में श्री भरतिया जी रो 'कनक सुन्दर' अर श्री श्रीनारायण अग्रवाल रो 'चम्पा' उपन्यास आछा उपन्यास है। आं दोन्यूं में सामाजिक सुधार री भावना है। फिल्मी गीतकार अर राजस्थानी रा कवि भरत व्यास रा 'मरवण' अर 'रंगीला राजस्थान' नाटकां में अभिनय–कळा री घणी ऊमदा रंगत है। श्री गिरधरलाल शास्त्री रै 'प्रणवीर प्रताप' नाटक में स्वतंत्रता–प्रेमी महाराणा प्रताप जैड़ा अेतिहासिक पात्रां रै सागै काल्पनिक पात्र ई है। शास्त्री जी रो 'दुर्गाजी' नाटक भी उल्लेख जोग है। श्री आज्ञाचन्द–भंडारी रो 'पन्नाधाय' नाटक भी 'प्रणवीर प्रताप' री नांई चरित्र नाटक है। सिनेमा रै प्रचार अर जीवण री भागदौड़ में समै री कमी रै कारण लोगां कनै जद बडा–बडा नाटक देखण री टेम नीं तौ लोगां री रुचि नैं पिछाण'र नाटकां री ठौड़ अेकांकी आंण लाग्या। हिन्दी में अेकांकी रै जलम री नांई राजस्थानी में भी अेकांकी जलम लीनौ। स्व. सूर्यकरणजी पारीक 'बोलावण' अेकांकी री रचना सूं राजस्थानी नाट्य–रचना नै अेक नुंवौ मोड़ दीनौ। 'बोळावण' में राजस्थान रै जथारथ जीवण रो सहज चित्रण है। हिन्दी रा कांहणी लेखक श्री मोहनसिंह सेंगर ई राजस्थानी एकांक्यां री रचना सूं राजस्थानी अेकांकी साहित्य में आपरी ठौड़ बणाई है। ऊणां रो 'पीळै हाथ' राजस्थानी रो सामाजिक अेकांकी है। श्री नारायणदत्त श्रीमाली रो 'माटी–री काया' नौ एकांक्यां रो संग्रह है। श्रीमाली राजस्थानी में करीब चालीस अेकांकी लिख्या है। रेडियो–अेकांकी रै क्षेत्र में श्रीमाली घणा ई आछा प्रयोग कर्‌या है। बीकानेरवासी श्री भगवान गोस्वामी ई बात नै आछी समझै है'क एकांकी रै अभिनय में थोड़ी–ऊं थोड़ी साज–सामग्री री जरूरत पड़ै। ई विचार नैं लै'र लिख्योड़ा बां–रा दोय नाटकां में 'शान्तिदूत' पौराणिक आख्यान नल–दमयन्ती रो प्रसंग है अर 'राव जैतसी' लोक–संस्कृति प्रधान अेकांकी है। श्री बद्रीप्रसाद पंचोली रो 'पाणी पैली पाळ' ई आछो नाटक है।

श्री बैजनाथ पंवार रा अेकांकी मनोरंजन अर सिक्षाप्रद है। श्री पंवार रै एकांक्यां रा विसै रिस्वतखोरी, बाळविवाह, मोसर जैड़ी सामाजिक समस्यावां अर कुरीत्यां है। उणां रा अेकांक्यां में 'जय पंचायतराज', 'आपणो खास आदमी', 'परदा प्रथा', 'आभूषणों का कूचक्र', 'शिक्षा का लाभ' उल्लेखजोग अेकांकी है। श्री

मोतीसिंह राठौड़ अर श्री भजनलाल गुरु हास्य रस रा केई आछा अेकांकी लिख्या है। जोधपुर रा गोविन्दलाल माथुर केई तरै रा घणांई अेकांकी लिख्या है। उणां रा सात अेकांक्यां रो संग्रह 'सतरंगिणी' नांव सूं छप्यो है। वांरा घणकरा अेकांकी सामाजिक समस्यावां माथै है। श्री माथुर रा अेकांकी राजस्थानी जीवण री मूंडै बोलती तस्वीरां है।

श्री गणपतलाल डांगी रा अेकांकी अभिनय रै विचार सूं घणा चोखा है। 'कुबदी चाकर' वां रो प्रतिनिधि अेकांकी है। श्रीमन्तकुमार व्यास भी अेकांकी रा आछा लेखक है। राजस्थानी री केई पत्रिकावां में उणां रा अेकांकी छप्या है। 'धन और धरती' अर 'कांग्रेस गांव–गांव बणगी' उणां रा प्रतिनिधि अेकांकी है। अेकांकी–लेखण री रफ्तार बढ़ोतरी पर है अर नुंवां–नुंवां लेखक सामी आय रिया है।

15.8 अभ्यास सारू सवाल

(अ) नीचै लिखियोड़ै सवालां रो पड़ूत्तर 150 सबदां रै लगैटगै देवौ–

1. राजस्थानी नाटक विधा री पैलपोत सरूआत कद अर किण करी?
2. नाटक अर अेकांकी मांय खास फरक कांई है?
3. राजस्थानी रा किणी च्यार चावा नाटककारां रा नांव मांडौ?
4. नाटकां रो सरूआती रूप कैड़ौ रैयौ है?

(आ) नीचै लिखियोड़े सवालां रो पड़ूत्तर 500 सबदां मांय देवौ–

1. राजस्थानी नाटक री उतपत अर विकास जातरा नै समझावौ?
2. नाटक री परिभासा मांडौ?
3. आज रै समै मांय नाटक अर अेकांकी रो कांई महत्व है। आपरै सबदां मांय ओळखांण करावै?
4. राजस्थानी नाटकां माथै अेक लेख मांडौ?

15.9 पढणजोग महताऊ पोथियां

1. राजस्थानी एकांकी– सं. गणपतिचंद्र भंडारी
2. आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य (परम्परा अंक)– डॉ. नारायणसिंह भाटी
3. राजस्थानी गद्य साहित्य : उद्‌भव अर विकास– शिवस्वरूप शर्मा 'अचल'
4. राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति– डॉ. कल्याणसिंह शेखावत
5. स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी गद्य–साहित्य– डॉ. राम स्वरूप व्यास